CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

अध्यात्म पूजाञ्जलि

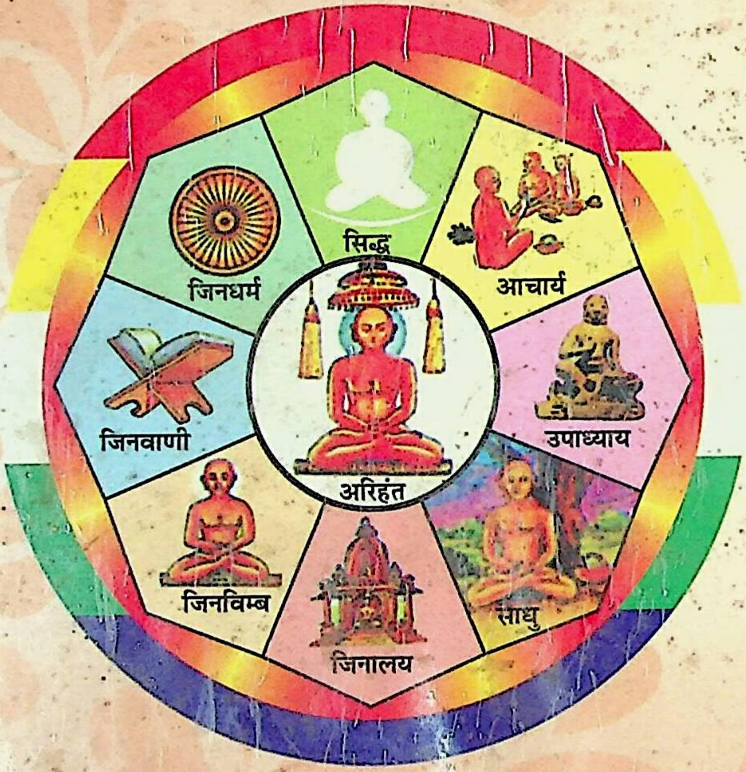

पाँचों परमेष्ठी जिनमंदिर, जिनप्रतिमा जिनश्रुत जिनधर्म।
नवदेवों को वन्दन करके, हे प्रभु! हो जाऊँ निष्कर्म।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

अध्यात्म पूजाञ्जलि

प्रेरणा एवं निर्देशन :
वाणीभूषण पं. ज्ञानचन्द जैन, सोनागिर

संकलन एवं संपादन :
डॉ. मुकेश 'तन्मय' शास्त्री
धर्मविशारद, धर्मरत्न, धर्मालंकार, एम.ए., पी.एच.डी.
ज्ञानानन्द निवास, किला अन्दर, विदिशा (म.प्र.)

सह-संपादक :
पदमकुमार जैन पहाड़िया, इन्दौर (म.प्र.)
केशवदेव जैन, कानपुर (उ.प्र.)

प्रकाशक :
श्री कुन्दकुन्द-कहान स्मृति प्रकाशन ट्रस्ट
विदिशा (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्करण : 3,100 प्रतियाँ
(दिनांक 9 से 18 सितम्बर 2013 तक पर्वाधिराज श्री दशलक्षण पर्व के पावन अवसर पर प्रकाशित)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

न्यौछावर राशि : 35/-

प्राप्ति स्थान :

1. **श्री कुन्दकुन्द-कहान स्मृति प्रकाशन ट्रस्ट**
   ज्ञानानन्द निवास, किला अन्दर, विदिशा (म.प्र.)
   फोन : 07592-232234, मो. : 094251-48507

2. **श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर**
   आचार्य कुन्दकुन्द नगर, सिद्धक्षेत्र सोनागिर, जि. दतिया
   फोन : 07522-262307, 262210

3. **श्री पदमकुमार जैन 'पहाड़िया'**
   वैभव, 582, एम.जी. रोड, कल्याण भवन परिसर
   इन्दौर (म.प्र.) फोन : 0731-2548084, 094250-54280

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकीय

आज के इस भौतिकवादी युग में जहाँ चारों ओर विषय-कषाय का ही नशा छाया हुआ है, जगह-जगह विषय-कषाय की ही चर्चा-वार्ता करने वाले लोग मिलते हैं एवं उसकी ही प्रेरणा देते हैं; किन्तु सच्चे सन्मार्ग (रत्नत्रय) पर चलने वाले एवं उसी पर उत्तरोत्तर बढ़ते हुए चलने की प्रेरणा देने वाले विरले ही जीव मिलते हैं।

हम इस अनमोल महादुर्लभ मनुष्य पर्याय एवं जैन कुल में जन्में हैं, जिनधर्म के अनुयायी हैं, जिन के भक्त हैं, जिनधर्म को मानने वाले हैं। अतः हमें षट् आवश्यकों का पालन करना आवश्यक है, उसमें भी प्रथम आवश्यक कर्तव्य है '**देवपूजा**'। पाँच पापों एवं जगत प्रपंचों और कषायों से बचने के लिए एकमात्र वीतराग भाव के पोषण हेतु **वीतरागी सर्वज्ञ देव का अवलम्बन ही शरणभूत है।**

"शुद्धातम अरु पंच गुरु, जग में सरनौ दोय।"

इस लोक में निश्चय से शुद्धात्मा और व्यवहार से पंच-परमेष्ठी ही हमें शरणभूत हैं, वही मंगल हैं, उत्तम हैं, उन जैसा बनने के लिए ही हम उनकी शरण में जाकर श्रद्धा भक्ति से शीश झुकाते हैं और भावना भाते हैं कि '**हे देवाधिदेव!** मैं भी वह दिन कब प्राप्त करूँ, जब आपके समान ही पद्मासन में बैठकर नाशाग्र दृष्टि पूर्वक हाथ पर हाथ रखकर सर्व ओर से अपने उपयोग को समेटकर एकमात्र चैतन्य स्वभाव निज भगवान आत्मा में ही निश्चल लीन हो जाऊँ और आप समान बन जाऊँ।

इसी पवित्र भावना और उद्देश्य से ही यह **"अध्यात्म पूजाञ्जलि"** को प्रकाशित करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। यद्यपि पूजनों, भजनों एवं स्तुतियों की संकलित पुस्तकों की कमी नहीं है; परन्तु जैन परम्परा में अध्यात्मवाद की बड़ी प्रतिष्ठा है। यह जैनधर्म की आत्मा है।

इसी तथ्य को लक्ष्य में रखते हुए इस पूजन की पुस्तक में प्रचलित पूजनों के साथ-साथ श्री राजमलजी पवैया, श्री युगल जी, डॉ. भारिल्लजी, श्री ब्र. रवीन्द्रजी आदि द्वारा रचित अध्यात्म परक पूजनों के साथ-साथ श्री शांति विधान एवं पूजन विधि- विधान एवं नमस्कार विधि, क्षमापना आदि का भी समावेश किया गया है। जिससे पूजन-विधान करते समय सुधी पाठक आत्माश्रित भावनाओं से निमग्न होकर आत्मनिर्भर बनने का उपक्रम कर सकें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्व में इस पुस्तक के अनेक संस्करणों में पाँच-पाँच हजार प्रतियाँ प्रकाशित हुई थीं, जो कि शीघ्र ही समाप्त हो गई, पुनः यह नवीन संस्करण आपके हाथों में हैं, इसमें जो भी सुझाव एवं त्रुटियाँ हों, हमें अवगत करें।

इस संस्करण में विषय चयन की सुविधा से इसमें संकलित विषय-वस्तु को विविध खण्डों में विभाजित किया गया है, जिससे पाठक अपनी रुचि अनुसार पूजन-विधान-स्तुति आदि को सहजता एवं शीघ्रता से निकाल सकेंगे।

आत्मकल्याण में सहायक नित्य पढ़ने योग्य सामायिक पाठ, भक्तामर स्तोत्र, आलोचना पाठ, तत्त्वार्थ सूत्र, छहढाला, पर्व-पूजन, शांति विधान एवं ब्र. रवीन्द्रजी की उपयोगी रचनाओं का सुन्दर समावेश किया गया है, जिससे यह संस्करण अति-उपयोगी बन गया है। इस पुस्तक के माध्यम से आत्मार्थी पाठक अपनी धार्मिक रूचि के अनुसार सुबह से शाम तक जिनेन्द्र पूजन, सामायिक, स्तुति आदि के द्वारा जिनेन्द्र प्रभु की आराधना एवं आत्मसाधना कर सकते हैं।

पुस्तक के प्रकाशन में मूल प्रेरणास्रोत एवं हमारे निर्देशक आ. वाणीभूषण पं. ज्ञानचन्दजी (विदिशा वाले) सोनागिर की विशेष प्रेरणा एवं मार्गदर्शन रहा है। तदर्थ उनका अनुगृहीत हूँ तथा संकलन एवं सम्पादन में हमारे ट्रस्टी मण्डल के मंत्री डॉ. मुकेश 'तन्मय' शास्त्री विदिशा एवं महामंत्री श्री पदमकुमारजी पहाड़िया इन्दौर, कोषाध्यक्ष श्री केशवदेवजी कानपुर, डॉ. विनोद 'चिन्मय' शास्त्री विदिशा, श्री केसरीमलजी पाटनी तथा पं. लालजीरामजी विदिशा एवं कम्पोजिंग में आशीर्वाद ग्राफिक्स का महत्वपूर्ण योगदान एवं सहयोग रहा है। एतदर्थ हम उन सभी के विशेष आभारी हैं।

प्रस्तुत संस्करण में सुझाव, सहयोग एवं मार्गदर्शन देने वाले सभी साधर्मीजनों के हम आभारी हैं। भविष्य में भी आपका इसी प्रकार सुझाव, सहयोग एवं मार्गदर्शन हमें प्राप्त होता रहेगा।

अन्त में मेरी यही हार्दिक भावना है कि सभी भव्यजन इस पुस्तक के माध्यम से अपने जीवन को चारों अनुयोगों में ढालकर आत्मदृष्टि पूर्वक समकित से सुरभित करें और मनुष्य जन्म को सफल/सार्थक करें।

-अनिल सेठी, अध्यक्ष

श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर-दतिया (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय सूची

क्र.	विषय	रचयिता	पृष्ठ
	प्रथम खण्ड : देव स्तुति संग्रह		
1.	मङ्गलाष्टक (संस्कृत)		11
2.	दर्शन स्तोत्र (संस्कृत) (दर्शनं देव देवस्य....)		13
3.	दर्शन स्तोत्र (हिन्दी) (दर्शन श्री...)		14
4.	मंगल प्रभात	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	15
5.	देव स्तुति-वीतराग सर्वज्ञ...		16
6.	दर्शन स्तुति-सकल ज्ञेय...	पं. दौलतरामजी	17
7.	दर्शन स्तुति-अति पुण्य...		19
8.	देव स्तुति-प्रभु पतित पावन...	पं. बुधजन जी	20
9.	दर्शन स्तुति-भटक-भटक		21
10.	प्रभु दर्शन-अद्भुत प्रभुता...	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	22
	द्वितीय खण्ड : नित्य नियम अभिषेक एवं पूजन संग्रह		
11.	अभिषेक पाठ-मैं परम पूज्य...	श्री राजमलजी पवैया	23
12.	जिनेन्द्र स्तुति-मैंने प्रभुजी...	श्री राजमलजी पवैया	23
13.	जिन प्रतिमा प्रक्षाल पाठ	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	24
14.	जलाभिषेक पाठ-जय जय...	कविवर हरजसरायजी	25
15.	विनय पाठ-1 इह विधि...	कविवर नाथूरामजी	29
16.	पूजा पीठिका (संस्कृत)		32
17.	मंगल विधान-अपवित्र...		32
18.	पूजा प्रतिज्ञा पाठ		34
19.	स्वस्ति मंगल पाठ		35
20.	परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ		36
21.	विनय पाठ-2 सफल जन्म...	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	37
22.	पूजा पीठिका (भाषा)	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	38
23.	मंगल विधान (भाषा)	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	38
24.	पूजा प्रतिज्ञा पाठ (भाषा)	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	39
25.	स्वस्ति मंगल पाठ (भाषा)	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	40
26.	देव शास्त्र गुरू पूजन-1	पं. द्यानतराय जी	41

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	विषय	रचयिता	पृष्ठ
27.	देव शास्त्र गुरू पूजन-2	श्री युगल जी	45
28.	देव शास्त्र गुरू पूजन-3	डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल	50
29.	देव शास्त्र गुरू पूजन-4	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	54
30.	समुच्चय पूजन	ब्र. सरदारमल जी	58
31.	पंच परमेष्ठी पूजन	श्री राजमलजी पवैया	63
32.	वीतराग देव पूजन	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	67
33.	सिद्ध पूजन-1	डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल	72
34.	सिद्ध पूजन-2	श्री युगल जी	76
	तृतीय खण्ड : श्री तीर्थंकर जिन पूजन संग्रह		
35.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन-1	पं. वृन्दावनदास जी	82
36.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन-2	श्री कुमरेशजी	85
37.	श्री आदिनाथ जिन पूजन	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	89
38.	श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन	श्री राजमलजी पवैया	95
39.	श्री शीतलनाथ जिन पूजन	श्री राजमलजी पवैया	99
40.	श्री वासुपूज्य जिन पूजन	पं. वृन्दावनदास जी	104
41.	श्री शांति-कुन्थु-अरनाथ पूजन	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	108
42.	श्री नेमिनाथ जिन पूजन	श्री राजमलजी पवैया	112
43.	श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	117
44.	श्री महावीर जिन पूजन-1	पं. वृन्दावनदास जी	121
45.	श्री महावीर जिन पूजन-2	डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल	126
46.	श्री पंच बालयति जिन पूजन	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	130
47.	श्री सीमंधर जिन पूजन	डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल	135
48.	विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजन	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	140
	चतुर्थ खण्ड : पर्व पूजन संग्रह		
49.	पंचमेरु पूजन	पं. द्यानतराय जी	144
50.	सोलहकारण पूजन	पं. द्यानतराय जी	147
51.	दशलक्षण पूजन	पं. द्यानतराय जी	151
52.	दशलक्षण धर्म का मर्म	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	158
53.	रत्नत्रय धर्म पूजन	पं. द्यानतराय जी	159

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	विषय	रचयिता	पृष्ठ
54.	नंदीश्वर द्वीप पूजन	पं. द्यानतराय जी	165
55.	श्रुतपंचमी पूजन	श्री राजमलजी पवैया	169
	पंचम खण्ड : विविध पूजन संग्रह		
56.	श्री निर्वाण क्षेत्र पूजन	पं. द्यानतराय जी	174
57.	श्री सोनागिर सिद्धक्षेत्र पूजन	श्री राजमलजी पवैया	177
58.	श्री बाहुबली पूजन	श्री राजमलजी पवैया	183
59.	श्री सरस्वती पूजन	पं. द्यानतराय जी	187
60.	कृत्रिम अकृत्रिम पूजन	श्री राजमल जी पवैया	190
	षष्ठम खण्ड : अर्घ्यावलि एवं शान्ति पाठ संग्रह		
61.	अर्घ्यावलि		195
62.	तीर्थंकर भगवंतों के अर्घ्य		197
63.	समुच्चय महार्घ्य–1 मैं देव श्री...		203
64.	समुच्चय महार्घ्य–2 पूजूँ मैं श्री...		203
65.	शांति पाठ–1 शांतिनाथ सुख...		206
66.	शांति पाठ–2 हूँ शांतिमय...		207
67.	विसर्जन पाठ–1 बिन जाने वा...		208
68.	विसर्जन पाठ–2 थी धन्य घड़ी...		208
69.	स्तुति पाठ–मैं तुम चरण		210
70.	भक्त की अन्तिम भावना–नाथ तुम्हारी पूजा में...		211
	सप्तम् खण्ड : बारह भावना संग्रह		
71.	बारह भावना–राजा राणा	पं. भूधरदासजी	212
72.	बारह भावना–द्रव्य रूप	पं. जयचंदजी छावड़ा	213
73.	बारह भावना–निज स्वभाव	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	214
74.	वैराग्य भावना–बीज राख	पं. भूधरदासजी	217
75.	मेरी भावना–जिसने राग	पं. जुगलकिशोरजी मुख्तार	220
	अष्टम् खण्ड : मूल शास्त्र पाठ संग्रह		
76.	तत्त्वार्थ सूत्र (संस्कृत)	आचार्य श्री उमास्वामीजी	223
77.	भक्तामर स्तोत्र (संस्कृत)	मुनिश्री मानतुंगाचार्यजी	238
78.	स्वयंभू स्तोत्र	अनु. पं. द्यानतराय जी	247

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	विषय	रचयिता	पृष्ठ
79.	महावीराष्टक स्तोत्र	पं. भागचन्दजी	249
80.	छहढाला	पं. दौलतरामजी	251
	नवम् खण्ड : सामायिक एवं समाधि मरण पाठ संग्रह		
81.	नमस्कार विधि		265
82.	नीरव निर्झर-प्रेमभाव हो...	अनु. श्री युगल जी	270
83.	आलोचना पाठ	कविवर जौहरीलालजी	273
84.	सामायिक पाठ (भाषा)	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	276
85.	समाधि भावना	पं. शिवरामजी	279
86.	समाधि मरण पाठ-सहज..	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	280
87.	मृत्यु महोत्सव	श्री राजमलजी पवैया	282
88.	क्षमापना	श्रीमद् राजचंद्रजी	284
	दशम् खण्ड : आध्यात्मिक पाठ संग्रह		
89.	निर्वाणकाण्ड (भाषा)	अनु.-भैया भगवतीदासजी	287
90.	अमूल्य तत्व विचार	अनु.-श्री युगल जी	289
91.	आत्म कीर्तन	श्री मनोहरलाल जी वर्णी	290
92.	समयसार स्तुति	पं. हिम्मतभाईजी शाह	291
93.	मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूँ	डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल	292
94.	सच्चा जैन	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	293
95.	चन्द्रप्रभु स्तुति	कविवर भगवत जी	293
96.	जिनेन्द्र वंदना	पं. ज्ञानचन्दजी	294
97.	अपूर्व अवसर	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	295
	एकादशम् खण्ड : आध्यात्मिक स्तुति संग्रह		
98.	ज्ञानाष्टक	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	297
99.	सांत्वाष्टक	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	298
100.	कर्तव्याष्टक	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	300
101.	ब्रह्मचर्य द्वादशी	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	300
102.	समता षोडशी	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	302
103.	मंगल श्रृंगार	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	304
104.	जिनमार्ग	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	305

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्र.	विषय	रचयिता	पृष्ठ
105.	तीर्थ वंदना	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	308
106.	आत्म भावना	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	309
107.	अपनी वैभव गाथा	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	311
108.	मेरा सहज जीवन	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	313
109.	अपना स्वरूप	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	314
110.	चेतो चेतो आराधन में	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	315
111.	श्री चन्द्रप्रभ स्तुति	ब्र. श्री रवीन्द्रजी	317
	द्वादश खण्ड : विधान की विधि एवं श्री शान्ति मण्डल विधान		
112.	विधान प्रारम्भ करने की विधि		318
113.	ध्वजारोहण विधि		326
114.	श्री शान्ति मण्डल विधान (लघु)	श्री राजमलजी पवैया	327
115.	विधान की समापन विधि		350
116.	श्री शांति यज्ञ		352
117.	श्री बृहच्छान्तिमन्त्रा: धारा		356
118.	पुण्याहवाचन		362
119.	नूतन गृह प्रवेश विधि		363
	त्रयोदशम् खण्ड : श्री देव-शास्त्र-गुरु भक्ति संग्रह		
	देव स्तुति		
120.	नाथ बाहुबली...		364
121.	करें तपस्या मनमानी...		364
122.	धन्य-धन्य बाहुबली...		365
123.	तिहारे ध्यान की मूरति...		365
	शास्त्र स्तुति		
124.	सांची तो गंगा...		366
125.	महिमा है अगम...		366
126.	जिन बैन सुनत...		366
	गुरु भक्ति		
127.	ऐसे साधु सुगुरु		367
128.	ऐसे मुनिवर देखे वन में		367
129.	परम दिगम्बर मुनिवर		367
130.	प्रभावना (श्री कुन्दकुन्द नगर सोनागिर)		368

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तुत प्रकाशन में सहयोगी दानदाताओं की नामावली

11000/-	डॉ.बासंतीबेन शाह परिवार सायन, मुम्बई
11000/-	एक मुमुक्षुभाई, मुम्बई
6151/-	श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल हस्ते श्री राजकुमारजी अजमेरा, रतलाम (म.प्र.)
5100/-	श्रीमती मीना देवी घ.प.श्री केशवदेवजी जैन कानपुर
5100/-	चि.'सहज'-श्री साकेत एवं श्री कमल बड़जात्या परिवार, दादर
5000/-	श्रीमती पुष्पलता जैन 'जीजीबाई' ध.प. इंजी. ए.के.जैन, छिन्दवाड़ा
5000/-	श्री सुमति स्वाध्याय मण्डल रतलाम
2100/-	श्री मांगीलालजी पदमकुमारजी पहाड़िया इन्दौर
2000/-	एक मुमुक्षुभाई हस्ते श्री रमेशभाईजी मुम्बई
1111/-	श्री गोकुलचन्दजी जैन 'राजस्थान एम्पोरियम' लोनावाला
1100/-	श्रीमती पदमादेवी ध.प.चौधरी सुरेशचन्दजी मौ (भिण्ड)
	संगम जैन-सागम जैन सुपुत्र श्रीमती संगीता जैन, विदिशा
511/-	स्व. श्रीमती कस्तूरीबाई ध.प. स्व.श्री दयाचन्दजी जैन खण्डवा स्मरणार्थे, श्रीमती रतन जैन ध.प. श्री बाबूलालजी जैन दिलशाद गार्डन, दिल्ली, श्रीमती इन्दू जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन खण्डवा, श्रीमती प्रज्ञा जैन घ.प. श्री लोकेन्द्र जैन दिलशाद गार्डन, दिल्ली, श्रीमती विभा जैन घ.प. श्री शैलेन्द जैन पुणे, श्रीमती मंजू जैन घ.प. श्री रमेशचन्द जैन दिलशाद गार्डन, दिल्ली
501/-	श्री कोमल चन्दजी जैन भारिल्ल गोरझामर (सागर), श्रीमती कमलाबाईजी होशंगाबाद वाली सोनागिर (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम खण्ड : देव स्तुति संग्रह

मङ्गलाष्टकम्

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्य जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।1।।

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत रत्नप्रभा
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्ध- सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।2।।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधिनाथ- जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मःसूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।3।।

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतु र्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादशः।
ये विष्णु प्रतिविष्णु- लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्ठिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्।।4।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग महानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपिबलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।5 ।।

कैलाशे वृषभस्य निवृत्तिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् ।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।6 ।।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौस्थिता,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रौप्याद्रिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।7 ।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।8 ।।

इत्थं श्री जिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्यसम्पत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणां मुषः ।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रियते व्यपाय-रहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।9 ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शन-स्तोत्र (संस्कृत)

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्।।1।।

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्।।2।।

वीतराग-मुखं दृष्ट्वा, पद्मराग-समप्रभम्।
जन्म-जन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति।।3।।

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसारध्वान्तनाशनम्!
बोधनं चित्त-पद्मस्य, समस्तार्थ-प्रकाशनम्।।4।।

दर्शनं जिन-चन्द्रस्य, सद्धर्मामृत-वर्षणम्।
जन्म-दाहविनाशाय, वर्धनं सुख-वारिधेः।।5।।

जीवादितत्त्व-प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व-मुख्याष्ट-गुणाश्रयाय।
प्रशान्तरूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय।।6।।

चिदानन्दैक-रूपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्म-प्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः।।7।।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर।।8।।

नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति।।9।।

जिन भक्तिर्जिनेभक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु, सदामेस्तु भवे भवे।।10।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि, जिन-धर्मानुवासितः।।11।।

जन्म-जन्मकृतं पापं, जन्म-कोट्यामुपार्जितम्।
जन्म-मृत्यु-जरारोगं, हन्यते जिन-दर्शनात्।।12।।

अद्य भवत्सफलता नयन-द्वयस्य,
देव! त्वदीय-चरणाम्बुज-वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक-तिलक! प्रतिभासते मे,
संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणम्।।13।।

दर्शन-स्तोत्र (भाषा)

दर्शन श्री देवाधिदेव का, दर्शन पाप विनाशन है।
दर्शन है सोपान स्वर्ग का, और मोक्ष का साधन है।।1।।

श्री जिनेन्द्र के दर्शन औ, निर्ग्रन्थ साधु के वन्दन से।
अधिक देर अघ नहीं रहै, जल छिद्र सहित कर में जैसे।।2।।

वीतराग-मुख के दर्शन की, पद्मराग सम शांत प्रभा।
जन्म-जन्म के पातक क्षण में, दर्शन से हों शांत विदा।।3।।

दर्शन श्री जिनदेव सूर्य, संसार-तिमिर का करता नाश।
बोधि-प्रदाता चित्त पद्म को, सकल अर्थ का करे प्रकाश।।4।।

दर्शन श्री जिनेन्द्र चन्द्र का, सद्धर्मामृत बरसाता।
जन्मदाह को करे शांत औ, सुख वारिधि को विकसाता।।5।।

सकल तत्व के प्रतिपादक, सम्यक्त्व आदि गुण के सागर।
शांत दिगम्बर रूप नमूँ, देवाधिदेव तुमको जिनवर।।6।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0-In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिदानन्दमय एकरूप, वंदन जिनेन्द्र परमात्मा को।
हो प्रकाश परमात्म नित्य, मम नमस्कार सिद्धात्मा को।।7।।
अन्य शरण कोई न जगत में, तुम्ही शरण मुझको स्वामी।
करुण भाव से रक्षा करिये, हे जिनेश अन्तर्यामी।।8।।
रक्षक नहीं शरण कोई नहिं, तीन जगत में दुखत्राता।
वीतराग प्रभु सा न देव है, हुआ न होगा सुखदाता।।9।।
दिन-दिन पाऊँ जिनवर भक्ति, जिनवर भक्ति, जिनवर भक्ति।
सदा मिले वह सदा मिले, जब तक न मिले मुझको मुक्ति।।10।।
नहीं चाहता जैनधर्म के बिना, चक्रवर्ती होना।
नहीं अखरता जैनधर्म से सहित, दरिद्री भी होना।।11।।
जन्म-जन्म के किये पाप औ बन्धन कोटि-कोटि भव के।
जन्म-मृत्यु औ जरा रोग, सब कट जाते जिन दर्शन से।।12।।
आज 'युगल' दृग हुए सफल, तुम चरण कमल से हे प्रभुवर।
हे त्रिलोक के तिलक, आज लगता भव सागर चुल्लूभर।।13।।

मंगल-प्रभात

है ज्ञान-सूर्य का उदय जहाँ, मंगल-प्रभात कहलाता है।
मिथ्यात्व महातम हो विनष्ट, सम्यक्त्व कमल विकसाता है।।
वस्तु का रूप यथार्थ दिखे, नहिं इष्ट-अनिष्ट दिखाता है।
है भिन्न चतुष्टयवान द्रव्य, पर लक्ष्य नहीं हो पाता है।।
अतएव विकारी भाव रहित, निज सुख अनुभूति होती है।
फिर स्वयं तृप्त उस ज्ञानी के, इच्छा पिशाचनी भगती है।।
तत्क्षण संवरमय भावों से, नवबंध पद्धति रुकती है।
झड़ते हैं स्वयं कर्म बंधन, शिव रमणी उसको वरती है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव-स्तुति

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, भविजन की अब पूरो आस।
ज्ञान भानु का उदय करो, मम मिथ्यातम का होय विनास।।

जीवों की हम करुणा पालें, झूठ वचन नहीं कहें कदा।
परधन कबहुँ न हरहुँ स्वामी, ब्रह्मचर्य व्रत रखें सदा।।

तृष्णा लोभ बढ़ें न हमारा, तोष सुधा नित पिया करें।
श्री जिनधर्म हमारा प्यारा, तिस की सेवा किया करें।।

दूर भगावें बुरी रीतियाँ, सुखद रीति का करें प्रचार।
मेल-मिलाप बढ़ावें हम सब, धर्मोन्नति का करें प्रचार।।

सुख-दुख में हम समता धारें, रहें अचल जिमि सदा अटल।
न्याय मार्ग को लेश न त्यागें, वृद्धि करें निज आतमबल।।

अष्ट करम जो दुख हेतु हैं, तिनके क्षय का करें उपाय।
नाम आपका जपें निरन्तर, विघ्न शोक सब ही टल जाय।।

आतम शुद्ध हमारा होवे, पाप मैल नहिं चढ़े कदा।
विद्या की हो उन्नति हम में, धर्म ज्ञान हू बढ़े सदा।।

हाथ जोड़कर शीश नवायें, तुमको भविजन खड़े-खड़े।
यह सब पूरो आस हमारी, चरण शरण में आन पड़े।।

अहो! देव-गुरु-धर्म तो सर्वोत्कृष्ट पदार्थ हैं, इनके आधार से धर्म है! इनमें शिथिलता रखने से अन्य धर्म किस प्रकार होगा? इसलिए बहुत कहने से क्या? सर्वथा प्रकार से कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का त्यागी होना योग्य है। -मो.प्र., 192

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शन-स्तुति

(दोहा)

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवंत नित, अरि-रज-रहस विहीन।।

(पद्धरि)

जय वीतराग-विज्ञानपूर, जय मोहतिमिर को हरन सूर।
जय ज्ञान अनंतानंत धार, दृग-सुख-वीरज-मण्डित अपार।।
जय परमशांत मुद्रा समेत, भविजन को निज अनुभूति हेत।
भवि भागनवच जोगेवशाय, तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय।।
तुम गुण चिंतत निज-पर विवेक, प्रगटै विघटैं आपद अनेक।
तुम जगभूषण दूषण-विमुक्त, सब महिमायुक्त विकल्प-मुक्त।।
अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप, परमात्म परम पावन अनूप।
शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वाभाविकपरिणतिमय अछीन।।
अष्टादश दोष विमुक्त धीर, स्वचतुष्टयमय राजत गंभीर।
मुनिगणधरादि सेवत महंत, नव केवललब्धिरमा धरंत।।
तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जाहिं जैहैं सदीव।
भवसागर में दुख छार वारि, तारन को और न आप टारि।।
यह लखि निजदुखगद-हरणकाज, तुम ही निमित्तकारण इलाज।
जाने तातैं मैं शरण आय, उचरों निज दुःख जो चिर लहाय।।
मैं भ्रम्यो अपनपो विसरी आप, अपनाये विधि-फल-पुण्य-पाप।
निजको परकौ करता पिछान, पर में अनिष्टता इष्ट ठान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकुलित भयो अज्ञान धारि, ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि।
तन परिणति में आपो चितार, कबहूँ न अनुभव्यो स्वपदसार।।
तुमको बिन जाने जो कलेश, पाये सो तुम जानत जिनेश।
पशु नारक नर सुरगति मँझार, भव धर-धर मर्‌यो अनंत बार।।
अब काललब्धि बलतैं दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल।
मन शांत भयो मिटि सकल द्वन्द्व, चाख्यो स्वातमरस दुख निकंद।।
तातैं अब ऐसी करहु नाथ, बिछुरै न कभी तुव चरण साथ।
तुम गुणगण को नहिं छेव देव, जग तारन को तुम विरद एव।।
आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परिणति न जाय।
मैं रहूँ आपमें आप लीन, सो करो होऊँ ज्यों निजाधीन।।
मेरे न चाह कछु और ईश, रत्नत्रयनिधि दीजे मुनीश।
मुझ कारज के कारन सु आप, शिव करहु हरहु मम मोहताप।।
शशि शांतिकरन तपहरन हेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत।
पीवत पीयूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभवतैं भव नशाय।।
त्रिभुवन तिहूँकाल मँझार कोय, नहिं तुम बिन निज सुखदाय होय।
मो उर यह निश्चय भयो आज, दुख जलधि उतारन तुम जहाज।।

(दोहा)

तुम गुण-गण-मणि गणपति, गणत न पावहिं पार।
'दौल' स्वल्पमति किम कहै, नमूँ त्रियोग सँभार।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शन-स्तुति

अति पुण्य उदय मम आया, प्रभु तुमरा दर्शन पाया।
अब तक तुमको बिन जाने, दुख पाये निज गुण हाने।।
पाये अनंते दुःख अब तक, जगत को निज जानकर।
सर्वज्ञ भाषित जगत हितकर, धर्म नहिं पहिचान कर।।
भव बंध कारक सुख प्रहारक, विषय में सुख मानकर।
निज पर विवेचक ज्ञानमय, सुखनिधि-सुधा नहिं पानकर।।1।।

तव पद मम उर में आये, लखि कुमति विमोह पलाये।
निज ज्ञान कला उर जागी, रुचि पूर्ण स्वहित में लागी।।
रुचि लगी हित में आत्म के, सत्संग में अब मन लगा।
मन में हुई अब भावना, तव भक्ति में जाऊँ रँगा।।
प्रिय वचन की हो टेव, गुणि-गण गान में ही चित्त पगैं।
शुभ शास्त्र का नित हो मनन, मन दोष वादनतैं भगै।।2।।

कब समता उर में लाकर, द्वादश-अनुप्रेक्षा भाकर।
ममतामय भूत भगाकर, मुनिव्रत धारूँ वन जाकर।।
धरकर दिगम्बर रूप कब, अठ-बीस गुण पालन करूँ।
दो-बीस परिषह सह सदा, शुभ धर्म दस धारन करूँ।।
तप तपूँ द्वादश विधि सुखद नित, बंध आस्रव परिहरूँ।
अरु रोकि नूतन कर्म संचित, कर्म रिपुकों निर्जरूँ।।3।।

कब धन्य सुअवसर पाऊँ, जब निज में ही रम जाऊँ।
कर्तादिक भेद मिटाऊँ, रागादिक दूर भगाऊँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर दूर रागादिक निरन्तर, आत्म को निर्मल करूँ।
बल ज्ञान दर्शन सुख अतुल, लहि चरित क्षायिक आचरूँ।।
आनन्दकन्द जिनेन्द्र बन, उपदेश को नित उच्चरूँ।
आवै 'अमर' कब सुखद दिन, जब दुःखद भवसागर तरूँ।।4।।

देव-स्तुति

प्रभु पतित पावन, मैं अपावन, चरन आयो सरन जी।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरन जी।।

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धिसेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी।।

भव विकट वन में करम वैरी, ज्ञान धन मेरो हर्‍यो।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‍यो।।

धन घड़ी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो।।

छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासापै धरैं।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरैं।।

मिट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो, उदय रवि आतमभयो।
मो उर हरष ऐसो भयो, मनु रंक चिंतामणि लयो।।

मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक, वीनऊँ तुव चरन जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति निज, सुनहु तारन-तरन जी।।

जाचूँ नहीं सुरवास पुनि, नरराज परिजन साथ जी।
'बुध' जाचहुँ तुव भक्ति भव-भव, दीजिये शिवनाथजी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शन-स्तुति

भटक-भटक भव की गलियों में,दुख ही दुख मैने पाया।
पा करके कुछ बाह्य वस्तुयें, निकट नहीं तेरे आया।।1।।
कोटि-कोटि सत्कृत्यों से ही, आ पहुँचा जिनमन्दिर में।
देख-देख प्रतिमा प्रभु तेरी, हर्ष उमड़ता अन्दर में।।2।।
आँखों का मिल गया मुझे फल, शान्तमूर्ति दर्शन करके।
रहूँ आपके चरणों में ही, काम-काज तजकर घर के।।3।।
दीर्घ भ्रमण की लम्बी-चौड़ी,मेरी दुखद कहानी है।
त्रिभुवन नाथ जिनेश्वर तुमसे, नहीं कभी वह छानी है।।4।।
यों तो मैं अनादि से दुखिया, पर अब दुख विसराया है।
मानव भव में मिली तुम्हारे, पद-पंकज की छाया है।।5।।
तेरे दर्शन के प्रभाव से, मोह-ग्रन्थि सारी छूटी।
और मानसिक ममता साँकल, क्षण भर में मेरी टूटी।।6।।
वीतराग प्रभु के दर्शन से, पर-परिणति सत्वर भागी।
सम्प्रति कोई अहो अपरिमित, परमशान्ति मन में जागी।।7।।
तुच्छ इन्द्र चक्री वैभव को, प्रभु तुम दर्शन के आगे।
अस्थिर जल बुद-बुद सम धन को, कौन मुमुक्षु अब माँगे?।।8।।
सफल उसी का है नर जीवन, जो तुमको अपनाता है।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, तू ही जग का त्राता है।।9।।
दिव्य आपके स्वच्छ ज्ञान में, लोकालोक झलकता है।
निजस्वरूप में रहे लीन अति, तू न उसे अपनाता है।।10।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिन आयुध ही देव आपने, महामोह क्षण में मारा।
त्रिभुवन विजयी कामदेव भी, नाथ आप से ही हारा।।11।।

यद्यपि राग-द्वेष इस जग में, नहीं किसी से तुम करते।
निंदक जन पाते दुख अतिशय, भव्य भक्ति द्वारा तिरते।।12।।

प्रभु दर्शन

अद्भुत प्रभुता आज निहारी, आनन्द उर न समाया है।
मानों रंक लही चिन्तामणि, त्यों निज वैभव पाया है।।1।।

ध्रुव चैतन्यमयी जीवन लख, जन्म अरु मरण नशाया है।
दर्शन ज्ञान चक्षु दो शाश्वत, लोकालोक दिखाया है।।2।।

सुख शक्ति देखी क्या मानो, सुख सागर लहराया है।
निज सामर्थ्य अनन्त निहारी, ओर-छोर नहिं पाया है।।3।।

अब स्वाधीन अखण्ड प्रतापी, शोभायुत प्रभु भाया है।
निज के सब भावों में व्यापक, विभु प्रत्यक्ष दिखाया है।।4।।

सदा प्रकाशित परम स्वच्छ, मोहान्धकार विनशाया है।
स्वानुभूति से निज अन्तर में, निजानंद रस पाया है।।5।।

मुक्ति की भी नहिं अभिलाषा, मुक्त स्वरूप दिखाया है।
परमतृप्ति उपजी अब मेरे, निज में सर्वस्व पाया है।।6।।

हो निस्पृह उपकारी प्रभुवर, निजपद हमें दिखाया है।
भावसहित वन्दन हे जिनवर, ये रहस्य दरशाया है।।7।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय खण्ड-नित्य नियम अभिषेक एवं पूजन संग्रह

अभिषेक पाठ

मैं परमपूज्य जिनेन्द्र प्रभु को, भाव से वन्दन करूँ।
मन-वचन-काय त्रियोग पूर्वक, शीश चरणों में धरूँ।।1।।

सर्वज्ञ केवलज्ञानधारी, की सुछवि उर में धरूँ।
निर्ग्रन्थ पावन वीतराग, महान की जय उच्चरूँ।।2।।

उज्ज्वल दिगम्बर वेश दर्शन, कर हृदय आनन्द भरूँ।
अतिविनय पूर्वक नमन करके, सफल यह नरभव करूँ।।3।।

मैं शुद्ध जल के कलश प्रभु के, पूज्य मस्तक पर करूँ।
जल धार देकर हर्ष से, अभिषेक प्रभु जी का करूँ।।4।।

मैं न्हवन प्रभु का भाव से, कर सकल भवपातक हरूँ।
प्रभु चरण कमल पखारकर, सम्यक्त्व की सम्पति वरूँ।।5।।

जिनेन्द्र स्तुति

मैंने प्रभु जी के चरण पखारे।टेक।
जनम-जनम के संचित पातक तत्क्षण ही निरवारे।।1।।

प्रासुक जल के कलश श्री जिनप्रतिमा ऊपर ढारे।
वीतराग अरिहंत देव के गूँजे जय-जयकारे।।2।।

चरणाम्बुज स्पर्श करत ही छाये हर्ष अपारे।
पावन तन-मन-नयन भये सब दूर भये अंधियारे।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिन प्रतिमा प्रक्षाल पाठ

दोहा- धन्य दिवस है आज का, धन्य घड़ी है आज।
करें प्रभो प्रक्षाल हम, भाव विशुद्धि काज।।1।।

(तर्ज-तुम्हारे दर्श बिन स्वामी....)

परम पावन अहो जिनवर, जगत की कलुषता हरते।
स्वयं रागादि मल हरने, प्रभो! प्रक्षाल हम करते।।2।।
स्वयं की साधना करके, त्रिजग की पूज्यता पाई।
पूज्यता स्वयं की लखकर, प्रभो पूजा सहज करते।।3।।
निहारें शान्त मुद्रा जब, नेत्र पावन सहज होते।
हाथ होते सहज पावन, चरण-स्पर्श जब करते।।4।।
करें गुणगान भक्ति से, होय रसना तभी पावन।
सहज ही चित्त हो पावन, प्रभु का ध्यान जब धरते।।5।।
जन्म कल्याण में स्वामी, किया अभिषेक इन्द्रों ने।
लगाया था सु गंधोदक, शीश जय-जय ध्वनि करते।।6।।
किन्तु स्नान ही त्यागा, धरी निर्ग्रन्थ दीक्षा जब।
ध्यान धारा सहज वर्ते, प्रभु सब कर्म मल हरते।।7।।
पूर्ण निर्दोष निर्मल हो, तीर्थ प्रभु आप प्रगटाया।
बहायी ज्ञानमय गंगा, भव्य स्नान शुभ करते।।8।।
अहो कैसा समय होगा, लक्ष्य कर हर्ष उमगाता।
महा आनंद से हम भी, अर्चना नाथ की करते।।9।।
धन्य जिनबिम्ब है जग में, अहो चिद्बिम्ब दर्शाते।
नीर प्रासुक ही लेकर हम, प्रभो प्रक्षाल शुभ करते।।10।।
यत्न से करते परिमार्जन, प्रभो रोमांच तन में हो।
आत्म प्रभुता दिखाती है, अर्घ्य चरणों में जब धरते।।11।।
संजोए भावना स्वामी, होंय हम भी प्रभु के सम।
लगावें शीश गंधोदक, अहो! जिन-रूप उर धरते।।12।।

दोहा- लोकोत्तम मंगलमयी, अनन्य शरण जिननाथ।
प्रभु चरणों में शीश धर, हम भी हुए सनाथ।।13।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलाभिषेक पाठ

(दोहा)

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान।।

(अडिल्ल और गीता)

श्रीजिन जग में ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अन्त जू।।
इन्द्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनि।
कहि न सके तुम गुणगण हे त्रिभुवन धनी।।

अनुपम अमित तुम गुणनि वारिधि, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरै हम उर कोष में सो अकथ गुण-मणि राशि है।।
पै जिन! प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम ही में शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातैं नाम ही में भक्ति है।।1।।

ज्ञानावरणी दर्शन-आवरणी भने।
कर्म मोहिनी अन्तराय चारों हने।।
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इन्द्रादिक के मुकुट नये सुरथान में।।

तब इन्द्र जान्यो अवधि तैं, उठि सुरनयतु वंदत भयौ।
तुम पुण्य को प्रेरयो हरि ह्वै मुदित धनपति सौं कह्यो।।
अब वेगि जाय रचो समवसृति सफल सुरपद को करौ।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरौ।।2।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपति।
चल आयो तत्काल मोद धरैं अति।।
वीतराग छवि देखि शब्द जय-जय कह्यो।
देय प्रदच्छिना बार-बार वंदत भयौ।।

अति भक्ति भीनो नम्रचित ह्वै समवसरण रच्यो सही।
ताकी अनूपम शुभ गति को कहन समरथ कोउ नहीं।।
प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छाजहीं।
नगजड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं।।3।।

सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्‌भुत दिपै।
तापर वारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै।।
तीन छत्र सिर शोभित चौंसठ चमरजी।
महाभक्तियुत ढोरत हैं तहँ अमरजी।।

प्रभु तरन-तारन कमल ऊपर, अन्तरिक्ष विराजिया।
यह वीतरागदशा प्रतच्छ विलोकि, भविजन सुख लिया।।
मुनि आदि द्वादश सभा के भवि जीव मस्तकनायकैं।
बहुभाँति बारम्बार पूजैं, नमैं गुणगण गायकैं।।4।।

परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिन्ता भय गद दूषण नहीं।।
जन्म जरा मृति अरति शोक व्रिस्मय नसें।
राग रोष निद्रा मद मोह सबैं खसें।।

श्रम बिना श्रमजलरहितपावन, अमल ज्योति स्वरूपजी।
शरणागतनि की अशुचिता हरि, करत विमल अनूपजी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे प्रभु की शांत-मुद्रा को न्हवन जलतैं करैं।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति तैं, हम भानु ढिंग दीपक धरैं।।5।।

तुम तो सहज पवित्र यही निश्चय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो।।
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यौ।
महामलिन तन में वसुविधिवश दुख सह्यौ।।

बीत्यो अनंतो काल यह, मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिता हर एक तुम ही, भरहु वाँछा चित ठई।।
अब अष्टकर्म विनाश सब मल, दोष-रागादिक हरौ।
तनरूप कारागेह तैं, उद्धार शिववासा करौ।।6।।

मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।
आवागमन विमुक्त राग वर्जित भये।।
पर तथापि मेरो मनरथ पूरत सही।
नय-प्रमाणतैं जानि महा साता लही।।

पापाचरण तजि नह्वन करता चित्त में ऐसे धरूँ।
साक्षात् श्री अरहंत का मानों नह्वन परसन करूँ।।
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नशि शुभ बन्धतैं।
विधि अशुभ नसि शुभ बन्धतैं ह्वै शर्म, सब विधि नासतैं।।7।।

पावन मेरे नयन भये तुम दरस तैं।
पावन पाणि भये तुम चरननि परस तैं।।
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यान तैं।
पावन रसना मानी, तुम गुण गान तैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पावन भई परजाय मेरी, भयो मैं पूरण धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्ण भक्ति नहिं बनी।।
धनि धन्य ते बड़भागि भवि तिन नींव शिवघर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणि-कुम्भभरी भक्ति करी।।8।।

विघन-सघन-वन-दाहन दहन प्रचण्ड हो।
मोह-महातम-दलन प्रबल मार्तण्ड हो।।
ब्रह्मा विष्णु महेश आदि संज्ञा धरो।
जगविजयी जमराज नाश ताको करो।।

आनन्दकारण दुख निवारण, परम मंगलमय सही।
मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यो नहीं।।
चिंतामणि पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नौका जे चढ़े, ते भये भवदधि पार ही।।9।।

(दोहा)

तुम भवदधि तैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्ति को, हमैं उतारो पार।।10।।

(निर्मल वस्त्र से प्रतिमाजी को साफ कर निम्न श्लोक बोलकर गन्धोदक मात्र मस्तक पर दो अँगुली से सम्हालकर लगावें।)

निर्मलं निर्मलीकरणं, पावनं पापनाशनम्।
जिन चरणोदकं वंदे, अष्टकर्म विनाशनम्।।

देव दर्शन के बिना बाह्य जैन नहीं और आत्मदर्शन के बिना भाव जैन नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनय पाठ-1

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि-शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव-सुख के करतार।।3।।

हरता अघ अँधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास।।4।।

धर्मामृत उर जलधि सौं, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग भूप।।5।।

मैं वन्दौं जिनदेव को, करि अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव।।6।।

भविजन कौं भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भंडार।।7।।

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल।।8।।

तुम पद-पंकज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय।।9।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आप तैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव।।12।।

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।13।।

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यौ अबै, मेटो राग कुटेव।।14।।

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।

तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति, नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव-सिन्धु में, खेव लगाओ पार।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।

प्रत्येक जैन श्रावक को देव पूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप, और दान - ये षट् कर्म दिने-दिने प्रतिदिन अवश्य करना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप समान।।18।।
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हौं, नेक निहार निकार।।19।।
जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उर झार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार।।20।।
वन्दौं पाँचों परमगुरु सुर गुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश।।21।।
चौबीसौं जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यौ पाठ सुखदाय।।22।।

मंगल पाठ

मंगल मूरति परमपद, पंच धरों नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान।।1।।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंतदेव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव।।2।।
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन-वच-काय।।3।।
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करों, हरो असाता कर्म।।4।।
या विध मंगल करन तैं, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजा पीठिका (संस्कृत)

ॐ जय जय जय! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

मंगल विधान (संस्कृत)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः।।3।।
एसो पंच-णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलं।।4।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष-लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुलपुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीभगज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिनकल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवन्तो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्व.।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन-गृहे परमेष्ठिमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहन्तसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनवाणी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद- नायकमनन्त- चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ- सुदृशां सुकृतैकहेतु,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।1।।

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय।।2।।

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोधसुधाप्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोकविततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्।।4।।

अर्हत् पुराणपुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन्ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ यज्ञविधिप्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्ति मंगल पाठ

श्रीऋषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।।

श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।।

श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान्सः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।।

श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।।

श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।।

श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

करलो जिनवर की पूजन, आई पावन घड़ी।
आई पावन घड़ी, मन भावन घड़ी। टेक।।
– दुर्लभ यह मानव तन पाकर, करलो जिन गुणगान।
गुण अनन्त सिद्धों का सुमिरण, करके बनो महान। करलो।।
– धन्य धन्य सिद्धों की महिमा, नाश किया संसार।
निजस्वभाव से शिवपद पाया, अनुपम अगम अपार। करलो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

(प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करे)

नित्याप्रकंपाद्भुत–केवललौघाः स्फुरन्मनः पर्यय–शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान–बलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।1।।

कोष्ठस्थ–धान्योपममेकबीजं संभिन्न–संश्रोतृ–पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन–घ्राण–विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञान–बलाद्वहन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।3।।

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।4।।

जंघानल–श्रेणि–फलाम्बु–तंतु–प्रसून–बीजांकुर–चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैर–विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।

अणिम्निदक्षाः कुशलामहिम्नि लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि,
मनो–वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्व–वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाँश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।8।।

आमर्ष–सर्वौषधयस्तथाशीर्विषं–विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल–विड्जल्ल–मलौषधीशाःस्वस्तिक्रियासुःपरमर्षयोनः।।9।।

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधुस्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास–महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।10।।

(इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानम्, पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनय पाठ-2

(दोहा)

सफल जन्म मेरा हुआ, प्रभु दर्शन से आज।
भव समुद्र नहिं दीखता, पूर्ण हुए सब काज।।1।।

दुर्निवार सब कर्म अरु, मोहादिक परिणाम।
स्वयं दूर मुझसे हुए, देखत तुम्हें ललाम।।2।।

संवर कर्मों का हुआ, शान्त हुए गृह जाल।
हुआ सुखी सम्पन्न मैं, नहिं आये मम काल।।3।।

भव कारण मिथ्यात्व का, नाशक ज्ञान सुभानु।
उदित हुआ मुझमें प्रभो, दीखे आप समान।।4।।

मेरा आत्म स्वरूप जो, ज्ञानादिक गुण-खान।
आज हुआ प्रत्यक्ष सम, दर्शन से भगवान।।5।।

दीन भावना मिट गई, चिन्ता मिटी अशेष।
निज प्रभुता पाई प्रभो, रहा न दुख का लेश।।6।।

शरण रहा था खोजता, इस संसार मँझार।
सीखा जिनवर आपसे, आत्म शरण सुखकार।।7।।

निज स्वरूप में मगन हो, पाऊँ शिव अभिराम।
इसी हेतु मैं आपको, करता कोटि प्रणाम।।8।।

मैं वन्दौं जिनराज को, धर उर समता भाव।
तन-धन-जन जगजाल से, धरि विरागता भाव।।9।।

यही भावना है प्रभो, मेरी परिणति माँहिं।
राग-द्वेष की कल्पना, किंचित् उपजे नाहिं।।10।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजा पीठिका (भाषा)

(छन्द-सखी)

अरहन्त सिद्ध सूरि नामा, उपाध्याय साधु गुणधामा।
परमेष्ठी पद सुखकारी, पूजन करिहों दुःखहारी।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(छन्द-झूलना)

चार मंगल शरण श्रेष्ठ हैं लोक में,
आप्त अरु सिद्ध साधु दयामय धरम।
अन्य में ढूँढना सुख दुखकार है,
वे स्वयं सुख रहित सुख न उनका मरम।।
हे प्रभो आपको लख, ये निश्चय हुआ,
शरण अपनी से कटते स्वयं सब करम।
बाह्य दृष्टि तजूँ, अब निजातम भजूँ,
लीन निज में हुए से मिले पद परम।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

मंगल विधान भाषा

(छन्द-मत्तसवैया)

हूँ द्रव्यदृष्टि से अति पवित्र, परिणति ही मात्र अपावन है।
चिर से ही पर में भ्रमित रही, शुचिकारी तव आराधन है।।
हे प्रभो! शान्त नासाग्र दृष्टि, थिर मुद्रा हमें बताती है।
शान्ति शुचिता अन्तर में है, बाहर से कभी न आती है।।
है रूप हमारा मंगलमय, आराध्य हमारे मंगलमय।
रागादि विकारी भाव भगें, परिणति भी होवे मंगलमय।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम नाम मंत्र है मंगलमय, हे कर्ममुक्त! तुम मंगलमय।
सम्यक्त्व आदि गुण युक्त सिद्ध, मैं नमन करूँ हे मंगलमय।।

हो दुःख सभी तत्क्षण विनष्ट, स्मरण किये तुम सम निजरूप।
डाकिनि, भूत पिशाच, नागगद सभी दूर हों हे शिवभूप।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

गुण अनन्त हैं प्रभो आपके, मेरी है सामर्थ्य कहाँ।
सहस्रनाम से अर्चन करके, अर्घ्य चढ़ाऊँ आज यहाँ।।

ॐ ह्रीं भगवज्जिनस्याऽष्टाधिकसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

(तर्ज : दिन-रात मेरे स्वामी....)

जो तीन लोक स्वामी मुक्ति रमापति हैं।
हैं स्याद्वाद नायक, सानन्त चार जो हैं।।

कर वन्दना उन्हीं की, पूजा विधि करूँगा।
जो भव्य प्राणियों को, है पुण्य बन्ध हेतु।।

निज आत्मरूप महिमा, जिनने प्रकट दिखाई।
ऐसे त्रिलोक गुरु, पुंगव स्वस्ति दायक।।

उन पूर्ण ज्ञान-दर्शन-आनन्द-वीर्य वैभव।
दें प्रेरणा सतत, मुक्ति हेतु मुझको।।

निजभाव द्रव्यदृष्टि से शुद्ध जाना।
पर्याय शुद्धि हेतु, अवलम्ब मैंने लीना।।

बहु युक्तियों से अब तो, रागादि कर विनष्ट।
भूतार्थ यज्ञ द्वारा, मैं भी प्रभु बनूँगा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम, हे जगत हितंकर।
सब वस्तुयें तजूँगा, निज पूर्ण ज्ञान हेतु।।

नित पुण्य-पाप द्वारा परिणति हुई विकारी।
मैं पाप तो तजा है, अब पुण्य भी तजूँगा।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

स्वस्ति मंगल पाठ

(छन्द-मत्तसवैया)

श्री ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन सुमति सुमतिप्रदायक हैं।
श्री पद्मप्रभ अरु श्रीसुपार्श्व, चन्द्रप्रभ स्वस्ति दायक हैं।।
श्री पुष्पदंत शीतल श्रेयांस, श्री वासुपूज्य और विमल प्रभु।
श्री अनन्त धर्म और शान्ति कुंथु, मंगलमय मुक्ति विधायक हैं।।
अरनाथ मल्लि मुनिसुव्रतजी, नमिनाथ नेमि अरु पार्श्वप्रभु।
श्री वर्द्धमान जिन सुखवर्द्धक, निज पर विवेक प्रगटायक हैं।।
इन सम ही जड़ वैभव तजकर, सम्यक्त्वी इच्छामुक्त बनें।
निज का पुरुषार्थ मूल कारण, ये ही व्यवहार सहायक हैं।।
हो जिनवाणी अभ्यास सदा, तत्त्वों का सम्यक् निर्णय हो।
रागादि विकारी भाव भगें, जिनवाणी स्वस्ति दायक हो।।
द्रव्यानुयोग चरणानुयोग से, सत् श्रद्धा चारित्र धरें।
प्रथमानुयोग, करणानुयोग, दृग-ज्ञान-वृत्ति दृढ़ स्वच्छ करें।।
हैं बुद्धि ऋद्धियाँ प्रकट जिन्हें, पर लक्ष्य नहीं उन पर जिनका।
तप घोर करें आकाश चलें, है पार नहीं जिनके बल का।।
मन-वाँछित रूप बना सकते, भारी हल्का, लम्बा छोटा।
जो सर्वौषधियों की निधि है, ऋद्धि अक्षीण से ना टोटा।।
पर नहीं प्रयोग करें इनका, निजख्याति लाभ पूजा हेतु।
उन सम जड़ वैभव ठुकराऊँ, तब होवें वे मुक्ति सेतु।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव-शास्त्र-गुरु पूजन-1

(अडिल्ल)

प्रथम देव अरहंत सुश्रुत सिद्धान्त जू।
गुरु निरग्रंथ महंत मुकतिपुर-पंथ जू।।
तीन रतन जगमाँहि सु ये भवि ध्याइये।
तिनकी भक्ति-प्रसाद परम-पद पाइये।।

(दोहा)

पूजों पद अरहंत के, पूजों गुरुपद सार।
पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(हरिगीतिका एवं दोहा)

सुरपति उरग नरनाथ तिन करि, वन्दनीक सुपदप्रभा।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा।।
वर नीर क्षीर-समुद्र घट भरि, अग्र तसु बहुविधि नचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
मलिन वस्तु हर लेत सब, जल स्वभाव मल छीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व.।

जे त्रिजग-उदर मँझार प्रानी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन, सरस चन्दन घसि सचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

यह भव-समुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परम-पावन जथारथ, भक्तिवर नौका सही।।
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल, पुंज धरि त्रयगुण जचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
तंदुल सालि सुगंधि अति, परम अखंडित बीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

जे विनयवंत सुभव्य-उर-अंबुज प्रकाशन भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत, त्रिजग माँहि प्रधान हैं।।
लहि कुन्द-कमलादिक पहुप, भव-भव कुवेदन सों बचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
विविध भाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

अति सबल मद-कंदर्प जाको, क्षुधा-उरग अमान हैं।
दुस्सह भयानक तासु नाशन, को सुगरुड़ समान हैं।।
उत्तम छहों रस युक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

जे त्रिजग-उद्यम नाश कीने, मोह-तिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप-प्रकाशज्योति प्रभावली।।
इहभाँति दीप प्रजाल कंचन, के सुभाजन में खचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

स्व-पर प्रकाशक जोति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

जो कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगंधिता करि, सकल परिमलता हँसे।।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भव-ज्वलन माँहि नहीं पचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

अग्निमांहिं परिमल दहन, चंदनादि गुणलीन
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि. स्वाहा।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं।।
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

जे प्रधान फल-फल विषैं, पंचकरण-रस-लीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निर्मल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूँ।।
इह भाँति अर्घ्य चढ़ाय नित, भवि करत शिव-पंकति मचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

वसुविधि अर्घ्य संजोय कै, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न-भिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार।।

(पद्धरि)

चउ कर्म सु त्रेसठ प्रकृतिनाशि, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छ्यालिसगुणगंभीर।।
शुभ समवसरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर सीस धार।
देवाधिदेव अरहन्तदेव, वन्दों मन-वचन-तन करि सुसेव।।
जिनकी धुनि ह्वै ओंकाररूप, निर-अक्षरमय महिमा अनूप।
दश-अष्ट महाभाषा समेत, लघु भाषा सात शतक सुचेत।।
सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग।
रवि-शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय।।
गुरु आचारज उवझाय साधु, तननगन रत्नत्रयनिधि अगाध।
संसार देह वैराग धार, निरवांछि तपै शिव पद निहार।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुण छत्तिस पच्चिस आठ-बीस, भव-तारन-तरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरुनाम जपो मन-वचन-काय।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला महाऽर्घ्यं नि.।

(सोरठा)

कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै।
'द्यानत' सरधावान, अजर-अमर पद भोगवै।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

देव-शास्त्र-गुरु पूजन-2

केवल-रवि किरणों से जिसका, सम्पूर्ण प्रकाशित है अंतर।
उस श्री जिन-वाणी में होता, तत्त्वों का सुन्दरतम दर्शन।।
सद्दर्शन-बोध-चरण-पथ पर, अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण।
उन देव परम-आगम, गुरु को, शत-शत वंदन, शत-शत वंदन।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्...।
ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...।
ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।

इन्द्रिय के भोग मधुर-विष-सम, लावण्यमयी कंचन काया।
यह सब कुछ जड़ की क्रीड़ा है, मैं अब तक जान नहीं पाया।।
मैं भूल स्वयं निज वैभव को, पर ममता में अटकाया हूँ।
अब निर्मल सम्यक्-नीर लिये, मिथ्या-मल धोने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व.।

जड़-चेतन की सब परिणति प्रभु! अपने-अपने में होती है।
अनुकूल कहें प्रतिकूल कहें, यह झूठी मन की वृत्ती है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित, होकर संसार बढ़ाया है।
सन्तप्त हृदय प्रभु! चन्दन सम, शीतलता पाने आया है।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

उज्ज्वल हूँ कुन्द-धवल हूँ प्रभु! पर से न लगा हूँ किंचित् भी।
फिर भी अनुकूल लगें उन पर, करता अभिमान निरंतर ही।।
जड़ पर झुक-झुक जाता चेतन, की मार्दव की खण्डित काया।
निज शाश्वत अक्षय-निधि पाने, अब दास चरण-रज में आया।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तन में माया कुछ शेष नहीं।
निज अंतर का प्रभु! भेद कहूँ, उसमें ऋजुता का लेश नहीं।।
चिंतन कुछ फिर संभाषण कुछ, वृत्ति कुछ की कुछ होती है।
स्थिरता निज में प्रभु पाऊँ जो, अन्तर का कालुष धोती है।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

अब तक अगणित जड़ द्रव्यों से, प्रभु! भूख न मेरी शान्त हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही।।
युग-युग से इच्छा सागर में, प्रभु! गोते खाता आया हूँ।
चरणों में व्यंजन अर्पित कर, अनुपम रस पीने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मेरे चैतन्य सदन में प्रभु! चिर व्याप्त भयंकर अंधियारा।
श्रुत-दीप बुझा हे करुणा निधि! बीती नहिं कष्टों की कारा।
अतएव प्रभो! यह ज्ञान-प्रतीक, समर्पित करने आया हूँ।
तेरी अन्तर लौ से निज अन्तर, दीप जलाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जड़ कर्म घुमाता है मुझको, यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी।
मैं रागी-द्वेषी हो लेता, जब परिणति होती है जड़ की।।
यों भाव-करम या भाव-मरण, सदियों से करता आया हूँ।
निज अनुपम-गंध-अनल से प्रभु, पर-गंध जलाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

जग में जिसको निज कहता मैं, वह छोड़ मुझे चल देता है।
मैं आकुल-व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है।।
मैं शान्त निराकुल चेतन हूँ, है मुक्ति-रमा सहचर मेरी।
यह मोह तड़क कर टूट पड़े, प्रभु! सार्थक फल पूजा तेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

क्षण भर निज-रस को पी चेतन, मिथ्या-मल को धो देता है।
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनन्द अमृत पीता है।।
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल-रवि जगमग करता है।
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता, यह ही अर्हन्त अवस्था है।।
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु! निज गुण का अर्घ्य बनाऊँगा।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु! अर्हन्त अवस्था पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

भव वन में जी भर घूम चुका, कण-कण को जी भर-भर देखा।
मृग-सम मृग-तृष्णा के पीछे, मुझको न मिली सुख की रेखा।।

(बारह भावना)

झूठे जग के सपने सारे, झूठी मन की सब आशायें।
तन-जीवन-यौवन अस्थिर हैं, क्षण-भंगुर पल में मुरझायें।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्राट महाबल सेनानी, उस क्षण को टाल सकेगा क्या?
अशरण मृत काया में हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या?।।

संसार महा दुःख सागर के, प्रभु दुखःमय सुख-आभासों में।
मुझको न मिला सुख क्षण भर भी, कंचन-कामिनि प्रासादों में।।

मैं एकाकी एकत्व लिये, एकत्व लिये सब ही आते।
तन-धन को साथी समझा था, पर ये भी छोड़ चले जाते।।

मेरे न हुए ये, मैं इन से, अति भिन्न अखण्ड निराला हूँ।
निज में पर से अन्यत्वं लिये, निज सम रस पीने वाला हूँ।।

जिसके श्रृंगारों में मेरा, यह मँहगा जीवन घुल जाता।
अत्यन्त अशुचि जड़-काया से, इस चेतन का कैसा नाता।।

दिन-रात शुभाशुभ भावों से, मेरा व्यापार चला करता।
मानस, वाणी और काया से, आस्रव का द्वार खुला रहता।।

शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तस्तल।
शीतल समकित किरणें फूटें, संवर से जागे अन्तर्बल।।

फिर तप की शोधक बह्नि जगे, कर्मों की कड़ियाँ टूट पड़ें।
सर्वांग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्झर फूट पड़ें।।

हम छोड़ चलें यह लोक तभी, लोकान्त विराजें क्षण में जा।
निज लोक हमारा वासा हो, शोकान्त बनें फिर हमको क्या।।

जागे मम-दुर्लभ बोधि प्रभु! दुर्नय-तम सत्वर टल जावे।
बस ज्ञाता-दृष्टा रह जाऊँ, मद-मत्सर-मोह विनश जावे।।

चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी।
जग में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(देव-स्तवन)

चरणों में आया हूँ प्रभुवर! शीतलता मुझको मिल जावे।
मुरझाई ज्ञान-लता मेरी, निज अन्तर्बल से खिल जावे।।

सोचा करता हूँ भोगों से, बुझ जावेगी इच्छा-ज्वाला।
परिणाम निकलता है लेकिन, मानों पावक में घी डाला।।

तेरे चरणों की पूजा से, इन्द्रिय सुख की ही अभिलाषा।
अब तक न समझ ही पाया प्रभु! सच्चे सुख की भी परिभाषा।।

तुम तो अविकारी हो प्रभुवर! जग में रहते जग से न्यारे।
अतएव झुके तव चरणों में, जग के माणिक मोती सारे।।

(शास्त्र-स्तवन)

स्याद्वादमयी तेरी वाणी, शुभनय के झरने झरते हैं।
उस पावन नौका पर लाखों, प्राणी भव-वारिधि तिरते हैं।।

(गुरु-स्तवन)

हे गुरुवर! शाश्वत सुख दर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्शन करने वाला है।।

जब जग विषयों में रच-पच कर, गाफिल निद्रा में सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कंटक, पथ में विषकंटक बोता हो।।

हो अर्द्ध-निशा का सन्नाटा, वन में वनचारी चरते हों।
तब शान्त निराकुल मानस तुम, तत्त्वों का चिंतन करते हो।।

करते तप शैल-नदी-तट पर, तरु-तल वर्षा की झड़ियों में।
समता-रस पान किया करते, सुख-दुःख दोनों की घड़ियों में।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तर्ज्वाला हरती वाणी, मानों झड़ती हों फुलझड़ियाँ।
भव-बन्धन तड़-तड़ टूट पड़ें, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।।
तुम-सा दानी क्या कोई हो, जग को दे दीं जग की निधियाँ।
दिन-रात लुटाया करते हो, सम-शम की अविनश्वर मणियाँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यःऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे निर्मल देव! तुम्हें प्रणाम, हे ज्ञान-दीप आगम! प्रणाम।
हे शान्ति-त्याग के मूर्तिमान, शिव-पथ-पंथी गुरुवर! प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन-3

(दोहा)

शुद्धब्रह्म परमात्मा, शब्दब्रह्म जिनवाणि।
शुद्धातम साधकदशा, नमों जोड़ जुगपाणि।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

आशा की प्यास बुझाने को, अब तक मृग तृष्णा में भटका।
जल समझ विषय-विष भोगों को, उनकी ममता में था अटका।।
लख सौम्यदृष्टि तेरी प्रभुवर, समता रस पीने आया हूँ।
इस ज़ल ने प्यास बुझाई ना, इसको लौटाने लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

क्रोधानल से जब जला हृदय, चन्दन ने कोई न काम किया।
तन को तो शान्त किया इसने, मन को न मगर आराम दिया।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसार ताप से तप्त हृदय, संताप मिटाने आया हूँ।
चरणों में चन्दन अर्पण कर, शीतलता पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अभिमान किया अब तक जड़ पर, अक्षयनिधि को ना पहिचाना।
'मैं जड़ का हूँ' 'जड़ मेरा है' यह, सोच बना था मस्ताना।।
क्षत में विश्वास किया अब तक, अक्षत को प्रभुवर ना जाना।
अभिमान की आन मिटाने को, अक्षयनिधि तुमको पहिचाना।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

दिन-रात वासना में रहकर, मेरे मन ने प्रभु सुख माना।
पुरुषत्व गमाया पर प्रभुवर, उसके छल को ना पहिचाना।।
माया ने डाला जाल प्रथम, कामुकता ने फिर बाँध लिया।
उसका प्रमाण यह पुष्प-बाण, लाकर के प्रभुवर भेंट किया।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः काम-बाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पर पुद्गल का भक्षण करके, यह भूख मिटाना चाही थी।
इस नागिन से बचने को प्रभु, हर चीज बनाकर खाई थी।।
मिष्टान्न अनेक बनाये थे, दिन-रात भखे न मिटी प्रभुवर।
अब संयम-भाव जगाने को, लाया हूँ ये सब थाली भर।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः क्षुधा-रोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पहिले अज्ञान मिटाने को, दीपक था जग में उजियाला।
उससे न हुआ कुछ तब युग ने, बिजली का बल्ब जला डाला।।
प्रभु भेद-ज्ञान की आँख न थी, क्या कर सकती थी यह ज्वाला।
यह ज्ञान है कि अज्ञान कहो, तुमको भी दीप दिखा डाला।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभ-कर्म कमाऊँ सुख होगा, अब तक मैंने यह माना था।
पाप-कर्म को त्याग पुण्य को, चाह रहा अपनाना था।।
किन्तु समझकर शत्रु कर्म को, आज जलाने आया हूँ।
लेकर दशांग यह धूप, कर्म की धूम उड़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

भोगों को अमृत फल जाना, विषयों में निश-दिन मस्त रहा।
उनके संग्रह में हे प्रभुवर! मैं व्यस्त-त्रस्त-अभ्यस्त रहा।।
शुद्धात्मप्रभा जो अनुपम फल, मैं उसे खोजने आया हूँ।
प्रभु सरस सुवासित ये जड़ फल, मैं तुम्हें चढ़ाने लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः मोक्ष-फलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

बहूमूल्य जगत का वैभव यह, क्या हमको सुखी बना सकता।
अरे पूर्णता पाने में, इसकी क्या है आवश्यकता।।
मैं स्वयं पूर्ण हूँ अपने में, प्रभु है अनर्घ्य मेरी माया।
बहुमूल्य द्रव्यमय अर्घ्य लिये, अर्पण के हेतु चला आया।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

समयसार जिनदेव हैं, जिन-प्रवचन जिनवाणि।
नियमसार निर्ग्रन्थ गुरु, करें कर्म की हानि।।

(वीरछन्द)

हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, तुमको ना अब तक पहिचाना।
अतएव पड़ रहे हैं प्रभुवर, चौरासी के चक्कर खाना।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करुणानिधि तुमको समझ नाथ, भगवान भरोसे पड़ा रहा।
भरपूर सुखी कर दोगे तुम, यह सोचे सन्मुख खड़ा रहा।।
तुम वीतराग हो लीन स्वयं में, कभी न मैंने यह जाना।
तुम हो निरीह जग से कृत-कृत, इतना ना मैंने पहिचाना।।
प्रभु वीतराग की वाणी में, जैसा जो तत्त्व दिखाया है।
जो होना है सो निश्चित है, केवलज्ञानी ने गाया है।।
उस पर तो श्रद्धा ला न सका, परिवर्तन का अभिमान किया।
बनकर पर का कर्ता अब तक, सत् का न प्रभो सम्मान किया।।
भगवान तुम्हारी वाणी में, जैसा जो तत्त्व दिखाया है।
स्याद्वाद-नय, अनेकान्त-मय, समयसार समझाया है।।
उस पर तो ध्यान दिया न प्रभो, विकथा में समय गँवाया है।
शुद्धात्म रुचि न हुई मन में, ना मन को उधर लगाया है।।
मैं समझ न पाया था अब तक, जिनवाणी किसको कहते हैं।
प्रभु वीतराग की वाणी में, कैसे क्या तत्त्व निकलते हैं।।
राग धर्ममय धर्म रागमय, अब तक ऐसा जाना था।
शुभ-कर्म कमाते सुख होगा, बस अब तक ऐसा माना था।।
पर आज समझ में आया है, कि वीतरागता धर्म अहा।
राग-भाव में धर्म मानना, जिनमत में मिथ्यात्व कहा।।
वीतरागता की पोषक ही, जिनवाणी कहलाती है।
यह है मुक्ति का मार्ग निरन्तर, हमको जो दिखलाती है।।
उस वाणी के अन्तर्तम को, जिन गुरुओं ने पहिचाना है।
उन गुरुवर्यों के चरणों में, मस्तक बस हमें झुकाना है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिन-रात आत्मा का चिन्तन, मृदु-सम्भाषण में वही कथन।
निर्वस्त्र दिगम्बर काया से भी, प्रगट हो रहा अन्तर्मन ।।

निर्ग्रन्थ दिगम्बर सद्ज्ञानी, स्वातम में सदा विचरते जो।
ज्ञानीध्यानीसमरससानी, द्वादश विधि तप नित करते जो।।

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु, चरणों में शीष झुकाते हैं।
हम चले आपके कदमों पर, नित यही भावना भातें हैं।।

हो नमस्कार शुद्धातम को, हो नमस्कार जिनवर वाणी।
हो नमस्कार उन गुरुओं को, जिनकी चर्या समरसज्ञानी।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(दोहा)

दर्शन दाता देव हैं, आगम सम्यग्ज्ञान।
गुरु चारित्र की खानि हैं, मैं वंदौ धरि ध्यान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन-4

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरुवर अहो, मम स्वरूप दर्शाय।
किया परम उपकार मैं, नमन करूँ हर्षाय।।
आऊँ आप समीप जब, निज स्मरण सु आय।
निज प्रभुता निज में प्रभो, प्रत्यक्ष देय दिखाय।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शांस्त्र-गुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्...।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(वीरछन्द)

जब से स्व सन्मुख दृष्टि हुई, अविनाशी ज्ञायक रूप लखा।
शाश्वत अस्तित्व स्वयं का लखकर, जन्म मरण भय दूर हुआ।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्य: जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

निज परमतत्त्व जब से देखा, अद्भुत शीतलता पाई है।
आकुलतामय संतप्त परिणति, सहज नहीं उपजाई है।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्य: संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

निज अक्षय प्रभु के दर्शन से ही, अक्षय सुख विकसाया है।
क्षत् भावों में एकत्वपने का, सर्व विमोह पलाया है।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

निष्काम परम ज्ञायक प्रभुवर, जब से दृष्टि में आया है।
विभु ब्रह्मचर्य रस प्रकट हुआ, दुर्दान्त काम विनशाया है।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्य: काम-बाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

हुआ निमग्न तृप्ति सागर में, तृष्णा ज्वाल बुझाई है।
क्षुधा आदि सब दोष नशें, वह सहज तृप्ति उपजाई है।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्य: क्षुधा-रोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

ज्ञान भानु का उदय हुआ, आलोक सहज ही छाया है।
चिर मोह महातम हे स्वामी, क्षणभर में सहज विलाया है।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्य: मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

द्रव्य-भाव-नोकर्म शून्य, चैतन्य प्रभु जब से देखा।
शुद्ध परिणति प्रकट हुई, मिटती पर भावों की रेखा।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहो पूर्ण निज वैभव देखा, नहीं कामना शेष रही।
निर्वाञ्छक हो गया सहज मैं, निज में ही अब मुक्ति दिखी।।
श्री देव-शास्त्र-गुरुवर सदैव, मम परिणति में आदर्श रहो।
ज्ञायक में ही स्थिरता हो, निज भाव सदा मंगलमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्य: मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

निज से उत्तम दिखे न कुछ भी, पाई निज अनर्घ्य माया।
निज में ही अब हुआ समर्पण, ज्ञानानंद प्रकट पाया।।श्री देव.।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

ज्ञान मात्र परमात्मा, परम प्रसिद्ध कराय।
धन्य आज मैं हो गया, निज स्वरूप को पाय।।

(हरिगीतिका)

चैतन्य में ही मग्न हो, चैतन्य दरशाते अहो।
निर्दोष श्री सर्वज्ञ प्रभुवर, जगत्साक्षी हो विभो।।
सच्चे प्रणेता धर्म के, शिवमार्ग प्रकटाया प्रभो।
कल्याण वाँछक भविजनों के, आप ही आदर्श हो।।
शिवमार्ग पाया आप से, भवि पा रहे अरु पायेंगे।
स्वाराधना से आप सम ही, हुए हो रहे होयेंगे।।
तव दिव्य ध्वनि में दिव्य-आत्मिक, भाव उद्घोषित हुए।
गणधर गुरू आम्नाय में, शुभ शास्त्र तब निर्मित हुए।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्ग्रन्थ गुरूके ग्रन्थ ये, नित प्रेरणायें दे रहे।
निज भाव अरु पर भाव का, शुभ भेद ज्ञान जगा रहे।।
इस दुषम भीषण काल में, जिनदेव का जब हो विरह।
तब मात सम उपकार करते, शास्त्र ही आधार हैं।।
जग से उदास रहें स्वयं में, वास जो नित ही करें।
स्वानुभवमय सहज जीवन, मूलगुण परिपूर्ण हैं।।
नाम लेते ही जिन्हों का, हर्षमय रोमांच हो।
संसार-भोगों की व्यथा, मिटती परम आनन्द हो।।
परभाव सब निस्सार दिखते, मात्र दर्शन ही किये।
निज भाव की महिमा जगे, जिनके सहज उपदेश से।।
उन देव-शास्त्र-गुरू प्रति, आता सहज बहुमान है।
आराध्य यद्यपि एक, ज्ञायकभाव निश्चय ज्ञान है।।
प्रभु! अर्चना के काल में भी, भावना ये ही रहे।
धन्य होगी वह घड़ी, जब परिणति निज में रहे।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.।

(दोहा)

अहो! कहाँ तक मैं कहूँ, महिमा अपरम्पार।
निज महिमा में मगन हो, पाऊँ पद अविकार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

प्रभु-उपकार

आप मिले मानों मिली, मुक्ति ही साक्षात्।
नित्य मुक्त शुद्धात्मा, अन्तर हुआ प्रत्यक्ष।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री समुच्चय पूजन

(श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान बीस तीर्थंकर एवं श्री सिद्ध पूजन)

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूँ चित्त हुलसाय।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुसमूह! श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठी समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(वीरछन्द)

अनादिकाल से जग में स्वामिन् जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक्, रत्नत्रय निधि को नहिं पहचाना।।
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः, श्रीविदेहक्षेत्रेविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व.।

भव-आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने में अब तक मैंने, पर में की झूठी ममता है।।
चन्दन-सम शीतलता पाने, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः, श्रीविदेहक्षेत्रेविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व.।

अक्षयपद बिन फिरा जगत की, लख चौरासी योनी में।
अष्टकर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिंग लाया मैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षयनिधि निज की पाने अब, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्य:, श्रीविदेहक्षेत्रेविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

पुष्प सुगन्धी से आतम ने, शील स्वभाव नशाया है।
मन्मथ बाणों से बिंध करके, चहुँगति दुख उपजाया है।।
स्थिरता निज में पाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्य: श्रीविदेहक्षेत्रेविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

षट्रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शांत हुई।
आतमरस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई।।
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्य: श्रीविदेहक्षेत्रेविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जड़दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा।
निजगुण दरशायक ज्ञानदीप से, मिटा मोह का अंधियारा।।
यह दीप समर्पित करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्य: श्री विदेहक्षेत्रेविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्य: मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग-द्वेष नशायेगी।।
उस शक्ति दहन प्रगटाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्य:, श्रीविदेहक्षेत्रेविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

पिस्ता बदाम, श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिंग मैं ले आया।
आतमरस भीने निज गुण फल, मम मन अब उनमें ललचाया।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्य:, श्रीविदेहक्षेत्रेविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्य: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किये।।
ये अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्य:, श्रीविदेहक्षेत्रेविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु भगवान।
अब वरणूँ जय मालिका, करूँ स्तवन गुणगान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(भुजंगप्रपात)

नसे घातिया कर्म जु अर्हन्त देवा,
करें सुर-असुर-नर मुनि नित्य सेवा।
दरश-ज्ञान-सुख-बल-अनन्त के स्वामी,
छियालीस गुण युत महा-ईश नामी।।
तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी,
महा-मोह विध्वंसिनी मोक्ष दानी।
अनेकांतमय द्वादशांगी बखानी,
नमो लोक माता श्री जैनवाणी।।
विरागी अचारज उवज्झाय साधु,
दरश ज्ञान भण्डार समता अराधू।
नगन वेशधारी सु एका विहारी,
निजानन्द मण्डित मुकति पथ प्रचारी।।
विदेहक्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजें,
विहरमान बंदूँ सभी पाप भाजें।
नमूँ सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी,
अनाकुल समाधान सहजाभिरामी।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्यः श्रीविदेहक्षेत्रेविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला महाऽर्घ्यं नि.।

देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धरलें रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भवसागर जिय तर ले रे।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्घ्यावली

भूत भविष्यत् वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीत्रिकाल सम्बन्धि त्रिंशत् चतुर्विंशंतिभ्यो त्रिलोक सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुकोटि छप्पन लाख ऊपर, सहस्र सत्याणवें मानिये।
शतच्यार पै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये।।
तिहुँलोक भीतर राजते, सुर-असुर नर पूजा करें।
तिन भवन को हम अर्घ्य लेकै, पूजि हैं जग दुख हरें।।

ॐ ह्रीं श्रीत्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि - षट्पंचाशल्लक्ष - सप्तनवतिसहस्रचतु शतैकाशीति (८, ५६, ९७, ४८१) अकृत्रिम-जिन-चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि.।

चैत्य भक्ति आलोचन चाहूँ, कायोत्सर्ग अघ नासन हेत।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में, राजत है जिनबिंब अनेक।।
चतुर्निकाय के देव जजैं, ले अष्ट द्रव्य निजभक्ति समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूँ मैं, कर समाधि पाऊँ शिवखेत।।

ॐ ह्रीं श्रीकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसंबंधिजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं नि. स्वाहा।

पूर्व मध्य अपराह्न की बेला, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देववन्दना करूँ भाव से, सकल कर्म की नासनहार।।
पंच महागुरु सुमिरन करके, कायोत्सर्ग करूँसुखकार।
सहज़ स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊंगा मैं अब भव पार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(नो बार णमोकार मंत्र पढ़कर कायोत्सर्ग करें)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पंच परमेष्ठी पूजन

(वीरछन्द)

अर्हन्त सिद्ध आचार्य नमन, हे उपाध्याय हे साधु नमन।
जय पंच परम परमेष्ठी जय, भवसागर तारणहार नमन।।
मन-वच-काया पूर्वक करता हूँ, शुद्ध हृदय से आह्वानन।
मम हृदय बिराजो तिष्ठ तिष्ठ, सन्निकट होहु मेरे भगवन।।
निज आत्मतत्त्व की प्राप्ति हेतु, ले अष्ट द्रव्य करता पूजन।
तुम चरणों की पूजन से प्रभु, निज सिद्धरूप का हो दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

मैं तो अनादि से रोगी हूँ, उपचार कराने आया हूँ।
तुम सम उज्ज्वलता पाने को, उज्जवल जल भरकर लाया हूँ।।
मैं जन्म-जरा-मृत, नाश करूँ, ऐसी दो शक्ति हृदय स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचपमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

संसार-ताप में जल-जल कर, मैंने अगणित दुःख पाए हैं।
निज शान्त स्वभाव नहीं भाया, पर के ही गीत सुहाए हैं।।
शीतल चंदन हैं भेंट तुम्हें, संसार-ताप नाशो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचपमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुःखमय अथाह भवसागर में, मेरी यह नौका भटक रही।
शुभ-अशुभ भाव की भँवरो में, चैतन्य शक्ति निज अटक रही।।
तन्दुल है धवल तुम्हें अर्पित, अक्षयपद प्राप्त करूँ स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतं निर्व. स्वाहा।

मैं काम व्यथा से घायल हूँ, सुख की न मिली किंचित् छाया।
चरणों में पुष्प चढ़ाता हूँ, तुमको पाकर मन हर्षाया।।
मैं कामभाव विध्वंस करूँ, ऐसा दो शील हृदय स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्योकामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

मैं क्षुधा रोग से व्याकुल हूँ,चारों गति में भरमाया हूँ।
जग के सारे पदार्थ पाकर भी, तृप्त नहीं हो पाया हूँ।।
नैवेद्य समर्पित करता हूँ, यह क्षुधा रोग मेटो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।
ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोहान्ध महा-अज्ञानी मैं, निज को पर का कर्ता माना।
मिथ्यातम के कारण मैंने, निज आत्मस्वरूप न पहिचाना।।
मैं दीप समर्पण करता हूँ, मोहान्धकार क्षय हो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला धधक रही, संसार बढ़ रहा है प्रतिफल।
संवर से आस्रव को रोकूँ, निर्जरा सुरभि महके पल-पल।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं धूप चढ़ाकर अब आठों, कर्मों का हनन करूँ स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

निज-आत्मतत्त्व का मनन करूँ, चिंतवन करूँ निज चेतन का।
दो श्रद्धा-ज्ञान-चरित्र श्रेष्ठ, सच्चा पथ मोक्ष निकेतन का।।
उत्तम फल चरण चढ़ाता हूँ, निर्वाण महा फल हो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्रीपंचपमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाया हूँ।
अब तक के संचित कर्मों का, मैं पुंज जलाने आया हूँ।।
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, अविचल अनर्घ्य पद दो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(छन्द-पद्धरि)

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, निज ध्यानलीन गुणमय अपार।
अष्टादश दोष रहित जिनवर, अर्हन्त देव को नमस्कार।।1।।

अविकल अविकारी अविनाशी, निजरूप निरंजन निराकार।
जय अजर अमर हे मुक्तिकंत, भगवंत सिद्ध को नमस्कार।।2।।

छत्तीस सुगुण से तुम मण्डित, निश्चय रत्नत्रय हृदय धार।
हे मुक्ति वधू के अनुरागी, आचार्य सुगुरु को नमस्कार।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकादश अंग पूर्व चौदह के, पाठी गुण पच्चीस धार।
बाह्यन्तर मुनि मुद्रा महान, श्री उपाध्याय को नमस्कार।।4।।
व्रत समिति गुप्ति चारित्र धर्म, वैराग्य भावना हृदय धार।
हे द्रव्य-भाव संयममय मुनिवर, सर्व साधु को नमस्कार।।5।।
बहु पुण्य संयोग मिला नरतन, जिनश्रुत जिनदेव चरणदर्शन।
हो सम्यग्दर्शन प्राप्त मुझे, तो सफल बने मानव जीवन।।6।।
निज-पर का भेद जानकर मैं, निज को ही निज में लीन करूँ।
अब भेद ज्ञान के द्वारा मैं, निज आत्म स्वयं स्वाधीन करूँ।।7।।
निज में रत्नत्रय धारण कर, निज परिणति को ही पहचानूँ।
पर-परिणति से हो विमुख सदा, निज ज्ञानतत्व को ही जानूँ।।8।।
जब ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञाता विकल्प तज, शुक्लध्यान मैं ध्याऊँगा।
तब चार घातिया क्षय करके, अर्हन्त महापद पाऊँगा।।9।।
है निश्चित सिद्ध स्वपद मेरा, हे प्रभु कब इसको पाऊँगा।
सम्यक् पूजा फल पाने को, अब निजस्वभाव में आऊँगा।।10।।
अपने स्वरूप की प्राप्ति हेतु, हे प्रभु मैंने की है पूजन।
तब तक चरणों में ध्यान रहे, जब तक न प्राप्त हो मुक्ति सदन।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपांध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे मंगल रूप अमंगल हर, मंगलमय मंगल गान करूँ।
मंगल में प्रथम श्रेष्ठ मंगल, नवकार मन्त्र का ध्यान करूँ।।12।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

जाप्यमंत्र - *ॐ ह्रीं श्री अ सि आ उ सा नमः।*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वीतराग देव पूजन

(दोहा)

शुद्धातमं में मगन हो, परमातम पद पाय।
भविजन को शुद्धात्मा, उपादेय दरशाय।।
जाय बसे शिव लोक में, अहो अहो जिनराज।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, आयो पूजन काज।।

ॐ ह्रीं श्रीवीतराग देव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवीतराग देव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवीतराग देव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-मत्तसवैया)

ज्ञानानुभूति ही परमामृत है, ज्ञानमयी मेरी काया।
है परम पारिणामिक निष्क्रिय, जिसमें कुछ स्वाँग न दिखलाया।।
मैं देख स्वयं के वैभव को, प्रभुवर अति ही हर्षाया हूँ।
अपनी स्वाभाविक निर्मलता, अपने अंतर में पाया हूँ।।
थिर रह न सका उपयोग प्रभो, बहुमान आपका आया है।
समतामय निर्मल जल ही प्रभु, पूजन के योग्य सुहाया है।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

है सहज अकर्त्ता ज्ञायक प्रभु, ध्रुव रूप सदा ही रहता है।
सागर की लहरों सम जिसमें, परिणमन निरंतर होता है।।
हे शान्ति सिन्धु! अवबोधमयी, अद्भुत तृप्ति उपजाई है।
अब चाह दाह प्रभु शमित हुई, शीतलता निज में पाई है।।
विभु! अशरण जग में शरण मिले, बहुमान आपका आया है।
चैतन्य सुरभिमय चन्दन ही, पूजन के योग्य सुहाया है।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि: स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब भान हुआ अक्षय पद का, क्षत् का अभिमान पलाया है।
प्रभु निष्कलंक निर्मल ज्ञायक, अविचल अखण्ड दिखलाया है।।
जहाँ क्षायिक भाव भी भिन्न दिखे, फिर अन्य भाव की कौन कथा।
अक्षुण्ण आनन्द निज में विलसे, निःशेष हुई अब सर्व व्यथा।।
अक्षय स्वरूप दातार नाथ, बहुमान आपका आया है।
निरपेक्ष भावमय अक्षत ही, पूजन के योग्य सुहाया है।।
ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

चैतन्य ब्रह्म की अनुभूतिमय, ब्रह्मचर्य रस प्रगटाया।
भोगों की अब मिटी वासना, दुर्विकल्प भी नहीं आया।।
भोगों के तो नाम मात्र से, भी कम्पित मन हो जाता।
मानो आयुध से लगते हैं, तब त्राण स्वयं में ही पाता।।
हे कामजयी! निज में रम जाऊँ, यही भावना मन आनी।
श्रद्धा सुमन समर्पित जिनवर, काम बुद्धि सब विसरानी।।
ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

निज आत्म अतीन्द्रिय रस पीकर, तुम तृप्त हुए त्रिभुवन स्वामी।
निज में ही सम्यक् तृप्ति की विधि, तुमसे सीखी जगनामी।।
अब कर्त्ता भोक्ता बुद्धि छोड़, ज्ञाता रह निज-रस पान करूँ।
इन्द्रिय विषयों की चाह मिटी, सर्वांग सहज आनंदित हूँ।।
निज में ही ज्ञानानन्द मिला, बहुमान आपका आया है।
परम तृप्तिमय अकृत बोध ही, पूजन योग्य सुहाया है।।
ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

मोहान्धकार में भटका था, सम्यक् प्रकाश निज में पाया।
प्रतिभासित होता हुआ स्वज्ञायक, सहज स्वानुभव में आया।।
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0-In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रिय बिन सहज, निरालम्बी प्रभु, सम्यग्ज्ञान ज्योति प्रगटी।
चिर मोह अंधेरी हे जिनवर, अब तुम समीप क्षण में विघटी।।
अस्थिर परिणति में हे भगवन्!, बहुमान आपका आया है।
अविनाशी केवलज्ञान जगे, प्रभु ज्ञान प्रदीप जलाया है।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

निष्क्रिय निष्कर्म परम ज्ञायक, ध्रुव ध्येय स्वरूप अहो पाया।
तब ध्यान अग्नि प्रज्ज्वलित हुई, विघटी पर-परिणति की माया।।
जागी प्रतीति अब स्वयं सिद्ध, भव भ्रमण भ्रांति सब दूर हुई।
असंयुक्त निर्बन्ध सुनिर्मल, धर्म परिणति प्रकट हुई।।
अस्थिरता जन्य विकार मिटे, मैं शरण आपकी हूँ आया।
बहुमानभावमय धूप धरूँ, निष्कर्म तत्त्व मैंने पाया।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि. स्वाहा।

परिपूर्ण सहज ही है आतम, कमी नहीं कुछ दिखलावे।
गुण अनन्त सम्पन्न प्रभु, जिसकी दृष्टि में आ जावे।।
होय अयाची लक्ष्मीपति, फिर वाँछा ही नहीं उपजावे।
स्वात्मोपलब्धिमय मुक्ति दशा का, सत्पुरुषार्थ सु प्रगटावे।।
अफल दृष्टि प्रगटी प्रभुवर, बहुमान आपका आया है।
निष्काम भावमय पूजन का, विभु परमभाव फल पाया है।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

निज अविचल अनर्घ्य पद पाया, सहज प्रमोद हुआ भारी।
ले भावार्घ्य अर्चना करता, निज अनर्घ्य वैभव धारी।।
चक्री इन्द्रादिक के पद भी, नहिं आकर्षित कर सकते।
अखिल विश्व के रम्य भोग भी, मोह नहीं उपजा सकते।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निजानन्द में तृप्तिमय ही, होवे काल अनन्त प्रभो।
ध्रुव अनुपम शिव पदवी प्रगटे, निश्चय ही भगवन्त अहो।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

(तर्ज-बड़े भाग्य से हमको मिला जिनधर्म..एवं मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक..)

प्रभो ! आपने एक ज्ञायक बताया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।
येही रूप मेरा, मुझे आज भाया।
महानन्द मैंने, स्वयं में ही पाया।।टेक।।

भव-भव भटकते, बहुत काल बीता।
रहा आज तक मोह-मदिरा ही पीता।।
फिरा ढूँढ़ता सुख विषयों के माहीं।
मिली किन्तु उनमें असह्य वेदना ही।।
महाभाग्य से आपको, देव पाया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।1।।

कहाँ तक कहूँ नाथ, महिमा तुम्हारी।
निधि आत्मा की सु, दिखलाई भारी।।
निधि प्राप्ति की प्रभु, सहज विधि बताई।
अनादि की पामरता, बुद्धि पलाई।।
परम भाव मुझको, सहज ही दिखाया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।2।।

विस्मय से प्रभुवर, था तुमको निरखता।
महामूढ़ दुखिया, स्वयं को समझता।।
स्वयं ही प्रभु हूँ, दिखे आज मुझको।
महाहर्ष मानो, मिला मोक्ष ही हो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं चिन्मात्र ज्ञायक हूँ, अनुभव में आया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।3।।
अस्थिरता जन्य, प्रभो दोष भारी।
खटकती है रागादि परिणति विकारी।।
विश्वास है शीघ्र ये भी मिटेगी।
स्वभाव के सन्मुख यह कैसे टिकेगी?
नित्य-निरंजन का अवलम्ब पाया।
तिहूँ लोक में नाथ अनुपम जताया।।4।।
दृष्टि हुई आप सम, ही प्रभो जब।
परिणतिं भी होगी, तुम्हारे ही सम तब।।
नहीं मुझको चिन्ता, मैं निर्दोष ज्ञायक।
नहीं पर से सम्बन्ध, मैं ही ज्ञेय ज्ञायक।।
हुआ दुर्विकल्पों का, जिनवर सफाया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।5।।
सर्वांग सुखमय, स्वयं सिद्ध निर्मल।
शक्ति अनन्तमयी, एक अविचल।।
बिन्मूर्ति चिन्मूर्ति, भगवान आत्मा।
तिहूँ जग में नमनीय, शाश्वत चिदात्मा।।
हो अद्वैत वन्दन, प्रभो हर्ष छाया।
तिहूँ लोक में नाथ, अनुपम जताया।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवायऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(दोहा)

आपहि ज्ञायक देव है, आप आपका ज्ञेय।
अखिल विश्व में आप ही, ध्येय ज्ञेय श्रद्धेय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सिद्ध पूजन-1

(दोहा)

चिदानन्द स्वातमरसी, सत् शिव सुन्दर जान।
ज्ञाता-दृष्टा लोक के, परम सिद्ध भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्टिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते !सिद्धपरमेष्टिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्टिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

ज्यों-ज्यों प्रभुवर जल पान किया, त्यों-त्यों तृष्णा की आग जली।
थी आश की प्यास बुझेगी अब, पर यह सब मृगतृष्णा निकली।।
आशा-तृष्णा से जला हृदय, जल लेकर चरणों में आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्म-जरा मृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

तन का उपचार किया अब तक, उस पर चंदन का लेप किया।
मल-मलकर खूब नहा करके, तन के मल का विक्षेप किया।।
अब आतम के उपचार हेतु, तुमको चन्दन सम है पाया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

सचमुच तुम अक्षत हो प्रभुवर, तुम ही अखण्ड अविनाशी हो।
तुम निराकार अविचल निर्मल, स्वाधीन सफल सन्यासी हो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ले शालिकणों का अवलम्बन, अक्षयपद! तुमको अपनाया।।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शत्रु जगत का प्रबल काम, तुमने प्रभुवर उसको जीता।
हो हार जगत के वैरी की, क्यों नहिं आनन्द बढ़े सबका।।
प्रमुदित मन विकसित सुमन नाथ, मनसिज को ठुकराने आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं समझ रहा था अब तक प्रभु, भोजन से जीवन चलता है।
भोजन बिन नरकों में जीवन, भरपेट मनुज क्यों मरता है।।
तुम भोजन बिन अक्षय सुखमय, यह समझ त्यागने हूँ आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलोक ज्ञान का कारण है, इन्द्रिय से ज्ञान उपजता है।
यह मान रहा था पर क्यों कर, जड़-चेतन-सर्जन करता है।।
मेरा स्वभाव है ज्ञानमयी, यह भेदज्ञान पा हरषाया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिन मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरा स्वभाव चेतनमय है, इसमें जड़ की कुछ गंध नहीं।
मैं हूँ अखण्ड चिद्पिण्ड चण्ड, पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।।
यह धूप नहीं, जड़-कर्मों की रज आज उड़ने मैं आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कर्मों का फल विषय-भोग, भोगों में मानस रमा रहा।
नित नई लालसायें जागीं, तन्मय हो उनमें समा रहा।।
रागादि विभाव किये जितने, आकुलता उनका फल पाया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल पिया और चन्दन चरचा, मालायें सुरभित सुमनों की।
पहनीं तन्दुल सेये व्यंजन, दीपावलियाँ की रत्नों की।।
सुरभी धूपायन की फैली, शुभ-कर्मों का सब फल पाया।
आकुलता फिर भी बनी रही, क्या कारण जान नहीं पाया।।
जब दृष्टि पड़ी प्रभुजी तुम पर, मुझको स्वभाव का भान हुआ।
सुख नहीं विषय-भोगों में है, तुमको लख यह सद्ज्ञान हुआ।।
जल से फल तक का वैभव यह, मैं आज त्यागने हूँ आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

(दोहा)

आलोकित हो लोक में, प्रभु परमात्म-प्रकाश।
आनन्दामृत पानकर, मिटे सभी की प्यास।।

(छन्द-पद्धरि)

जय ज्ञानमात्र ज्ञायक स्वरूप, तुम हो अनन्त चैतन्य रूप।
तुम हो अखण्ड आनन्द पिण्ड, मोहारि दलन को तुम प्रचण्ड।।

रागादि विकारी भाव जार, तुम हुए निरामय निर्विकार।
निर्द्वन्द निराकुल निराधार, निर्मम निर्मल हो निराकार।।

नित करत रहत आनन्द रास, स्वाभाविक परिणति में विलास।
प्रभु-शिव-रमणी के हृदय हार, नित करत रहत निज में विहार।।

प्रभु भवदधि यह गहरो अपार, बहते जाते सब निराधार।
निज परिणति का सत्यार्थ भान, शिवपद दाता जो तत्त्वज्ञान।।

पाया नहीं मैं उसको पिछान, उल्टा ही मैंने लिया मान।
चेतन को जड़मय लिया जान, तन में अपनापा लिया मान।।

शुभ-अशुभ राग जो दुःखखान, उसमें माना आनन्द महान।
प्रभु अशुभ कर्म को मान हेय, माना पर शुभ को उपादेय।।

जो धर्म-ध्यान आनन्द रूप, उसको माना मैं दुःख स्वरूप।
मनवांछित चाहे नित्य भोग, उनको ही माना है मनोग।।

इच्छा-निरोध की नहीं चाह, कैसे मिटता भव-विषय-दाह।
आकुलतामय संसार सुःख, जो निश्चय से है महा-दुःख।।

उसकी ही निश-दिन करी आश, कैसे कटता संसार पाश।
भव-दुख का पर को हेतु जान, पर से ही सुख को लिया मान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं दान दिया अभिमान ठान, उसके फल पर नहिं दिया ध्यान।
पूजा कीनी वरदान माँग, कैसे मिटता संसार स्वाँग।।
तेरा स्वरूप लख प्रभु आज, हो गये सफल सम्पूर्ण काज।
मो उर प्रगट्यो प्रभु भेदज्ञान, मैंने तुमको लीना पिछान।।
तुम पर के कर्त्ता नहीं नाथ, ज्ञाता हो सबके एक साथ।
तुम भक्तों को कुछ नहीं देत, अपने समान बस बना लेत।।
यह मैंने तेरी सुनी आन, जो लेवे तुम को बस पिछान।
वह पाता है कैवल्यज्ञान, होता परिपूर्ण कला-निधान।।
विपदामय परपद है निकाम, निजपद ही है आनन्द धाम।
मेरे मन में बस यही चाह, निजपद को पाऊँ हे जिनाह।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(दोहा)

पर का कुछ नहिं चाहता, चाहूँ अपना भाव।
निज-स्वभाव में थिर रहूँ, मेटो सकल विभाव।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री सिद्ध पूजन-2

(हरिगीतिका)

निज वज्र पौरुष से प्रभो! अन्तर-कलुष सब हर लिये।
प्रांजल[1] प्रदेश-प्रदेश में, पीयूष निर्झर झर गये।।
सर्वोच्च हो अतएव बसते लोक के उस शिखर रे।
तुम को हृदय में स्थाप, मणि-मुक्ता चरण को चूमते।।

1. शुद्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्!

(वीरछन्द)

शुद्धातम-सा परिशुद्ध प्रभो! यह निर्मल नीर चरण लाया।
मैं पीड़ित निर्मम ममता से, अब इसका अन्तिम दिन आया।।
तुम तो प्रभु अंतर्लीन हुए, तोड़े कृत्रिम सम्बन्ध सभी।
मेरे जीवन-धन तुमको पा, मेरी पहली अनुभूति जगी।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्म-जरा मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति.. ।

मेरे चैतन्य-सदन में प्रभु! धू धू क्रोधानल जलता है।
अज्ञान-अमा[1] के अंचल में, जो छिपकर पल-पल पलता है।।
प्रभु! जहाँ क्रोध का स्पर्श नहीं, तुम बसो मलय की महकों में।
मैं इसीलिये मलयज लाया क्रोधासुर भागे पलकों में।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसार-तापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति.. ।

अधिपति प्रभु! धवल भवन[2] के हो,और धवल तुम्हारा अन्तस्तल।
अन्तर के क्षत सब विक्षत कर, उभरा स्वर्णिम सौंदर्य विमल।।
मैं महामान से क्षत-विक्षत, हूँ खण्ड-खण्ड लोकांत-विभो।
मेरे मिट्टी के जीवन में, प्रभु! अक्षत की गरिमा भर दो।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति.. ।

---

1. अमावस्या 2. सिद्धशिला, निर्मल-चैतन्य-भवन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चैतन्य-सुरभि की पुष्प वाटिका, में विहार नित करते हो।
माया की छाया रंच नहीं, हर बिन्दु सुधा की पीते हो।।
निष्काम प्रवाहित हर हिलोर, क्या काम काम की ज्वाला से।
प्रत्येक प्रदेश प्रमत्त हुआ, पाताल-मधु-मधुशाला[1] से।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसमाय पुष्पं निर्वपामीति.. ।

यह क्षुधा देह का धर्म प्रभो! इसकी पहिचान कभी न हुई।
हर पल तन में तन्मयता, क्षुत-तृष्णा अविरल पीन[2] हुई।।
आक्रमण क्षुधा का सह्य नहीं, अतएव लिये हैं व्यंजन ये।
सत्वर[3] तृष्णा को तोड़ प्रभो! लो, हम आनंद-भवन पहुँचे।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति.. ।

विज्ञान नगर के वैज्ञानिक, तेरी प्रयोगशाला विस्मय।
कैवल्य-कला में उमड़ पड़ा, सम्पूर्ण विश्व का ही वैभव।।
पर तुम तो उससे अति विरक्त, नित निरखा करते निज निधियाँ।
अतएव प्रतीक प्रदीप लिये, मैं मना रहा दीपावलियाँ[4]।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति.. ।

तेरा प्रासाद महकता प्रभु! अति दिव्य दशांगी[5] धूपों से।
अतएव निकट नहिं आ पाते, कर्मों के कीट-पतंग अरे।।
यह धूप सुरभि-निर्झरणी, मेरा पर्यावरण[6] विशुद्ध हुआ।
छक गया योग-निद्रा[7] में प्रभु! सर्वांग अमी[8] है बरस रहा।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति.. ।

---

1. शुद्ध अन्तस्तत्त्व का आनन्द भवन 2. पुष्ट 3. अविलम्ब 4.महोत्सव
5. दशधर्मों की 6. अन्तरंग प्रदूषण 7. आनन्द समाधि 8. अमृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज लीन परम स्वाधीन बसो, प्रभु! तुम सुरम्य शिव–नगरी में।
प्रति पल बरसात गगन[1] से हो, रसपान करो शिव–गगरी में।।
ये सुरतरूओं के फल साक्षी, यह भव–संतति का अंतिम क्षण।
प्रभु! मेरे मंडप में आओ, है आज मुक्ति का उद्घाटन।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति.. ।

तेरे विकीर्ण[2] गुण सारे प्रभु! मुक्ता–मोदक से सघन हुए।
अतएव रसास्वादन करते, रे! घनीभूति अनुभूति लिये।।
हे नाथ! मुझे भी अब प्रतिक्षण, निज अंतर–वैभव की मस्ती।
है आज अर्घ्य की सार्थकता, तेरी अस्ति मेरी बस्ती।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति.. ।

जयमाला

(दोहा)

चिन्मय हो, चिद्रूप प्रभु! ज्ञाता मात्र चिदेश।
शोध–प्रबन्ध चिदात्म के,[3] सृष्टा तुम ही एक।।1।।

(छन्द–रेखता)

जगाया तुमने कितनी बार! हुआ नहिं चिर–निद्रा का अन्त।
मदिर[4] सम्मोहन ममता का, अरे! बेचेत पड़ा मैं सन्त।।2।।

घोर तम छाया चारों ओर, नहीं निज सत्ता की पहिचान।
निखिल जड़ता दिखती सप्राण, चेतना अपने से अनजान।।3।।

---

1. शून्य चैतन्य 2. बिखरे हुये 3. आत्मा–के शुद्धि–विधान की शोध
4. मादक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान की प्रतिफल उठे तरंग, झाँकता उसमें आतमराम।
अरे! आबाल सभी गोपाल, सुलभ सबको चिन्मय अभिराम।।4।।

किंतु पर सत्ता में प्रतिबद्ध, कीर–मर्कट–सी[1] गहल अनन्त।
अरे! पाकर खोया भगवान, न देखा मैंने कभी बसन्त।।5।।

नहीं देखा निज शाश्वत देव, रही क्षणिका पर्यय की प्रीति।
क्षम्य कैसे हों ये अपराध? प्रकृति की यही सनातन रीति।।6।।

अतः जड़ कर्मों की जंजीर, पड़ी मेरे सर्वात्म प्रदेश।
और फिर नरक निगोदों बीच, हुए सब निर्णय हे सर्वेश।।7।।

घटा घन विपदा की बरसी, कि टूटी शंपा[2] मेरे शीश।
नरक में पारद–सा तन टूक, निगोदों मध्य अनंती मीच[3]।।8।।

करें क्या स्वर्ग सुखों की बात, वहाँ की कैसी अद्‌भुत टेव।
अन्त में बिलखे छह–छह मास, कहें हम कैसे उसको देव।।9।।

दशा चारों गति की दयनीय, दया का किन्तु न यहाँ विधान।
शरण जो अपराधी को दे, अरे! अपराधी वह भगवान।।10।।

"अरे! मिट्टी की काया बीच, महकता चिन्मय भिन्न अतीव।
शुभाशुभ की जड़ता तो दूर, पराया ज्ञान वहाँ परकीय।।11।।

अहो! 'चित्' परम अकर्तानाथ, अरे! वह निष्क्रिय तत्त्व विशेष।
अपरिमित अक्षय वैभव–कोष", सभी ज्ञानी का यह परिवेश[4]।।12।।

बताये मर्म अरे! यह कौन, तुम्हारे बिन वैदेही नाथ?
विधाता शिव–पथ के तुम एक, पड़ा मैं तस्कर दल के हाथ।।13।।

किया तुमने जीवन का शिल्प[5], खिरे सब मोह, कर्म और गात[6]।
तुम्हारा पौरुष झंझावात[7], झड़ गये पीले–पीले पात।।14।।

1. तोता और बंदर जैसी 2. बिजली, 3. मृत्यु 4. अनुभूति
5. सुन्दर रचना 6. शरीर 7. तूफान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं प्रज्ञा–आवर्त्तन[1] शेष, हुए सब आवागमन अशेष।
अरे प्रभु! चिर–समाधि में लीन, एक में बसते आप अनेक।।15।।

तुम्हारा चित्–प्रकाश कैवल्य, कहें तुम ज्ञायक लोकालोक।
अहो! बस ज्ञान जहाँ हो लीन, वही है ज्ञेय, वही है भोग।।16।।

योग चांचल्य[2] हुआ अवरुद्ध, सकल चैतन्य निकल निष्कंप।
अरे! ओ योग रहित योगीश! रहो यों काल अनन्तानन्त।।17।।

जीव कारण–परमात्म त्रिकाल, वही है अंतस्तत्त्व अखण्ड।
तुम्हें प्रभु! रहा वही अवलम्ब, कार्य परमात्म हुए निर्बन्ध।।18।।

अहो! निखरा कांचन चैतन्य, खिले सब आठों कमल[3] पुनीत।
अतीन्द्रिय सौख्य चिरंतन भोग, करो तुम धवल–महल के बीच।।19।।

उछलता मेरा पौरुष आज, त्वरित टूटेंगे बंधन नाथ।
अरे! तेरी सुख–शैय्या बीच, होगा मेरा प्रथम प्रभात।।20।।

प्रभो! बीती विभावरी[4] आज, हुआ अरुणोदय शीतल छाँव।
झूमते शांति–लता के कुंज, चलें प्रभु! अब अपने उस गाँव।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चिर–विलास चिद्ब्रह्म में, चिर–निमग्न भगवंत।
द्रव्य[5]–भाव[6] स्तुति से प्रभो! वंदन तुम्हें अनंत।।22।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

---

1. ज्ञप्ति–परिवर्तन 2. आत्मप्रदेशों का कम्पन 3. आठ गुण 4. रात
5. उत्कृष्ट भक्ति परिणाम 6. निज शुद्धात्म संवेदन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृतीय खण्ड : श्री तीर्थङ्कर जिन पूजन संग्रह

श्री चौबीस तीर्थङ्कर पूजन-1

(वीरछन्द)

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजित सुरराय।।
विमल अनन्त धर्म जस-उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांत चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांत चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादिमहावीरांत चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(छन्द-अवतार)

मुनि-मन-सम उज्जवल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
भरि कनक-कटोरी धीर, दीनी धार धरा।।
चौबीसौं श्री जिनचन्द्र, आनन्द-कन्द सही।
पद-जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांतेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी।
जिन-चरनन देत चढ़ाय भव-आताप हरी।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांतेभ्यो संसारतापविनाशाय चंदनं निर्व.।

तन्दुल सितसोम-समान, सुन्दर अनियारे।
मुक्ताफल की उनमान पुञ्ज धरौं प्यारे।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादिमहावीरांतेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर-कंज कदंब कुरण्ड, सुमन सुगन्ध भरे।
जिन-अग्र धरौं गुन-मण्ड, काम-कलंक हरे।।
चौबीसौं श्री जिनचन्द्र, आनन्द-कन्द सही।
पद-जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष-मही।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादिमहावीरांतेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व.।

मन-मोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रस-पूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांतेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.।

तम-खण्डन दीप जगाय, धारों तुम आगै।
सब तिमिर मोहक्षय जाय, ज्ञान-कला जागै।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांतेभ्यो मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्व.।

दशगन्ध हुताशन माहिं, हे प्रभु! खेवत हों।
मिस-धूम करम जर जाहिं, तुम पद सेवत हों।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांतेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.।

शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।
देखत दृग-मन को प्यार, पूजत सुख पायो।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व.।

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।।चौबीसौं.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांतेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.।

जयमाला

(दोहा)

श्रीमत तीरथनाथ-पद, माथ नाय हित हेत।
गाऊँ गुणमाला अबै, अजर-अमर पद देत।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द–धत्ता)

जय भव–तम भंजन, जन–मंन–कंजन, रंजन दिन–मनि, स्वच्छ करा।
शिव–मग–परकाशक, अरिगन–नाशक, चौबीसों जिनराज वरा।।

(छन्द–पद्धरि)

जय ऋषभदेव ऋषि–गन नमन्त, जय अजित जीत वसु अरि तुरन्त।
जय सम्भव भव–भय करत चूर, जय अभिनन्दन आनन्द पूर।।
जय सुमति सुमति–दायक दयाल, जय पद्म पद्म दुति तन रसाल।
जय जय सुपार्श्व भव–पासनाश, जय चन्द्र, चन्द्र–तन दुति प्रकाश।।
जय पुष्पदन्त द्युति–दन्त–सेत, जय शीतल शीतल–गुननिकेत।
जय श्रेयनाथ नुत–सहस भुज्ज, जय वासव–पूजित वासुपूज्य।।
जय विमल विमल–पद देनहार, जय जय अनन्त गुन–गण अपार।
जय धर्म धर्म शिव–शर्म देत, जय शान्ति शान्ति–पुष्टी करेत।।
जय कुन्थु कुन्थु–आदिक रखेय, जय अरजिन वसु–अरि छय करेय।
जय मल्लि मल्ल हत मोह–मल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत–शल्ल–दल्ल।।
जय नमि नित वासवनुत सपेम, जय नेमिनाथ वृष–चक्र नेम।
जय पारसनाथ अनाथ–नाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ।।

(छन्द–त्रिभंगी)

चौबीस जिनन्दा, आनन्द कन्दा, पाप निकन्दा, सुखकारी।
तिन पद–जुगचन्दा, उदय अमन्दा, वासव–वन्दा हितकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरांतेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

भुक्ति–मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर।
तिन–पद मन–वच–धार, जो पूजै सो शिव लहै।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चौबीस तीर्थङ्कर पूजन–2

भव भोगों से होकर विरक्त, प्रभु हुए स्वयं तुम आत्ममगन,
प्रगटा तब केवलज्ञान सूर्य, फिर रहे नहीं विधि के बंधन।
तीर्थंकर हो जग त्राण किया, तुमने पाया नव अभिनन्दन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर, शतशतप्रणाम शतशतवंदन।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

भव–भव में भटक रहा भगवन, जीवन भारी दुःखदायी है,
कर दर्शन नाथ तुम्हारा यह, मुझको मेरी सुधि आई है।
मिट जाये मेरा जन्म–मरण, जल से करता हूँ मैं अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर, आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

भवताप कहूँ क्या प्रभु तुमसे, मुझसे न सहन अब होता है,
इसलिए शरण में आया हूँ, तब पूजन भव दुःख खोता है।
जग का संताप मिटे मेरा, चंदन से करता हूँ अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर, आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

अक्षय न यहाँ कुछ बसुधा पर, जो कुछ है सब क्षय हो जाता,
इस दुःख से बहुत व्यथित व्याकुल, मैं त्राण नहीं किंचित् पाता।
अक्षय पद मैं अब पा जाऊँ, अक्षत से करता हूँ अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर, आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह काम बड़ा बलशाली है, तन–मन को आकुल कर देता,
विषयों के वश में कर प्राणी, उसकी बुद्धि को हर लेता।
तुम कामजयी हो इसीलिए, पुष्पों से करता हूँ अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर, आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. ।

है क्षुधा जगत में महारोग, जिसका न अन्त हो पाया है,
युग–युग से इसके वश होकर, मैंने अखाद्य सब खाया है।
तुम इस पर विजयी हुए नाथ, नैवेद्य चढ़ा करता अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर, आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. ।

कुछ सरल बात है नहीं मोह–तम, प्राणों से यह कढ़ जाये,
तुम–सा वैरागी बनकर ही, अपने स्वरूप को पा जाये।
तुम वीतरागी हो निर्मोही, मैं दीपक से करता अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर, आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

यह कर्मों की माया सारी, भव–भव में इसने भरमाया,
कुछ शुभ संयोग मिला मुझको, मैं शरण तुम्हारी हूँ आया।
तुमने कर्मों को जीत लिया, मैं धूप चढ़ा करता अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर, आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. ।

जीवन की उलझन ने मुझको, उलझन में इतना उलझाया।
सुलझा न सका उसको अबतक, कब शिवफल तुमसा प्रभु पाया।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम मुक्त हुए इस उलझन से, फल से करता हूँ मैं अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर, आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि.।

मिट जावे मेरा जन्म मरण, संताप न हो अक्षय पद हो,
निष्काम रहूँ न विभुक्षा हो, न मोह न यह विधि भयप्रद हो।
बन जाऊँ जीवनमुक्त नाथ, यह अर्घ्य चढ़ा करता अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर, आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

जयमाला

मैं उर में लेकर भक्ति भाव से, प्रभुवर करता हूँ प्रणाम,
मिथ्यातम से मैं दूर रहूँ, बन जाऊँ सम्यक् ज्योति धाम।
तुम दर्शन पूजन से भगवन, हो जाये निज दर्शन ललाम,
तुम सा बन जाऊँ इसीलिए, करता हूँ मैं सादर प्रणाम।
हे ऋषभनाथ! हे आदिनाथ! मुझ पर अब तो करूणा कर दो,
प्रभु अजितनाथ मेरे उर का, चिर संचित सब संशय हर दो।
सम्भव जिन मुझ पर हो दयालु, सब काम असंभव बन जावे,
भज अभिनन्दन प्रभु को निश दिन, नवजीवन अभिनन्दन पावे।
श्री सुमति सुमति मेरी कर दो, मिथ्यामति हो न कभी मेरी,
भव पार करो प्रभु पद्मप्रभु, अब और न हो पावे देरी।
भगवन् सुपार्श्व मेरे भव के, सब पाप नाश कर दो सत्वर,
चन्द्रप्रभ मेरे इस उर का, सब शाप-ताप हरलो अघहर।
श्री सुविधि नाथ दो सुविधि बता, मेरे टूटें सब विधि बंधन,
संतप्त हृदय शीतल करदो, शीतल जिन मेरा सुन क्रन्दन।

Gaṇesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे श्रेयनाथ दो मुझे श्रेय, भव बाधा का कर दूँ भंजन,
मेरे उर के दृग खुल जावें, हे वासुपूज्य दो वह अंजन।
श्रीविमल विमल पद दो मुझको, युग-युग से भूला भटका हूँ,
कर-दो अनन्त सब कष्ट अन्त, भव-भव में आकर अटका हूँ।
पथ धर्मनाथ अब बतलादो, शाश्वत सुख मुझको मिल जाये,
प्रभु शांतिनाथ मेरे उर में, आ शान्ति निराकुल छा जाये।
हे कुन्थुनाथ होकर कृपालु, मुझपर भी तनिक कृपा करदो,
श्री अरनाथ अब तो मेरे, वसु अरि का बल विक्रम हर दो।
मेरे मन से यह मोह मल्ल, हे मल्लिनाथ अब दूर करो,
मुनिसुव्रतनाथ सुनो विनती, तृष्णा मेरी चकचूर करो।
नमिनाथ तुम्हारे चरणों में, मैं नमन कर रहा दुखियारा,
हे नेमिनाथ अब बाँह गहो, उद्धार करो मैं हूँ हारा।
तुम नाथ अनाथों के अपने ही, पारसनाथ सुनो मेरी,
शिवधाम मुझे दो वर्द्धमान, मेटो मेरी भव-भव फेरी।
'कुमरेश' तुम्हारा दास प्रभो, अब तो मुझ पर करुणा करदो,
बन जाये यह जीवन सुखमय, मुझको प्रभुवर ऐसा वर दो।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादि चतुर्विंशति जिनेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रेरणा

जो भक्ति भाव से प्रेरित हो, पूजन करता है जिनवर की,
उसको सुधि आ जाती अपनी, ममता विसरा जाती परकी।
जग का जंजाल न भाता है, तृष्णा मिट जाती है उर की,
वह मंजिल अपनी पा जाता, या गैल यहाँ पर शिवपुर की।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री आदिनाथ जिन पूजन

(दोहा)

नमूँ जिनेश्वर देव मैं, परम सुखी भगवान।
आराधूँ शुद्धात्मा, पाऊँ पद निर्वाण।।

(छन्द-पद्धरि)

हे धर्म पिता सर्वज्ञ जिनेश्वर, चेतन मूर्ति आदि जिनं।
मेरा ज्ञायक रूप दिखाने, दर्पण सम प्रभु आदि जिनं।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण पा, सहज सुधारस आप पिया।
मुक्तिमार्ग दर्शाकर स्वामी, भव्यों प्रति उपकार किया।।

(दोहा)

साधक शिवपद का अहो, आया प्रभु के द्वार।
सहज निजातम भावना, जिन पूजा का सार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्नि.।

चेतनमय है सुख सरोवर, श्रद्धा पुष्प सुशोभित है।
आनन्द मोती चुगते हंस, सुकेलि करैं सुख पाते हैं।।
स्वानुभूति के कलश कनकमय, भरि-भरि प्रभु गुण गाते हैं।
ऐसे धर्मी निर्मल जल से, मिथ्या मैल नशाते हैं।।

अथाह सरवर आत्मा, आनन्द रस छलकाय।
आत्म शान्ति रस पान से, जन्म-मरण मिट जाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

मगन प्रभु चेतन सागर में, शान्ति जल से न्हाय रहे।
मोह मैल को दूर हटाकर, भवाताप से रहित भये।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तप्त हो रहा मोह ताप से, सम्यक् रस में स्नान करूँ।
समरस चन्दन से पूजूँ अरु, तेरा पथ अनुसरण करूँ।।

चेतन रस को घोलकर, चारित्र सुगन्ध मिलाय।
भाव सहित पूजा करूँ, शीतलता प्रगटाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

अक्ष अगोचर प्रभो आप, पर अक्षत से पूजा करता।
अक्षातीत ज्ञान प्रगटाकर, शाश्वत अक्षय पद भजता।।
अन्तर्मुख परिणति के द्वारा, प्रभुवर का सम्मान करूँ।
पूजूँ जिनवर भक्तिभाव से, निज सुख का आस्वाद करूँ।।

अक्षय सुख का स्वाद लूँ, इन्द्रिय मन के पार।
सिद्ध प्रभु सुख मगन ज्यों, तिष्ठे मोक्ष मंझार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

निष्काम अतीन्द्रिय देव अहो! पूजूँ मैं श्रद्धा सुमन चढ़ा।
कृतकृत्य हुआ निष्काम हुआ, तब मुक्ति मार्ग में कदम बढ़ा।।
गुण अनंतमय पुष्प सुगन्धित, विकसित हैं निज आतम में।
कभी नहीं मुरझावें, परमानन्द पाया शुद्धातम में।।

रत्नत्रय के पुष्प शुभ, खिले आत्म उद्यान।
सहजभाव से पूजते हर्षित हूँ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

तृप्त क्षुधा से रहित जिनेश्वर, चरु लेकर मैं पूज करूँ।
अनुभव रसमय नैवेद्य सम्यक्, तुम चरणों में प्राप्त करूँ।।
चाह नहीं किंचित् भी स्वामी, स्वयं स्वयं में तृप्त रहूँ।
सादि-अनंत मुक्तिपद जिनवर, आत्मध्यान से प्रकट लहूँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जग का झूठा स्वाद तो, चाख्यो बार अनन्त।
वीतराग निज स्वाद लूँ, होवे भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

अगणित दीपों का प्रकाश भी, दूर नहीं अज्ञान करे।
आत्मज्ञान की एक किरण ही, मोह तिमिर को तुरत हरे।।
अहो ज्ञान की अद्भुत महिमा, मोही नहिं पहिचान सकें।
आत्मज्ञान का दीप जलाकर, साधक स्व-पर प्रकाश करें।।

स्वानुभूति प्रकाश में, भासे आत्म स्वरूप।
राग पवन लागे नहीं, केवल ज्योति अनूप।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

द्वेष भाव तो नहीं रहा, रागांश मात्र अवशेष हुआ।
ध्यान अग्नि प्रगटी ऐसी, तहाँ कर्मेन्धन सब भस्म हुआ।।
अहो! आत्मशुद्धि अद्भुत है, धर्म सुगन्धी फैल रही।
दशलक्षण की प्राप्ति करने, प्रभु चरणों की शरण गही।।

स्व सन्मुख हो अनुभवूँ, ज्ञानानन्द स्वभाव।
निज में ही हो लीनता, विनसैं सर्व विभाव।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

सम्यग्दर्शन मूल अहो, चारित्र वृक्ष पल्लवित हुआ।
स्वानुभूतिमय अमृत फल, आस्वादूँ अति ही तृप्त हुआ।।
मोक्ष महाफल भी आवेगा, निश्चय ही विश्वास अहो।
निर्विकल्प हो पूर्ण लीनता, फल पूजा का प्रभु फल हो।।

निर्वांछक आनन्दमय, चाह न रही लगार।
भेद न पूजक पूज्य का, फल पूजा का सार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक् तत्व स्वरूप न जाना, नहिं यथार्थतः पूज सका।
राग भाव को रहा पोषता, वीतरागता से चूका।।
काललब्धि जागी अन्तर में, भास रहा है सत्य स्वरूप।
पाऊँगा निज सम्यक् प्रभुता, भास रही निज माँहि अनूप।।

सेवा सत्य स्वरूप की, ये ही प्रभु की सेव।
जिन सेवा व्यवहार से, निश्चय आतम देव।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

कलि अषाढ़ द्वय जान, सर्वार्थसिद्धि विमान से।
आय बसे भगवान, मरूदेवी के गर्भ में।।
गर्भवास नहीं इष्ट, तहाँ भी प्रभु आनन्दमय।
माँ को भी नहिं कष्ट, रत्न पिटारे ज्यों रहे।।

ॐ ह्रीं श्री आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पृथ्वी हुई सनाथ, नवमी कृष्णा चैत को।
नरकों में भी नाथ, जन्म समय साता हुई।।
इन्द्रादिक शिर टेक, किया महोत्सव जन्म का।
मेरू पर अभिषेक, क्षीरोदधि तें प्रभु भयो।।

ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भासा जगत असार, देख निधन नीलांजना।
नवमी कृष्णा चैत्र परम दिगम्बर पद धरो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिदानन्द पद सार, ध्याने को मुनि पद लिया।
परम हर्ष उर धार, लौकान्तिक धनि धनि कहा।।

ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णनवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रगट्या केवलज्ञान, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
धर्मतीर्थ अम्लान, हुआ प्रवर्तित आप से।।
समझा तत्त्व स्वरूप, दिव्य देशना श्रवण कर।
पाई मुक्ति अनूप, भविजन निज पुरुषार्थ से।।

ॐ ह्रीं श्रीफाल्गुनकृष्णएकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

पाया अविचल थान, चौदश कृष्णा माघ दिन।
गिरि कैलाश महान, तीर्थ प्रगट जग में हुआ।।
सहज मुक्ति दातार, शुद्धातम की भावना।
वर्ते प्रभु सुखकार, मैं भी तिष्ठूँ मोक्ष में।।

ॐ ह्रीं श्री माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

आदीश्वर वन्दूँ सदा, चिदानन्द छलकाय।
चरण शरण में आपकी, मुक्ति सहज दिखाय।।

धन्य-ध्यान में आप विराजे, देख रहे प्रभु आतमराम।
ज्ञाता-दृष्टा अहो जिनेश्वर, परम ज्योतिमय आनन्दधाम।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नत्रय आभूषण साँचे, जड़ आभूषण का क्या काम।
राग-द्वेष निःशेष हुए हैं, वस्त्र-शस्त्र का लेश न नाम।।
तीन लोक के स्वयं मुकुट हो, स्वर्ण मुकुट का है क्या काम?
प्रभु त्रिलोक के नाथ कहाओ, फिर भी निज में ही विश्राम।।
भव्य निहारें अहो आपको, आप निहारें अपनी ओर।
धन्य आपकी वीतरागता, प्रभुता का प्रभु ओर न छोर।।
आप नहीं देते कुछ भी पर, भक्त आप से ले लेते।
दर्शन कर उपदेश श्रवण कर, तत्त्वज्ञान को पा लेते।।
भेदज्ञान अरु स्वानुभूति कर, शिवपथ में लग जाते हैं।
अहो आप सम स्वाश्रय द्वारा, निज प्रभुता प्रगटाते हैं।।
जब तक मुक्ति नहीं होती प्रभु, पुण्य सातिशय होने से।
चक्री इन्द्रादिक के वैभव, मिले अन्न संग के तुष से।।
पर उनको चाहे नहिं ज्ञानी, मिलें किन्तु आसक्त न हो।
निजानन्द अमृत रस पीते, विष-फल चाहे कौन अहो?।।
भाते नित वैराग्य भावना, क्षण में छोड़ चले जाते।
मुनि दीक्षा ले परम तपस्वी, निज में ही रमते जाते।।
घोर परीषह उपसर्गों में मन सुमेरु नहिं कम्पित हो।
क्षण-क्षण आनन्दरस वृद्धिंगत, क्षपक श्रेणि आरोहण हो।।
शुक्लध्यान बल घाति विनष्टे, अर्हत् दशा प्रगट होती।
अल्पकाल में सर्व कर्ममल, वर्जित मुक्ति सहज होती।।
परमानन्द मय दर्श आपका, मंगल उत्तम शरण ललाम।
निरावरण निर्लेप परम प्रभु, सम्यक् भावे सहज प्रणाम।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान माँहिं स्थापन कीना, स्व-सन्मुख होकर अभिराम।
स्वयं सिद्ध सर्वज्ञ स्वभावी, प्रत्यक्ष निहारूँ आतमराम।।

(दोहा)

प्रभु नन्दन मैं आपका, हूँ प्रभुता सम्पन्न।
अल्पकाल में आपके, तिष्ठूँगा आसन्न।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.।

(दोहा)

दर्शन-ज्ञान स्वभावमय, सुख अनंत की खान।
जाके आश्रय प्रगटता, अविचल पद निर्वान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन

महासेन नृपनंद चंद्रप्रभ चंद्रनाथ जिनवर स्वामी।
मात लक्ष्मणा के प्रियनन्दन जगउद्धारक प्रभु नामी।।
निज आत्मानुभूति से पाई मोक्ष लक्ष्मी सुखधामी।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी करुणामय शिवपुरगामी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्नि.।

तन की प्यास बुझाने वाला, यह निर्मल जल लाया हूँ।
आत्मज्ञान की प्यास बुझाने, प्रभु चरणों में आया हूँ।।
चंद्र-जिनेश्वर चंद्रनाथ चंद्रेश्वर चन्दा प्रभु स्वामी।
राग-द्वेष परिणति के नाशक, मंगलमय अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तन का ताप मिटाने वाला, शीतल चंदन लाया हूँ।
राग आग की दाह मिटाने, प्रभु चरणों में आया हूँ।।
चंद्र-जिनेश्वर चंद्रनाथ चंद्रेश्वर चन्दा प्रभु स्वामी।
राग-द्वेष परिणति के नाशक, मंगलमय अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.।

परम शुद्ध अक्षय पद पाने, उज्जवल अक्षत लाया हूँ।
भव समुद्र से पार उतरने, प्रभु चरणों में आया हूँ। चन्द्र.।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व.।

कामबाण से घायल होकर, पुष्प मनोहर लाया हूँ।
महाशील शीलेश्वर बनने, प्रभु चरणों में आया हूँ। चन्द्र.।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.।

षट् द्रव्यों से भूख न मिट पाई तो प्रभु चरुँ लाया हूँ।
आत्मतत्त्व की भूख मिटाने, प्रभु चरणों में आया हूँ। चन्द्र.।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.

अन्धकार तम हरने वाला, दीप प्रभामय लाया हूँ।
आत्मदीप की ज्योति जलाने, प्रभु चरणों में आया हूँ। चन्द्र.।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.।

पर परिणति का धुआं उड़ाने, धूप सुगन्धित लाया हूँ।
अष्टकर्म अरि पर जय पाने, प्रभु चरणों में आया हूँ। चन्द्र.।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्व.।

पर विभाव फल से पीड़ित, होकर नूतन फल लाया हूँ।
अपना सिद्ध स्वपद पाने को, प्रभु चरणों में आया हूँ। चन्द्र.।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्ट द्रव्य का अर्घ मनोरम, हर्षित होकर लाया हूँ।
चिदानन्द चिन्मय पद पाने, प्रभु चरणों में आया हूँ।।
चंद्र-जिनेश्वर चंद्रनाथ चंद्रेश्वर चन्दा प्रभु स्वामी।
राग-द्वेष परिणति के नाशक, मंगलमय अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छन्द-वीर)

चैत्र कृष्ण पंचमी मात उर, वैजयंत तज कर आए।
सोलह स्वप्न हुए माता को, रत्न सुरों ने बरसाये।।
मात लक्ष्मणा स्वप्न फलों को, जान हृदय में हर्षाये।
हुआ गर्भ कल्याण महोत्सव, घर-घर में आनंद छाये।।

ॐ ह्रीं श्रीचैत्रकृष्णपंचम्यांगर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

पौष कृष्ण एकादशम् को, चन्द्रनाथ का जन्म हुआ।
मेरु सुदर्शन पर मंगल उत्सव कर सुरपति धन्य हुआ।।
चन्द्रपुरी में बजी बधाई, तीन लोक में सुख छाया।
महासेन राजा के गृह में, देवों ने मंगल गाया।।

ॐ ह्रीं श्रीपौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

पौष कृष्ण एकादशी को, राज्य आदि सब छोड़ दिया।
यह संसार असार जानकर, तप से नाता जोड़ लिया।।
पंच महाव्रत धारण करके, वस्त्राभूषण त्याग दिये।
तप कल्याण मनाया देवों ने जिनवर अनुराग लिए।।

ॐ ह्रीं श्रीपौषकृष्णएकादश्यां तपकल्याणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

तीन मास छद्मस्थ रहे प्रभु, उग्र तपस्या में हो लीन।
प्रतिमा योग धार चन्दाप्रभु शुक्ल ध्यान में हुए स्वलीन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्यान अग्नि से त्रेसठ कर्म प्रकृतियां का बल नाश किया।
फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के दिन, केवलज्ञान प्रकाश लिया।।

ॐ ह्रीं श्रीपौषकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

शेष प्रकृति पिच्यासी का भी, अन्त समय अवसान किया।
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी के दिन, प्रभु ने पद निर्वाण लिया।
ललितकूट सम्मेदशिखर से, चन्दाप्रभु जिनमुक्त हुए।
ऊर्ध्वगमन कर सिद्ध लोक में, मुक्ति रमा से युक्त हुए।।

ॐ ह्रीं श्री फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

चन्द्र चिन्ह चित्रित चरण, चन्द्रनाथ चित धार।
चिन्तामणि श्री चन्द्रप्रभ, चन्द्रामृत दातार।।

चन्द्रपुरी के न्यायवान श्री महासेन राजा बलवान।
देवी लक्ष्मणा रानी उर से, जन्में चन्द्रनाथ भगवान।।
इन्द्र शची सुर किन्नर यक्ष, सभी ने गाये मंगल गान।
तीर्थंकर का जन्म जानकर, धरती में भी आए प्राण।।
बड़े हुए प्रभु राज काज में, न्याय पूर्वक लीन हुए।
जग के भौतिक भोग भोगते, सिंहासन आसीन हुए।।
इक दिन नभ में बिजली चमकी, नष्ट हुई तो किया विचार।
नाशवान पर्याय जान छाया, तत्क्षण वैराग्य अपार।।
वन सर्वार्थ नागतरु नीचे परिजन परिकर धन सब त्याग।
पंच मुष्टि से केश लोंचकर, किया महाव्रत से अनुराग।।
हुए तपस्या लीन आत्मा का ही प्रतिपल करते ध्यान।
शाश्वत् निजस्वरूप आश्रय ले पाया तुमने केवलज्ञान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थे तिरानवै गणधर जिनमें प्रमुख दत्त स्वामी ऋषिवर।
मुख्य आर्यिका वरुणा, श्रोता दानवीर्य आदिक सुरनर।।
समवसरण में तुमने प्रभुवर, वस्तु तत्त्व उपदेश दिया।
उपादेय है एक आत्मा, यह अनुपम सन्देश दिया।।
ज्ञाता दृष्टा बने जीव तो, राग-द्वेष मिट जाता है।
जो निजात्मा में रहता है, वही परम पद पाता है।।
हो अयोग केवली आपने, हे स्वामी पाया निर्वाण।
अर्द्ध चन्द्र सम सिद्ध शिला पर, पहुँचे चन्दा प्रभु भगवान।।
अर्ध चन्द्र शोभित चरणों में, अष्ट तीर्थंकर स्वामी।
जन्म मरण का चक्र मिटाने, आया हूँ अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्दा प्रभु के पद कमल, भाव सहित उर धार।
मन-वच-तन जो पूजते, वे होते भव पार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।।

श्री शीतलनाथ जिन पूजन

(छन्द-वीर)

जय प्रभु शीतलनाथ शील के, सागर शीलसिन्धु शीलेश।
कर्म ज्वाल के शीतल कर्त्ता, केवलज्ञानी महा महेश।।
त्रैकालिक ज्ञायक स्वभाव ध्रुव, के आश्रय से हुए जिनेश।
मुझको भी निज सम शीतल कर, दो है विनय यही परमेश।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्नि.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द अवतार)

निर्मल उज्ज्वल जलधार चरणों में सोहे।
यह जन्म रोग मिट जाय निज में मन मोहे।।
हे शीतलनाथ जिनेश शीतलता धारी।
हे शील सिन्धु शीलेश सब संकट हारी।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व.।

चन्दन-सी सरस सुगन्ध मुझमें भी आए।
भव-ताप दूर हो जाय शीतलता छाए।। हे शीतल.।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व.।

निज अक्षय-पद का भान करने आया हूँ।
हर्षित हो शुभ्र अखण्ड तन्दुल लाया हूँ।। हे शीतल.।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व.।

कन्दर्प काम के पुष्प अब मैं दूर करूँ।
पर परिणति का व्यापार प्रभु चकचूर करूँ।। हे शीतल.।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व.।

चरू सेवन रुचि दुःखकार भव-पीड़ा दायक।
है क्षुधा रहित निजरूप सुखमय शिवनायक।। हे शीतल.।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.

अज्ञान तिमिर घनघोर उर में छाया है।
रवि सम्यक्ज्ञान प्रकाश मुझको भाया है।। हे शीतल.।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनायं दीपं निर्व.।

चारों कषाय का संग हे प्रभु हट जाये।
हो कर्मचक्र का ध्वंस भव दुःख मिट जाये।। हे शीतल.।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्वाण महाफल हेतु चरणों में आया।
दु:ख रूप राग को जान अब निजगुण गाया।।
हे शीतलनाथ जिनेश शीतलता धारी।
हे शील सिन्धु शीलेश सब संकट हारी।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व.।

आत्मानुभूति की प्रीति निज में है जागी।
पाऊँ अनर्घ पद नाथ मिथ्यामति भागी।। हे शीतल.।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.।

पंचकल्याणक अंर्घ्य

चैत्र कृष्ण अष्टमी स्वर्ग अच्युत को तजकर तुम आए।
दिक्कुमारियों ने हर्षित हो मात सुनन्दा गुण गाए।।
इन्द्र आज्ञा से कुबेर नगरी रचना कर हर्षाए।
शीतल-जिन के गर्भोत्सव पर रत्न सुरों ने बरसाए।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णअष्टमी श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय गर्भमंगलमण्डिताय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्दलपुर में राजा दृढ़रथ के गृह तुमने जन्म लिया।
माघ कृष्ण द्वादशी इन्द्र सुर ने निज जीवन धन्य किया।।
गिरी सुमेरु पर पांडुक वन में क्षीरोदधि से न्हवन किया।
एक सहस्त्र अष्ट कलशों से हर्षित हो अभिषेक किया।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादशी श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय जन्ममंगलमण्डिताय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरद मेघ परिवर्तन लखकर उरछाया वैराग्य महान।
लौकान्तिक देवों ने आकर किया आपका तप कल्याण।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute; Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सकल परिग्रह त्याग तपस्या करने वन को किया प्रयाण।
माघ कृष्ण द्वादशी सहेतुक वन में गूँजा जय जय गान।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादशी श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय तपोमंगलमण्डिताय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण की चतुर्दशी को पाया स्वामी केवलज्ञान।
समवशरण की रचना कर देवों ने गाए मंगल गान।।
सकल विश्व को वस्तु तत्त्व उपदेश आपने दिया महान।
भद्दलपुर में गर्भ जन्म तप ज्ञान हुए चारों कल्याण।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दशी श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय ज्ञानमंगलमण्डिताय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ल अष्टमी को हर अष्टकर्म पाया निर्वाण।
विद्युतकूट श्री सम्मेद शिखर पर हुआ मोक्ष कल्याण।।
शेष प्रकृति पच्चासी हरकर कर्म अघाति अभाव किया।
निज स्वभाव के साधन द्वारा मोक्ष स्वरूप स्वभाव लिया।।

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लअष्टमी श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षमंगलमण्डिताय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छंद ताटंक)

जय जय शीतलनाथ शीलमय शीलपुंज शीतल सागर।
शुद्ध रूप जिन शुचिमय शीतल शील निकेतन गुण आगर।।
दशम तीर्थंकर हे जिनवर परम पूज्य शीतल स्वामी।
तुम समान मैं भी बन जाऊँ विनय सुनो त्रिभुवन नामी।।
साम्यभाव के द्वारा तुमने निज स्वरूप का वरण किया।
पंच महाव्रत धारण कर प्रभु पर विभाव का हरण किया।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरी अरिष्ट पुनर्वसु नृप ने विधिपूर्वक आहार दिया।
प्रभु कर में पयधारा दे भवसिन्धु सेतु निर्माण किया।।
तीन वर्ष छद्मस्थ मौन रह आत्मध्यान में लीन हुए।
चार घातिया का विनाश कर केवलज्ञान प्रवीण हुए।।
ज्ञानावरण दर्शनावरणी अन्तराय अरु मोह रहित।
दोष अठारह रहित हुए, तुम छयालीस गुण से मंडित।।
क्षुधा, तृषा, रति, खेद, स्वेद, अरु जन्म, जरा, चिंता, विस्मय।
राग, द्वेष, मद, मोह, रोग, निद्रा, विषाद अरू मरण न भय।।
शुद्ध बुद्ध अरहंत अवस्था पाई तुम सर्वज्ञ हुए।
देव अनन्त चतुष्टय प्रगटा निज में निज मर्मज्ञ हुए।।
इक्यासी गणधर थे प्रभु के प्रमुख कुन्थ ज्ञानी गणधर।
मुख्य आर्यिका श्रेष्ठ चारणी श्रोता थे नृप सीमंधर।।
तुम दर्शन करके हे स्वामी आज मुझे निज भान हुआ।
सिद्ध समान सदा पद मेरा अनुपम निर्मल ज्ञान हुआ।।
भक्ति भाव से पूजा करके यही कामना करता हूँ।
राग-द्वेष परिणति मिट जाए यही भावना भरता हूँ।।
निर्विकल्प आनन्द प्राप्ति की आज हृदय में लगी लगन।
सम्यक् पूजन फल पाने को तुम चरणों में हुआ मगन।।
निज चैतन्य सिंह अब जागे मोह कर्म पर जय पाऊँ।
निज स्वरूप अवलम्बन द्वारा शाश्वत शीतलता पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(दोहा)

कल्पवृक्ष शोभित चरण श्री शीतल-जिन धार।
मन-वच-तन जो पूजते वे होते भव पार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वासुपूज्य जिन पूजन

(छंद रूप कवित्त)

श्रीमन् वासुपूज्य जिनवर पद, पूजन हेत हिये उमगाय।
थापों मनवचतन शुचि करिकै, जिनकी पाटलदेव्या माय।।
महिष चिन्ह पद लसै मनोहर, लाल वरन तन समतादाय।
सो करुनानिधि कृपादिष्टकरि, तिष्ठहु सुपरितिष्ठ यहँ आय।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्नि.।

(छन्द जोगीरासा, आँचलीबंध)

गंगाजल भरि कनककुम्भ में, प्रासुक गन्ध मिलाई।
करम कलंक विनाशन-कारन, धार देत हरषाई।।
वासपूज वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको शिवतिय सनमुख धाई।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.।

कुष्णागरु मलयागिर चंदन, केशर संग घसाई।
भवआताप विनाशनकारन, पूजों पद चित लाई।। वासु.।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व.।

देवजीरे सुखदाय शुद्ध वर, सुवरन थार भराई।
पुञ्ज धरत तुम चरनन आगैं, तुरित अखय पद पाई।। वासु.।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व.।

पारिजात मन्दार कल्पतरु-जनित सुमन बहुलाई।
मीनके तु मदभंजनकारन, तुम पदद्म चढ़ाई।। वासु.।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नव्यगव्य आदिक रसपूरित, नेवज तुरिज उपाई।
छुधारोग निवारनकारन, तुम्हें जजों शिर नाई।।
वासपूज वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको शिवतिय सनमुख धाई।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.।

दीपकजोत उदोत होत वर, दशदिशमें छबि छाई।
तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, जजों चरन हरषाई।।वासु.।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व.।

दशविध गन्ध मनोहर लेकर, वातहोत्र में डाई।
अष्टकरम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम सुधूम उड़ाई।। वासु.।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्व.।

सुरस सुपक्व सुपावन फल लैं, कंचनथार भराई।
मोच्छ महाफलदायक लखि प्रभु, भेंट धरों गुन गाई।।वासु.।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व.।

जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदरांज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई।।वासु.।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व.।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छंद-जोगीरासा)

कलि छट्ठ आसाढ़ सुहायो, गरभागम मङ्गल पायो।
दश में दिवितें इत आये, शतइन्द्र जजे सिर नायो।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठयां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलि चौदश फागुन जानों, जनमें जगदीश महानों।
हरि मेरु जजै तब जाई, हम पूजत हैं चित लाई।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि चौदस फागुन श्यामा, धरियो तप श्रीअभिरामा।
नृप सुन्दर के पय पायो, हम पूजत अतिसुख थायो।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि माघ दोज है सोहै, लहि केवल आतम जो है।
अनअन्त गुनाकर स्वामी, नित वन्दों त्रिभुवन नामी।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सितभादव चौदशि लीनों, निरवान सुथान प्रवीनों।
चम्पापुर थानक सेती, हम पूजत निजहित हेती।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

चम्पापुर में पञ्चवर, कल्याणक तुम पाय।
सत्तर धनु तन शोभनों, जय जय जय जिनराय।।

(छंद मोतियादाम)

महासुखसागर आगर ज्ञान, अनन्त सुखामृत मुक्त महान।
महाबलमंडित खण्डित काम, रमाशिवसंग सदा विसराम।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरिन्द फनिन्द खगिन्द नरिन्द, मुनिन्द जजैं नित पादरविंद।
प्रभू तुव अन्तर भाव विराग, सुबालहिं तें व्रतशील सों राग।।
कियो नहिं राज उदास सरूप, सुभावन भावत आतमरूप।
अनित्य शरीर प्रपञ्च समस्त चिदातम नित्य सुखाश्रित वस्त।।
अशर्न नहीं कोउ शर्नसहाय, जहाँ जिय भोगत कर्मविपाय।
निजातम कै परमैसुर शर्न, नहीं इनके बिन आपद-हर्न।।
जगत्त जथा जलबुदबुद येव, सदा जिय एक लहै फलमेव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, भमें भवकानन आनन देह।।
अपावन सात कुधात भरीय, चिदातम शुद्धसुभाव धरीय।
धरैं इनसों जब नेह तबेव, सुआवत कर्म तबे वसु-भेव।।
जबै तनभोगजगत्त उदास, धरैं तब संवर निर्जर आस।
करै जब कर्मकलंक विनाश, लहै तब मोक्ष महासुख-राश।।
तथा यह लोक नराकृत नित्त, विलोकिय ते षटद्रव्य-विचित्त।
सु आतमजानन बोधविहीन, धरै किन तत्त्व प्रतीत प्रवीन।।
जिनागम-ज्ञानरु संजनभाव, सबै निजज्ञान बिना विसराव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव सबै जिहतें शिव हाल।।
लयो सब जोग सुपुन्यवशाय, कहो किमि दीजिये ताहि गंवाय।
विचारत यों लवकान्तिक आय, नमें पदपंकज पुष्प चढ़ाय।।
कह्यो प्रभु धन्य किया सुविचार, प्रबोधि सु येम कियो जु विहार।
तबै सौधर्मतनों हरि आय, रच्यौ शिविका चढ़ि आप जिनाय।।
धरे तप पाय सुकेवलबोध, दियो उपदेश सुभव्य संबोध।
लियो फिर मोच्छ महासुखरास, नमैं नित भक्त सोई सुख आश।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

(छंद घत्तानन्द)

नित वासव-वन्दत, पापनिकन्दत, वासुपूज्य व्रत ब्रह्मपती।
भवसंकल-खंडित आनन्द-मण्डित, जै जै जै जैवन्त जती।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमालाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

वासुपूज पद सार, जजौं दरबविधि भावसों।
सो पावै सुखसार, भुक्ति मुक्ति को जो परम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिन पूजन

(छन्द-वीर)

हो चक्रवर्ति अरु कामदेव, प्रभु तीर्थंकर पदवी धारी।
हे शांति-कुन्थु-अरनाथ! सदा, मैं करूँ वंदना अविकारी।।
आकर आप समीप जिनेश्वर, आनन्द उर न समाया है।
तव दर्शन पाकर नाथ आज, निजदर्शन मैंने पाया है।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ जिनेन्द्राः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ जिनेन्द्राः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ जिनेन्द्राः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद-अवतार)

मिथ्यामल धोने आज, सम्यक् जल पाया।
प्रभु जन्म-मरण से शून्य, ज्ञायक दिखलाया।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे शांति-कुन्थु-अरनाथ, चरणन शिर नाऊँ।
है महामहिम निजभाव, प्रभुता प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

संताप रहित निज भाव, निज में दरशाया।
भव ताप नशावन हेतु, चन्दन सम पाया।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यो भवताप-विनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

शाश्वत अक्षत निजभाव, दृष्टि में आया।
क्षत् रागादिक विनशाय, अक्षय पद ध्याया।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्योऽक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

निष्काम रूप लख देव, काम पलाया है।
सम्यक् श्रद्धा का पुष्प, आज चढ़ाया है।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

दर्शन कर निज में नाथ, तृप्ति पायी है।
भव-भव की क्षुधा जिनेश, आज नशायी है।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

तिहुँजग का जाननहार, आज जनाया है।
आलोकित है निज लोक, मोह भगाया है।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ -जिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

प्रभु आत्म ध्यान की अग्नि, अब सुलगाई है।
पर-परणति की दुर्गन्ध, सर्व जलाई है।।
हे शांति-कुन्थु-अरनाथ, चरणन शिर नाऊँ।
है महामहिम निजभाव, प्रभुता प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्योऽष्टकर्म-दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

फल की अभिलाषा नाहिं, निज पद पाया है।
पूर्णत्व स्वयं में देख, आनन्द छाया है।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

प्रभु वीतराग विज्ञानमय शुभ अर्घ्य लिया।
निज में अनर्घ्य पद नाथ, निज से प्राप्त किया।। हे शांति.।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्योऽनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

जग जड़ वैभव त्यागकर, निज वैभव प्रगटाय।
शांति-कुन्थु-अरनाथ की, नित जयमाला गाय।।

(छन्द-जोगीरासा)

शांति जिनेश्वर दर्शन कर, निज शांति स्वरूप लखाया।
धन्य परम उपकारी निज सुख, निज में मुझे दिखाया।। टेक।।

चाह दाह में भटका अब तक, सुख का लेश न पाया।
मंद कषायों द्वारा अंतिम, ग्रैवेयिक तक हो आया।।
काललब्धि जागी प्रभुवर, मैं पास आपके आया।।1।। धन्य...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मा तो स्वभाव से सुखमय, दिव्य रहस्य बताया।
दीन दुखी पामर मैं हूँ, ये भ्रम का रोग मिटाया।।
अन्तर में प्रत्यक्ष देख सुख, अब विश्वास जगाया।
धन्य परम उपकारी निज सुख, निज में मुझे दिखाया।।2।।

निज चैतन्य विभूती देखी, शक्ति अनन्त निहारी।
प्रभु सम प्रभुता लखकर खुद ही भाव हुए अविकारी।।
होना नहीं सदा हूँ सुखमय, सम्यक् ज्ञान उपाया।।3।। धन्य...

अब तो यही भावना प्रभुवर, निज में ही रम जाऊँ।
स्वानुभूतिमय परिणति में ही, काल अनन्त बिताऊँ।।
निज में ही सन्तुष्ट, कामनाओं का हुआ सफाया।।4।। धन्य...

कुन्थुनाथ स्तुति करते, गणधर इन्द्रादिक हारे।
तुम महिमा वर्णन करने में, हम को मंद विचारे।।
निजस्वभाव साधन द्वारा ही, प्रभु मुक्ति पद पाया।।5।। धन्य...

कुन्थु आदि सूक्ष्म जीवों के, प्रति भी दया सिखाई।
परम अहिंसामयी धर्म की, ध्वजा प्रभो फहराई।।
चलूँ आपके पद चिह्नों पर, आज यही मन भाया।।6।। धन्य...

धर्मचक्र के अर स्वरूप, सार्थक प्रभु नाम तुम्हारा।
प्रभो आपका दर्शन पाकर, जागा भाग्य हमारा।।
भव का फेरा मिटा सहज ही, शिवपथ मैंने पाया।।7।। धन्य...

चक्री का साम्राज्य आपने, तृणवत् क्षण में छोड़ा।
हो निर्ग्रन्थ प्रभो उपयोग सु, निज ज्ञायक में जोड़ा।।
सकलकर्म का नाश किया प्रभु, अविचल शिवपद पाया।।8।।धन्य...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहूँ कहाँ तक भाव बहुत हैं, अल्प शक्ति है मेरी।
तुम सम ही प्रभुतामय निस्पृह, परिणति होवे मेरी।।
चाहूँ कुछ नहिं सहजभाव से, सविनय शीश नवाया।
धन्य परम उपकारी निज सुख, निज में मुझे दिखाया।।९।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-कुन्थुनाथ-अरनाथ-जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, आत्मस्वरूप महान।
शुद्धातम में मग्न हो, प्रगटे पद निर्वाण।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री नेमिनाथ जिन पूजन

जय श्री नेमीनाथ तीर्थंकर बाल ब्रह्मचारी भगवान।
हे जिनराज परम उपकारी करुणा सागर दया निधान।।
दिव्यध्वनि के द्वारा हे प्रभु तुमने किया जगतकल्याण।
श्री गिरनार शिखर से पाया तुमने सिद्ध स्वरूप निर्वाण।।
आज तुम्हारे दर्शन करके निज स्वरूप का आया ध्यान।
मेरा सिद्ध समान सदा पद यह दृढ़ निश्चय हुआ महान।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्नि.।

समकित जल की धारा से तो मिथ्याभ्रम धुल जाता है।
तत्त्वों का श्रद्धान स्वयं को शाश्वत मंगल दाता है।।
नेमिनाथ स्वामी तुम पद पंकज की करता हूँ पूजन।
वीतराग तीर्थंकर तुमको कोटि कोटि मेरा वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मिथ्यात्वमलविनाशनाय जलं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक् श्रद्धा का पावन चन्दन भव ताप मिटाता है।
क्रोधकषाय नष्ट होती है निज की अरुचि हटाता है।।
नेमिनाथ स्वामी तुम पद पंकज की करता हूँ पूजन।
वीतराग तीर्थंकर तुमको कोटि कोटि मेरा वन्दन।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्रोधकषायविनाशनाय चंदनं निर्व.।

भाव शुभाशुभ का अभिमानी मान कषाय बढ़ाता है।
वस्तु स्वभाव जान जाता तो मान कषाय मिटाता है। नेमि.।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मानकषायविनाशनाय अक्षतं निर्व.।

चेतन छल से पर भावों का माया जाल बिछाता है।
भव भव की माया कषाय को समकित पुष्प मिटाता है। नेमि.।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मायाकषायविनाशनाय पुष्पं निर्व.।

तृष्णा की ज्वाला से लोभी कभी नहीं सुख पाता है।
सम्यक् चरु से लोभ नाशकर यह शुचिमय हो जाता है। नेमि.।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय लोभकषायविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.।

अन्धकार अज्ञान जगत में भव भव भ्रमण कराता है।
समकित दीप प्रकाशित हो तो ज्ञाननेत्र खुल जाता है। नेमि.।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व.।

पर विभाव परिणति में फंसकर निज का धुआँ उड़ाता है।
निज स्वरूप की गन्ध मिले तो पर की गन्ध जलाता है। नेमि.।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय विभावपरिणति विनाशनाय धूपं निर्व.।

निज स्वभाव फल पाकर चेतन महामोक्ष फल पाता है।
चहुँगति के बंधन कटते हैं सिद्ध स्वरूप पा जाता है। नेमि.।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ से लाभ न कुछ हो पाता है।
जब तक निज स्वभाव में चेतन मग्न नहीं हो पाता है।।
नेमिनाथ स्वामी तुम पद पंकज की करता हूँ पूजन।
वीतराग तीर्थंकर तुमको कोटि कोटि मेरा वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छंद-ताटंक)

कार्तिक शुक्ला षष्ठी के दिन शिव देवी उर धन्य हुआ।
अपराजित विमान से चयकर आये मोद अनन्य हुआ।।
स्वप्न फलों को जान सभी के मन में अति आनन्द हुआ।
नेमिनाथ स्वामी का गर्भोत्सव मंगल सम्पन्न हुआ।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन शौर्यपुरी में जन्म हुआ।
नृपति समुद्रविजय आँगन में सुर सुरपति का नृत्य हुआ।।
मेरु सुदर्शन पर क्षीरोदधि जल से शुभ अभिषेक हुआ।
जन्म महोत्सव नेमिनाथ का परम हर्ष अतिरेक हुआ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठयां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ल षष्ठी को प्रभु पशुओं पर करुणा आई।
राजमती तज सहस्त्राम्र वन में जा जिन दीक्षा पाई।
इन्द्रादिक ने उठा पालिकी हर्षित मंगलाचार किया।
नेमिनाथ प्रभु के तपकल्याणक पर जय जयकार किया।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां तपोमंगलप्राप्ताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आश्विन शुक्ला एकम को प्रभु हुआ ज्ञान कल्याण महान।
उर्जयंत पर समवशरण में दिया भव्य उपदेश प्रधान।।
ज्ञानावरण, दर्शनावरणी मोहनीय का नाश किया।
नेमिनाथ ने अन्तराय क्षयकर कैवल्य प्रकाश लिया।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदि ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गिरनार क्षेत्र पर्वत से महामोक्ष पद को पाया।
जगती ने आषाढ़ शुक्ल सप्तमी दिवस मंगल गाया।।
वेदनीय अरु आयु नाम अरु गोत्र कर्म अवसान किया।
अष्टकर्म हर नेमिनाथ ने परम पूर्ण निर्वाण लिया।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लअष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जय नेमिनाथ नित्यादित जिन, जय नित्यानन्द नित्य चिन्मय।
जय निर्विकल्प निश्चल निर्मल, जय निर्विकार नीरज निर्भय।।
नृपराज समुद्र विजय के सुत माता शिवा देवी के नन्दन।
आनन्द शौर्यपुरी में छाया जय जय से गूंजा पाण्डुक वन।।
बालकपन में क्रीड़ा करते तुमने धारे अणुव्रत सुखमय।
द्वारिकापुरी में रहे अवस्था पाई सुन्दर यौवन वय।।
आमोद-प्रमोद तुम्हारे लख पूरा यादवकुल हर्षाता।
तब श्री कृष्ण नारायण ने जूनागढ़ से जोड़ा नाता।।
राजुल से परिणय करने को जूनागढ़ पहुँचे वर बनकर।
जीवों की करुण पुकार सुनी जागा उर में वैराग्य प्रखर।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पशुओं को बन्धन मुक्त किया कंगन विवाह का तोड़ दिया।
राजुल के द्वारे आकर भी स्वर्णिम रथ पीछे मोड़ लिया।।
रथत्याग चढ़े गिरनारी पर जा पहुँचे सहस्त्राम्र वन में।
वस्त्राभूषण सब त्याग दिये जिन दीक्षाधारी तन-मन में।।
फिर उग्र तपश्या के द्वारा निश्चय स्वरूप मर्मज्ञ हुए।
घातिया कर्म चारों नाशे छप्पन दिन में सर्वज्ञ हुए।।
तीर्थंकर प्रकृति उदय आई सुरहर्षित समवशरण रचकर।
प्रभु गंधकुटि में अंतरीक्ष आसीन हुए पद्मासन धर।।
ग्यारह गणधर में थे पहले गणधर वरदत्त महाऋर्षिवर।
श्री मुख्य आर्यिका राजमती श्रोता थे अगणित भव्यप्रवर।।
दिव्यध्वनि खिरने लगी शाश्वत ओंकार घन गर्जन सी।
शुभ बारहसभा बनी अनुपम सौंदर्यप्रभा मणि कंचनसी।।
जगजीवों का उपकार किया भव्यों को शिवपथ बतलाया।
निश्चय रत्नत्रय की महिमा का परम मोक्षफल दर्शाया।।
कर प्राप्त चतुर्दश गुणस्थान योगों का पूर्ण अभाव किया।
कर उर्ध्वगमन सिद्धान्त प्राप्तकर सिद्धलोक आवास लिया।।
गिरनार शैल से मुक्त हुए तन के परमाणु उड़े सारे।
पावन मंगल निर्वाण हुआ सुरगण के गूंजे जयकारे।।
नखकेश शेष थे देवों ने माया मय तन निर्वाण किया।
फिर अग्निकुमार सुरों ने आकर मुकुटानल से तन भस्म किया।।
पावन भस्मि का निज-निज के मस्तक पर सबने तिलक किया।
मंगल वाद्यों की ध्वनि गूंजी निर्वाण महोत्सव पूर्ण किया।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मों के बन्धन टूट गये पूर्णत्व प्राप्त कर सुखी हुए।
हम तो अनादि से हे स्वामी भव दुख बंधन से दुखी हुए।।
ऐसा अर्न्तबल दो स्वामी हम भी सिद्धत्व प्राप्त करलें।
तुम पद चिन्हों पर चल प्रभुवर शुभ–अशुभ विभावों को हर लें।।
ध्रुव भाव शुद्ध का अर्चनकर हम अर्न्तध्यानी बन जावें।
घातिया चारकर्मों को हर हम केवलज्ञानी बन जावें।।
शाश्वत शिवपद पाने स्वामी हम पास तुम्हारे आ जायें।
अपने स्वभाव के साधन से हम तीन लोक पर जाय पायें।।
निज सिद्ध स्वपद पाने को प्रभु हर्षित चरणों में आया हूँ।
वसु द्रव्य सजाकर नेमीश्वर प्रभु पूर्ण अर्घ्य मैं लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंख चिन्ह चरणों में शोभित जय जय नेमि जिनेश महान।
मन वच तन जो ध्यान लगाते वे हो जाते सिद्ध समान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री पार्श्वनाथ पूजन

(छंद–ताटंक)

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ, तुमने हमको यह बतलाया।
निज पार्श्वनाथ में थिरता से, निश्चय सुख होता सिखलाया।।
तुमको पाकर मैं तृप्त हुआ, ठुकराऊँ जग की निधि नामी।
हे रवि सम स्व–पर प्रकाशक प्रभु, मम हृदय विराजो हे स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधिकरणम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(वीरछन्द)

जड़ जल से प्यास न शान्त हुई, अतएव इसे मैं यहीं तजूँ।
निर्मल जल-सा प्रभु निजस्वभाव, पहिचान उसी में लीन रहूँ।।
तन-मन-धन निज से भिन्न मान, लौकिक वाँछा नहिं लेश रखूँ।
तुम जैसा वैभव पाने को, तव निर्मल चरण-कमल अर्चूं।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

चन्दन से शान्ति नहीं होगी, यह अन्तर्दहन जलाता है।
निज अमल भावरूपी चन्दन ही, रागाताप मिटाता है।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

प्रभु उज्ज्वल अनुपम निजस्वभाव ही, एकमात्र जग में अक्षत।
जितने संयोग वियोग तथा, संयोगी भाव सभी विक्षत।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

ये पुष्प काम वर्धक ही हैं, इनसे तो शान्ति नहीं होती।
निज समयसार की सुमन माल ही, कामव्यथा सारी खोती।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

जड़ व्यञ्जन क्षुधा न नाश करें, खाने से बंध अशुभ होता।
अरु उदय में होवे भूख अत:, निज ज्ञान अशन अब मैं करता।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

जड़ दीपक से तो दूर रहो, रवि से नहिं आत्म दिखाई दे।
निजसम्यक्ज्ञानमयी दीपक ही, मोहतिमिर को दूर करे।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

जब ध्यान अग्नि प्रज्ज्वलित होय, कर्मों का ईंधन जले सभी।
दशधर्ममयी अतिशय सुगंध, त्रिभुवन में फैलेगी तब ही।।तन.।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो जैसी करनी करता है, वह फल भी वैसा पाता है।
जो हो कर्तृत्व-प्रमाद रहित, वह महा मोक्षफल पाता है।।
तन-मन-धन निज से भिन्न मान, लौकिक वाँछा नहिं लेश रखूँ।
तुम जैसा वैभव पाने को, तव निर्मल चरण-कमल अर्चूं।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

है निज आतमस्वभाव अनुपम, स्वाभाविक सुख भी अनुपम है।
अनुपम सुखमय शिवपद पाऊँ, अतएव यह अर्घ्य समर्पण है। तन.।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, प्राणत स्वर्ग विहाय।
वामा माता उर बसे, पूजूँ शिव सुखदाय।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयां गर्भमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, सुतिथि महा सुखकार।
अन्तिम जन्म लियो प्रभु, इन्द्र कियो जयकार।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णेकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, बारह भावन भाय।
केशलोंच करके प्रभु, धरो योग शिवदाय।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णेकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

शुक्लध्यान में होय थिर, जीत उपसर्ग महान।
चैत्र कृष्ण शुभ चौथ को, पायो केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, पाया पद निर्वाण।
सम्मेदाचल विदित है, तव निर्वाण सुथान।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्याम् मोक्षमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(हरिगीतिका)

हे पार्श्व प्रभु मैं शरण आयो, दर्शकर अति सुख लियो।
चिन्ता सभी मिट गयी मेरी, कार्य सब पूरण भयो।।
चिन्तामणी चिन्तत मिले, तरु कल्प माँगे देत हैं।
तुम पूजते सब पाप भागैं, सहज सब सुख हेत हैं।।
हे वीतरागी नाथ! तुमको, भी सरागी मानकर।
माँगें अज्ञानी भोग वैभव, जगत में सुख जानकर।।
तव भक्त वाँछा और शंका आदि दोषों रहित हैं।
वे पुण्य को भी होम करते, भोग फिर क्यों चहत हैं।।
जब नाग और नागिन तुम्हारे, वचन उर धर सुर भये।
जो आपकी भक्ति करें, वे दास उनके भी भये।।
वे पुण्यशाली भक्तजन की, सहज बाधा को हरें।
आनन्द से पूजा करें, वाँछा न पूजा की करें।।
हे प्रभो तव नासाग्रदृष्टि, यह बताती है हमें।
सुख आत्मा में प्राप्त कर ले, व्यर्थ बाहर में भ्रमें।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं आप सम निज आत्म लखकर, आत्म में थिरता धरूँ।
अरु आशा-तृष्णा से रहित, अनुपम अतीन्द्रिय सुख भरूँ।।
जब तक नहीं यह दशा होती, आपकी मुद्रा लखूँ।
जिनवचन का चिन्तन करूँ, व्रत शील संयम रस चखूँ।।
सम्यक्त्व को नित दृढ़ करूँ, पापादि को नित परिहरूँ।
शुभराग को भी हेय जानूँ, लक्ष्य उसका नहिं करूँ।।
स्मरण ज्ञायक का सदा, विस्मरण पुद्गल का करूँ।
मैं निराकुल निजपद लहूँ प्रभु! अन्य कुछ भी नहिं चहूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

पूज्य ज्ञान वैराग्य है, पूजक श्रद्धावान।
पूजा गुण अनुराग अरु, फल है सुख अम्लान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री महावीर जिन पूजन-1

स्थापना

(छंद-मत्तगयन्द)

श्रीमत वीर हरैं भव पीर भरैं सुख सीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरी करदंक नएँ हरिपंकति मौलि सुआई।।
मैं तुमको इत थापतु हों प्रभु भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करुणाधनधारक देव! इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान-जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान-जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधिकरणम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

(छन्द अष्टपदी-अवतार)

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कंचनभृंग भरौं।
प्रभु वेग हरो भवपीर यातैं धार करों।।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.।

मलयागिरि चन्दन सार केसर संग घसों।
प्रभु भव आताप निवार पूजत हिय हुलसों।।श्री।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्व.।

तन्दुल सित शशि सम शुद्ध लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध पावों शिवनगरी।।श्री।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व.।

सुरतरु के सुमन समेत सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ-भंजन हेत पूजों पद थारे।।श्री।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.।

रस रज्जत सज्जत सद्य मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य भज्जत भूख अरी।।श्री।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.।

तम खण्डित मण्डित नेह दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे सुखगेह भ्रमतम खोवत हों।।श्री।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व.।

हरिचन्दन अगन कपूर चूर सुगन्ध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि आठों कर्म जरा।।श्री।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-विध्वंसनाय धूपं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचन थाल भरों।
शिवफल हित हे जिनराय तुम ढिग भेंट धरो।।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व.।

जलफल वसु सजि हिमथार तन-मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधितार पूजत पाप हरों।।श्री।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व.।

पंचकल्याणक अर्घ्य

मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमान जिनराय जी।। मोहि.।।

गरभ साढ़ सित छट्ठ लियो तिथि, त्रिशला उर अघ हरना।
सुर सुरपति तित सेव कर्‌यो नित, मैं पूजों भव तरना।।
मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमान जिनराय जी।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमान-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कन वरना।
सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भव हरना।।
मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमान जिनराय जी।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमान-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मगसिर असित मनोहर दशमी ता दिन तप आचरना।
नृपकुमार घर पारन कीनों मैं पूजों तुम चरना।।
मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमान जिनराय जी।।

ॐ ह्रीं मार्गशीषकृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमान-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 - Public Domain. Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

शुकलदशें वैशाख दिवस अरिघाति चतुक छय करना।
केवल लहि भवि भवसर तारे जजों चरन सुख भरना।।
मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमान जिनराय जी।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमान-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय पावापुरतैं वरना।
गनफनिवृन्द जजैं तित बहुविधि, मैं पूजों भय हरना।।
मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमान जिनराय जी।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमान-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(हरिगीतिका)

गनधर असनिधर, चक्रधर, हरधर गदाधर वरवदा,
अरू चापधर, विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा।
दुखहरन आनन्द भरन तारन-तरन चरन रसाल हैं,
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भाल की जयमाल है।।

(छन्द-घत्तानन्द)

जय त्रिशलानन्दन, हरिकृतवन्दन, जगदानन्दन चन्दवरं।
भवतापनिकन्दन, तन कनमन्दन, रहितसपन्दन नयनधरं।।

(छन्द त्रोटक)

जय केवलभानुकलासदनं, भविकोकविकाशन कन्दवनं।
जगजीत महारिपु मोहहरं, रजज्ञानदृगांवर चूर करं।।
गर्भादिक मंगलमण्डित हो, दुःख दारिद को नित खंडित हो।
जगमाहिं तुम्हीं सत पंडित हो, तुम ही भवभावविहंडित हो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हरिवंश सरोजन को रवि हो, बलवन्त महन्त तुम्ही कवि हो।
लहि केवल धर्मप्रकाश कियो, अबलों सोई मारग राजति हो।।
पुनि आप तने गुन माहिं सही, सुर मग्न रहैं जितने सब ही।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननिसों मन भावत हैं।।
पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुअ भक्ति विषैं पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहाँ तननं तननं।।
घननं घननं घनघंट बजै, दृमदम दृमदम मिरदंग सजै।
गगनांगन-गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता।।
धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है।
सननं सननं सननं नभ में, इकरूप अनेक जु धारि भ्रमें।।
कई नारि सुबीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्जवल गावति हैं।
करताल विषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करें।।
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करैं प्रभुजी तुमरी।
तुम ही जन जीवन के पितु हो, तुम ही बिन कारनतें हितु हो।।
तुम ही सब विघ्नविनाशन हो, तुम ही निज आनंद भासन हो।
तम ही चितचिंतितदायक हो, जगमाहिं तुम्हीं सब लायक हो।।
तुमरे पुन मंगल माहिं सही, जिय उत्तम पुन्य लियो सब ही।
हमको तुम्हरी सरनागत है, तुमरे गुन में मन पागत है।।
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जबलों वसुकर्म नहीं नसिये।
तबलों तुम ध्यान हिये वरतों, तबलों श्रुतचिन्तन चित्तरतों।।
तबलों व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभभाव सु गाहतु हों।
तबलों सतसंगति नित्य रहों, तबलों मम संजम चित्त गहों।।
जबलों नहिं नाश करों अरि को, शिवनारि वरों समता धरि को।
यह द्यो तबलों हमकों जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(घत्तानन्द)

श्री वीर जिनेशा, नमित सुरेशा, नाग-नरेशा भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावै, विघ्न नशावै, वांछित पावैं शर्म वरा।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये जयमालाऽर्घ्यं निर्व.।

(दोहा)

श्री सनमति के जुगलपद, जो पूजे धर प्रीत।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री महावीर पूजन-2

(हरिगीतिका)

जो मोह माया मान मत्सर, मदन मर्दन वीर हैं।
जो विपुल विघ्नों बीच में भी, ध्यान धारण धीर हैं।।
जो तरण-तारण भव-निवारण, भव-जलधि के तीर हैं।
वे वन्दनीय जिनेश, तीर्थङ्कर स्वयं महावीर हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधिकरणम्।

जिनके गुणों का स्तवन पावन करन अम्लान है।
मल-हरन निर्मल-करन भागीरथी नीर-समान है।।
संतप्त-मानस शान्त हों जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्व.।

लिपटे रहें विषधर तदपि-चन्दन विटप निर्विष रहें।
त्यों शान्त शीतल ही रहो-रिपु विघन कितने ही करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संतप्त–मानस शान्त हों जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व.।

सुख–ज्ञान–दर्शन–वीर जिन अक्षत समान अखण्ड हैं।
हैं शान्त यद्यपि तदपि जो दिनकर समान प्रचण्ड है।।संत.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवनजयी अविजित कुसुमसर सुभट मारन सूर हैं।
पर–गन्ध से विरहित तदपि निज–गन्ध से भरपूर हैं।।संत.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व.।

यदि भूख हो तो विविध व्यंजन मिष्ट इष्ट प्रतीत हों।
तुम क्षुधा–बाधा रहित जिन! क्यों तुम्हें उनसे प्रीति हो?।।संत.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.।

युगपद्–विशद् सकलार्थ झलकें नित्य केवलज्ञान में।
त्रैलोक्य–दीपक वीर–जिन दीपक चढ़ाऊँ क्या तुम्हें?।।संत.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व.।

जो कर्म ईन्धन दहन पावक पुंज पवन समान है।
जो हैं अमेय प्रमेय पूरण ज्ञेय ज्ञाता ज्ञान है।।संत.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.।

सारा जगत फल भोगता नित पुण्य एवं पाप का।
सब त्याग समरस निरत जिनवर सफल जीवन आपका।।संत.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व.।

इस अर्घ्य का क्या मूल्य है अनर्घ्य पद के सामने?
उस परम पद को पा लिया हे पतितपावन आपने।।संत.।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचकल्याणक अर्घ्य

(सोरठा)

सित छठवीं आषाढ़, माँ त्रिशला के गर्भ में।
अन्तिम गर्भावास, यही जान प्रणमूँ प्रभो।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तेरस दिन सित चैत, अन्तिम जन्म लियो प्रभु।
नृप सिद्धार्थ निकेत, इन्द्र आय उत्सव कियो।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दशमी मंगसिर कृष्ण, वर्द्धमान दीक्षा धरी।
कर्म कलिमा नष्ट, करने आत्मरथी बने।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सित दशमी बैशाख, पायो केवलज्ञान जिन।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य, प्रभुपद पूजा करें हम।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

कार्तिक मावस श्याम, पायो प्रभु निर्वाण तुम।
पावा तीरथधाम, दीपावली मनाँय हम।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णअमावस्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

यद्यपि युद्ध नहीं कियो, नाहिं रखें असि–तीर।
परम अहिंसक आचरण, तदपि बने महावीर।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द-पद्धरि)

हे मोह-महादलदलन वीर, दुद्धर-तप संयम धरण धीर।
तुम हो अनन्त आनन्दकन्द, तुम रहित सर्व जग दंद-फंद।।

अघकरन करन-मन हरन-हार, सुखकरन हरन भवदुख अपार।
सिद्धार्थ तनय तन रहित देव, सुर-नर-किन्नर सब करत सेव।।

मतिज्ञान रहित सन्मति जिनेश, तुम राग-द्वेष जीते अशेष।
शुभ-अशुभ राग की आग त्याग, हो गये स्वयं तुम वीतराग।।

षट् द्रव्य और उनके विशेष, तुम जानत हो प्रभुवर अशेष।
सर्वज्ञ-वीतरागी जिनेश, जो तुम को पहिचाने विशेष।।

वे पहिचानें अपना स्वभाव, वे करें मोह-रिपु का अभाव।
वे प्रगट करें निज-पर विवेक, वे ध्यावें निज शुद्धातम एक।।

निज आतम में ही रहें लीन, चारित्र-मोह को करें क्षीण।
उनका हो जावे क्षीण राग, वे भी हो जावें वीतराग।।

जो हुए आज तक अरीहंत, सबने अपनाया यही पंथ।
उपदेश दिया इस ही प्रकार, हो सबको मेरा नमस्कार।।

जो तुमको नहिं जानें जिनेश, वे पावें भव भव-भ्रमण क्लेश।
वे माँगें तुमसे धन-समाज, वैभव पुत्रादिक राज-काज।।

जिनको तुम त्यागे तुच्छ जान, वे उन्हें मानते हैं महान।
उनमें ही निशदिन रहें लीन, वे पुण्य-पाप में ही प्रवीन।।

प्रभु पुण्य-पाप से पार आप, बिन पहिचाने पावें संताप।
संतापहरण सुखकरण सार, शुद्धात्मस्वरूपी समयसार।।

तुम समयसार हम समयसार, सम्पूर्ण आतमा समयसार।
जो पहिचानें अपना स्वरूप, वे हो जायें परमात्मरूप।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनको ना कोई रहे चाह, वे अपना लेवें मोक्ष राह।
वे करें आत्मा को प्रसिद्ध, वे अल्पकाल में होंय सिद्ध।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.।

(दोहा)

भूतकाल प्रभु आपका, वह मेरा वर्तमान।
वर्तमान जो आपका, वह भविष्य मम जान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री पंच-बालयति पूजन

(छन्द-मत्तसवैया)

हे ब्रह्मचर्य के धनी ब्रह्ममय, परम पूज्य त्रिभुवन स्वामी।
हे पंच बालयति तीर्थंकर, तुम सम परिणति हो जगनामी।।
आनन्दमयी निज परम ब्रह्म, मैंने प्रत्यक्ष निहारा है।
उल्लास हृदय में छाया प्रभु, जब मैंने तुम्हें चितारा है।।
ज्यों दर्पण सन्मुख हो जग में, मोही तन रूप सजाते हैं।
त्यों तुम पूजन कर हे विभुवर, हम अपना भाव बढ़ाते हैं।।

(सोरठा)

वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व प्रभु, महावीर जिन।
नमत होय सुख चैन, द्रव्य-दृष्टि धर पूज हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीर पंचबालयति तीर्थंकराः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीर पंचबालयति तीर्थंकराः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीर पंचबालयति तीर्थंकराः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीरछन्द)

निज में जुड़ती है दृष्टि जभी, समता का सहज प्रवाह बहे।
आनन्द अपूर्व प्रकट होवे, तब जन्म-जरा-मृत नहीं रहे।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है जन्म–जरा–मृत रहित प्रभु! मम आज दृष्टि में आया है।
समरस से तृप्त रहूँ विभुवर, मैंने जल यहाँ चढ़ाया है।।
अतिशय है ब्रह्म भाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है।
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो जन्म–जरा–मृत्युविनाशनाय जलं।

निज परम शांति शीतलता से, आपूर्ण सरोवर मम प्रभु है।
भव रहित जहाँ भव ताप नहीं, सर्वोत्कृष्ट सुखमय विभु है।।
जब ताप नहीं तब चन्दन का भी, काम नहीं कुछ शेष रहा।
चन्दन प्रभु यहीं चढ़ाया है, निष्पाप–ताप निज रूप गहा।।अति.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि.।

छिलके से ढका हुआ अक्षत, छिलका हटते ही प्रकट हुआ।
पर्याय दृष्टि हटते ही त्यों, मम अक्षय प्रभु प्रत्यक्ष हुआ।।
निज अक्षय प्रभु के आश्रय से ही, राग–द्वेष का होवे क्षय।
ये अक्षत यहाँ चढ़ाये हैं, मैंने पाया है पद अक्षय।।अति.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

निष्काम पूर्ण निज वैभव का, मैं तृप्त हो गया दर्शन कर।
संकल्प विकल्प प्रवेश न हों, रहते सीमा से ही बाहर।।
अद्भुत रहस्य यह पाया है, इच्छाओं की उत्पत्ति नहीं।
बस निज स्वभाव में मगन रहूँ ये पुष्प चढ़ाता आज यहीं।।अति.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व.।

समरस अमृत का सागर है, क्षुत् पीड़ा का अस्तित्व नहीं।
त्यागोपादान शून्य पर से, कुछ ग्रहण त्याग कर्तृत्व नहीं।।
जो निज स्वभाव से च्युत होकर, तन के आश्रय से भूख लगी।
नैवेद्य समर्पित यहीं प्रभो! स्वाश्रय से भव की भूख भगी।।अति.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशत्व शक्ति शाश्वत् है सहज प्रकाशित मम् स्वभाव।
सब बाह्य प्रकाश अनावश्यक, उसमें नहिं दिखता निजस्वभाव।।
बाहर की दृष्टि छोड़ अहो! स्वसन्मुख चिन्मय ज्योति जगे।
ये दीपक यहीं विसर्जित है, अन्तर लौ से तम मोह भगे।।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है।
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व.।

दश धर्ममयी शाश्वत सुगन्ध चेतन नंदन में महक रही।
दुर्गन्धित भाव विकारों का, किंचित् भी है अस्तित्व नहीं।।
यह धूप यहीं प्रभु छोड़ रहा, अब पर से दृष्टि हटाई है।
स्वसन्मुख होकर अब प्रभु सम, स्वधर्म सुरभि शुभ पायी है। ।अति.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

प्रभु मुक्त स्वरूप सहज पाया; आनन्द अपूरव छाया है।
शिवफल की भी वांछा न रही, अन्तर पुरुषार्थ जगाया है।।
ज्ञानी तो फल वाँछा त्यागे, पर मूढ़ त्याग का फल चाहे।
फल चढ़ा रहा हूँ हे जिनवर, बस ये विकल्प भी नहिं आये। ।अति.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

प्रभु सर्व विशुद्ध स्वतत्त्व लखा, अब दृष्टि न पल भी हटती है।
होता उपयोग जभी बाहर, एकाग्र भावना जगती है।।
एकाग्र रहे उपयोग सदा, यह ही निश्चय से अर्घ्य कहा।
जिससे अविचल अनर्घ्यपद हो प्रभु बाह्य अर्घ्य इसलिए तजा। ।अति.।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

(दोहा)

वासुपूज्य श्री मल्लिजिन, नेमि पार्श्व महावीर।
बाल ब्रह्मचारी सुजिन, नमत मिटै भवपीर।।

(छन्द-पद्धरि)

जय **वासुपूज्य** देवाधिदेव, मंगलमय मंगलकरन एव।
जय चिदानन्द चिद्रूप सार, धारी निज महिमा निर्विकार।।
पूरवभव में तुमने स्वामी, सुन युगमंधर प्रभु की वाणी।
नित आत्मभावना भाई थी, तीर्थंकर प्रकृति बंधाई थी।।
तप कर महाशुक्र विमान गये, चय नृप वसुपूज्य के पुत्र भये।
कल्याणक देव मनाये थे, पर निज में आप समाये थे।।
भोगों को नहीं स्वीकार किया, दूरहि से प्रभुवर छोड़ दिया।
हो बालयति दीक्षा धारी, प्रकटाया निज पद सुखकारी।।
कर रहा अर्चना **मल्लिनाथ,** भवि दर्शन कर होते सनाथ।
वट वृक्ष विशाल गिरा लख कर, पूरव भव में दीक्षा धरकर।।
तीर्थंकर पद का बन्ध किया, अपराजित स्वर्ग प्रयाण किया।
तँहतैं चयकर अवतार लिया, शादी के समय वैराग लिया।।
छह दिन छद्मस्थ रहे स्वामी, नव-केवललब्धि रमा पायी।
भव्यों को शिवपथ दर्शाया, सम्मेदशिखर से शिव पाया।।
जय **नेमीश्वर** महिमा महान, सुन पशु क्रन्दन वैराग्य ठान।
छोड़े पशु अरु राजुल छोड़ी, भवबन्धन की कड़ियाँ तोड़ीं।।
जग को अनुपम आदर्श दिया, प्रभु धर्म अहिंसा प्रकट किया।
गिरनार शिखर से शिव पाया, प्रभु चरणों में हम सिर नाया।।
जय **पार्श्वनाथ** तव गुण अपार, गणधर भी पावें नहीं पार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इक दिवस सभा में विराज रहे, साकेत नरेश की भेंट लिए।।
इक दूत वहाँ पर आया था, साकेत विभव दरशाया था।
ऋषभादि प्रभु स्मरण हुआ, वैराग्य हृदय में जाग उठा।।
दीक्षा ले निज में मग्न हुए, तब कमठ घोर उपसर्ग किये।
अप्रभावित अचल रहे जिनवर, परमात्म दशा प्रगटी सत्वर।।
ऐसी स्थिरता प्रभु पाऊँ, बस परम ब्रह्म में रम जाऊँ।
हे **महावीर** विभु परम धीर, महिमा सागर से भी गम्भीर।।
शादी प्रसंग जब आया था, प्रभुवर तुमने ठुकराया था।
दीक्षा ले द्वादश वर्ष प्रभो, दुर्द्धर तप धारा आप विभो।।
निज ध्यान अग्नि द्वारा जिनेश, कर्मों को ध्वस्त किया अशेष।
अन्तिम तीर्थंकर अभिरामी, मैं करूँ वन्दना जगनामी।।
तव दर्शन करके हे स्वामी, मैंने निज महिमा पहिचानी।
प्रभु प्रबल पराक्रम प्रगटाऊँ, रागादि भाव पर जय पाऊँ।।
जो तीर्थ आपने प्रगटाया, वह ही स्वामी मुझको भाया।
कीचड़ लपेट तन धोना क्या, अरु कूद अग्नि में रोना क्या।।
श्रद्धान परम जागा मन में, सुख शान्ति सदा है अन्तर में।
परमाणु मात्र भी नहीं पर में, मेरा सर्वस्व सदा मुझमें।।
उपयोग नहीं पर में भागे, अतिचार नहीं किंचित् लागे।
प्रभुवर! निज में ही रम जाऊँ, निज परम ब्रह्मचर्य प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

परम ब्रह्म आनन्दमय, चित् स्वभाव अविकार।
समयसार में लीन हो, होऊँ भव से पार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सीमन्धर पूजन

(कुण्डलिया)

भव-समुद्र सीमित कियो, सीमन्धर भगवान।
कर सीमित निजज्ञान को, प्रगट्यो पूरण ज्ञान।।
प्रगट्यो पूरण ज्ञान-वीर्य-दर्शन सुखकारी।
समयसार अविकार विमल चैतन्य-विहारी।।
अंतर्बल से किया प्रबल रिपु-मोह पराभव।
अरे भवान्तक! करो अभय हर लो मेरा भव।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्...।
ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्...।
ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्...।

प्रभुवर तुम जल से शीतल हो, जल से निर्मल अविकारी हो।
मिथ्यामल धोने को जिनवर, तुम ही तो मल-परिहारी हो।।
तुम सम्यग्ज्ञान जलोदधि हो, जलधर अमृत बरसाते हो।
भविजन मनमीन प्राणदायक, भविजन मन जलज खिलाते हो।।
हे ज्ञानपयोनिधि सीमन्धर! यह ज्ञानप्रतीक समर्पित है।
हो शान्त ज्ञेय निष्ठा मेरी, जल से चरणाम्बुज चर्चित है।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्व.।

चंदन-सम चन्द्रवदन जिनवर, तुम चन्द्रकिरण से सुखकर हो।
भव-ताप निकंदन हे प्रभुवर! सचमुच तुम ही भव-दुख-हर हो।।
जल रहा हमारा अन्तःस्तल, प्रभु इच्छाओं की ज्वाला से।
यह शान्त न होगा हे जिनवर, रे विषयों की मधुशाला से।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिर-अंतर्दाह मिटाने को, तुम ही मलयागिरि चंदन हो।
चंदन से चरचूँ चरणाम्बुज, भव-तप-हर! शत-शत वंदन हो।।
ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

प्रभु! अक्षतपुर के वासी हो, मैं भी तेरा विश्वासी हूँ।
क्षत-विक्षत में विश्वास नहीं, तेरे पद का प्रत्याशी हूँ।।
अक्षत का अक्षत-सम्बल ले, अक्षत-साम्राज्य लिया तुमने।
अक्षत विज्ञान दिया जग को, अक्षत-ब्रह्माण्ड किया तुमने।।
मैं केवल अक्षत-अभिलाषी, अक्षत अतएव चरण लाया।
निर्वाण-शिला के संगम-सा, धवलाक्षत मेरे मन भाया।।
ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

तुम सुरभित ज्ञान-सुमन हो प्रभु, नहिं राग-द्वेष दुर्गन्ध कहीं।
सर्वांग सुकोमल चिन्मय तन, जग से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।।
निज अन्तर्वास सुवासित हो, शून्यान्तर पर की माया से।
चैतन्य विपिन के चितरंजन हो दूर जगत की छाया से।।
सुमनों से मन को राह मिली, प्रभु कल्पबेल से यह लाया।
इनको पा चहक उठा मन-खग, भर चोंच चरण में ले आया।।
ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

आनंद रसामृत के द्रह हो, नीरस जड़ता का दान नहीं।
तुम मुक्त-क्षुधा के वेदन से, षट्रस का नाम-निशान नहीं।।
विध-विध व्यंजन के विग्रह से, प्रभु भूख न शांत हुई मेरी।
आनंद-सुधारस-निर्झर तुम, अतएव शरण ली प्रभु तेरी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिर–तृप्ति–प्रदायी व्यंजन से, हो दूर क्षुधा के अंजन ये।
क्षुत्पीड़ा कैसे रह लेगी? जब पाये नाथ निरंजन ये।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

चिन्मय–विज्ञान–भवन अधिपति, तुम लोकालोक–प्रकाशक हो।
कैवल्य किरण से ज्योतित प्रभु! तुम महामोहतम नाशक हो।।
तुम हो प्रकाश के पुँज नाथ! आवरणों की परछाँह नहीं।
प्रतिबिंबित पूरी ज्ञेयावलि, पर चिन्मयता को आँच नहीं।।
ले आया दीपक चरणों में, रे! अन्तर आलोकित कर दो।
प्रभु तेरे मेरे अन्तर को, अविलंब निरन्तर से भर दो।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धू–धू जलती दुख की ज्वाला, प्रभु त्रस्त निखिल जगती तल है।
बेचेत पड़े सब देही हैं चलता फिर राग प्रभंजन है।।
यह धूम–घूमरी खा–खाकर, उड़ रहा गगन की गलियों में।
अज्ञान–तमावृत चेतन ज्यों, चौरासी की रंग रलियों में।
संदेश धूप का तात्त्विक प्रभु, तुम हुए ऊर्ध्वगामी जग से।
प्रगटे दशाँग प्रभुवर तुम को, अन्तःदशांग की सौरभ से।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

शुभ–अशुभ वृत्ति एकांत दुःख, अत्यन्त मलिन संयोगी है।
अज्ञान विधाता है इनका, निश्चित चैतन्य विरोधी है।।
काँटों सी पैदा हो जाती, चैतन्य सदन के आँगन में।
चंचल छाया की माया–सी, घटती क्षण में बढ़ती क्षण में।
तेरी पूजा का फल प्रभु! हों शांत शुभाशुभ ज्वालायें।
मधुकल्प फलों सी जीवन में, प्रभु! शांत–लतायें छा जावें।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्मल जल-सा प्रभु निजस्वरूप, पहिचान उसी में लीन हुए।
भव-ताप उतरने लगा तभी, चंदन-सी उठी हिलोर हिये।।
अभिराम भवन प्रभु अक्षत का, सब शक्ति प्रसून लगे खिलने।
क्षुत् तृषा अठारह दोष क्षीण, कैवल्य प्रदीप लगा जलने।।
मिट चली चपलता योगों की, कर्मों के ईधन ध्वस्त हुए।
फल हुआ प्रभो! ऐसा मधुरिम, तुम धवल निरंजन स्वस्थ हुए।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

वैदेही हो देह में, अतः विदेही नाथ।
सीमंधर निज सीम में, शाश्वत करो निवास।।
श्री जिन पूर्व विदेह में, विद्यमान अरहंत।
वीतराग सर्वज्ञ श्री, सीमंधर भगवंत।।

(छन्द-पद्धरि)

हे ज्ञान स्वभावी सीमंधर! तुम हो असीम आनन्दरूप।
अपनी सीमा में सीमित हो, फिर भी हो तुम त्रैलोक्य भूप।।
मोहान्धकार के नाश हेतु, तुम ही हो दिनकर अति प्रचण्ड।
हो स्वयं अखंडित कर्म शत्रु को, किया आपने खंड-खंड।।
गृहवास राग की आग त्याग, धारा तुमने मुनिपद महान।
आतम स्वभाव साधन द्वारा, पाया तुमने परिपूर्ण ज्ञान।।
तुम दर्शन ज्ञान-दिवाकर हो, वीरज-मंडित आनंदकन्द।
तुम हुए स्वयं में स्वयं पूर्ण, तुम ही हो सच्चे पूर्णचन्द।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूरव विदेह में हे जिनवर! हो आप आज भी विद्यमान।
हो रहा दिव्य उपदेश भव्य, पा रहे नित्य अध्यात्मज्ञान।।
श्री कुन्दकुन्द आचार्यदेव को, मिला आपसे दिव्यज्ञान।
आत्मानुभूति से कर प्रमाण, पाया उनने आनन्द महान।।
पाया था उनने समयसार, अपनाया उनने समयसार।
समझाया उनने समयसार, हो गये स्वयं वे समयसार।।
दे गये हमें वे समयसार, गा रहे आज हम समयसार।
है समयसार बस एक सार, है समयसार बिन सब असार है।।
मैं हूँ स्वभाव से समयसार, परिणति हो जावे समयसार।
है यही चाह, है यही राह, जीवन हो जावे समयसार।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

(सोरठा)

समयसार है सार, और सार कुछ है नहीं।
महिमा अपरम्पार, समयसारमय आपकी।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

'पूजा का स्वरूप'

गुणगान एवं नमनादि करना द्रव्य पूजा है।
गुणों का चिन्तनादि भाव पूजा है।
उनके समान निजस्वरूप की आराधना
परमार्थ पूजा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजन

(छन्द-अडिल्ल)

ढाई द्वीप में पाँच विदेह हैं शाश्वते।
तीर्थङ्कर जहँ बीस सदा ही राजते।।
भक्ति भाव से करूँ सहज आराधना।
निज पद पाऊँ नाथ यही है भावना।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति तीर्थंकराः समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति तीर्थंकराः समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति तीर्थंकराः समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

स्वयं सिद्ध शुद्धातम ध्याय, जन्म जरा मृत दोष नशाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधर-युगमन्धर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनन्तवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरषेण-महाभद्र-देवयशोऽजितवीर्येति-विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

क्रोधादिक दुर्भाव नशाय, क्षमाधार भव ताप मिटाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं नि.।

इन्द्रिय सुख क्षत् विक्षत् रूप, त्याग लहूँ आनन्द अनूप।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि.।

त्यागूँ प्रभु अब्रह्म दुखदाय, निश्चय परम शील प्रगटाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षुधा वेदनीय उपशम होय, पाऊँ निजानन्द रस सोय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।
ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
मोह महातम तुरत नशाय, आत्मज्ञान की ज्योति जगाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।
ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।
जलें कर्म भव दुख विनशाय, निर्मल आत्मध्यान प्रगटाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।
ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।
सुखमय सम्यक्चारित्र धार, महा मोक्षफल पाऊँ सार।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।
ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।
सहज भावमय अर्घ्य चढ़ाय, निज अविचल अनर्घ्य पद पाय।
सीमंधर आदिक जिन बीस, चरणों में नित नाऊँ शीश।।
ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(दोहा)

अहो विदेहीनाथ के, गुण गाऊँ सुखकार।
देह रहित शुद्धात्मा, ध्याऊँ नित अविकार।।

(वीरछन्द)

श्री सीमंधर श्री युगमंधर, श्री बाहु-सुबाहु सु संजातक।
स्वयंप्रभ ऋषभानन वन्दूँ, अनन्तवीर्य नाशें पातक।।
श्री सूर्यप्रभ विशालकीर्ति जी, जजूँ वज्रधर चन्द्रानन।
भद्रबाहु अरु श्री भुजंगम, ईश्वर जिन भव दुख भानन।।
नेमिप्रभ श्री वीरसेन जिन, महाभद्र प्रभु मंगलकार।
श्री देवयश अजितवीर्य को, नमूँ नित्य त्रय योग संभार।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीस तीर्थंकर सदा विदेहों, में शोभें आनन्दकारी।
धनुष पाँच सौ काय विराजे, समवशरण महिमा न्यारी।।
सिंहासन पर अन्तरीक्ष प्रभु, तिष्ठे अपने ही आधार।
चौंसठ चमर छत्रत्रय शोभित, भामण्डल द्युति लसे अपार।।
मोह विजय को सूचित करती, दुंदुभि धुनि संदेश सुनाय।
आओ आओ अहो जगत जन, सुनो दिव्यध्वनि शिव सुखदाय।।
धर्मतीर्थ तहँ शाश्वत वर्ते, महिमा मुझसे कही न जाय।
धन्य-धन्य जो प्रत्यक्ष देखें, सुनें दिव्यध्वनि बोधि लहाय।।
हो निर्ग्रन्थ रमें निज माँही, परमातम पद पावें सार।
भाव सहित उनका यश गाऊँ, सहज नमन होवे अविकार।।

(छन्द–धत्ता)

जय जिन गुण सारं मंगलकारं, गाऊँ अति ही हर्षाऊँ।
निज में रम जाऊँ, कर्म नशाऊँ, ऐसे ही गुण प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(दोहा)

जो जिन पूजे भाव से, धरें नित्य ही ध्यान।
अल्पकाल में वे लहें, अविनाशी निर्वान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अर्घ्यावली – श्री त्रिकाल चौबीसी अर्घ्य

अहो त्रिकाल सम्बन्धी जिनवर, भक्ति भाव से नमन करूँ।
निज त्रैकालिक परम भाव का, मैं भी नित अनुभवन करूँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यभावमय अर्घ चढ़ाते, यही भावना भाता हूँ।
साधन-साध्य स्वयं में लखकर, प्रभुवर अति हर्षाता हूँ।
ॐ ह्रीं भूत भविष्य वर्तमान जिनतीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालयों को अर्घ्य

तीन लोक में अकृत्रिम चैत्यालय, अरु जिनबिम्ब महा।
जिनके दर्शन से निज दर्शन, होते हैं सुखदाय अहा।।
उन सब अकृत्रिम जिनबिम्बों, को मैं अर्घ चढ़ाता हूँ।
निज अकृत्रिम भाव लखूँ, बस यही भावना भाता हूँ।।
ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.।

श्री कृत्रिम जिनबिम्बों को अर्घ्य

जिस प्रकार पाषाण खण्ड में, शिल्पी बिम्ब प्रगटाता है!
मंत्र विधि से होय प्रतिष्ठा, त्रिजग पूज्य बन जाता है!!
उस प्रकार मैं निज परिणति में, ज्ञायक का प्रतिबिम्ब धरूँ!
रत्नत्रय से होय प्रतिष्ठा, त्रिजग पूज्य पद प्राप्त करूँ!!
ॐ ह्रीं श्री कृत्रिम जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालयों को अर्घ्य

तीन लोक में राजते, जिनमंदिर अविकार।
अकृत्रिम-कृत्रिम महा, नमहुँ त्रियोग संभार।।
उनमें जो प्रतिबिम्ब हैं, चित्स्वरूप दर्शाय।
करें परम उपकार नित, पूजूँ चित हर्षाय।।
ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुर्थ खण्ड : पर्व पूजन संग्रह

श्री पंचमेरु पूजन

(छन्द-गीता)

तीर्थंङ्करों के न्हवन-जलतैं भये तीरथ शर्मदा,
तातैं प्रदच्छन देत सुर-गन पंचमेरुन की सदा।
दो जलधि ढाई द्वीप में सब-गगन-मूल विराजहीं,
पूजों असी जिनधाम-प्रतिमा हौंहिं सुख दुख भाजहीं।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंबन्धिअस्सीजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर...।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंबन्धिअस्सीजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्थापनम्।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंबन्धिअस्सीजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र मम् सन्निहितो...।

(छन्द-चौपाई-आँचलीबद्ध)

शीतल-मिष्ट-सुवास मिलाय, जलसों पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शन-विजय-अचल-मंदर-विद्युन्मालीपंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिन चैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर करपूर मिलाय, गंधसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमल अखण्ड सुगन्ध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्व. स्वाहा।

वरन अनेक रहे महाकाय, फूलसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मन-वांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।पाँचों।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम हर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ अगर अमल अधिकाय, धूपसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस सुवर्ण सुगन्ध सुहाय, फलसौं पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।।पाँचों.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परमसुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचल मन्दर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रगट।।

(छन्द वेसरी)

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भू पर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
ऊपर पाँच शतक पर सौहै, नन्दन-वन देखत मन मोहै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, वन सुमनस शोभै अधिकाई।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
ऊँचा जोजन सहस-छत्तीसं, पाण्डुक-वनसोहै गिरि-सीसं।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
चारों मेरु समान बखाने, भू पर भद्रसाल चहुँ जाने।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।
ऊँचे पाँच शतक पर भाखे, चारों नन्दनवन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।

उच्च अठाइस सहस बताये, पाण्डुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वचन-तन वन्दना हमारी।।

सुर नर चारन वन्दन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसम्बन्धि अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

पंचमेरु की आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानै प्रभु, तुरत महासुख होय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री सोलहकारण पूजन

(अडिल्ल)

सोलह कारण भाय तीर्थङ्कर जे भये।
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये।।
पूजा करि निज धन्य लख्यो बहुचाव सौं।
हमहु षोडश कारन भावैं भावसौं।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि! अत्र अवतर अवतर संवौषट्...।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ....।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(छन्द-चौपाई-आँचलीबद्ध)

कंचन-झारी निरमल नीर, पूजों जिनवर गुण गम्भीर।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थङ्कर-पद-पाय।।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धि-विनयसंपन्नता-शीलव्रतेष्वनतिचार-अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग-संवेग-शक्तितस्त्याग-तपः-साधुसमाधि-वैयावृत्यकरण-अर्हद्भक्ति-आचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्ति-प्रवचनभक्ति-आवश्यका-परिहाणि-मार्गप्रभावना-प्रवचनवात्सल्य इति तीर्थंकरत्वकारणेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्री जिनवर के पांय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल धवल सुगन्ध अनूप, पूजौं जिनवर तिहुँ जग भूप।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल सुगन्ध मधुप-गुंजार, पूजौं श्री जिनवर जग-आधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदनेवज बहुविधि पकवान, पूजौं श्री जिनवर गुणखान।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थङ्कर–पद–पाय।।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक–ज्योति तिमिर छ्यकार, पूजूँ श्री जिन केवलधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूरगन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि बहुत फलसार, पूजौं जिन वांछित–दातार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफल आठों दरब चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करौं मनलाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।दरश.।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

(दोहा)

षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति-वास।
पाप-पुण्य सब नाशके, ज्ञान-भान परकाश।।

(चौपाई)

दरशविशुद्धि धरै जो कोई, ताको आवागमन न होई।
विनय महाधारै जो प्राणी, शिव-वनिता की सखी बखानी।।
शील सदा दृढ़ जो नर पाले, सो औरन की आपद टाले।
ज्ञानाभ्यास करे मनमाहीं, ताके मोह-महातम नाहीं।।
जो संवेग-भाव विस्तारे, सुरग-मुकति-पद आप निहारे।
दान देय मन हरष विशेखे, इह भव जस पर भव सुख देखे।।
जो तप तपे खपे अभिलाषा, चूरे करम-शिखर गुरु भाषा।
साधुसमाधि सदा मन लावे, तिहुँ जग भोग भोगि शिव जावे।।
निश-दिन वैयावृत्त्य करैया, सो निहचे भव-नीर तिरैया।
जो अरहंत भगति मन आने, सो जन विषय कषाय न जाने।।
जो आचारज-भगति करे है, सो निर्मल आचार धरे है।
बहुश्रुतवन्त-भगति जो करई, सो नर संपूरण श्रुत धरई।।
प्रवचन-भगति करे जो ज्ञाता, लहे ज्ञान-परमानन्द-दाता।
षट् आवश्यक काल जो साधे, सो ही रत्नत्रय आराधे।।
धरम-प्रभाव करे जे ज्ञानी, तिन शिव-मारग रीति पिछानी।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावे, सो तीर्थङ्कर पदवी पावे।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दोहा)

एही सोलह भावना, सहित धरे व्रत जोय।
देव-इन्द्र-नर वंद्य पद, 'द्यानत' शिवपद होय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री दशलक्षण धर्म पूजन

(अनुष्टुप) स्थापना (संस्कृत)

उत्तमक्षान्तिकाद्यन्त-ब्रह्मचर्य-सुलक्षणम्।
स्थापय दशधा धर्ममुत्तमं जिनभाषिततम्।।

(अडिल्ल) स्थापना (हिन्दी)

उत्तम क्षमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं,
चहुँगति-दुख तैं काढ़ि मुकति करतार हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्य-ब्रह्मचर्येति दशलक्षण धर्माय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं।

अमल अखण्डित सार, तन्दुल चन्द्र समान शुभ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविनाशनाय पुष्पं।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट्-रस संजुगत।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं।

बाति कपूर सुधार, दीपक-ज्योति सुहावनी।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.।

फल की जाति अपार, घ्रान-नयन-मन-मोहने।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशधर्मों के अर्घ्य

(सोरठा, चौपाई एवं हरिगीतिका)

पीडैं दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करैं।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजे पीतमा।।
उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह-भव जस, पर भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहे अयानो।।
कहि है अयानो वस्तु छीने, बाँध मार बहुविधि करै।
घर तैं निकारै तन विदारै, बैर जो न तहाँ धरै।।
तैं करम पूरब किये खोटे सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध अग्नि बुझाय प्रानी, साम्य-जल ले सीयरा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।
उत्तम मार्दव गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद माहिं तैं आया, दमरी रूंकन भाग बिकाया।।
रूँकन बिकाया भाग वशतैं, देव इक इन्द्री भया।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य जीवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट न कीजे कोय, चोरन के पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु सम्पदा।।
उत्तम आर्जव-रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मन में हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करिये सरल तिहुँ जोग अपने, देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अँगार-सी।।
नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, करम-बन्ध-विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमआर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज।
साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।।

उत्तम सत्य-बरत पालीजे, पर-विश्वासघात नहिं कीजे।
साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।
पेखो तिहायत पुरुष साँचे को दरब सब दीजिये।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच गुण लख लीजिये।।
ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया।
वच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों।
शौच सदा निर्दोष, धरम बड़ो संसार में।।

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा-पास महा दुःखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी।।
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष स्वभावतैं।।
ऊपर अमल मल भरयो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधु लहै।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काय छहों प्रतिपाल पंचेन्द्रिय मन वश करो।
संजम-रतम सँभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं।।
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजैं अघ तेरे।
सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन करन सुख ठाहीं।।
ठाहीं पृथी जल आग मारुत, रूख त्रस करूना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो।।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग-कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जम-मुख बीच में।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहैं सुरराय, करम-शिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकति सम।।
उत्तम तप सब माँहि बखाना, करम-शैल को व्रज-समाना।
बस्यो अनादि निगोद मँझारा, भू विकलत्रय पशु तन धारा।।
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्री जैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता।।
अति महादुर्लभ त्याग विषय-कषाय जो तप आदरैं।
नर-भव अनुपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरैं।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमतपधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए।
धन बिजुरी उनहार, नर-भव लाहो लीजिए।।
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय अहारा।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान सँभारै।।
दोनों सँभारे कूप-जल सम, दरब घर में परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाया खोया बह गया।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौबीस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए।।

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिन्ता.दुख ही मानो।
फाँस तनक-सी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुःख भालैं।।
भालैं न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरैं।
धनि नगन पर तन-नगन ठाड़े, सुर-असुर पायनि परैं।।
घर माँहि तिसना जो घटावै, रुचि नहिं संसार सौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमाकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा।।

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहैं बान-वरषा बहु सूरे, टिकैं न नैन-वान लखि कूरे।
कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहिं, काग ज्यों चोंचैं भरैं।।
संसार में विष बेल नारी तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दश पैड़ि चढ़ि कैं, शिव महल में पग धरा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

दश लंच्छन बन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय।।

(छन्द-चौपाई)

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर-बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेद ज्ञान सब भासै।।
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागि सुगति उपजावै।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोलै, सौ प्रानी संसार न डोलै।।
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सन्तोषी गुण-रतन भण्डारी।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नर-भव सफल करै ले साता।।
उत्तम तप निरवाँछित पालै, सो नर करम-शत्रु को टालै।
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारै, परम समाधि दशा विसतारै।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नर-सुर सहित मुकति-फल पावै।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्य ब्रह्मचर्येतिदशलक्षण धर्माय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाशि।
अजर-अमर पद को लहै, 'द्यानत' सुख की राशि।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशलक्षण धर्म का मर्म

(सोरठा)

क्षमा भाव अविकार, स्वाश्रय से प्रकटे सुखद।
आनन्द अपरम्पार, शत्रु न दीखे जगत में।।1।।
मार्दव भाव सुधार, निज रस ज्ञाननंदमय।
वेदूँ निज अविकार, नहीं मान नहीं दीनता।।2।।
सरल स्वभावी होय, अविनाशी वैभव लहूँ।
वांछा रहे न कोय, माया शल्य विनष्ट हो।।3।।
परम पवित्र स्वभाव, अविरल वर्ते ध्यान में।
नाशे सर्व विभाव, सहजहि उत्तम शौच हो।।4।।
सत्स्वरूप शुद्धात्म, जानूँ मानूँ आचरूँ।
प्रकटे पद परमात्म, सत्य धर्म सुखकार हो।।5।।
संयम हो सुखकार, अहो! अतीन्द्रिय ज्ञानमय।
उपजे नहीं विकार, परम अहिंसा विस्तरे।।6।।
निज में ही विश्राम, जहाँ कोई इच्छा नहीं।
ध्याऊँ आतमराम, उत्तम तप मंगलमयी।।7।।
परभावों का त्याग, सहज होय आनन्दमय।
निज स्वभाव में पाग, रहूँ निराकुल मुक्त प्रभु।।8।।
सहज अकिंचन् रूप, नहीं परमाणु मात्र मम।
भाऊँ शुद्ध चिद्रूप, होय सहज निर्ग्रंथ पद।।9।।
परम ब्रह्म अम्लान, ध्याऊँ नित निर्द्वन्द्व हो।
ब्रह्मचर्य सुख खान, पूर्ण होय आनंदमय।।10।।
एक रूप निज धर्म, दशलक्षण व्यवहार से।
स्वाश्रय से यह मर्म, जाना ज्ञान विरागमय।।11।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नत्रय धर्म पूजन

जय जय सम्यक् दर्शन पावन मिथ्या भ्रम नाशक श्रद्धान।
जय जय सम्यक् ज्ञान तिमिर हर जय जय वीतराग विज्ञान।।
जय जय सम्यक् चारित निर्मल मोह क्षोभ हर महिमावान।
अनुपम रत्नत्रय धारण कर मोक्षमार्ग पर करूँ प्रयाण।।

ॐ ह्रीं श्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्म अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

(छंद वीर)

सम्यक् सरित सलिल जल द्वारा मिथ्याभ्रम प्रभु दूर हटाव।
जन्म मरण का क्षय कर डालूँ साम्य भाव रस मुझे पिलाव।।
दर्शन ज्ञान चरित्र साधना से पाऊँ निज शुद्ध स्वभाव।
रत्नत्रय की पूजन करके राग-द्वेष का करूँ अभाव। ।दर्शन.. ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्माय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

शुभ भावों का चंदन घिस-घिस निज से किया सदा अलगाव।
भव ज्वाला शीतल हो जाये ऐसी आत्म प्रतीत जगाव। ।दर्शन.. ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्माय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

भव समुद्र की भंवरों में फंस टूटी अब तक मेरी नाव।
पुण्योदय से तुमसा नाविक पाया मुझको पार लगाव। ।दर्शन.. ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्माय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

काम क्रोध मद मोह लोभ से मोहित हो करता पर भाव।
दृष्टि बदलजाये तो सृष्टि बदलजाये यह सुमतिजगाव। ।दर्शन.. ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्माय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्य भाव की रुचि में रहता इच्छाओं का सदा कुभाव।
क्षुधारोग हरने को केवल निज की रुचि ही श्रेष्ठ उपाव।।
दर्शन ज्ञान चरित्र साधना से पाऊँ निज शुद्ध स्वभाव।
रत्नत्रय की पूजन करके राग-द्वेष का करूँ अभाव।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्माय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

ज्ञान ज्योति बिन अंधकार में किये अनेकों विविध विभाव।
आत्मज्ञान की दिव्यविभा से मोहतिमिर का करूँ अभाव।।दर्शन..।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्माय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।

घाति कर्म ज्ञानावरणादिक निज स्वरूप घातक दुर्भाव।
ध्रुव स्वभावमय शुद्ध दृष्टि दो अष्टकर्म से मुझे बचाव।।दर्शन..।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्माय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं नि.।

निज श्रद्धानज्ञान चारित्रमय निजपरिणति से पा निज ठाँव।
महामोक्ष फल देने वाले धर्म वृक्ष की पाऊँ छाँव।।दर्शन..।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्माय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।

दुर्लभ नर तन फिर पाया है चूक न जाऊँ अन्तिम दाव।
निज अनर्घपद पाकर नाश करूँगा मैं अनादि का घाव।।दर्शन..।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्माय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

1. सम्यग्दर्शन

आत्मतत्व की प्रतीत निश्चय सप्ततत्व श्रद्धा व्यवहार।
सम्यक्दर्शन से हो जाते भव्य जीव भव सागर पार।।1।।
विपरीताभिनिवेश रहित अधिगमज निसर्गज समकित सार।
औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम होता है यह तीन प्रकार।।2।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्ष, मार्ग, बीज, उपदेश, सूत्र, संक्षेप अर्थ विस्तार।
समकित है अवगाढ़ और परमावगाढ़ दश भेद प्रकार।।3।।
जिन वर्णित तत्वों में शंका लेश नहीं, निशंकित अंग।
सुरपद या लौकिक सुख बाँछा लेश नहीं, निःकांक्षित अंग।।4।।
अशुचि पदार्थों में न ग्लानि हो शुचिमय निर्विचिकित्सा अंग।
देव–शास्त्र–गुरु धर्मात्माओं में रुचि अमूढ़द्रष्टि सुअंग।।5।।
पर दोषों को ढकना स्वगुण वृद्धि करना उपगूहन अंग।
धर्म मार्ग से विचलित हो थिर रखना स्थितिकरणसुअंग।।6।।
साधर्मी में गौ बछड़े सम पूर्ण प्रीति वात्सल्य सुअंग।
जिन पूजा तप दया दान मन से करना प्रभावना अंग।।7।।
आठ अंग पालन से होता है सम्यक्दर्शन निर्मल।
सम्यक्ज्ञान चरित्र उसी के कारण होता है उज्जवल।।8।।
शंका कांक्षा विचिकित्सा अरु मूढ़दृष्टि अनउपगूहन।
अस्थितिकरण अवात्सल्य अप्रभावना वसु दोष सघन।।9।।
कुगुरुकुदेव कुशास्त्र और इनके सेवक छः अनायतन।
देव मूढ़ता गुरुमूढ़ता लोक मूढ़ता तीन जघन।।10।।
जाति रूप कुल ऋद्धि तपस्या पूजा बल, ज्ञान मद आठ।
मूल दोष सम्यक्दर्शन के यह पच्चीस तजो मद आठ।।11।।
जय जय सम्यक् दर्शन आठों अंग सहित अनुपम सुखकार।
यही धर्म का सुदृढ़ मूल है इसकी महिमा अपरम्पार।।12।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांग सम्यक्दर्शनाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अट्ठाईस मूलगुण धारण सप्त भयों से रहना दूर।
निजस्वभाव आश्रय से करना पर विभाव को चकनाचूर।।12।।
निरतिचार तेरह प्रकार का है चारित्र महान प्रधान।
इसके पालन से होता है सिद्ध स्वपद पावन निर्वाण।।13।।
श्रेष्ठधर्म है श्रेष्ठमार्ग है श्रेष्ठ साधु पद शिव सुखकार।
सम्यक्चारित्र बिना न कोई हो सकता भव सागर पार।।14।।
ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधि सम्यक्चारित्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

समुच्चय जयमाला

अष्ट अंगयुत निर्मल सम्यक्दर्शन मैं धारण कर लूँ।
आठ अंगयुत निर्मल सम्यक्ज्ञान आत्मा में वर लूँ।।1।।
तेरह विधि सम्यक् चारित्र के मुक्ति भवन में पग धर लूँ।
श्री अरहंत सिद्ध पद पाऊँ सादि अनंत सौख्य भर लूँ।।2।।
निज स्वभाव का साधन लेकर मोक्ष मार्ग पर आ जाऊँ।
निज स्वभाव धर भाव शुभाशुभ परिणामों पर जय पाऊँ।।3।।
एक शुद्ध निज चेतन शाश्वत दर्शन ज्ञान स्वरूपी जान।
ध्रुव टंकोत्कीर्ण चिन्मय चित्चमत्कार चिद्रूपी मान।।4।।
इसका ही आश्रय लेकर मैं सदा इसी के गुण गाऊँ।
द्रव्यदृष्टि बन निजस्वरूप की महिमा से शिव सुख पाऊँ।।5।।
रत्नत्रय को वन्दन करके शुद्धात्मा का ध्यान करूँ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित से परम स्वपद निर्वाण करूँ।।6।।
ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन-सम्यक्ज्ञान-सम्यक्चारित्रमयी रत्नत्रय धर्मेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय व्रत श्रेष्ठ की महिमा अगम अपार।
जो व्रत को धारण करे हो जाये भव पार।।

इत्याशीर्वादः।

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर पूजन

(छन्द–अडिल्ल)

सरब परब में बड़ो अठाई परव है।
नन्दीश्वर सुर जाहिं लेय वसु दरब है।।
हमें सकति सो नाहिं इहाँ करि थापना।
पूजैं जिनगृह–प्रतिमा है हित आपना।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमा समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमा समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमा समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्... ।

(छन्द–अवतार)

कंचन–मणि–मय–भृङ्गार, तीरथ–नीर भरा।
तिहुँ धार दई निरवार, जामन मरन जरा।।
नन्दीश्वर–श्रीजिन–धाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद–भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव–तप–हर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं।
प्रभु यह गुन कीजै साँच, आयो तुम ठाहीं।।
नन्दीश्वर–श्रीजिन–धाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद–भाव धरों।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सोहैं।
सब जीते अक्ष-समाज-तुम सम अरु को हैं।।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊँ फूलन सों।
लहूँ शील-लक्ष्मी एव, छूटों शूलन सों।नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज इन्द्रिय-बलकार, सो तुमने चूरा।
चरु तुम ढिंग सोहै सार, अचरज है पूरा ।नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति-प्रकाश, तुम तन माहिं लसै।
टूटे करमन की राशि, ज्ञान-कणी दरसे।नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु-धूप-सुवास, दश-दिशि नारि वरे।
अति हरष-भाव परकाश, मानों नृत्य करे।नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुविधि फल ले तिहुँ काल, आनन्द राचत हैं।
तुम शिव-फल देहु दयाल, तुहि हम जांचत हैं।।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों ।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत, भूमि समरपतु हों। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

कार्तिक फाल्गुन साढ के, अन्त आठ दिन माहिं।
नन्दीश्वर सुर जात हैं, हम पूजें इह ठाहिं।।1।।

(छन्द-लक्ष्मीधरा)

एक सौ त्रेसठ कोड़ि जोजन महा,
लाख चौरसिया एक दिश में लहा।
आठमों द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं,
भौन बावन प्रतिमा नमों सुखकरं।।2।।

चार दिशि चार अंजनगिरी राजहीं,
सहज चौरासिया एक दिश छाजहीं।
ढोल सम गोल ऊपर तले सुन्दरं,
भौन बावन प्रतिमा नमों सुखकरं।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक इक चार दिश चार शुभ बावरी,
एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी।
चहुँ दिशि चार वन लाख जोजन वरं,
भौन बावन प्रतिमा नमों सुखकरं।।4।।

सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं,
सहस दश महा जोजन लखत ही सुखं।
बावरी कौन दो माहि दो रतिकरं।
भौन बावन प्रतिमा नमों सुखकरं।।5।।

शैल बत्तीस एक सहस जोजन कहे,
चार सोलह मिलैं सर्व बावन लहे।
एक इक सीस पर एक जिन मन्दिरं,
भौन बावन प्रतिमा नमों सुखकरं।।6।।

बिम्ब अठ एकसौ रतनमयी सोहही,
देव देवी सरव नयन मन मोहही।
पाँचसौ धनुष तन पद्म-आसन परं,
भौन बावन प्रतिमा नमों सुखकरं।।7।।

लाल नख-मुख नयन श्याम अरु स्वेत हैं,
श्याम रंग भौंह सिर-केश छबि देत हैं।
वचन बोलत मनों हँसत कालुष हरं,
भौन बावन प्रतिमा नमों सुखकरं।।8।।

कोटि-शशि-भान-दुति-तेज छिप जात है,
महा-वैराग-परिणाम ठहरात है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यक्धरं,
.भौन बावन प्रतिमा नमों सुखकरं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

नन्दीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा-महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनों नाम, यही भगति शिव-सुख करै।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री श्रुतपंचमी पूजन

(वीरछन्द)

स्याद्वाद-मय द्वादशांग युत, माँ जिनवाणी कल्याणी।
जो भी शरण हृदय से लेता, हो जाता केवलज्ञानी।।
जय जय जय हितकारी शिव-सुखकारी माता जय जय जय।
कृपा तुम्हारी से ही होता, भेदज्ञान का सूर्य-उदय।।
श्री धरसेनाचार्य कृपा से, मिला परम जिनश्रुत का ज्ञान।
भूतबली मुनि पुष्पदन्त ने, षट्खण्डागम रचा महान।।
अंकलेश्वर में ग्रन्थ हुआ था पूर्ण आज के मंगल दिन।
जिनवाणी लिपिबद्ध हुई थी, पावन परम आज के दिन।।
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिवस, जिनश्रुत का जय-जयकार हुआ।
श्रुतपंचमी पर्व पर श्री जिनवाणी का अवतार हुआ।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागम! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्ध स्वानुभव जल धारा से, यह जीवन पवित्र कर लूँ।
साम्यभाव पीयूष पानकर, जन्म-जरा-मय दुःख हर लूँ।।
श्रुतपंचमी पर्व शुभ उत्तम, जिनश्रुत को वन्दन कर लूँ।
षट्खण्डागम धवल जयधवल, महाधवल पूजन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वानुभव का उत्तम, पावन चन्दन चर्चित कर लूँ।
भव-दावानल के ज्वालामय, अघ-संताप ताप हर लूँ।।श्रुत.।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वानुभव के परमोत्तम, अक्षत धवल हृदय धर लूँ।
परम शुद्ध चिद्रूप शक्ति से, अनुपम अक्षयपद वर लूँ।।श्रुत.।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वानुभव के पुष्पों से, निज अन्तर सुरभित कर लूँ।
महाशील गुण के प्रताप से, मैं कन्दर्प दर्प हर लूँ।।श्रुत.।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वानुभव के अति उत्तम, प्रभु नैवेद्य प्राप्त कर लूँ।
अमल अतीन्द्रिय निज स्वभाव से, दुखमय क्षुधा व्याधि हर लूँ।।श्रुत.।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वानुभव के प्रकाशमय दीप प्रज्वलित मैं कर लूँ।
मोह तिमिर अज्ञान नाश कर निज कैवल्य ज्योति वर लूँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रुतपंचमी पर्व शुभ उत्तम, जिनश्रुत को वन्दन कर लूँ।
षट्खण्डागम धवल जयधवल, महाधवल पूजन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वानुभव गन्ध सुरभिमय, ध्यान धूप उर में भर लूँ।
संवर सहित निर्जरा द्वारा, मैं वसुकर्म नष्ट कर लूँ।।श्रुत.।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वानुभव का फल पाऊँ, मैं लोकाग्र शिखर वर लूँ।
अजर अमर अविकल अविनाशी, पद निर्वाण प्राप्त कर लूँ।।श्रुत.।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वानुभव दिव्य अर्घ्य ले, रत्नत्रय सु पूर्ण कर लूँ।
भव-समुद्र को पार करूँ प्रभु, निज अनर्घ्य पद मैं वर लूँ।।श्रुत.।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी-महोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(वीरछन्द)

श्रुतपंचमी पर्व अति पावन, है श्रुत के अवतार का।
गूँजा जय-जयकार जगत में, जिनश्रुत जय-जयकार का।।
ऋषभदेव की दिव्यध्वनि का, लाभ पूर्ण मिलता रहा।
महावीर तक जिनवाणी का, विमल वृक्ष खिलता रहा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुए केवली अरु श्रुतकेवली, ज्ञान अमर फलता रहा।
फिर आचार्यों के द्वारा यह, ज्ञानदीप जलता रहा।।
भव्यों में अनुराग जगाता, मुक्ति-वधू के प्यार का।
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन, है श्रुत के अवतार का।।1।।
गुरु परम्परा से जिनवाणी, निर्झर-सी झरती रही।
मुमुक्षुओं को परम मोक्ष का, पथ प्रशस्त करती रही।।
किन्तु काल की घड़ी मनुज की, स्मरण-शक्ति हरती रही।
श्री धरसेनाचार्य हृदय में, करुण-टीस भरती रही।।
द्वादशांग का लोप हुआ, तो क्या होगा संसार का।
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन, है श्रुत के अवतार का।।2।।
शिष्य भूतबलि-पुष्पदन्त की, हुई परीक्षा ज्ञान की।
जिनवाणी लिपिबद्ध हेतु, श्रुत विद्या विमल प्रदान की।।
ताड़-पत्र पर हुई अवतरित वाणी जन-कल्याण की।
षट्खण्डागम महा-ग्रन्थ, करणानुयोग जय ज्ञान की।।
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिवस था, सुर-नर मंगलचार का।
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन, है श्रुत के अवतार का।।3।।
धन्य भूतबलि पुष्पदन्त जय, श्री धरसेनाचार्य की।
लिपि परम्परा स्थापित करके, नई क्रांति साकार की।।
देवों ने पुष्पों की वर्षा, नभ से अगणित बार की।
धन्य-धन्य जिनवाणी माता, निज-पर भेद-विचार की।।
ऋणी रहेगा विश्व तुम्हारा, निश्चय और व्यवहार का।
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन, है श्रुत के अवतार का।।4।।
धवला टीका वीरसेन कृत, बहात्तर हजार श्लोक।
जयधवला जिनसेन वीरकृत, उत्तम साठ हज़ार श्लोक।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाधवल है देवसेन कृत, हैं चालीस हजार श्लोक।
विजयधवल टीका अरु अतिशयधवल, नहीं उपलब्ध एक श्लोक।।
षट्खण्डागम टीकाएँ पढ़, मन होता भव-पार का।
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन, है श्रुत के अवतार का।।5।।
फिर तो ग्रन्थ हजारों लिखे, ऋषि-मुनियों ने ज्ञान प्रधान।
चारों ही अनुयोग रचे, जीवों पर करके करुणा दान।।
पुण्य कथा प्रथमानुयोग, द्रव्यानुयोग है तत्त्व प्रधान।
'एक्स-रे' करणानयोग, चरणानुयोग 'कैमरा महान'।।[1]
यह परिणाम नापता है वह, बाह्य चरित्र विचार का।
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन, है श्रुत के अवतार का।।6।।
जिनवाणी की भक्ति करें हम, जिनश्रुत की महिमा गायें।
सम्यग्दर्शन का वैभव ले, भेदज्ञान विधि को पायें।।
रत्नत्रय का अवलम्बन लें, निज स्वरूप में रम जायें।
मोक्षमार्ग पर चलें निरन्तर, फिर न जगत में भरमायें।।
धन्य-धन्य अवसर आया है, अब निज के उद्धार का।
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन, है श्रुत के अवतार का।।7।।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमीमहोत्सवे श्रीपरमश्रुत-षट्खण्डागमाय जयमाला महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

श्रुत पंचमी सुपर्व पर, करो तत्त्व का ज्ञान।
आत्मतत्त्व का ध्यान कर, पाओ पद निर्वाण।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतेभ्यो नमः।

1. इस पंक्ति में कवि ने करणानुयोग एवं चरणानुयोग की उपमा क्रमशः आधुनिकयुगीन एक्स-रे (X-Ray) एवं कैमरा (Camera) से की है। इसका विस्तार कवि ने अगली पंक्ति में किया भी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचम खण्ड : विविध पूजन संग्रह

श्री निर्वाणक्षेत्र पूजन

(सोरठा)

परम पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निश-दीस, मन-वच-तन पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्राणि! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्राणि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्राणि! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

(गीता)

शुचि क्षीर-दधि-सम नीर निरमल, कनक-झारी में भरौं।
संसार पार उतार स्वामी, जोरकर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कों।
पूजौं सदा चौबीस-जिन, निर्वाण भूमि-निवासकों।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौं।
भव-ताप को सन्ताप मेटो, जोर कर विनती करौं। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो चंदनं निर्व. स्वाहा।

मोती-समान अखण्ड तन्दुल, अमल आनन्द धरि तरौं।
औगुन-हरौ गुण करौ हमको, जोर कर विनती करौं। सम्मेद.।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्योऽक्षतं निर्व. स्वाहा।

शुभ फूल-रास सुवास-वासित, खेद सब मन को हरौं।
दुःख-धाम काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलास कों।
पूजौं सदा चौबीस-जिन, निर्वाण भूमि-निवासकों।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं।
यह भूख-दूखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करौं। सम्मेद.।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीपक-प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौं।
संशय-विमोह-विभरम-तम-हर, जोरकर विनती करौं। सम्मेद.।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्व. स्वाहा।

शुभ-धूप परम-अनूप पावन, भाव पावन आचरौं।
सब करम पुञ्ज जलाय दीज्यो, जोर कर विनती करौं। सम्मेद.।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्व. स्वाहा।

बहु फल मँगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतिसों निरवरौं।
निहचै मुकति-फल देहु मोकौं, जोरकर विनती करौं। सम्मेद.।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो फलं निर्व. स्वाहा।

जल गन्ध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं। सम्मेद.।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

श्री चौबीस जिनेश, गिर कैलाशादिक नमौं।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(चौपाई)

नमों ऋषभ कैलाशपहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चम्पापुर वन्दौं, सन्मति पावापुर अभिनन्दौं।।
वन्दौं अजित अजित-पद-दाता, वन्दौं सम्भव भव-दुःख घाता।
वन्दौं अभिनन्दन गण-नायक, वन्दौं सुमति सुमति के दायक।।
वन्दौं पद्म मुकति-पद्माकर, वन्दौं सुपास आश-पासाहर।
वन्दौं चन्द्रप्रभ प्रभु चन्दा, वन्दौं सुविधि सुविधि-निधि-कन्दा।।
वन्दौं शीतल अघ-तप-शीतल, वन्दौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल।
वन्दौं विमल-विमल उपयोगी, वन्दौं अनंत-अनंत सुखभोगी।।
वन्दौं धर्म-धर्म विस्तारा, वन्दौं शान्ति-शान्ति मनधारा।
वन्दौं कुन्थु, कुन्थु रखवालं, वन्दौं अर अरि हर गुणमालं।।
वन्दौं मल्लि काम मल चूरन, वन्दौं मुनिसुव्रत व्रत पूरन।
वन्दौं नमि जिन नमित सुरासुर, वन्दौं पार्श्व-पार्श्व भ्रम जगहर।।
बीसों सिद्धभूमि आ ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भू पर।
एक बार बन्दै जो कोई, ताहि नरक-पशुगति नहिं होई।।
नरपति नृप सुर शक्र कहावै, तिहुँ जगभोगि-भोगि शिव पावैं।
विघन-विनाशन मंगलकारी, गुण-विलास वन्दौं भवतारी।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-धत्ता)

जो तीरथ जावैं पाप मिटावैं, ध्यावैं गावैं, भगति करैं।
ताको जस कहिये, संपति लहिये, गिरि के गुण को बुध उचरैं।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सोनागिर सिद्धक्षेत्र पूजन

(छन्द–ताटंक)

जम्बूद्वीप सुभरत क्षेत्र के, मध्य देश में अति पावन।
सिद्धक्षेत्र सोनागिर पर्वत, दिव्य मनोहर मनभावन।।
एक शतक जिन मन्दिर शोभित, चन्द्रप्रभ का समवशरण।
वृषभादिक महावीर जिनेश्वर, की प्रतिमाओं को वन्दन।।
नंग–अनंग कुमार मुक्त हो, निजानन्द रस हुए मगन।
साढ़े पाँच कोटि मुनियों ने, तप कर पाया मुक्ति सदन।।
रत्नत्रय केवल से पाया, सिद्ध शिला का सिंहासन।
श्री मुनिचरण कमल नित वन्दूँ, धन्य–धन्य पूजन दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिर–सिद्धक्षेत्र !अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिर–सिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिर–सिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीरछन्द)

हिंसादिक पाँचों पापों में, सदा लीन होता आया।
पाप पंक से रहित अवस्था, पाने को प्रभु जल लाया।।
सिद्धक्षेत्र सोनागिर वन्दूँ, वन्दूँ चन्द्रप्रभ जिनराज।
नंग–अनंग कुमार सु पूजूँ, साढ़े पाँच कोटि मुनिराज।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म–जरा मृत्युविनाशनाय जलं नि.।

पंचेन्द्रिय के पंच विषय का, राग कभी न हटा पाया।
विषय भोग का ताप मिटाने, अति शीतल चंदन लाया। ।सिद्ध. ।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंच प्रमादों में फँसकर, भवसागर में गोता खाया।
अप्रमत्त की मिले अवस्था, इसीलिये अक्षत लाया।।
सिद्धक्षेत्र सोनागिर वन्दूँ, वन्दूँ चन्द्रप्रभ जिनराज।
नंग-अनंग कुमार सु पूजूँ, साढ़े पाँच कोटि मुनिराज।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

क्रोध मान माया लोभादिक, भाव किए भव दुख पाया।
सर्व कषायों का अभाव करने को दिव्य पुष्प लाया।। सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सप्तव्यसन का राग न छूटा, भक्ष्य अभक्ष्य सभी खाया।
क्षुधाज्वाल की अग्नि बुझाने, शुभ नैवेद्य नाथ लाया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

इस अनादि-मिथ्यात्व पाप का, अन्त न अबतक कर पाया।
मोह तिमिर अज्ञान हटाने, ज्ञान दीप पाने आया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व.।

अष्टकर्म ज्ञानावरणादिक, का न बन्ध कम कर पाया।
घाति-अघाति कर्मक्षय करने, ध्यान धूप पाने आया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

भव तन भोगों से विरक्ति का, कुछ पुरुषार्थ न कर पाया।
विगत कर्म मल रागद्वेष से रहित, सुफल पाने आया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

पंच महाव्रत, पंच समिति, त्रय गुप्ति न धारण कर पाया।
निज आत्मानुभूति पाने को, भाव अर्घ्य हे प्रभु लाया।।सिद्धक्षेत्र.।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्योऽनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

(दोहा)

सोनागिर के क्षेत्र की, महिमा अपरम्पार।
भावसहित वन्दन करूँ, मन-वच-काय सँवार।।

परमपूज्य पावन सोनागिरि, पर्वत सिद्धक्षेत्र सुखकार।
साढ़े पाँच कोटि मुनिवर की, गूँज रही है जय जयकार।।

इस पर्वत पर ही आया था, चन्दाप्रभु का समवशरण।
नंग-अनंग कुमार दीक्षा लेकर निज की हुए शरण।।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित, रत्नत्रय का ले अवलम्बन।
पर द्रव्यों का मोह त्यागकर, निज स्वभाव में हुए मगन।।

कोटि-कोटि मुनि निजस्वरूप लख, निज में ही तल्लीन हुए।
ज्ञानानन्दी सिद्ध स्वभावी, शुद्धातम में लीन हुए।।

इस पर्वत पर कठिन तपस्या, करके सिद्धलोक पाया।
जा पहुँचे लोकाग्र शिखर पर, परम अनन्त स्वपद पाया।।

चन्दाप्रभु के समवशरण की, शोभा पर्वत पर न्यारी।
श्री बाहुबलि का दर्शन कर, हर्षित होते नर नारी।।

चन्दाप्रभु की भव्य मनोहारी, विशाल प्रतिमा सुखकार।
नंग-अनंग कुमारों की प्रतिमाएँ, शोभित मंगलकार।।

साढ़े पाँच कोटि मुनियों के, चरण चिह्न अनुपम मनहार।
भाव सहित दर्शन करने से, होता है आनन्द अपार।।

यहाँ पिसनहारी का मन्दिर, श्रम का पाठ पढ़ाता है।
ऊँचा मानस्तम्भ श्वेत लख, मान गलित हो जाता है।।

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्ववंत।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस प्रभु, वासुपूज्य जिन विमल अनन्त।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi .

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

धर्म शांति प्रभु कुंथु अरहजिन, मल्लि मुनिसुव्रत नमि भगवंत।
नेमि पार्श्वप्रभु महावीर का, शासन जग में जय जयवंत।।

तीर्थंकर चौबीस जिनेश्वर, के जिनमन्दिर बने अनेक।
जिनप्रतिमा दर्शन से होता, निकटभव्य को स्व-पर विवेक।।

भव्य दिगम्बर जिनप्रतिमा की, पूजन से होता आनन्द।
पुण्योपार्जन हो जाता है, होती सभी कषायें मन्द।।

श्री शुभचन्द्राचार्य भर्तृहरि की यह तपोभूमि पावन।
ज्ञानार्णव की रचना का सुन्दर स्थान मनोभावन।।

बहु प्राचीन जिनालय पावन उच्च शिखर ध्वजयुत मनहर।
महावीर-जिन-कीर्ति-स्तम्भ धवल शोभायमान सुन्दर।।

सोनागिरि टेशन से पाँच किलोमीटर है सोनागिर।
होली पर वार्षिक मेले में होता है आनन्द निर्झर।।

सिंह द्वार पर्वत का सुन्दर अतिविशाल रमणीय प्रधान।
जय-जय कर सब प्रवेश करते गाते चन्द्रप्रभ गुणगान।।

चन्द्रप्रभ का समवशरण बहुबार यहाँ पर आया था।
भव्यजनों ने दिव्यध्वनि सुन शिवगामी पथ पाया था।।

स्वर्णिम पर्वत सरल चढ़ाई दर्शनीय दतिया के पास।
बालक-वृद्ध सभी चढ़ जाते होते हर्षित प्रभु के पास।।

नीचे शान्ति कुंथु अर जिन की प्रतिमाएँ हैं अति प्राचीन।
जिनबिम्बों के दर्शमात्र से हो जाते हैं पाप विलीन।।

और अन्य अनेक जिनालय सभी धर्मशालाओं युक्त।
मौ वालों का मंदिर भी है एक धर्मशाला संयुक्त।।

चंद्र-नगर में त्रिमूर्ति मंदिर श्रेष्ठ धर्मशाला शोभित।
स्याद्वाद उद्यान जिनालय गोम्मटेश प्रतिमा शोभित।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमागम मंदिर विशाल में चन्द्रप्रभ जिन रहे विराज।
स्वाध्याय की श्रेष्ठ व्यवस्था लख प्रमुदित है सकल समाज।।

कुन्दकुन्द है नगर अनूठा बाहुबलि प्रतिमा उद्यान।
पंच-तीर्थं की रचना सुन्दर नित प्रति होते मंगलगान।।

पंचतीर्थ बाहुवली कें, सन्मुख मानस्तम्भ महान।
महावीर मानस्तम्भ की, महिमा का हो जाता ज्ञान।।

उच्च गगन में चहुँदिशि जिन प्रतिमाओं को सादर वंदन।
दर्शन करते ही हो जाता, मान भाव का त्वरित शमन।।

निकट श्री सीमंधर प्रभु का, समवशरण मंदिर सुन्दर।
समवशरण में नाथ विराजे, दिव्यध्वनि देते मनहर।।

समवशरण की अष्ट भूमियों का होता अनुपम दर्शन।
भरतक्षेत्र के कुन्दकुन्द आचार्य कर रहे है वन्दन।।

द्वादश सभा जुड़ी है सुन्दर, सुनती दिव्यध्वनि संदेश।
झेल रहे है गणधर स्वामी, सीमंधर प्रभु का उपदेश।।

कुन्दकुन्द-कहान जिनागम, का नूतन निर्माण महान।
नीचे विद्यमान विशंति तीर्थंकर, प्रतिमाएँ है पूज्य प्रधान।।

ऊपर भरतक्षेत्र की भावी, चौबीसी के हैं तीर्थंकर भगवान।
महापद्म आदि के दर्शन कर, उर जगता वैराग्य महान।।

कुन्दकुन्द विद्या निकेतन, विद्यार्थी शिक्षा पाते।
आत्मज्ञान का वैभव पाकर, शुद्ध आत्मा को ध्याते।।

छात्रावास मनोहर सुन्दर, विद्यार्थी जन का आवास।
दिवस रात्रि अध्ययनरत रहकर, करते आत्मा का विश्वास।।

कुन्दकुन्द नगरी की शोभा, द्विगुणित हो गई आज महान।
जो भी यात्री आते यहाँ पर, करते हैं अपना कल्याण।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नित्य यहाँ यात्री आते हैं दर्शन-पूजन को दिन-रात।
परम सलोना सुन्दर पर्वत भारत भर में है विख्यात।।
हम भी इस पर्वत की यात्रा करके पाएँ परमानन्द।
जीवन सफल बनाएँ अपना सिद्ध समान बने सुख कन्द।।
सोनागिर के वैभव की स्वामिनी दिगम्बर जैन समाज।
भेदभाव है नहीं किसी से सबके चंदाप्रभु जिनराज।।
पाप-पुण्य से रहित अवस्था, आत्माश्रय से होती है।
कर्मों की कालुषता धुलती, तब पंचम गति होती है।।
शान्त मौन नासाग्र दृष्टि, जग को सन्देश सुनाती है।
शुद्ध त्रिकाली ध्रुव स्वभाव की, उर में महिमा आती है।।
सिद्धस्वपद पाकर यह चेतन, कृतकृत्य हो जाता है।
वीतराग सर्वज्ञ हिंतकर, परमेश्वर हो जाता है।।
प्रभु समान पद मैं भी पाऊँ, यही भावना भाता हूँ।
निजस्वरूप का दर्शन करने, चरण शरण में आता हूँ।।
वचन अगोचर अनुभव गोचर, आत्मतत्त्व दर्शन पाएँ।
सोनागिर की पूजन करके, मंगलमय हम हो जाएँ।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्योऽनर्घ्यपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.।

(दोहा)

सोनागिरि पर्वत का दर्शन, पूजन महासौख्यदाता।।
श्रीमुनिपद-चिह्नों पर चलने, वाला महामोक्ष पाता।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री सोनागिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री बाहुबली स्वामी जिन पूजन

जयति बाहुबली स्वामी जय-जय, करूँ वन्दना बारम्बार।
निज स्वरूप का आश्रय लेकर, आप हुए भव सागर पार।।
हे त्रैलोक्यनाथ, त्रिभुवन में, छाई महिमा अपरम्पार।
सिद्ध स्वपद की प्राप्ति हो गई, हुआ जगत में जय जयकार।।
पूजन करने मैं आया हूँ, अष्ट द्रव्य का ले आधार।
यही विनय है चारों गति के, दुख से हो मेरा उद्धार।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन्! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

उज्ज्वल निर्मल जल प्रभु पद-पंकज में आज चढ़ाता हूँ।
जन्म-मरण का नाश करुं, आनन्दकन्द गुण गाता हूँ।।
श्री बाहुबलि स्वामी प्रभुवर, चरणों में शीश झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन् जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

शीतल मलय सुगन्धित पावन, चन्दन भेंट चढ़ाता हूँ।
भव आताप नाश हो मेरा, ध्यान आपका ध्याता हूँ।।श्री बाहु.।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन् संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व.।

उत्तम शुभ्र अखण्डित तन्दुल, हर्षित चरण चढ़ाता हूँ।
अक्षयपद की सहज प्राप्ति हो, यही भावना भाता हूँ।।श्री बाहु.।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन् अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व.।

काम शत्रु के कारण अपना, शील स्वभाव न पाता हूँ।
काम भाव का नाश करूँ मैं, सुन्दर पुष्प चढ़ाता हूँ।।श्री बाहु.।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन् कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृष्णा की भीषण ज्वाला में, प्रति पल जलता जाता हूँ।
क्षुधारोग से रहित बनूँ मैं, शुभ नैवेद्य चढ़ाता हूँ।।
श्री बाहुबलि स्वामी प्रभुवर, चरणों में शीश झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन् क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.।

मोह ममत्व आदि के कारण, सम्यक् मार्ग न पाता हूँ।
यह मिथ्यात्वतिमिर मिट जाये, प्रभुवर दीप चढ़ाता हूँ।।श्री बाहु.।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन् मोहान्धकार विनाशनायं दीपं निर्व.।

है अनादि से कर्मबन्ध दुखमय न प्रथक् कर पाता हूँ।
अष्टकर्म विध्वंस करूँ, अतएव सु धूप चढ़ाता हूँ।।श्री बाहु.।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.।

सहज सम्पदा युक्त स्वयं, होकर भी भव दुख पाता हूँ।
परम मोक्षफल शीघ्र मिले उत्तम फल चरण चढ़ाता हूँ।।श्री बाहु.।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन् महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व.।

पुण्यभाव से स्वर्गादिक पद, बार-बार पा जाता हूँ।
निज अनर्घपद मिला न अब तक, इससे अर्घ्य चढ़ता हूँ।।श्री बाहु।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिन् अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व.।

जयमाला

आदिनाथ सुत बाहुबली प्रभु, मात सुनन्दा के नन्दन।
चरम शरीरी कामदेव तुम, पोदनपुर पति अभिनन्दन।।
छह खण्डों पर विजय प्राप्तकर, भरत चढ़े वृषभाचल पर।
अगणितचक्री हुए नाम लिखने को मिला न थल तिलभर।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं ही चक्री हुआ अहं का, मान धूल हो गया तभी।
एक प्रशस्ति मिटाकर अपनी, लिखी प्रशस्ति स्वहस्त जभी।।

चले अयोध्या किन्तु नगर में, चक्र प्रवेश न कर पाया।
ज्ञात हुआ लघु भ्रात बाहुबलि, सेवा में न अभी आया।।

भरत चक्रवर्ती ने चाहा, बाहुबली आधीन रहे।
ठुकराया आदेश भरत का, तुम स्वतंत्र स्वधीन रहे।।

भीषण युद्ध छिड़ा दोनों, भाई के मन संताप हुए।
दृष्टि, मल्ल, जल, युद्ध, भरत से, करके विजयी आप हुए।।

क्रोधित होकर भरत चक्रवर्ती ने चक्र चलाया है।
तीन प्रदक्षिणा देकर कर में, चक्र आपके आया है।।

विजय चक्रवर्ती पर पाकर, उर वैराग्य जगा तत्क्षण।
राजपाट तज ऋषभदेव के, समवशरण को किया गमन।।

धिक्-धिक् यह संसार और, इसकी असारता को धिक्कार।
तृष्णा की अनन्त ज्वाला में, जलता आया है संसार।।

जग की नश्वरता का तुमने, किया चिंतवन बारम्बार।
देह भोग संसार आदि से, हुई विरक्ति पूर्ण साकार।।

आदिनाथ प्रभु से दीक्षा ले, व्रत संयम को किया ग्रहण।
चले तपस्या करने वन में, रत्नत्रय को कर धारण।।

एक वर्ष तक किया कठिन तप, कायोत्सर्ग मौन पावन।
किंतु शल्य थी एक हृदय में, भरत भूमि पर है आसन।।

केवलज्ञान नहीं हो पाया, एक शल्य ही के कारण।
परिषह शीत ग्रीष्म वर्षादिक, जय करके भी अटका मन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भरत चक्रवर्ती ने आकर, श्री चरणों में किया नमन।
कहा कि वसुधा नहीं किसी की, मान त्याग दो हे भगवन्।।
तत्क्षण शल्य विलीन हुई तुम, शुक्ल ध्यान में लीन हुए।
फिर अन्तरमुहुर्त में स्वामी, मोह क्षीण स्वाधीन हुए।।
चार घातिया कर्म नष्ट कर, आप हुए केवलज्ञानी।
जय जयकार विश्व में गूँजा, जगती सारी मुस्कानी।।
झलका लोकालोक ज्ञान में, सर्व द्रव्य-गुण-पर्यायें।
एक समय में भूत-भविष्यत्-वर्तमान सब दर्शायें।।
फिर अघातिया कर्म विनाशे, सिद्ध लोक में गमन किया।
अष्टापद से मुक्ति हुई तीनों लोकों ने नमन किया।।
महा मोक्षफल पाया तुमने, ले स्वभाव का अवलम्बन।
हे भगवान् बाहुबलि स्वामी, कोटि कोटि शत् शत् वन्दन।।
आज आपका दर्शन करने, चरण शरण में आया हूँ।
शुद्ध स्वभाव प्राप्त हो मुझको, यही भाव भर लाया हूँ।।
भाव शुभाशुभ भव निर्माता, शुद्ध भाव का दो प्रभु दान।
निज परणति में रमण करूँ प्रभु, हो जाऊँ मैं आप समान।।
समकित दीप जले अन्तर में, तो अनादि मिथ्यात्व गले।
राग-द्वेष परणति हट जाये, पुण्य पाप संताप टले।।
त्रैकालिक ज्ञायक स्वभाव का, आश्रय लेकर बढ़ जाऊँ।
शुद्धात्मानुभूति के द्वारा, मुक्ति शिखर पर चढ़ जाऊँ।।
मोक्ष लक्ष्मी को पाकर भी, निजानन्द रसलीन रहूँ।
सादि अनन्त सिद्ध पद पाऊँ, सदा सुखी स्वाधीन रहूँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज आपका रूप निरख कर, निज स्वरूप का भान हुआ।
तुम सम बने भविष्यत् मेरा, यह दृढ़ निश्चय ज्ञान हुआ।।
हर्ष विभोर भक्ति से पुलकित, होकर की है यह पूजन।
प्रभु पूजन का सम्यक् फल हो, कटें हमारे भव बन्धन।।
चक्रवर्ती इन्द्रादिक पद की, नहीं कामना है स्वामी।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य परम पद, पायें हे अन्तरयामी।।
ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलिस्वामिने अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

घर घर मंगल छाये जग में, वस्तु स्वभाव धर्म जानें।
वीतराग विज्ञान ज्ञान से, शुद्धातम को पहिचानें।।
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

सरस्वती (जिनवाणी) पूजन

स्थापना (दोहा)

जनम-जरा-मृतु छय करै, हरै कुनय जड़ रीति।
भवसागरसों ले तिरै, पूजौं जिन वच प्रीति।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद त्रिभंगी)

छीरोदधिगंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा सुखसंगा।
भरि कंचर झारी, धार निकारी, तृषा निवारी हितचंगा।।
तीर्थंकर की धुनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनिज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई।।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करपूर मंगाया, चंदन आया, केशर लाया रंग भरी।
शारदपद वन्दों, मन अभिनन्दों पाप निकदों दाह हरि।।
तीर्थंकर की धुनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनिज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

सुखदास कमोंदं, धारकमोदं, अति अनुमोदं चंदसमं।
बहुभक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई मातममं। ।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।

बहुफूल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनन्दरासं लाय धरे।
मम काम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायो दोष हरे। ।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

पकवान बनाया, बहुघृत लाया, सब विधि भाया मिष्ट महा।
पूजूँ थुति गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ क्षुधा नशाऊं हर्ष लहा। ।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै क्षुधारोगविनाशनायं नैवेद्यं नि.।

करि दीपक ज्योतं, तमछय होतं, ज्योति उदोतं तुमहिं चढ़ै।
तुम हो परकाशक, भरमविनाशक, हम घट भासक ज्ञान बढ़ै। ।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि.।

शुभगंध दशोंकर, पावक में धर, धूप मनोहर खेवत हैं।
सब पाप जलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावैं सेवत हैं। ।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अष्टकर्म विनाशनायं धूपं नि.।

बादाम छुआरी, लोंग सुपारी, श्रीफल भारी, ल्यावत हैं।
मनवांछित दाता, मेट असाता तुम गुण माता गावत हैं। ।तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै मोक्षफल प्राप्तये फलं नि.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नयनन सुखकारी, मृदुगुणधारी, उज्ज्वल भारी मोल धरैं।
शुभगन्ध सम्हारा, वसन निहारा, तुम तन धारा ज्ञान करैं।।
तीर्थंकर की धुनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनिज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै दिव्यज्ञान प्राप्तये वस्त्रं नि.।

जल चन्दन अच्छत, फूलचरुचत, दीप धूप फल अति लावैं।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावैं। तीर्थं.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

जयमाला

(सोरठा)

ओंकार धुनिसार, द्वादशांगवाणी विमल।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरै।।

(चौपाई)

पहलो आचारांग बखानों, पद अष्टादश सहस प्रमानो।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरु भाषं।।
तीजो ठाना अंग सु जानं, सहस बियालिस पद सरधानं।
चौथो समवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इक धारं।।
पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठो ज्ञातृकथा विस्तारं, पाँच लाख छप्पन हज्जारं।।
सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यार लख भंगं।
अष्टम अन्तकृत दश ईसं, सहस अट्ठाईस लाख तेईसं।।
नवम अनुत्तर दश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानवै सोल हजारं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्यारम सुत्रविपाक सु भाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं।
चार कोड़ी अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरु भाखं।।
द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इकसौ आठ कोड़िपन वेदं।
अड़सठ लाख सहज छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं।।
इकसौ बासठ कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने।।
कोड़ि इकावन आठ ही लाखं, सहस चुरासी छह सौ भाखं।
साड़े इक्कीस श्लोक बताये, एक-एक पद के ये गाये।।

(दोहा)

जा वानी के ज्ञात तैं, सूझै लोक-अलोक।
'द्यानत' जग जयवन्त हो, सदा देत हों धोक।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

श्री कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्यालय पूजन

तीन लोक के कृत्रिम-अकृत्रिम, जिन चैत्यालय को वन्दन।
ऊर्ध्व मध्य पाताल लोक के, जिनभवनों को करूँ नमन।।
हैं अकृत्रिम आठ कोटि अरु, छप्पन लाख परम पावन।
संतानवे सहस्त्र चार सौ, इक्यासी गृह मन भावन।।
कृत्रिम अकृत्रिम जो असंख्य, चैत्यालय हैं उनको वन्दन।
विनय भाव से भक्ति पूर्वक, नित्य करूँ मैं जिन पूजन।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यस्य संबंधी कृत्रिमअकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिन बिम्ब समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यस्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संबंधी कृत्रिमअकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिन बिम्ब समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यस्य संबंधी कृत्रिमअकृत्रिम जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्ब समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

सम्यक् जल की निर्मल उज्ज्वलता से जन्म जरा हर लूँ।
मूल धर्म का सम्यक् दर्शन हे प्रभु हृदयंगम कर लूँ।।
तीन लोक के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय वन्दन कर लूँ।
ज्ञान सूर्य की परम ज्योति पा भव सागर के दुख हर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्स्यसंबंधी कृत्रिमअकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् चन्दन की पावन शीतलता से भव भव हर लूँ।
वस्तु स्वभाव धर्म है सम्यक् ज्ञान आत्मा में भर लूँ।। तीन.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्स्य संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित की अखंडता से अक्षयपद आदर लूँ।
साम्यभाव चारित्र धर्म पा वीतरागता को वर लूँ।। तीन.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्स्य संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

शील स्वभावी पुष्प प्राप्त कर काम शत्रु को क्षय कर लूँ।
अणुव्रत शिक्षाव्रत गुणव्रत धर पंच महाव्रत आचर लूँ।। तीन.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्स्य संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संतोषामृत के चरु लेकर, क्षुधा व्याधि को जय कर लूँ।
सत्य शौचतप त्याग क्षमा से भाव शुभाशुभ सब हर लूँ।। तीन.।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्स्य संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दीप के चिर प्रकाश से, मोह ममत्व तिमिर हरलूँ।
रत्नत्रय का साधन लेकर, यह संसार पार कर लूँ।।
तीन लोक के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय वन्दन कर लूँ।
ज्ञान सूर्य की परम ज्योति पा भव सागर के दुख हर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्स्य संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि में कर्म धूप धर, अष्टकर्म अघ को हरलूँ।
धर्म श्रेष्ठ मंगल को पा शिवमय सिद्धत्व प्राप्त कर लूँ।। तीन.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्स्य संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान विज्ञान ज्ञान से, केवलज्ञान प्राप्त करलूँ।
परमभाव सम्पदा सहजशिव, महामोक्षफल को वरलूँ।। तीन.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्स्य संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश विधितप अर्घ संजोकर जिनवर पद अनर्घ वरलूँ।
मिथ्या अविरति पंच प्रमाद कषाय योग बन्धन हरलूँ।। तीन.।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्स्य संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

इस अनन्त आकाश बीच में, तीन लोक हैं पुरुषाकार।
तीनों वात वलय से वेष्टित, सिंधु बीच ज्यों बिन्दु प्रसार।।1।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उर्ध्व छह हैं, अधो सात हैं, मध्य एक राजु विस्तार।
चौदह राजु उतंग लोक हैं, त्रस नाड़ी त्रस का आधार।।2।।
तीन लोक में भवन अकृत्रिम आठ कोटि अरु छप्पन लाख।
संतानवे सहस्त्र चार सौ इक्यासी जिन आगम साख।।3।।
उर्ध्व लोक में कल्पवासियों के जिनगृह चौरासी लक्ष।
संतानवे सहस्त्र तेईस जिनालय हैं शाश्वत प्रत्यक्ष।।4।।
अधोलोक में भवनवासि के लाख बहत्तर, करोड़ सात।
मध्यलोक के चार शतक अट्ठावन चैत्यालय विख्यात।।5।।
जम्बूधातकी पुष्करार्ध में पंचमेरु के जिनगृह ख्यात।
जम्बूवृक्ष शाल्मलितरु अरु विजयार्ध के अति विख्यात।।6।।
वक्षारों गजदतों इष्वाकारों के पावन जिनगेह।
सर्व कुलाचल मानुषोत्तर पर्वत के वन्दूँ धर नेह।।7।।
नन्दीश्वर कुण्डलवर द्वीप रुचकवर के जिन चैत्यालय।
ज्योतिष व्यंतर स्वर्गलोक अरु भवनवासि के जिनआलय।।8।।
एक एक में एक शतक अरु आठ आठ जिन मूर्ति प्रधान।
अष्ट प्रातिहार्यों वसु मंगल द्रव्यों से अति शोभावान।।9।।
कुल प्रतिमा नौ सौ पच्चीस करोड़ तिरेपन लाख महान।
सत्ताइस सहस्त्र अरु नौ सौ अड़तालीस अकृत्रिम जान।।10।।
उन्नत धनुष पांच सौ पद्मासन है रत्नमयी प्रतिमा।
वीतराग अर्हन्त मूर्ति की है पावन अचिन्त्य महिमा।।11।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंख्यात संख्यात जिन भवन तीन लोक में शोभित हैं।
इन्द्रादिक सुर नर विद्याधर मुनि वन्दन कर मोहित हैं।।12।।

देव रचित या मनुज रचित, हैं भव्यजनों द्वारा वंदित।
कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय की पूजन कर मैं हूँ हर्षित।।13।।

ढाईद्वीप में भूत-भविष्यत वर्तमान के तीर्थंकर।
पंचवर्ण के मुझे शक्ति दें मैं निज पद पाऊँ जिनवर।।14।।

जिनगुण सम्पत्ति मुझे प्राप्त हो परम समाधिमरण हो नाथ।
सकलकर्म क्षय हो प्रभु मेरे बोधिलाभ हो हे जिननाथ।।15।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोकस्य संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यायस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र पूजा/भक्ति का फल

जो भव्य जीव जिनेन्द्र भगवान को भक्ति पूर्वक देखते हैं तथा उनकी पूजा-स्तुति करते हैं, वे भव्य जीव तीनों लोकों में स्वयं दर्शनीय तथा पूजा के योग्य होते हैं अर्थात् सर्व लोक उनको भक्ति से देखता है तथा उनकी पूजा-स्तुति करता है।

-आचार्य पद्मनन्दि

उपासक संस्कार गाथा-14

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षष्ठम खण्ड : अर्घ्यावलि एवं शान्ति पाठ संग्रह

अर्घ्यावलि

श्री देव-शास्त्र-गुरु को अर्घ्य

क्षण भर निज-रस को पी चेतन, मिथ्यामल को धो देता है।
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनन्द अमृत पीता है।।
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल रवि जगमग करता है।
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता, यह ही अर्हन्त अवस्था है।।
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु! निज गुण का अर्घ्य बनाऊँगा।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु! अर्हन्त अवस्था पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री पंच परमेष्ठी को अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाया हूँ।
अब तक के संचित कर्मों का, मैं पुंज जलाने आया हूँ।।
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, अविचल अनर्घ्य पद दो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव दुःख मेटो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीपंच-परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध भगवान को अर्घ्य

तेरे विकीर्ण गुण सारे प्रभु! मुक्ता-मोदक से सघन हुए।
अतएव रसास्वादन करते, रे! घनीभूत अनुभूति लिये।।
हे नाथ! मुझे भी अब प्रतिक्षण निजअन्तरवैभव की मस्ती।
है आज अर्घ्य की सार्थकता, तेरी अस्ति मेरी बस्ती।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये-सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चौबीस तीर्थंकरों को अर्घ्य

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।।
चौबीसौं श्री जिनचन्द्र, आनन्द-कन्द सही।
पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री समुच्चय पूजन का अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किये।।
यह अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेव-शास्त्र-गुरुभ्य: श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यश्च अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विदेहक्षेत्र में विद्यमान बीस तीर्थंकरों को अर्घ्य

जल फल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्रनि हूतैं थुति पूरी न करी है।।
'द्यानत' सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार।
सीमंधर जिन आदि दे (स्वामी) बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो भव तारण तरण जिहाज श्री महाराज हो।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवान को अर्घ्य

निर्मल जल सा प्रभु निज स्वरूप, पहिचान उसी में लीन हुए।
भव-ताप उतरने लगा तभी, चन्दन-सी उठी हिलोर हिये।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभिराम–भवन प्रभु अक्षत का, सब शक्ति–प्रसून लगे खिलने।
क्षुत्–तृषा अठारह दोष क्षीण, कैवल्य प्रदीप लगा जलने।।
मिट चली चपलता योगों की, कर्मों के ईंधन ध्वस्त हुए।
फल हुआ प्रभो! ऐसा मधुरिम, तुम धवल निरंजन स्वस्थ हुए।।
ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान को अर्घ्य

शुचि निरमल नीरं गन्ध सु अक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ्य सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।
श्री आदिनाथजी के चरण कमल पर, बलि–बलि जाऊ मनवचकाय।
हे करुणानिधि–भव दुःख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पांय।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान को अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोरम, हर्षित होकर लाया हूँ।
चिदानन्द चिन्मय पद पाने, प्रभु चरणों में आया हूँ।।
चन्द्र जिनेश्वर चन्द्रनाथ, चन्द्रेश्वर चन्दा प्रभु स्वामी।
राग–द्वेष परिणति के नाशक, मंगलमय अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान को अर्घ्य

आत्मनुभूति की प्रीति निज में है जागी।
पाऊँ अनर्घ्य पर नाथ मिथ्यामति भागी।।
हे शीतलनाथ जिनेश शीतलता धारी।
हे शील सिन्धु शीलेश सब संकट हारी।।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वासुपूज्य भगवान को अर्घ्य

जब तक अनर्घ्य पद मिले नहीं, तब तक मैं अर्घ्य चढ़ाऊँगा।
निज पद मिलते ही हे स्वामी, फिर कभी नहीं मैं आऊँगा।।
त्रिभुवनपति वासुपूज्य स्वामी, प्रभु मेरी भव बाधा हरलो।
चारों गतियों के संकट हर हे प्रभु, मुझको निज सम करलो।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान को अर्घ्य

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य से, लाभ न कुछ हो पाता।
जब तक निज स्वभाव में चेतन, मगन नहीं हो जाता।।
नेमिनाथ स्वामी तुम पद पंकज, की करता हूँ पूजन।
वीतराग तीर्थंकर तुमको, कोटि-कोटि मेरा वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान को अर्घ्य

नीर गन्ध अक्षतान्, सु पुष्प चारु लीजिए।
दीप धूप श्री फलादि, अर्घ्य तैं जजीजिए।।
पार्श्वनाथ देव सेव, आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष, भूलिए नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री महावीर भगवान को अर्घ्य

जल-फल वसु सजि हिम-थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊं भवदधि तार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुण धीर, सन्मति-दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पंचबालयति भगवान को अर्घ्य

प्रभु सर्व विशुद्ध स्वतत्व लखा, अब दृष्टि न पल भी हटती है,
होता उपयोग जभी बाहर, एकाग्र भावना जगती है।
एकाग्र रहे उपयोग सदा, यह ही निश्चय से अर्घ्य कहा,
जिससे अविचल अनर्घ्य पद हो, प्रभु बाह्य अर्घ्य इसलिये तजा।
अतिशय है ब्रह्मभाव मेरा, कामादिक दुर्मति भागी है,
प्रभु ब्रह्मचर्य परमानन्द पा, अतिशय प्रतीति उर जागी है।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबलि भगवान को अर्घ्य

सम्यक् अर्घ्य चढ़ाकर स्वामी, पद अनर्घ्य निश्चित पाऊँ।
मेरी यही प्रार्थना है प्रभु, फिर न लौट भव में आऊँ।।
आदिनाथ प्रभु भरत बाहुबलि की, पूजन कर हर्षाऊँ।
निज स्वरूप की प्राप्ति करूँ मैं, नित नूतन मंगल गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ-भरत-बाहुबलिजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

श्री बाहुवली भगवान को अर्घ्य

पुण्यभाव से स्वर्गादिक पद, बार-बार पा जाता हूँ।
निज अनर्घ्यपद मिला न अब तक, इससे अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।
श्री बाहुबली स्वामी प्रभुवर, चरणों में शीश झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवाणी को अर्घ्य

जल चंदन अक्षत फूल चरु चत, दीप धूप अतिफल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकर की धुनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी, शिव-सुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूत-सरस्वतीदेव्यै नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

श्री सप्त ऋषि मुनिराजों को अर्घ्य

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ्य कीजे पावना।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्व-स्वमन्व, निश्चय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनयलालस, जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री सोनागिर सिद्धक्षेत्र को अर्घ्य

पंच महाव्रत, पंच समिति,त्रय गुप्ति न धारण कर पाया।
निज आत्मानुभूति पाने को, भाव अर्घ्य हे प्रभु लाया।।
सिद्धक्षेत्र सोनागिर वन्दूँ, वन्दूँ चन्द्रप्रभ जिनराज।
नंग-अनंग कुमार सु पूजूँ, साढ़े पाँच कोटि मुनिराज। टेक।।

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री निर्वाण क्षेत्र का अर्घ्य

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगत सौं, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाश कों।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास कों।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीप का अर्घ्य

यह अरघ कियो निज हेतु तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिवखेत, भूमि समरपतु हों।।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुँज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तर-दक्षिणदिशि द्विपंचासज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पंचमेरु जिनालय का अर्घ्य

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय।।
पाँचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाजी को करहुँ प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरु-सम्बन्धिअस्सी जिन-चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सोलहकारण का अर्घ्य

जलफल आठों दरब चढ़ाय 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परमगुरु हो जय-जय नाथ परमगुरु हो।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परमगुरु हो जय-जय नाथ परमगुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्रीदर्शन विशुद्धियादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री दशलक्षण धर्म का अर्घ्य

आठों दरव संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं श्रीउत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री रत्नत्रय धर्म का अर्घ्य

आठ दरव निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री तीस चौबीसी भगवान को अर्घ्य

दरब आठों जु लीना है, अर्घ्य कर में नवीना है।
पूजते पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दश ताविषें छाजे।
सात शत बीस जिनराजे, पूजता पाप सब भाजे।।

ॐ ह्रीं श्री पाँच भरत पाँच ऐरावत दश क्षेत्र के विषैं तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनेन्द्रभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री अकृत्रिम चैत्यालयों को अर्घ्य

वसुकोटि सुछप्पन लाख ऊपर, सहज सत्याणवे मानिये।
शतचार पै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये।।
तिहुँ लोक भीतर सासते, सुर-असुर नर पूजा करें।
तिन भवन को हम अर्घ्य ले कैं, पूजि हैं जगदुख हरें।।

ॐ ह्रीं श्रीतीनलोक सम्बन्धी आठ करोड़ छप्पन लाख सत्तानवे हजार चार सौ इक्यासी अकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भविष्यकालीन चौबीस तीर्थंकरों को अर्घ्य

भरतक्षेत्र की भावी चौबीसी को, सविनय है वन्दन।
महापद्म आदि तीर्थंकर चौबीसी को करूँ नमन।।
परम पंचकल्याण विभूषित, तीर्थंकर चौबीस महान।
शुद्धभाव से अर्घ्य चढाऊँ, करूँ आत्मा का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्रीभविष्यकालीनचौबीसतीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुच्चय महाऽर्घ्य–1

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचि गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम–अकृत्रिम, चैत्य–चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु–नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ।।
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ शर्मदा।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिवगेह के।।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्पचरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।

समुच्चय महाऽर्घ्य–2

पूजूँ मैं श्री पञ्च परम गुरु, उनमें प्रथम श्री अरहन्त।
अविनाशी अविकारी सुखमय, दूजे पूजूँ सिद्ध महन्त।।1।।
तीजे श्री आचार्य तपस्वी, सर्व साधु नायक सुखधाम।
उपाध्याय अरु सर्व साधु प्रति, करता हूँ मैं कोटि प्रणाम।।2।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करूँ अर्चना जिनवाणी की, वीतराग-विज्ञान स्वरूप।
कृत्रिमाकृत्रिम सभी जिनालय, वन्दूँ अनुपम जिनका रूप।।3।।
पंचमेरु नन्दीश्वर वन्दूँ, जहाँ मनोहर हैं जिनबिम्ब।
जिसमें झलक रहा है प्रतिपल, निज ज्ञायक का ही प्रतिबिम्ब।।4।।
भूत भविष्यत् वर्तमान की, मैं पूजूँ चौबीस तीस।
विदेह क्षेत्र के सर्व जिनेन्द्रों के, चरणों में धरता शीश।।5।।
तीर्थङ्कर कल्याणक वन्दूँ, कल्याणक अरु अतिशय क्षेत्र।
कल्याणक तिथियाँ मैं चाहूँ और धार्मिक पर्व विशेष।।6।।
सोलहकारण दशलक्षण अरु, रत्नत्रय वन्दूँ धर चाव।
दयामयी जिनधर्म अनूपम, अथवा वीतरागता भाव।।7।।
परमेष्ठी का वाचक है जो, ओंकार वन्दूँ मैं आज।
सहस्रनाम की करूँ अर्चना, जिनके वाच्य मात्र जिनराज।।8।।
जिसके आश्रय से ही प्रगटें, सभी पूज्यपद दिव्य ललाम।
ऐसे निज ज्ञायक स्वभाव की, करूँ अर्चना मैं अभिराम।।9।।

(दोहा)

भक्तिमयी परिणाम का, अद्‌भुत अर्घ्य बनाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, ज्ञायक दृष्टि लाय।।10।।

महार्घ्य-1 : ॐ ह्रीं श्री अरहन्तसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो द्वादशांगजिनवाणीभ्यो उत्तम क्षमादिदशलक्षणधर्माय, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो, सम्यग्दर्शनज्ञान, चारित्रेभ्यो, त्रिलोकसम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो, पंचमेरौ अस्सी चैत्यालयेभ्यो नन्दीश्वरदीपस्थद्विपंचाशज्जिनालयेभ्यो श्री सम्मेदशिखर, गिरनारगिरी, कैलाशगिरी, चम्पापुर, पावापुर आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो, अतिशय क्षेत्रेभ्यो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीमंधरादि विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो ऋषभादिचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भगवज्जिन सहस्राष्टनामेभ्यश्च अनर्घ्यपद प्राप्तये महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य-2 : ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाव-वन्दना त्रिकालपूजा त्रिकालवन्दना करवी करावी भावना भाववी श्री अरहन्तजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन विशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषै, थल विषै, आकाश विषै, गुफा विषै, पहाड़ विषै, नगर-नगरी विषै, कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र स्थित विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप स्थित बावन जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। श्री सम्मेदशिखर, कैलाशगिरि, चम्पापुर, पावापुर, गिरनार तीर्थंकर सिद्धक्षेत्रोभ्यो नमः। पावागढ़, तुंगीगिरी, गजपंथ, मुक्तागिर सिद्धवर कूट, ऊन बड़वानी पावागिरि, कुण्डलपुर, सोनागिर, राजगृही, मन्दरागिरी, द्रोणागिरी, अहारजी आदि समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूडबद्री, मन्दारगिरी, द्रोणगिरी अहारजी आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः श्री समस्त तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थंक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री गौतम स्वामी, श्री कुन्दकुन्दाचार्य एवं श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परम ऋषिभ्यो नमः इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो महाऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हे भव्य!

जिन रूप ही देखने योग्य है। जिन वचन ही सुनने योग्य है।
जिन भावना ही भाने योग्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्ति पाठ-1

(चौपाई)

शान्तिनाथ मुख शशि-उनहारी शील-गुण-व्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयम कमलदल लाजै।।
पंचम चक्रवर्ती पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र-नरेन्द्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति हित शांति विधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।
शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढैं तिन्हें पुनि चार संघ को।।

(बसन्ततिलका)

पूजैं जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके।
इंद्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।।
सो शांतिनाथ वर-वंश जगत प्रदीप।
मेरे लिये करहिं शान्ति सदा अनूप।।

(इन्द्रावज्रा)

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों औ यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजै सुखी हे जिन! शांति को दे।।

(स्रग्धरा)

होवे सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहे, व्याधियों का अंदेशा।।
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाशकरि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का।
सद्वृत्तों का, सुजस कह के, दोष ढाकूँ सभी का।।
बोलूँ प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ।।

(आर्या)

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं न पाया मुक्ति-पद मैंने।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव-दुख से।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(नो बार णमोकार मंत्र का जाप कर कायोत्सर्ग करें)

शान्ति पाठ-2

(हरिगीतिका)

हूँ शान्तिमय ध्रुव ज्ञानमय, ऐसी प्रतीति जब जगे।
अनुभूति हो आनन्दमय, सारी विकलता तब भगे।।1।।
निज भाव ही है एक आश्रय, शान्ति-दाता सुखमयी।
भूल स्व दर-दर भटकते, शान्ति कब किसने लही।।2।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज घर बिना विश्राम नाहीं, आज यह निश्चय हुआ।
मोह की चट्टान टूटी, शान्ति निर्झर बह रहा।।3।।
यह शान्ति धारा हो अखण्ड, चिरकाल तक बहती रहे।
होवें निमग्न सुभव्यजन, सुख शान्ति सब पाते रहें।।4।।
पूजोपरान्त प्रभो यही, इक भावना है हो रही।
लीन निज में ही रहूँ, प्रभु और कुछ वाँछा नहीं।।5।।

(दोहा)

सहज परम आनन्दमय, निज ज्ञायक अविकार।
स्व में लीन परिणति विषैं, बहती समरस धार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(यहाँ नौ बार णमोकार मंत्र का जाप कर कायोत्सर्ग करें)

विसर्जन पाठ -1

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय।।1।।
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।2।।
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।3।।
तुम चरणन ढ़िंग आयके, मैं पूजूँ अतिचाव।
आवागमन रहित करो, रमूँ सदा निज भाव।।4।।

विसर्जन पाठ-2

(वीरछन्द)

थी धन्य घड़ी जब निज ज्ञायक की, महिमा मैंने पहिचानी।
हे वीतराग सर्वज्ञ महा-उपकारी, तव पूजन ठानी।।1।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुख हेतु जगत में भ्रमता था, अन्तर में सुख सागर पाया।
प्रभु निजानन्द में लीन देख, मम यही भाव अब उमगाया।।2।।
पूजा का भाव विसर्जन कर, तुमसम ही निज में थिर होऊँ।
उपयोग नहीं बाहर जावे, भव क्लेश बीज अब नहीं बोऊँ।।3।।
पूजा का किया विसर्जन प्रभु, और पाप भाव में पहुँच गया।
अब तक की मूरखता भारी, तज नीम हलाहल हाय पिया।।4।।
ये तो भारी कमजोरी है, उपयोग नहीं टिक पाता है।
तत्त्वादिक चिन्तन भक्ति तज ये दूर पाप में जाता है।।5।।
हे बल अनन्त के धनी विभो! भावों में तब तक बस जाना।
निज से बाहर भटकी परिणति, निज ज्ञायक में ही पहुँचाना।।6।।
पावन पुरुषार्थ प्रकट होवे, बस निजानन्द में मग्न रहूँ।
तुम आवागमन विमुक्त हुए, मैं पास आपके जा तिष्ठूँ।।7।।

(दोहा)

अक्षर पद मात्रा विधि, हीनाधिक जो कोय।
प्रभु अज्ञान प्रमाद से हुई क्षमा सो होय।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

क्षमापना

(दोहा)

भूल-चूक कर दो क्षमा, भाव क्षमा अवतार।
हम अज्ञानी जीव हैं, आप ज्ञान भण्डार।।
तुव चरणों की शरण पा, पाया सौख्य अपार।
क्षमा करो निज ज्ञान दो, करो भवोदधि पार।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

स्तुति पाठ

(चौपाई)

मैं तुम चरण कमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करौं मन लाय।
जनम-जनम प्रभु पाऊँ तोहि, यह सेवा-फल दीजे मोहि।।

कृपा तिहारीं ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार-बार मैं विनती करूँ, तुम सेवा भव सागर तरूँ।।

नाम लेत सब दुख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण की सेव।।

मैं आयो पूजन के काज, मेरो जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊँ शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश।।

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्यो भगवान।।

पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावैं मोक्ष निधान।।

जैसी महिमा तुम विषैं, और धरैं नहिं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहिं तारागण होय।।

नाथ तिहारे नाम तैं, अघ छिन माँहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाश तैं, अन्धकार विनशाय।।

बहुत प्रशंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत अजान।
पूजाविधि जानूँ नहीं, शरण राखि भगवान।।

धर्म प्रेम वश भक्तिभाव से कीन्ही विधि यह जान अजान।
तुम प्रसाद से पूर्ण हुई अब, जय जय श्री जिनवर गुण गान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हीन मंत्र और क्रिया द्रव्य से, शरण गई अब तेरी आन।
भूल हुई हो जो कुछ मुझसे, क्षमा करो हे श्री भगवान।।

तुम चरणन ढिंग आय के, मैं पूजौं अति चाव।
आवागमन रहित रहूँ, रहूँ सदा निज भाव।।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगल कुन्दकुद्यादो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।

सर्व मंगल मांगल्यं सर्व कल्याण कारकं।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयतु शासनम्।।

(समस्त वीतरागी जिनेन्द्र भगवंतों की जय)

भक्त की अन्तिम भावना

नाथ तुम्हारी पूजा में, सब स्वाहा करने आया।
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया।टेक।।

पंचेन्द्रिय का लक्ष्य करूँ मैं, इस अग्नि में स्वाहा।
इन्द्र नरेन्द्रों के वैभव की, चाह करूँ मैं स्वाहा।
तेरी साक्षी से अनुपम मैं, यज्ञ रचाने आया।।1।।

जग की मान प्रतिष्ठा को भी, करना मुझको स्वाहा।
नहीं मूल्य इस मन्दभाव का, व्रत-तप आदि स्वाहा।
वीतराग के पथ पर चलने, का प्रण लेकर आया।।2।।

अरे जगत के अपशब्दों को, करना मुझको स्वाहा।
परलक्ष्यी सब ही वृत्ति को, करना मुझको स्वाहा।
अक्षय निरंकुश पद पाने, और पुण्य लुटाने आया।।3।।

तुम हो पूज्य पुजारी मैं, यह भेद करूँगा स्वाहा।
बस अभेद में तन्मय होना, और सभी कुछ स्वाहा।
अब पामर भगवान बने, यह सीख सीखने आया।।4।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सप्तम् खण्ड : बारह भावना संग्रह

बारह भावना-1

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार।।1।।

दल बल देवी देवता, मात-पिता परिवार।
मरती बिरियां जीव को, कोऊ न राखन हार।।2।।

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णा वश धनवान।
कबहूं न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान।।3।।

आप अकेला अवतरे, मरे अकेलो होय।
यो कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय।।4।।

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपनो कोय।
घर सम्पत्ति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय।।5।।

दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह।।6।।

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा।
कर्म चोर चहुँ ओर, सरवस लूटैं सुध नहीं।।7।।

सतगुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमैं।
तब कछु बनहिं उपाय, कर्म चोर आवत रुकैं।।8।।

ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शोधैं भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसैं नहीं, बैठे पूरब चोर।।9।।

पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार।।10।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादि तैं, भरमत हैं बिन ज्ञान।।11।।

धन कन कंचन राजसुख, सबहि सुलभकर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान।।12।।

जाँचे सुर-तरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रैन।
बिन जाँचे बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख दैन।।13।।

बारह भावना-2

द्रव्य रूप करि सर्व थिर, परजय थिर है कौन।
द्रव्य दृष्टि आपा लखो, पर्जय नय करि गौन।।1।।

शुद्धातम अरु पंच गुरु, जग में सरना दोय।
मोह उदय जिय के वृथा, आन कल्पना होय।।2।।

परद्रव्यन तैं प्रीति जो, है संसार अबोध ।
ताको फल गति चार में, भ्रमण कह्यो श्रुत शोध।।3।।

परमारथ तैं आतमा, एक रूप ही जोय।
कर्म निमित्त विकलप घने, तिन नासे शिव होय।।4।।

अपने-अपने सत्त्व कूँ, सर्व वस्तु विलसाय।
ऐसे चितवे जीव तब, परतैं ममत न थाय।।5।।

निर्मल अपनी आतमा, देह अपावन गेह।
जानि भव्य निज भाव को, यासों तजो सनेह।।6।।

आतम केवल ज्ञानमयं, निश्चय दृष्टि निहार।
सब विभाव परिणाममय, आस्रव भाव विडार।।7।।

निज स्वरूप में लीनता, निश्चय संवर जानि।
समिति गुप्ति संजम धरम, धरैं पाप की हानि।।8।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संवर-मय है आतमा, पूर्व कर्म झड़ जाय।
निज स्वरूप को पाय कर, लोक शिखर जब थाय।।9।।

लोक स्वरूप विचारि कैं, आतम रूप निहारि।
परमारथ व्यवहार गुणि, मिथ्याभाव निवारि।।10।।

बोधि आपका भाव है, निश्चय दुर्लभ नाहिं।
भव में प्रापति कठिन है, यह व्यवहार कहाहिं।।11।।

दर्श-ज्ञानमय चेतना, आतम धर्म बखानि।
दया क्षमादिक रत्नत्रय, यामें गर्भित जानि।।12।।

बारह भावना-3

(दोहा)

निज स्वभाव की दृष्टि धर, बारह भावन भाय।
माता है वैराग्य की, चिन्तत सुख प्रकटाय।।

अनित्य भावना

मैं आत्मा नित्य स्वभावी हूँ, ना क्षणिक पदार्थों से नाता।
संयोग शरीर कर्म रागादिक, क्षणभंगुर जानो भ्राता।।
इनका विश्वास नहीं चेतन, अब तो निज की पहिचान करो।
निज ध्रुव स्वभाव के आश्रय से ही, जन्मजरामृत रोग हरो।।

अशरण भावना

जो पाप बन्ध के हैं निमित्त, वे लौकिक जन तो शरण नहीं।
पर सच्चे देव-शास्त्र-गुरु भी, अवलम्बन हैं व्यवहार सही।।
निश्चय से वे भी भिन्न अहो! उन सम निज लक्ष्य करो आत्मन्।
निज शाश्वत ज्ञायक ध्रुव स्वभाव ही, एक मात्र है अवलम्बन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसार भावना

ये बाह्य लोक संसार नहीं, ये तो मुझ सम सत् द्रव्य अरे।
नहिं किसी ने मुझको दुःख दिया, नहिं कोई मुझको सुखी करे।।
निज मोह राग अरु द्वेष भाव से, दुख अनुभूति की अबतक।
अतएव भाव संसार तजूँ, अरु भोगूँ सच्चा सुख अविचल।।

एकत्व भावना

मैं एक शुद्ध निर्मल अखण्ड, पर से न हुआ एकत्व कभी।
जिनको निज मान लिया मैंने, वे भी तो पर प्रत्यक्ष सभी।।
नहीं स्व-स्वामी सम्बन्ध बने, माना वह भूल रही मेरी।
निज में एकत्व मान कर के, अब मेटूँगा भव-भव फेरी।।

अन्यत्व भावना

जो भिन्न चतुष्टय वाले हैं, अत्यन्ताभाव सदा उनमें।
गुण पर्यय में अन्यत्व अरे!, प्रदेशभेद नहिं है जिनमें।।
इस सम्बन्धी विपरीत मान्यता से, संसार बढ़ाया है।
निज तत्त्व समझ में आने से, समरस निज में ही पाया है।।

अशुचि भावना

है ज्ञानदेह पावन मेरी, जड़देह राग के योग्य नहीं।
यह तो मलमय मल से उपजी, मल तो सुखदायी कभी नहीं।।
भो आत्मन् श्री गुरु ने, रागादिक को अशुचि अपवित्र कहा।
अब इनसे भिन्न परम पावन, निज ज्ञानस्वरूप निहार अहा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आस्रव भावना

मिथ्यात्व कषाय योग द्वारा, कर्मों को नित्य बुलाया है।
शुभ-अशुभभाव क्रिया द्वारा, नित दुख का जाल बिछाया है।।
पिछले कर्मोदय में जुड़कर, कर्मों को ही छोड़ा बाँधा।
ना ज्ञाता-दृष्टा मात्र रहा, अब तक शिवमार्ग नहीं साधा।।

संवर भावना

मिथ्यात्व अभी सत् श्रद्धा से, व्रत से अविरति का नाश करूँ।
मैं सावधान निज में रहकर, निःकषाय भाव उद्योत करूँ।।
शुभ-अशुभ योग से भिन्न, आत्म में निष्कम्पित हो जाऊँगा।
संवरमय ज्ञायक आश्रय कर, नव कर्म नहीं अपनाऊँगा।।

निर्जरा भावना

नव आस्रव पूर्वक कर्म तजे, इससे बन्धन न नष्ट हुआ।
अब कर्मोदय को ना देखूँ, ज्ञानी से यही विवेक मिला।।
इच्छा उत्पन्न नहीं होवे, बस कर्म स्वयं झड़ जावेंगे।
जब किञ्चित् नहीं विभाव रहें, गुण स्वयं प्रगट हो जावेंगे।।

लोक भावना

परिवर्तन पंच अनेक किये, सम्पूर्ण लोक में भ्रमण किया।
ना कोई क्षेत्र रहा ऐसा, जिस पर ना हमने जन्म लिया।।
नरकों स्वर्गों में घूम चुका, अतएव आश सबकी छोड़ूँ।
लोकाग्र शिखर पर थिर होऊँ, बस निज में ही निज को जोड़ूँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बोधिदुर्लभ भावना

सामग्री सभी सुलभ जग में, बहुबार मिली छूटी मुझसे।
कल्याणमूल रत्नत्रय परिणति, अब तक दूर रही मुझसे।।
इसलिए न सुख का लेश मिला, पर में चिरकाल गँवाया है।
सद्बोधिहेतु पुरुषार्थ करूँ, अब उत्तम अवसर पाया है।।

धर्म भावना

शुभ–अशुभ कषायों रहित होय, सम्यक्चारित्र प्रगटाऊँगा।
बस निज स्वभाव साधन द्वारा, निर्मल अनर्घ्यपद पाऊँगा।।
माला तो बहुत जपी अबतक, अब निज में निज का ध्यान धरूँ।
कारण परमात्मा अब भी हूँ, पर्यय में प्रभुता प्रकट करूँ।।

(दोहा)

ध्रुव स्वभाव सुखरूप है, उसको ध्याऊँ आज।
दुखमय राग विनष्ट हो, पाऊँ सिद्ध समाज।।

वैराग्य भावना–4

(दोहा)

बीज राख फल भोगवै, ज्यों किसान जगमाहिं।
त्यों चक्री नृप सुख करै, धर्म विसारै नाहिं।।1।।

(जोगीरासा या नरेन्द्र छन्द)

इहविध राज करै नर नायक, भोगैं पुण्य विशाल।
सुख सागर में रमत निरन्तर, जात न जान्यों काल।।
एक दिवस शुभ कर्म संयोगे, क्षेमंकर मुनि बन्दे।
देखि श्रीगुरु के पद पंकज, लोचन अलि आनन्दे।।2।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीन प्रदक्षिण दे सिर नायो, कर पूजा थुति कीनी।
साधु समीप विनय कर वैठ्यौ, चरनन में दिठि दीनी।।
गुरु उपदेश्यो धर्म शिरोमणि, सुन राजा वैरागे।
राज,रमा वनितादिक जे रस, ते सब नीरस लागे।।3।।

मुनि सूरज कथनी किरणावलि, लगत भरम बुधि भागी।
भव तन भोग स्वरूप विचार्यो, परम धरम अनुरागी।।
या संसार महावन भीतर, भ्रमते छोर न आवै।
जामन मरण जरा दव दाहै, जीव महादुःख पावै।।4।।

कबहुँकि जाय नरक तिथि भुंजे , छेदन भेदन भारी।
कबहुँ पशु परजाय धरे तहँ, बध बन्धन भयकारी।।
सुरगति में परसम्पत्ति देखे, राग उदय दुःख होई।
मानुषयोनि अनेक विपत्तिमय, सर्व सुखी नहिं कोई।।5।।

कोई इष्ट वियोगी विलखै, कोई अनिष्ट संयोगी।
कोई दीन दरिद्री विगूचे, कोई तन के रोगी।।
किस ही घर कलिहारी नारी, कै बैरी सम भाई।
किस ही के दुःख बाहिर दीखे, किस ही उर दुचिताई।।6।।

कोई पुत्र बिना नित झूरै, होई मरे तब रोवै।
खोटी संततिसों दुःख उपजै, क्यों प्राणी सुख सौवै।।
पुण्य उदय जिनके तिनके भी, नाहिं सदा सुख साता।
यह जगवास जथारथ देखे, सब ही है दुःख दाता।।7।।

जो संसार विषै सुख होता, तीर्थङ्कर क्यों त्यागे।
काहे को शिव साधन करते, संजमसों अनुरागै।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देह अपावन अथिर घिनावन, यामैं सार न कोई।
सागर के जलसों शुचि कीजै, तो भी शुद्ध न होई।।8।।

सप्त कुधातु भरी मल मूरत, चाम लपेटी सोहै।
अन्तर देखत या सम जग में, और अपावन को है।।
नव मल द्वार स्रवैं निशिवासर, नाम लिये घिन आवै।
व्याधि उपाधि अनेक जहाँ तहँ, कौन सुधी सुख पावै।।9।।

पोषत तो दुःख दोष करै अति, सोषत सुख उपजावे।
दुर्जन देह स्वभाव बराबर, मूरख प्रीति बढ़ावै।।
राचन जोग स्वरूप न याको, विरचन जोग सही है।
यह तन पाय महातप कीजे, यामें सार यही है।।10।।

भोग बुरे भवरोग बढ़ावैं बैरी हैं जग जीके।
बेरस होंय विपाक समय अति, सेवत लागें नीके।।
वज्र अगनि विष से विषधर से, ये अधिके दुःखदाई।
धर्म रतन के चोर प्रबल अति, दुर्गति पन्थ सहाई।।11।।

मोह उदय यह जीव अज्ञानी, भोग भले कर जानें।
ज्यों कोई जन खाय धतूरा, तो सब कंचन मानें।।
ज्यों-ज्यों भोग संजोग मनोहर, मन वांछित जन पावे।
तृष्णा नागिन त्यों-त्यों डंकै, लहर जहर की आवै।।12।।

मैं चक्री पद पाय निरन्तर, भोगे भोग घनेरे।
तो भी तनिक भये नहिं पूरन, भोग मनोरथ मेरे।।
राज समाज महा अघ कारण, वैर बढ़ावनहारा।
वैश्या-सम लक्ष्मी अति चंचल, याका कौन पत्यारा।।13।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोह महारिपु वैर विचार्यो, जगजिय संकट डारे।
तन काराग्रह बनिता बेड़ी, परिजन हैं रखवारे।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरन तप, ये जियके हितकारी।
ये ही सार असार और सब, यह चक्री चितधारी।।14।।

छोड़े चौदह रत्न नवोंनिधि, अरु छोड़े संग साथी।
कोड़ि अठारह घोड़े छोड़े, चौरासी लख हाथी।।
इत्यादिक सम्पत्ति बहुतेरी, जीरण तृणसम त्यागी।
नीति विचार नियोगी सुत को, राज्य दियो बड़भागी।।15।।

होय निशल्य अनेक नृपति संग, भूषण वसन उतारे।
श्री गुरुचरन धरी जिनमुद्रा, पंच महाव्रत धारे।।
धनि यह समझ सुबुद्धि जगोत्तम, धनि यह धीरजधारी।
ऐसी सम्पत्ति छोड़ बसे वन, तिन पद ढोक हमारी।।16।।

(दोहा)

परिग्रह पोट उतार सब, लीनों चारित पन्थ।
निज स्वभाव में थिर भये, वज्रनाभि निरग्रन्थ।।

मेरी-भावना-5

जिसने राग-द्वेष-कामादिक, जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो।।1।।

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन में जो, निश-दिन तत्पर रहते हैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुख समूह को हरते हैं।।2।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूँठ कभी नहिं कहा करूँ।
पर-धन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ।।3।।

अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ।।4।।

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे।।
दुर्जन क्रूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्य-भाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे।।5।।

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे।।6।।

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे।।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा, कभी न पग डिगने पावे।।7।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होकर सुख में मगन न फूलें, दुख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी श्मशान-भयानक, अटवी से नहिं भय खावे।।
रहे अडोल-अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट-वियोग-अनिष्ट-योग में, सहनशीलता दिखलावे।।8।।

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
बैर-पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान-चरित्र उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावे।।9।।

ईति-भीति व्यापै नहिं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्म-निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।।
रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्व हित किया करे।।10।।

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर ही रहा करे।
अप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे।।
बनकर सब 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति रत रहा करें।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करे।।11।।

कोई सहारा है नहीं यों सोच मत लाना।
चत्तारि शरणं पाठ पढ़ निज की शरण आना।।
निजभावना भाते हुए वैराग्य बढ़ाओ।
सर्वत्र सुन्दर एक की ही भावना भाओ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्टम खण्ड : मूलशास्त्र पाठ संग्रह

श्री तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) संस्कृत

(आचार्य उमास्वामी)

मोक्षमार्गस्यं नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृतां।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वंदे तद्‌गुणलब्ध्ये।।

त्रैकाल्यं द्रव्य–षट्कं नव–पद–सहितं जीव–षट्काय लेश्याः।
पंचान्ये चास्तिकाया व्रत–समिति–गति–ज्ञान–चारित्रभेदाः।।
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवन महितैः प्रोक्तमर्हद् भिरीशैः।
प्रत्येति श्रध्धाति स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्धदृष्टिः।।1।।
सिद्धे जयप्प सिद्धे चउव्विहाराहणाफलं पत्ते।
वंदिता अरहंते वौच्छं आराहणा कमसो।।2।।
उज्जोवणमुज्जवणं णिव्वाहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसण–णाण चरित्तं तवाणमाराहणा भणिया।।3।।

सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्राणि मोक्षमार्गः।।1।। तत्त्वार्थ–श्रद्धानं–सम्यग्दर्शनं।।2।। तन्निसर्गादधिगमाद्वा।।3।। जीवा–जीवास्रव–बंध–संवर–निर्जरा मोक्षस्तत्त्वं।।4।। नाम–स्थापना–द्रव्य–भावतस्तन्यासः।।5।। प्रमाणनयैरधिगमः।।6।। निर्देश–स्वामित्व–साधनाधिकरण–स्थिति–विधानतः।।7।। सत्संख्या–क्षेत्र–स्पर्शन–कालांतर–भावाल्पबहुत्वैश्च।।8।। मति–श्रुतावधि–मनःपर्यय–केवलानिज्ञानं।।9।। तत्प्रमाणे।।10।। आद्ये परोक्षं।।11।। प्रत्यक्षमन्यत्।।12।। मतिः स्मृतिः संज्ञा–चिंताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरं।।13।। तदिन्द्रियानिन्द्रिय–निमित्तं।।14।। अवग्रहेहावाय–धारणाः।।15।। बहु–बहुविध–क्षिप्रानिः–सृतानुक्त ध्रुवाणां सेतराणां।।16।। अर्थस्य।।17।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यंजनस्यावग्रहः।।18।। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्यां।।19।। श्रुतंमतिपूर्वंद्वयनेक-द्वादशभेदं।।20।। भवप्रत्ययोऽवधिर्देव-नारकाणां।।21।। क्षयोपशम-निमित्तः षट् विकल्पः शेषाणां।।22।। ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः।।23।। विशुद्धय-प्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः।।24।। विशुद्धि-क्षेत्रस्वामि-विषयेभ्योऽवधि-मनःपर्यययोः।।25।। मति श्रुतयोर्निबन्धो-द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु।।26।। रुपिष्ववधेः।।27।। तदनंतभागे मनःपर्ययस्य।।28।। सर्व द्रव्यपर्यायेषु केवलस्य।।29।। एकादिनिभाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः।।30।। मतिश्रुता-वधयोविपर्ययश्च।।31।। सदसतोरविशेषाद्य-दृच्छोपलब्धे-रून्मत्तवत्।।32।। नैगम-संग्रहव्यवहारर्जुसूत्र-शब्द-समभिरुढैवं भूतानयाः।।33।।

इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः।।1।।

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामकौ च।।1।। द्विनवाष्टा-दशैक-विंशति त्रिभेदा यथाक्रमं।।2।। सम्यक्त्व-चारित्रे।।3।। ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च।।4।। ज्ञानाज्ञानदर्शन-लब्धयश्चतु-स्त्रित्रि-पंचभेदाः सम्यक्त्व-चारित्रसंयमा-संयमाश्च।।5।। गति-कषाय-लिंग-मिथ्यादर्शनाज्ञानासंयता-सिद्ध-लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः।।6।। जीवभव्या-भव्यत्वानि च।।7।। उपयोगो लक्षणं।।8।। स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः।।9।। संसारिणो मुक्ताश्च।।10।। समनस्का-मनस्काः।।11।। संसारिणस्त्रस-स्थावराः।।12।। पृथिव्यप्तेजो-वायु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वरस्पतयः स्थावराः ।।13।। द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ।।14।। पंचेन्द्रियाणि ।।15।। द्विविधानि ।।16।। निर्वुत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ।।17।। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियं ।।18।। स्पर्शन-रसनाध्राण-चक्षुः श्रोत्राणि ।।19।। स्पर्श-रस-गंध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः ।।20।। श्रुतमनिन्द्रियस्य ।।21।। वनस्पत्यंताना-मेकं ।।22।। कृमिपिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीनामेकै कवृद्धानि ।।23।। संज्ञिनः समनस्काः ।।24।। विग्रहगतौकर्मयोगः ।।25।। अनुश्रेणी गतिः ।।26।। अविग्रहा जीवस्य ।।27।। विग्रहवती च संसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः ।।28।। एकसमयाऽविग्रहा ।।29।। एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ।।30।। संमूर्च्छन गर्भोपपादाजन्म ।।31।। सचित्तशीत-संवृताः सेतरामिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।।32।। जरायुजांडजपोतानांगर्भः ।।33।। देवनारकाणामुपपादः ।।34।। शेषाणांसम्मूर्च्छनं ।।35।। औदारिक-वैक्रियिका-हारक तैजसकार्मणानि शरीराणि ।।36।। परं परं सूक्ष्मं ।।37।। प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ।।38।। अनन्तगुणे परे ।।39।। अप्रतीघाते ।।40।। अनादि संबंधे च ।।41।। सर्वस्य ।।42।। तदादीनि भाज्यानि-युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।।43।। निरुप भोगमन्त्यं ।।44।। गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यं ।।45।। औपपा-दिकं वैक्रियिकं ।।46।। लब्धि-प्रत्ययं च ।।47।। तैजसमपि ।।48।। शुभंविशुद्धमव्याघातिचाहारकं प्रमत्त-संयतस्यैव ।।49।। नारकसंमूर्च्छिनो नपुंसकानि ।।50।। न देवाः ।।51।। शेषास्त्रिवेदाः ।।52।। औपपादिक-चरमोत्तमदेहाऽसंख्येय वर्षा-युषोऽनपवर्त्यायुषः ।।53।।

इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ।।2।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्न-शर्करा-बालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः प्रभाभूमयो-घनांबुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्तोऽधोऽधः।।1।। तासुत्रिंशत्पंचविंशति-पंचदशदशंत्रि-पंचोनैकनरक-शतसहस्त्राणि-पंच-चैव यथा-क्रमम्।।2।। नारका नित्याऽशुभतर-लेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः।।3।। परस्परोदीरितदुःखाः।।4।। संक्लिष्टाऽसुरे दीरितः दुःखाश्चपाक् चतुर्थ्याः।।5।। तेष्वेक-त्रिसप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा-सत्वानां परास्थितिः।।6।। जम्बूद्वीप लवणो-दादयः शुभनामानो द्वीप समुद्राः।।7।। द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व परिक्षेपिणो वलयाकृतयः।।8।। तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजन शतसहस्र विष्कम्भो जम्बूद्वीपः।।9।। भरत हैमवत-हरि विदेहरम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि।।10।। तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महा-हिमवन्निषध नीलरुक्मि शिखरिणो वर्ष धर-पर्वताः।।11।। हेमार्जुन तपनीयवैडूर्यरजत हेम मयाः।।12।। मणिविचित्र पार्श्वा उपरी मूले च तुल्य-विस्ताराः।।13।। पद्म महापद्म-तिगिच्छ केशरि-महापुण्डरीक पुण्डरीका-ह्रदास्तेषा-मुपरि।।14।। प्रथमोयोजनसहस्रायामस्तदर्द्ध विष्कम्भो ह्रदः।।15।। दशयोजनावगाहः।।16।। तन्मध्ये योजनं पुष्करम्।।17।। तद्द्विगुणद्विगुणाह्रदाः पुष्कराणि च।।18।। तन्निवासिन्यो देव्यः श्री ह्रीं-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिक-परिषत्काः।।19।। गंगा-सिन्धु रोहिद्रोहि-तास्या हरिद्धरिकांता: सीता सीतोदा नारी नरकांता सुवर्णा रुप्यकूला-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।।20।। द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ।।21।। शेषास्त्वपरगाः ।।22।। चर्तुदश नदीसहस्र-परिवृता गंगासिन्ध्वादयो नद्यः ।।23।। भरतः षड्विंशति-पंचयोजनशत-विस्तारः षट् चैकोनविंशति-भागा योजनस्य ।।24।। तद्द्विगुण-द्विगुण विस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ।।25।। उत्तरा दक्षिण-तुल्याः ।।26।। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्-समयाभ्यामुत्सर्पिण्यव-सर्पिणीभ्याम् ।।27।। ताभ्याम-पराभूमयोऽवस्थिताः ।।28।। एक द्वि-त्रि पल्योपमस्थितयो हैमवतक-हारिवर्षक-दैव कुरवकाः ।।29।। तथोत्तराः ।।30।। विदेहेषु संख्येय-कालाः ।।31।। भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्यनवति शत भागः ।।32।। द्विर्घातकी खण्डे।।33।।पुष्करार्द्धच।।34।।प्राङ्-मानुषोत्तरान्मनुष्याः ।।35।। आर्याम्लेच्छश्च ।।36।। भरतैरावत-विदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरुत्तर कुरुभ्यः ।।37।। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्त र्मुहूर्ते ।।38।। तिर्यग्योनिजानां च ।।39।।

इति तत्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ।।3।।

देवाश्चतुर्णिकायाः ।।1।। आदितस्त्रिषु पीतान्त-लेश्याः ।।2।। दशाष्ट पंचद्वादश विकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यंताः ।।3।। इन्द्रसामानिक त्रायस्त्रिंशत्पारि षदात्मरक्ष-लोकपालानीक प्रकीर्णकाभियोग्य किल्विषिकाश्चैकशः ।।4।। त्रायस्त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः ।।5।। पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ।।6।। काय प्रवीचाराआ ऐशानात् ।।7।। शेषाः स्पर्श रूप शब्द मनः प्रवीचाराः ।।8।। परेऽप्रवीचाराः ।।9।। भवनवासिनोऽसुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नागविद्युत–सुपर्णाग्निवात स्तनितोदधि द्वीप दिक्कुमाराः।।10।। व्यन्तराः किन्नरकिंपुरुष महोरग गन्धर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाचाः।।11।। ज्योतिष्काः सूर्या, चन्द्रमसौ ग्रह नक्षत्र प्रकीर्णक तारकाश्च।।12।। मेरुप्रदक्षिणा नित्य गतयो नृलोके ।।13।। तत्कृतः कालविभागः।।14।। बहिरवस्थिताः।।15।। वैमानिकाः।।16।। कल्पोपपन्नाः कल्पातीतश्च।।17।। उपर्यु परि।।18।। सौ–धर्मैशान सानत्कुमार–माहेन्द्र–ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लान्तव कापिष्ठ–शुक्रमहाशुक्रशत्तारसहस्त्रारेष्वानत–प्राणतयो–रारणाच्युतयोर्नवसुग्रैवेयकेषु विजय वैजयन्त जयन्ता पराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च।।19।। स्थिति प्रभाव सुख–द्युति–लेश्या–विशुद्धिन्द्रियावधि विषयतोऽधिकाः।।20।। गतिशरीर परिग्रहाभि मानतो हीनाः।।21।। पीत पद्म शुक्ल लेश्या द्वि–त्रि शेषेषु।।22।। प्राग्ग्रैवेय केभ्यः कल्पाः।।23।। ब्रह्म लोका–लया लौकान्तिकाः।।24।। सारस्वतादित्य वह्न्यरुण–गर्दतोय तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च।।25।। विजयादिषु द्वि चरमाः।।26।। औपपादिक–मनुष्येभ्यःशेषास्तिर्यग्योनयः।।27।। स्थिति रसुरनाग–सुपर्ण द्वीप शेषाणांसागरोपम–त्रिपल्योपमार्ध हीन–मिताः।।28।। सौधर्मैसानयो:सागरोपमेऽधिके।।29।। सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त।।30।। त्रि–सप्तनवैकादश–त्रयोदश पञ्चदशभिरधिकानितु।।31।। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च।।32।। अपरापल्योपमम धिकम्।।33।। परतः परतः पूर्वापूर्वाऽनंतरा।।34।। नार काणां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च द्वितीयादिषु ।।35।। दशवर्ष सहस्राणि प्रथमायाम् ।।36।। भवनेषु च ।।37।। व्यन्तराणां च ।।38।। परापल्यो पममधिकम् ।।39।। ज्योतिष्काणां च ।।40।। तदष्ट-भागोऽपरा ।।41।। लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि च सर्वेषां ।।42।।

इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ।।4।।

अजीवकाया धर्माधर्माकाश-पुद्गलाः ।।1।। द्रव्याणि ।।2।।जीवाश्च ।।3।।नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।।4।।रूपिणः पुद्गलाः ।।5।। आकाशादेकद्रव्याणि ।।6।। निष्क्रियाणि च ।।7।। असंख्येयाः प्रदेशाधर्माधर्मैकजीवानाम् ।।8।।आकाश स्यानन्ताः ।।9।।संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।।10।।नाणोः ।।11।। लोकाकाशेऽवगाहः ।।12।। धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।।13।। एकप्रदेशादिषुभाज्यः पुद्गलानां ।।14।।असंख्येयभागादिषुजीवानाम् ।।15।। प्रदेश-संहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ।।16।। गति-स्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ।।17।। आकाशस्यावगाहः ।।18।। शरीरवाङ् मनः प्राणापानाः पुद्गलानाम् ।।19।। सुखदःखजीवित मरणोपग्रहाश्च ।।20।। परस्परोपग्रहोजीवानम् ।।21।।वर्तना परिणाम क्रिया परत्वा परत्वे च कालस्य ।।22।। स्पर्श-रस गन्ध-वर्ण-वंतः पुदगलाः ।।23।।शब्द-बंधसौक्ष्म्य स्थौल्य-संस्थार-भेद-तमश्छायातपो-द्योतवंतश्च ।।24।। अणवः स्कंधाश्च ।।25।। भेद-संघातेभ्यः उत्पद्यन्ते ।।26।। भेदादणुः ।।27।।भेद-संघाता भ्यां चाक्षुषः ।।28।।सद्-द्रव्य-लक्षणम् ।।29।।उत्पादव्यय ध्रौव्ययुक्तं सत् ।।30।।तद्भावाव्ययं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नित्यम् । ।31 । । अर्पितानर्पितसिद्धेः । ।32 । । स्निग्ध रूक्षत्वाद्बन्धः । ।33 । । न जघन्य गुणानाम् । ।34 । । गुणसाम्ये सदृशानाम् । ।35 । । द्वयधि कादि गुणानां तु । ।36 । । बन्धेऽधिकौ परिणामिकौ च । ।37 । । गुणपर्ययवद् द्रव्यम् । ।38 । । कालश्च । ।39 । । सोऽनन्त समयः । ।40 । । द्रव्यांश्रया-निर्गुणा गुणाः । ।41 । । तद्भावः परिणामः । ।42 । ।

इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्यायः । ।5 । ।

काय-वाङ्-मनः कर्म योगः । ।1 । । स आस्रवः । ।2 । । शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य । ।3 । । सकषायाकषाययोःसाम्प-रायिकेर्यापथयोः । ।4 । । इन्द्रियकषायाव्रत-क्रियाः पंच चतुः पंचपंचविंशति संख्याः पूर्वस्य भेदाः । ।5 । । तीव्र मन्दज्ञाताज्ञात-भावाधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्तद्विशेषः । ।6 । । अधिकरणं जीवाऽजीवाः । ।7 । । आद्यंसंरम्भसमारंभारम्भ-योग-कृतकारिता नुमत कषाय-विशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्च तुश्चैकशः । ।8 । । निवर्तना-निक्षेप-संयोगनिसर्गा द्वि चतुर्द्वि त्रि भेदाः परम् । ।9 । । तत्प्रदोषनिह्नव-मात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरण योः । ।10 । । दुःखशोक तापाक्रन्दन वध परिदेवना न्यात्मपरोभय स्थानान्यसद् वेद्यस्य । ।11 । । भूतव्रत्यनुकम्पादान सरागसंयमादि योगः शांतिः शौचमिति सद्वेद्यस्य । ।12 । । केवलि श्रुत संघ धर्म देवावर्ण वादोदर्शनमोहस्य । ।13 । । कषायोदयातीव्र-परिणामश्चास्त्रिमोहस्य । ।14 । । बह्वारम्भ परिग्रहत्वं नारकस्यायुषः । ।15 । । माया-तैर्यग्योनस्य । ।16 । । अल्पारम्भ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिग्रहत्वं मानुषस्य ।।17।। स्वभाव मार्दवं च ।।18।। निः शीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ।।19।। सरागसंयम संयमासंयमा काम निर्जरा बालतपांसि दैवस्य ।।20।। सम्यक्त्वं च ।।21।। योग वक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ।।22।। तद्विपरीतंशुभस्य ।।23।। दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोग संवेगौ शक्तितस्त्याग तपसीसाधुसमाधि वैयावृत्यकरण–मर्हदाचार्य बहुश्रुतप्रवचन–भक्तिरावश्यकापरिहाणि मर्गिप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति–तीर्थंकरत्वस्य ।।24।। परात्म–निंदा प्रशंसे–सद्सद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।।25।। तद्विपर्ययोनीचैर्वृत्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।26।। विघ्नकरणमन्तरायस्य ।।27।।

इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ।।6।।

हिंसानृत स्तेयाब्रह्म परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।।1।। देशसर्व–तोऽणु–महती ।।2।। तत्स्थैर्यार्थ भावनाः पंच–पंच ।।3।। वाङ्–मनोगुप्तीर्यादान निक्षेपण समित्यालोकित पानभोजनानि पंच ।।4।। क्रोध लोभ भीरुत्व–हास्य–प्रत्याख्यानान्यनुवीची–भाषणं च पंच ।।5।। शून्यागार विमोचितावास परोपरोधाकरण–भैक्ष्यशुद्धि–सधर्माऽविसंवादाः पंच ।।6।। स्त्री राग–कथा श्रवणतन्मनोहरांगनिरीक्षण–पूर्वरतानुस्मरण–वृष्येष्ट–रस स्वशरीरसंस्कारत्यागाः पंच ।।7।। मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रिय–विषय–राग–द्वेष वर्जनानि पंच ।।8।। हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनं ।।9।। दुःखमेव वा ।।10।। मैत्री–प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ्यानि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च सत्त्वगुणाधिक-क्लिश्यमानाऽविनयेषु ।।11।। जगत्काय-स्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम् ।।12।। प्रमत्तयोगात्प्राणव्य-परोपणं हिंसा ।।13।। असद्भिधानमनृतम् ।।14।। अदत्तादानं स्तेयं ।।15।। मैथुनं ब्रह्म ।।16।। मूर्च्छा परिग्रहः ।।17।। निःशल्यो व्रती ।।18।। अगार्यनगारश्च ।।19।। अणुव्रतोऽगारी ।।20।। दिग्देशानर्थदण्ड विरतिसामायिक-प्रोषधोपवासोप-भोगपरिभोग-परिणामातिथि संविभागव्रत सम्पन्नश्च ।।21।। मारणान्तिकीं. सल्लेखनां जोषिता ।।22।। शंका-कांक्षा-विचिकित्सान्यदृष्टि प्रशंसा संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।।23।। व्रत शीलेषु पंच पंच यथाक्रमं ।।24।। बन्ध-वधच्छेदातिभारा-रोपणान्नपान-निरोधाः ।।25।। मिथ्यो-पदेश रहोभ्याख्यान कूटलेखक्रिया-न्यासापहार-साकार-मन्त्रभेदाः ।।26।। स्तेनंप्रयोग तदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रम हीनाधिकमानोन्मान -प्रतिरुपकव्यवहाराः ।।27।। परविवाह-करणेत्वरिका परिगृहीतापरिगृहीतागमना नंगक्रीड़ाकाम-तीव्राभिनिवेशाः ।।28।। क्षेत्रवास्तु-हिरण्यसुवर्णधनधान्य-दासीदास-कुप्यप्रमाणातिक्रमाः ।।29।। उर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रम क्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ।।30।। आनयन-पेष्य-प्रयोग-शब्द-रुपानुपात-पुद्गल क्षेपाः ।।31।। कन्दर्पकोत्कुच्यमौखर्या समीक्ष्याधिकरणोपभोग-परिभोगानर्थक्यानि ।।32।। योग-दुःप्रणिधानानादर-स्मृत्यनुपस्थानानि ।।33।। अप्रत्यवेक्षिता-प्रमार्जितोत्सर्गादान संस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।।34।।सचित्त-संबंध-सम्मिश्राभिषव-दुःपक्काहाराः।।35।। सचित्त-निक्षेपापिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य्य-कालातिक्रमाः ।।36।।जीवित-मरणा-शंसा-मित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ।।37।।अनुग्रहार्थं स्व-स्यातिसर्गोदानम्।।38।।विधि-द्रव्य-दातृ-पात्र-विशेषात्तद्विशेषः।।39।।

इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः।।7।।

मिथ्यादर्शनाविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्धहेतवः।।1।। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्धः ।।2।।प्रकृति-स्थित्यनुभव-प्रदेशास्तद्विधयः।।3।।आद्योज्ञान-दर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयायुर्नाम-गोत्रान्तरायः।।4।।पञ्च-नव-द्वयष्टाविंशति-चतुर्द्विचत्वारिंशद् द्वि-पञ्च भेदा यथाक्रमम् ।।5।।मति-श्रुतावधि-मनःपर्ययकेवलानाम्।।6।।चक्षुरचक्षुर-वधिकेवलानां निद्रा-निद्रा-निद्रा-प्रचला-प्रचलाप्रचला-स्त्यागृद्धयश्च।।7।।सदसद्वेद्ये।।8।।दर्शनचारित्र-मोहनीया-कषाय-कषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्वि-नव-षोडशभेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदुभयान्यकषाय-कषायौ हास्य-रत्यरति-शोक-भय-जुगुप्सा-स्त्री-पुन्नपुंसक-वेदा अनन्तानु-बन्ध्यप्रत्याखान प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोध-मान-माया-लोभाः।।9।।नारकतैर्यग्योन-मानुष-दैवानि।।10।।गति-जाति-शरीराङ्गो-पाङ्ग-निर्माण-बन्धन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघात-परघातातपो-द्योतोच्छ्वास-विहायोगतयः प्रत्येकशरीर-त्रस-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय यशःकीर्ति-सेतराणितीर्थंकरत्वं च।।11।। उच्चैर्नीचैश्च।।12।। दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणाम।।13।। आदितस्तिसृणा-मतरायस्य चत्रिंशत्सागरोपम-कोटीकोट्यः परास्थितिः।।14।। सप्ततिर्मोहनीयस्य।।15।। विंशतिर्नाम-गोत्रयोः।।16।। त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः।।17।। अपरा द्वादश मुहूर्तावेदनीयस्य।।18।। नाम-गोत्रयोरष्टौ।।19।। शेषाणामन्त-र्मुहूर्ता।।20।। विपाकोऽनुभवः।।21।। स यथानाम।।22।। ततश्च निर्जरा।।23।। नाम-प्रत्ययाः सर्वतोयोग-विशेषात्-सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाह-स्थिताः सर्वात्म-प्रदेशेष्व-नन्तानन्त-प्रदेशाः।।24।। सद्वेद्य-शुभायुर्नाम-गोत्राणिपुण्यम्।।25।। अतोऽन्यत्पापम्।।26।।

इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रेऽष्टमोऽध्यायः।।8।।

आस्रव-निरोधः संवरः।।1।। स गुप्ति-समिति-धर्मानुप्रेक्षा-परीषहजय-चारित्रै।।2।। तपसा निर्जरा च।।3।। सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः।।4।। ईर्याभाषैषणा दाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः।।5।। उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-सत्यशौच-संयमतपस्त्यागा-किञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः।।6।। अनित्याशरण-संसारैकत्त्वा-न्यत्वाशुच्यास्रव-संवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभधर्म-स्वाख्याततत्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः।।7।। मार्गाच्यवन-निर्जरार्थं-परिषोढव्याः परीषहाः।।8।। क्षुत्पिपासा-शीतोष्णदंशमशक-नाग्न्यारति-स्त्री-चर्या-निषद्या-शय्याक्रोश-वधयाचनालाभ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रोग-तृणस्पर्श-मल-सत्कारपुरस्कार-प्रज्ञाज्ञाना दर्शनानि।।9।।
सूक्ष्मसाम्परायच्छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश।।10।। एकादशजिने
।।11।। बादरसाम्पराये सर्वे।।12।। ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने।।13।।
दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ।।14।। चारित्रमोहेनाग्न्यारति
स्त्री-निषद्या-क्रोश-याचना-सत्कारपुरस्कारा:।।15।। वेदनीये
शेषा:।।16।। एकादयो भाज्यायुगपदेकस्मिन्नैकोनविंशते:
।।17।। सामायिकच्छेदोपस्थापना-परिहारविशुद्धिसूक्ष्म-
साम्पराय यथाख्यातमिति चारित्रम्।।18।। अनशनावमौदर्य-
वृत्ति परिसंख्यान-रस-परित्याग-विविक्तशय्यासनकायक्लेशा
बाह्यं तप:।।19।। प्रायश्चित-विनयवैयावृत्य-स्वाध्याय-
व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरम्।।20।। नवचतुर्दश-पञ्च द्विभेदा
यथाक्रमं-प्राग्ध्यानात्।।21।। आलोचना-प्रतिक्रमणतदुभय-
विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारोपस्थाना:।।22।। ज्ञान-
दर्शन-चारित्रोपचारा:।।23।। आचार्योपाध्याय-तपस्वि-
शैक्ष्यग्लानगण-कुल-संघ-साधु-मनोज्ञानाम्।।24।। वाच-
नापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशा:।।25।। बाह्याभ्यन्तरोपध्यो:
।।26।। उत्तम-संहननस्यैकाग्र-चिन्ता-निरोधोध्यानमा-
न्तर्मुहूर्तात्।।27।। आर्त्त-रौद्र-धर्म्य-शुक्लानि।।28।। परे
मोक्ष-हेतू।।29।। आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय
स्मृतिसमन्वा-हार:।।30।। विपरीतं मनोज्ञस्य।।31।।
वेदनायश्च।।32।। निदानं च।।33।। तदविरत-देश-विरत
प्रमत्तसंयतानाम्।।34।। हिंसानृत-स्तेयविषयसंरक्षणे-
भ्योरौद्रमविरत-देशविरतयो:।।35।। आज्ञापाय विपाक-
संस्थान-विचयाय धर्म्यम्।।36।।शुक्ले चाद्ये पूर्वविद:।।37।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परेकेवलिनः।।38।। पृथक्त्वैकत्ववितर्क सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपाति-व्युपरत क्रियानिवर्तीनि।।39।। त्र्येकयोग-काययोगा योगानाम्।।40।। एकाश्रये सवितर्क-वीचारे पूर्वे।।41।। अवीचारं द्वितीयम्।।42।। वितर्कः श्रुतम्।।43।। वीचारोऽर्थ-व्यञ्जन-योग संक्रान्तिः।।44।। सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्त-वियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोपशमकोपशान्त-मोहक्षपक-क्षीणमोह-जिनाःक्रमशोऽसंख्येय-गुणनिर्जरा।।45।। पुलाक-वकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातका निर्ग्रन्थाः।।46।। संयम-श्रुत-प्रति सेवना-तीर्थ-लिङ्ग-लेश्योपपाद-स्थान-विकल्पतः साध्याः।।47।।

इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः।।9।।

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम्।।1।। बन्धहेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः।।2।। औपशमिकादि-भव्यत्वानां च।।3।। अन्यत्र केवल सम्यक्त्व ज्ञान-दर्शन-सिद्धत्वेभ्यः।।4।। तदनन्तरमूर्ध्वंगच्छत्यालोकान्तात्।।5।। पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद्बन्धच्छेदात्तथा गति-परिणामाच्च।।6।। आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतले पालांबुवदेरण्डबीज-वदग्निशिखावच्च।।7।। धर्मास्ति कायाभावात्।।8।। क्षेत्रकाल गति-लिङ्ग-तीर्थ-चारित्र प्रत्येकबुद्धबोधित-ज्ञानावगाहनान्तर संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः।।9।।

इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः।।10।।

अक्षर मात्र पद स्वर-हीनं, व्यंजन-संधि-विवर्जित रेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे।।1।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्वार्थे पठिते सति।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः।।2।।
तत्वार्थ-सूत्र-कर्तारं, गृद्धपिच्छोपलक्षितम्।
वन्दे गणीद्र-संजातमुमास्वामि-मुनीश्वरम्।।3।।
पढम चउक्के पढमं पंचमे जाणि पुग्गलं तच्च।
छह सत्तमे हि आस्सव अट्टमे बंधणायव्या।।4।।
णमवे संवर णिज्जर दहमे, मोक्खं वियाणेहि।
इह सत्त तच्च भणियं दह सुक्षेण मुणिं देहि।।5।।
जं सक्कइ तं कीरइ जे पण सक्कइ तहेव सद्दहरणं।
सद्दहमाणो जीवो, पावइ अजरामरं ठाणं।।6।।
तवयरणं वयधरणं, संयमसरणं च जीव-दया-करणम्।
अन्ते समाहिमरणं, चउविध दुक्खं णिवारई।।7।।
अरहंत भासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथियं सव्वं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवयं सिरसा।।8।।
गुरवो पांतु वो नित्यं ज्ञान-दर्शन-नायकाः।
चारित्रार्णाव-गंभीराः मोक्ष-मार्गोपदेशकः।।9।।
कोटिशतं द्वादशचैव कोट्यो लक्षाण्यशीतिस्त्रधिकानिचैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यामेतद् श्रुतं पंचपदं नमामि।।10।।

इति तत्वार्थसूत्रापरनाम-तत्वार्थधिगम-मोक्षशास्त्रं समाप्तम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री भक्तामर स्तोत्र (संस्कृत)

भक्तामर- प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्।
सम्यक्प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम्।।1।।

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्-त्रितय-चित्त-हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।।2।।

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ!
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल- संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।।3।।

वक्तुं गुणान्गुण-समुद्र! शशाङ्क-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रम्,
कोवा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्।।4।।

सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश!
कर्तुंस्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृतः।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्
नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम्।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्प-श्रुतं-श्रुतवतां परिहास धाम
त्वद्-भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम्
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारु-चाम्र-कलिका-निकरैक हेतुः ।।6।।

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त-लोक-मलि-नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम्।।7।।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः।।8।।

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं,
त्वसङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि।।9।।

नात्यद्-भुतं भुवन-भूषण! भूतनाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त-मभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।।10।।

दृष्ट्वा भवन्त-मनिमेष-विलोकनीयं
नान्यत्र-तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ।।11।।

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वम्
निर्मापितस्-त्रिभुवनैक-ललाम-भूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समान-मपरं न हि रूप-मस्ति ।।12।।

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्रहारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्क-मलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाश-कल्पम् ।।13।।

सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास्-त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्-त्रिजगदीश्वरनाथ-मेकं,
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ।।14।।

चित्रम् किमत्र यदि ते त्रिदशङ्ग-नाभिर्-
नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम् ।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित् ।।15।।

निर्धूम-वर्ति-रपवर्जित-तैल-पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रय-मिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ।।16।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्-जगन्ति।
नाम्भोधरोदर-निरुद्धमहा-प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र! लोके।।17।।

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्पकान्ति,
विद्योतयज्-जगदपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम्।।18।।

कि शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमः-सु नाथ!
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके,
कार्यंकियज्जल-धरै-र्जल-भार-नम्रैः।।19।।

ज्ञानं यथा त्वयि विभति कृतावकाशं
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु।
तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि।।20।।

मन्ये वरं हरि-हरा-दय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि।।21।।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु-जालम् ।।22 ।।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्य-गुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ।।23 ।।

त्वा-मव्ययंविभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर-मनंत-मनङ्ग-केतुम् ।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकं
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः ।।24 ।।

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवन-त्रय-शङ्करत्वात् ।
धातासि धीर! शिव-मार्ग-विधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ।।25 ।।

तुभ्यंनमस्-त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय ।
तुभ्यंनमस्-त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यंनमो जिन! भवोदधि-शोषणाय ।।26 ।।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्-
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!
दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद-पीक्षितोऽसि ।।27 ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उच्चै-रशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्-किरण-मस्त-तमो-वितानम्,
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति।।28।।

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्-विलस-दंशुलता-वितानं
तुङ्गोदयाद्रि-शिरसीव सहस्र-रश्मेः।।29।।

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर-वारि-धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्।।30।।

छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैःस्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ता-फल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभागस्-
त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्धर्म-राज-जय-घोषण-घोषकः सन्
खे दुंदुभि-र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्प्रपाता
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ।।33।।

शुम्भत्-प्रभा-वलय-भूरि-विभा-विभोस्ते,
लोक-त्रये-द्युतिमतांद्युति माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्-दिवाकर-निरन्तर-भूरि-संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि-सोम-सौम्याम्।।34।।

स्वर्गापवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्टः
सर्द्धम-तत्त्व-कथनैक-पटुस्-त्रिलोक्याः।
दिव्य-ध्वनि-र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः र्प्रयोज्यः।।35।।

उन्निद्र-हेम-नव-पंकज-पुञ्ज-कान्ती
पर्युल्-लसन्-नख-मयूख-शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।।36।।

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्-जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य।
यादृक्-प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्-कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि।।37।।

श्च्यो-तन्-मदाविल-विलोल-कपोल-मूल,
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभमिभ-मुद्धत-मापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्।।38।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भिन्नेभ-कुम्भ-गल-दुज्जवल-शोणिताक्त,
मुक्ता-फल-प्रकरभूषित-भूमि-भागः।
बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते।।39।।

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुख-मापतन्तं
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।।40।।

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मापतन्तम्।
आक्रामति क्रम-युगेण निरस्त-शङ्कस्-
त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः।।41।।

वल्गत्-तुरङ्ग-गज-गर्जित-भीमनाद,
माजौ बलं बलवता-मपि-भूपतीनाम्।
उद्यद्-दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात्तम-इवाशु भिदामुपैति।।42।।

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह,
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास्-
त्वत्पाद-पङ्कज-वनाश्रयिणो लभन्ते।।43।।

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाडवाग्नौ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्-व्रजन्ति ।।44।।

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः
शोच्यां दशा-मुपगताश्-च्युत-जीविताशाः।
त्वत्पाद-पङ्कज-रजो-मृत-दिग्ध-देहाः,
मर्त्या भवन्ति मकर-ध्वज-तुल्यरूपाः ।।45।।

आपाद-कण्ठमुरु-श्रृङ्खल-वेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्-निगड-कोटि-निघृष्ट-जङ्घाः।
त्वन्-नाम-मन्त्र-मनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ।।46।।

मत्त-द्विपेन्द्र-मृग-राज-दवानलाहि-
संग्राम-वारिधि-महो-दर-बन्ध-नोत्थम्।
तस्याशु नाश-मुप-याति भयं भियेव,
यस्तावकंस्तव-मिमं मतिमान-धीते ।।47।।

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र गणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गता-मजस्रं,
तं 'मानतुङ्ग'-मवशा-समुपैति लक्ष्मीः ।।48।।

अरे.. रे.. भगवान की ओर देखकर भी अपने (निज-भगवान) की ओर देखना नहीं आया, वह अभागा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वयंभू स्त्रोत (भाषा)

(चौपाई)

राजविषैं जुगलनि सुख कियो, राजत्याग भवि शिवपद लियो।
स्वयंबोध स्वयंभू भगवान, वन्दौं आदिनाथ गुणखान।।

इन्द्र क्षीरसागर जल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय।
मदन विनाशक सुखकरतार, वन्दौं अजित अजितपदकार।।

शुक्ल ध्यानकरि करम विनाशि, घाति अघाति सकल दुखराशि।
लह्यो मुक्तिपद सुख अविकार, वन्दौं सम्भव भव दुःख टार।।

माता पच्छिम रयन मंझार, सुपने सोलह देखे सार।
भूप पूछि फल सुनि हरषाय, वन्दौं अभिनन्दन मनलाय।।

सब कुवादवादी सरदार, जीते स्याद्वाद-धुनि धार।
जैन-धरम-परकाशक स्वाम, सुमतिदेव-पद करहूँ प्रनाम।।

गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पंचदश मास, नमौं पदमप्रभु सुख की रास।।

इन्द्र फनिन्द्र नरिंद्र त्रिकाल, वाणी सुनि-सुनि होहिं खुस्याल।
द्वादश सभा ज्ञान-दातार, नमौं सुपारसनाथ निहार।।

सुगुन छियालिस हैं तुम माहिं, दोष अठारह कोऊ नाहिं।
मोह-महातम-नाशक दीप, नमौं चन्द्रप्रभ राख समीप।।

द्वादशविधि तप करम विनाश, तेरह भेद चरित परकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, वन्दौं पुहुपदंत मन आन।।

भवि-सुखदाय सुरगतैं आय, दशविधि धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सबनि सुखदेय, वन्दौं शीतल धर्म-स्नेह।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समता सुधा कोप विषनाश करता, द्वादशांग वानी परकाश।
चार संघ-आनन्द-दातार, नमों श्रेयांस जिनेश्वर सार।।

रत्नत्रय शिर मुकुट विशाल, शोभै कण्ठ सुगुण मणि माल।
मुक्ति-नार-भरता भगवान, वासुपूज्य वन्दौं धर ध्यान।।

परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित-उपदेश।
कर्म नाशि शिव सुख विलसन्त, वन्दौं विमलनाथ भगवन्त।।

अन्तर बाहिर परिग्रह टारि, परम दिगम्बर-व्रत को धारि।
सर्व जीव-हित राह दिखाय, नमौं अनन्त वचन-मन लाय।।

सात तत्त्व पंचास्तिकाय, अरथ नवो छः दरब बहु भाय।
लोक अलोक सकल परकाश, वन्दौं धर्मनाथ अविनाश।।

पंचम चक्रवर्ति निधिभोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शान्तिकरन सोलम जिनराय, शान्तिनाथ वन्दौं हरषाय।।

बहु थुति करै हरष नहिं होय, निंदे दोष गहैं नहिं कोय।
शीलवान परब्रह्मस्वरूप, वन्दौं कुन्थुनाथ शिवभूप।।

द्वादश गण पूजैं सुखदाय, थुति वन्दना करैं अधिकाय।
जाकी निज-थुति कबहुँ न होय, वन्दौं अर जिनवरपद दोय।।

पर-भव रत्नत्रय-अनुराग, इह-भव ब्याह समय वैराग।
बाल-ब्रह्म पूरन व्रत धार, वन्दौं मल्लिनाथ जिनसार।।

बिन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लोकान्त करैं पग लाग।
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं, वन्दौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं।।

श्रावक विद्यावंत निहार, भगति-भाव सों दियो अहार।
बरसी रतन-राशि तत्काल, वन्दौं नमिप्रभु दीनदयाल।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब जीवन की बन्दी छोर, राग-द्वेष द्वै बन्धन तोर।
राजमति तजि शिवतिय सों मिले, नेमिनाथ वन्दौं सुख मिले।।

दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनिधार।
गयो कमठशठ मुख कर श्याम, नमों मेरु सम पारस स्वामि।।

भव-सागर तैं जीव अपार, धरम पोत में धरे निहार।
डूबत काढ़े दया विचार, वर्द्धमान वन्दौं बहुबार।।

(दोहा)

चौबीसों पद-कमल जुग, वन्दौं मन-वच-काय।
'द्यानत' पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय।।

महावीराष्टक स्तोत्र

(शिखरिणी)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ।।1।।

अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पन्द-रहितं,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।2।।

नमन्नाकेन्द्राली मुकुटमणि भा-जाल-जटिलं,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust - Gangotri

यदर्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण समृद्धः सुख-निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमु तदा,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥4॥

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत - तनुर्ज्ञान - निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुत-गतिः,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥5॥

यदीया वाग्गङ्गा विविध-नय-कल्लोल-विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥6॥

अनिर्वारोद्रेक-स्त्रिभुवनजयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन् नित्यानन्द-प्रशम-पद राज्याय स जिनः,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥7॥

महामोहातङ्क प्रशमन - पराकस्मिनभिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदित-महिमा मङ्गलकारः।
शरण्यः साधूनां भव-भयभृतामुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥8॥

(अनुष्टुप)

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छ्रृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम् ॥9॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छहढाला

मंगलाचरण

(सोरठा)

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहुँ त्रियोग सम्हारिकैं।।

पहली ढाल

(चौपाई)

जे त्रिभुवन में जीव अनन्त, सुख चाहैं दुःख तैं भयवन्त।
तातैं दुखहारी सुखकार, कहैं सीख गुरु करुणा धार।।1।।
ताहि सुनो भवि मन थिर आन, जो चाहो अपनो कल्याण।
मोह महामद पियौ अनादि, भूल आपको भरमत बादि।।2।।
तास भ्रमण की है बहु कथा, पै कछु कहूँ कही मुनि यथा।
काल अनन्त निगोद मँझार, बीत्यो एकेन्द्रिय तन धार।।3।।
एक श्वास में अठ-दस बार, जन्म्यौ मर्‌यौ भर्‌यौ दुखभार।
निकसि भूमि जल पावक भयौ, पवन प्रत्येक वनस्पति थयौ।।4।।
दुर्लभ लहि ज्यौं चिन्तामणि, त्यौं पर्याय लही त्रसतणी।
लट-पिपील-अलि आदि शरीर, धर-धर मर्‌यौ सही बहु पीर।।5।।
कबहुँ पंचेन्द्रिय पशु भयो, मन बिन निपट अज्ञानी थयौ।
सिंहादिक सैनी है क्रूर, निबल पशु हति खाये भूर।।6।।
कबहुँ आप भयो बलहीन, सबलनि करि खायौ अति दीन।
छेदन-भेदन भूख-पियास, भार-वहन हिम-आतप-त्रास।।7।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बध-बंधन आदिक दुख घनै, कोटि जीभ तैं जात न भनैं।
अति संक्लेश भाव तैं मर्‌यौ, घोर श्वभ्रसागर में परयौ।।8।।

तहाँ भूमि परसत दुख इसो, बिच्छू सहस डसैं नहि तिसो।
तहाँ राध-श्रोणित वाहिनी, कृमि-कुल कलित देह दाहिनी।।9।।

सेमर तरु दल जुत असिपत्र, असि ज्यौं देह विदारैं तत्र।
मेरु-समान लोह गलि जाय, ऐसी शीत उष्णता थाय।।10।।

तिल-तिल करैं देह के खण्ड, असुर भिड़ावैं दुष्ट प्रचण्ड।
सिंधु-नीर तैं प्यास न जाय, तो पण एक न बूँद लहाय।।11।।

तीन लोक को नाज जु खाय, मिटै न भूख कणा न लहाय।
ये दुख बहु सागर लौं सहै, करम-जोग तैं नरगति लहै।।12।।

जननी उदर वस्यौ नव मास, अंग सकुचतैं पाई त्रास।
निकसत जे दुख पाये घोर, तिनको कहत न आवै ओर।।13।।

बालपने में ज्ञान न लह्यौ, तरुण समय तरुणी-रत रह्यौ।
अर्द्धमृतक सम बूढ़ापनो, कैसे रूप लखै आपनो।।14।।

कभी अकाम-निर्जरा करै, भवनत्रिक में सुरतन धरै।
विषयचाह-दावानल दह्यौ, मरत विलाप करत दुख सह्यौ।।15।।

जो विमानवासी हूँ थाय, सम्यग्दर्शन बिन दुख पाय।
तहँ तैं चय थावर-तन धरै, यों परिवर्तन पूरे करै।।16।।

दूसरी ढाल

(पद्धरि छन्द)

ऐसे मिथ्यादृग-ज्ञान-चरण वश, भ्रमत भरत दुख जन्म-मरण।
तातैं इनको तजिये सुजान, सुन तिन संक्षेप कहूँ बखान।।1।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व, सरधैं तिन माहिं विपर्ययत्त्व।
चेतन को है उपयोग रूप, बिनमूरत चिन्मूरत अनूप।।2।।
पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल, इन तैं न्यारी है जीव चाल।
ताको न जान विपरीत मान, करि करै देह में निज पिछान।।3।।
मैं सुख-दुखी मैं रंक-राव, मेरे धन-गृह गोधन-प्रभाव।
मेरे सुत-तिय मैं सबल-दीन, बेरूप-सुभग-मूरख प्रवीन।।4।।
तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान।
रागादि प्रगट ये दुःख दैन, तिनही को सेवत गिनत चैन।।5।।
शुभ-अशुभ बंध के फल मँझार, रति-अरति करै निजपद विसार।
आतमहित हेतु विराग ज्ञान, ते लखैं आपको कष्टदान।।6।।
रोकी न चाह निज शक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय।
याही प्रतीतिजुत कछुक ज्ञान, सो दुखदायक अज्ञान जान।।7।।
इन जुत विषयनि में जो प्रवृत्त, ताको जानों मिथ्याचरित।
यों मिथ्यात्वादि निसर्ग जेह, अब जे गृहीत सुनिये सु तेह।।8।।
जो कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव, पोषैं चिर दर्शनमोह एव।
अन्तर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन अम्बर तैं सनेह।।9।।
धारैं कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्म-जल उपल नाव।
जे राग-द्वेष मल करि मलीन, वनिता गदादिजुत चिन्ह चीन।।10।।
ते हैं कुदेव तिनकी जु सेव, शठ करत न तिन भव-भ्रमण छेव।
रागादि भाव हिंसा समेत, दर्वित त्रस थावर मरण खेत।।11।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधैं जीव लहै अशर्म।
याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, अब सुन गृहीत जो है अज्ञान।।12।।

एकान्तवाद-दूषित समस्त, विषयादिक पोषक अप्रशस्त।
कपिलादि-रचित श्रुत को अभ्यास, सो है कुबोध बहु देन त्रास।।13।।

जो ख्याति लाभ पूजादि चाह, धरि करन विविध-विध देह-दाह।
आतम-अनात्म के ज्ञानहीन, जे जे करनी तन करन छीन।।14।।

ते सब मिथ्याचारित्र त्याग, अब आतम के हित पन्थ लाग।
जगजाल-भ्रमण को देहु त्याग, अब 'दौलत' निज आतम सुपाग।।15।।

तीसरी ढाल

(नरेन्द्र छन्द/जोगीरासा छन्द)

आतम को हित है सुख सो सुख, आकुलता बिन कहिये।
आकुलता शिव माहिं न तातैं, शिव-मग लाग्यौ चहिये।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव-मग, सो दुविध विचारो।
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो।।1।।

परद्रव्यन तैं भिन्न आप में, रुचि सम्यक्त्व भला है।
आपरूप को जानपनो सो, सम्यक् ज्ञान कला है।
आपरूप में लीन रहे थिर, सम्यक् चारित सोई।
अब व्यवहार मोक्ष-मग सुनिये, हेतु नियत को होई।।2।।

जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बंध रु संवर जानो।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिन को, ज्यों का त्यों सरधानों।
है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानों।
तिनको सुन सामान्य-विशेषैं, दृढ़ प्रतीति उर आनो।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहिरातम अन्तर-आतम, परमातम जीव त्रिधा है।
देह-जीव को एक गिनै, बहिरात्म तत्त्व मुधा है।
उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के, अन्तर आतम ज्ञानी।
द्विविधि संघ बिन शुध-उपयोगी, मुनि उत्तम निजध्यानी।।4।।

मध्यम अन्तर आतम हैं जे, देशव्रती अनगारी।
जघन कहे अविरत समदृष्टि, तीनों शिव-मगचारी।
सकल-निकल परमातम द्वैविधि, तिन में घाति निवारी।
श्री अरहंत सकल परमातम, लोकालोक निहारी।।5।।

ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्म-मल, वर्जित सिद्ध महन्ता।
ते हैं निकल अमल परमातम, भोगें शर्म अनन्ता।
बहिरातमता हेय जानि तजि, अन्तर-आतम हूजै।
परमातम को ध्यान निरन्तर, जो नित आनन्द पूजै।।6।।

चेतनता बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके हैं।
पुद्गल पंच वरन रस, गंध-दो, फरस वसू जाके हैं।
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्मद्रव्य अनरूपी।
तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन बिन-मूर्ति निरूपी।।7।।

सकल द्रव्य को वास जास में, सो आकाश पिछानो।
नियत वर्तना निशि-दिन सो, व्यवहारकाल परिमानो।
यों अजीव अब आस्रव सुनिये, मन-वच-काय त्रियोगा।
मिथ्या अविरति अरु कषाय, परमाद सहित उपयोगा।।8।।

ये ही आतम को दुःख कारण, तातैं इनको तजिये।
जीव प्रदेश बँधें विधि सौं सो, बंधन कबहुँ न सजिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

शम-दम तैं जो कर्म न आवैं, सो संवर आदरिये।
तप-बल तैं विधि-झरन निर्जरा, ताहि सदा आचरिये।।9।।

सकल कर्म तैं रहित अवस्था, सो शिव थिर सुखकारी।
इह विधि जो सरधा तत्त्वन की, सो समकित व्यवहारी।
देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
ये हु मान समकित को कारण, अष्ट अंगजुत धारो।।10।।

वसु मद टारि निवारि त्रिशठता, षट् अनायतन त्यागो।
शंकादिक वसु दोष बिना, संवेगादिक चित पागो।
अष्ट अंग अरु दोष पचीसौं, तिन संक्षेप हु कहिये।
बिन जाने तैं दोष-गुणन को, कैसे तजिये गहिये।।11।।

जिन-वच में शंका न धार, वृष भव सुख-वांछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व-कुतत्त्व पिछानै।
निज-गुण अरु पर-औगुण ढाँके, वा निज धर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृष तैं चिगते, निज-पर को सु दिढ़ावैं।।12।।

धर्मी सों गौ-बच्छ प्रीति सम, कर जिन धर्म दिपावै।
इन गुन तैं विपरीत दोष वसु, तिनको सतत खिपावै।
पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तौ मद ठानै।
मद न रूप कौ, मद न ज्ञान कौ, धन-बल कौ मद भानै।।13।।

तप कौ मद न मद जु प्रभुता कौ, करै न सो निज जानै।
मद धारै तो यही दोष वसु, समकित को मल ठानै।
कुगुरु कुदेव कुवृष सेवक की, नहिं प्रशंस उचरै हैं।
जिन मुनि जिनश्रुत बिन, कुगुरादिक तिन्हैं न नमन करैं हैं।।14।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोष-रहित गुण-सहित सुधी जे, सम्यग्दर्श सजै हैं।
चरितमोहवश लेश न संजम, पै सुरनाथ जजै हैं।
गेही पै गृह में न रचे ज्यों, जल तैं भिन्न कमल हैं।
नगर-नारि को प्यार यथा, कादे में हेम अमल हैं।।15।।

प्रथम नरक बिन षट् भू ज्योतिष, वान भवन षँढ़ नारी।
थावर विकलत्रय पशु में नहिं, उपजत सम्यक् धारी।
तीनलोक तिहुँकाल माहिं नहिं, दर्शन सो सुखकारी।
सकल धर्म को मूल यही, इस बिन करनी दुःखकारी।।16।।

मोक्षमहल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान-चरित्रा।
सम्यक्ता न लहै सो दर्शन, धारौ भव्य पवित्रा।
'दौल' समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक् नहिं होवै।।17।।

चौथी ढाल

(दोहा)

सम्यक्श्रद्धा धारि पुनि, सेवहु सम्यग्ज्ञान।
स्व-पर अर्थ बहु धर्मजुत, जो प्रगटावन भान।।1।।

(रोला)

सम्यक् साथै ज्ञान होय, पै भिन्न अराधौ।
लक्षण श्रद्धा जानि, दुहू में भेद अबाधौ।
सम्यक् कारण जान, ज्ञान कारज है सोई।
युगपत् होते हूँ, प्रकाश दीपक तैं होई।।2।।

तास भेद दो हैं, परोक्ष परतछि तिनमाँही।
मति श्रुत दोय परोक्ष, अक्ष मन तैं उपजाहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवधिज्ञान मनपर्जय, दो हैं देश प्रतच्छा।
द्रव्य क्षेत्र परिमाण लिये, जानैं जिय स्वच्छा।।3।।

सकल द्रव्य के गुन अनन्त, परजाय अनन्ता।
जानै एकै काल प्रगट, केवलि भगवन्ता।
ज्ञान समान न आन जगत में, सुख को कारण।
इह परमामृत जन्म-जरा-मृतु रोग निवारण।।4।।

कोटि जन्म तप तपैं, ज्ञान बिन कर्म झरैं जे।
ज्ञानी के छिन माहिं, त्रिगुप्ति तैं सहज टरैं ते।
मुनिव्रत धार अनन्त बार, ग्रीवक उपजायौ।
पै निज आतम ज्ञान बिना, सुख लेश न पायौ।।5।।

तातैं जिनवर कथित, तत्त्व अभ्यास करीजै।
संशय विभ्रम मोह त्याग, आपौ लख लीजै।
यह मानुष पर्याय, सुकुल सुनिवौ जिनवानी।
इह विधि गये न मिले, सुमणि ज्यों उदधि समानी।।6।।

धन समाज गज बाज, राज तो काज न आवै।
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।
तास ज्ञान को कारण, स्व-पर विवेक बख़ानो।
कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आनो।।7।।

जे पूरब शिव गये, जाहिं अरु आगे जैहैं।
सो सब महिमा ज्ञानतनी, मुनिनाथ कहै हैं।
विषय चाह दव दाह, जग़त जन अरनि दझावै।
तास पाय न आन, ज्ञान घनघान बुझावै।।8।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्य-पाप फल माहिं, हरख बिलखौ मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजिं विनसै फिर थाई।
लाख बात की बात, यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जग दन्द-फन्द, निज आतम ध्याओ।।9।।

सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि, दृढ़ चारित लीजै।
एकदेश अरु सकलदेश, तसु भेद कहीजै।
त्रसहिंसा को त्याग, वृथा थावर न संहारै।
पर-वधकार कठोर निंद्य, नहिं वयन उचारै।।10।।

जल मृत्तिका बिन और, नाहिं कुछ गहै अदत्ता।
निज वनिता बिन सकल, नारि सौं रहै विरत्ता।
अपनी शक्ति विचार, परिग्रह थोरो राखै।
दश दिशि गमन प्रमान ठान, तसु सीम न नाखै।।11।।

ताहू में फिर ग्राम, गली गृह बाग बजारा।
गमनागमन प्रमान, ठान अन सकल निवारा।
काहू की धन-हानि, किसी जय-हार न चिन्तैं।
देय न सो उपदेश, होय अघ बनज कृषी तैं।।12।।

कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै।
असि धनु हल हिंसोपकरन, नहिं दे यश लाधै।
राग-द्वेष करतार कथा, कबहूँ न सुनीजै।
और हु अनरथ दंड, हेतु अघ तिन्हैं न कीजै।।13।।

धर उर समता भाव, सदा सामायिक करिये।
परब चतुष्टय माहिं, पाप तज प्रोषध धरिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भोग और उपभोग, नियम करि ममत निवारै।
मुनि को भोजन देय, फेर निज करहिं अहारै।।14।।

बारह व्रत के अतिचार, पन पन न लगावै।
मरण समय सन्यास धारि, तसु दोष नशावै।
यों श्रावक व्रत पाल, स्वर्ग सोलम उपजावै।
तहँ तैं चय नर जन्म पाय, मुनि ह्वै शिव जावै।।15।।

पांचवी ढाल

बारह भावना

(छन्द चाल/सखी)

मुनि सकलव्रती बड़भागी, भव-भोगन तैं वैरागी।
वैराग्य उपावन माई, चिन्तैं अनुप्रेक्षा भाई।।1।।

इन चिन्तन समसुख जागै, जिमि ज्वलन पवन के लागै।
जब ही जिय आतम जानै, तब ही जिय शिवसुख ठानै।।2।।

जोवन गृह गो धन नारी, हय गय जन आज्ञाकारी।
इन्द्रिय-भोग छिन थाई, सुरधनु चपला चपलाई।।3।।

सुर असुर खगाधिप जेते, मृग ज्यों हरि काल दले ते।
मणि मंत्र तंत्र बहु होई, मरते न बचावे कोई।।4।।

चहुँ गति दुःख जीव भरे हैं, परिवर्तन पंच करे हैं।
सब विधि संसार असारा, यामें सुख नाहिं लगारा।।5।।

शुभ-अशुभ करम फल जेते, भोगे जिय एक हि तेते।
सुत दारा होय न सीरी, सब स्वारथ के हैं भीरी।।6।।

जल-पय ज्यों जिय तन मेला, पै भिन्न-भिन्न नहिं भेला।
जो प्रगट जुदे धन धामा, क्यों है इक मिलि सुत रामा।।7।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पल रुधिर राध मल थैली, कीकस वसादि तैं मैली।
नव द्वार बहैं घिनकारी, अस देह करै किम यारी।।8।।

जो योगन की चपलाई, तातैं ह्वै आस्रव भाई।
आस्रव दुखकार घनेरे, बुधिवंत तिन्हैं निरवेरे।।9।।

जिन पुण्य-पाप नहिं कीना, आतम अनुभव चित दीना।
तिन ही विधि आवत रोके, संवर लहि सुख अवलोके।।10।।

निज काल पाय विधि झरना, तासों निज काज न सरना।
तप करि जो कर्म खिपावै, सोई शिवसुख दरसावै।।11।।

किन्हू न करौ न धरैं को, षट्द्रव्यमयी न हरै को।
सो लोक माहिं बिन समता, दुःख सहै जीव नित भ्रमता।।12।।

अन्तिम ग्रीवक लौं की हद, पायो अनन्त बिरियाँ पद।
पर सम्यग्ज्ञान न लाधौ, दुर्लभ निज में मुनि साधै।।13।।

जो भावमोह तैं न्यारे, दृग ज्ञान व्रतादिक सारे।
सो धर्म जबै जिय धारै, तब ही सुख अचल निहारै।।14।।

सो धर्म मुनिन करि धरिये, तिनकी करतूति उचरिये।
ताको सुनिये भवि प्रानी, अपनी अनुभूति पिछानी।।15।।

छठवीं ढाल

(हरिगीतिका)

षट्काय जीव न हनत तैं, सब विधि दरब हिंसा टरी।
रागादि भाव निवार तैं, हिंसा न भावित अवतरी।
जिनके न लेश मृषा न जल, मृण हू बिना दीयौ गहैं।
अठ-दश सहस विधि शील धर, चिद्ब्रह्म में नित रमि रहैं।।1।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तर चतुर्दश भेद बाहिर, संग दशधा तैं टलैं।
परमाद तजि चौकर मही लखि, समिति ईर्य्या तैं चलैं।
जग सुहितकर सब अहितकर, श्रुति सुखद सब संशय हरैं।
भ्रम-रोग हर जिनके वचन, मुख-चन्द्र तैं अमृत झरैं।।2।।

छ्यालीस दोष बिना सुकुल, श्रावक तनैं घर अशन को।
लैं तप बढ़ावन हेतु नहिं तन, पोषते तजि रसन को।
शुचि ज्ञान संयम उपकरण, लखि कै गहैं लखि कैं धरैं।
निर्जन्तु थान विलोकि तन, मल-मूत्र-श्लेषम परिहरैं।।3।।

सम्यक् प्रकार निरोध मन-वच-काय, आतम ध्यावते।
तिन सुथिर मुद्रा देख मृगगण, उपल खाज खुजावते।
रस रूप गंध तथा फरस अरु, शब्द शुभ असुहावने।
तिनमें न राग विरोध, पंचेन्द्रिय जयन पद पावने।।4।।

समता सम्हारैं थुति उचारैं, वंदना जिनदेव को।
नित करैं श्रुति-रति करैं प्रतिक्रम, तजैं तन अहमेव को।
जिनके न न्हौंन न दंतधोवन, लेश अंबर आवरन।
भू माहिं पिछली रयनि में, कछु शयन एकाशन करन।।5।।

इक बार दिन में लैं अहार, खड़े अलप निज-पान में।
कचलोंच करत न डरत परिषह, सों लगे निज-ध्यान में।
अरि-मित्र महल-मसान, कंचन-कांच निंदन-थुतिकरन।
अर्घावतारन असि-प्रहारन में, सदा समता धरन।।6।।

तप तपैं द्वादश, धरैं वृष दश, रतनत्रय सेवैं सदा।
मुनि साथ में वा एक विचरैं, चहैं नहिं भव-सुख कदा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यों है सकल संयम चरित, सुनिये स्वरूपाचरन अब।
जिस होत प्रगटै आपनी निधि, मिटै पर की प्रवृत्ति सब।।7।।

जिन परम पैनी सुबुधि छैनी, डारि अंतर भेदिया।
वरणादि अरु रागादि तैं, निज भाव को न्यारा किया।
निज माहिं निज के हेतु, निज कर आपको आपै गह्यौ।
गुण-गुणी ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय, मँझार कछु भेद न रह्यौ।।8।।

जहँ ध्यान-ध्याता-ध्येय को, न विकल्प वच-भेद न जहाँ।
चिद्भाव कर्म चिदेश कर्त्ता, चेतना किरिया तहाँ।
तीनों अभिन्न अखिन्न सुध, उपयोग की निश्चल दशा।
प्रगटी जहाँ दृग-ज्ञान-व्रत, ये तीनधा एकै लसा।।9।।

परमाण-नय-निक्षेप को, न उद्यौत अनुभव में दिखै।
दृग-ज्ञान-सुख-बलमय सदा, नहिं आन भाव जु मो विषै।
मैं साध्य-साधक मैं अबाधक, कर्म अरु तसु फलनि तैं।
चित्पिण्ड-चण्ड अखण्ड सुगुण-करण्ड, च्युत पुनि कलनि तैं।।10।।

यों चिन्त्य निज में थिर भये, तिन अकथ जो आनन्द लह्यौ।
सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा, अहमिन्द्र के नाहीं कह्यौ।
तब ही शुक्ल ध्यानाग्नि करि, चउ घाति विधि कानन दह्यौ।
सब लख्यौ केवलज्ञान करि, भवि लोक कों शिवमग कह्यौ।।11।।

पुनि घाति शेष अघाति विधि, छिन माहिं अष्टम भू बसैं।
वसु कर्म विनसैं सुगुण वसु, सम्यक्त्व आदिक सब लसैं।
संसार खार अपार, पारावार तरि तीरहिं गये।
अविकार अचल अरूप शुचि चिद्रूप अविनाशी भये।।12।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज माहिं लोक अलोक, गुण-परजाय प्रतिबिम्बित भये।
रहि हैं अनन्तानन्त काल, यथा तथा शिव परिणये।
धनि धन्य हैं जे जीव नरभव, पाय यह कारज किया।
तिन ही अनादि भ्रमण पंच प्रकार, तजि वर सुख लिया।।13।।

मुख्योपचार दु भेद यों, बड़भागी रत्नत्रय धरैं।
अरु धरेंगे ते शिव लहैं, तिन सुयश-जल जग-मल हरैं।
इमि जानि आलस हानि, साहस ठानि यह सिख आदरौ।
जबलौं न रोग जरा गहै, तबलौं झटिति निज हित करौ।।14।।

यह राग-आन दहै सदा, तातैं समामृत सेइये।
चिर भजे विषय-कषाय अब तो, त्याग निज-पद बेइये।
कहा रच्यौ पर-पद में न तेरो, पद यहै क्यों दुःख सहै।
अब दौल! होउ सुखी स्व-पद रचि, दाव मत चूको यहै।।15।।

अन्तिम प्रशस्ति

(दोहा)

इक नव वसु इक वर्ष की, तीज शुक्ल वैशाख।
करयौ तत्त्व उपदेश यह, लखि 'बुधजन' की भाख।।
लघु-धि तथा प्रमाद तैं, शब्द अर्थ की भूल।
सुधी सुधार पढ़ो सदा, जो पावो भव-कूल।।16।।

अध्यात्म लोरी

अर्हंत बनो, तुम सिद्ध बनो, निर्ग्रन्थ दिगम्बर संत बनो।
चिर मंगल-मुक्ति विधान करो, चैतन्य सुधारस पान करो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवम खण्ड : सामायिक एवं समाधि मरण पाठ संग्रह

नमस्कार विधि

(श्रावकगण सामायिक करने से पूर्व निम्न नमस्कार विधि द्वारा सभी को वंदन करे)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः! ॐ नमः सिद्धेभ्यः!! ॐ नमः सिद्धेभ्यः!!!

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।

एसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलं।।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवली-पण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा,
सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवली पण्णतो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पवज्जामि, अरिहंते शरण पव्वज्जामि,
सिद्धे शरण पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवली पण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

द्रव्य से:-

1. पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशा, ईशान आदि विदिशाओं में अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं सर्वसाधु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यचैत्यालय जहाँ-जहाँ हो; उनको मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. अनन्तानंत सिद्ध भगवान को मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।
3. पाँच भरत, पाँच ऐरावत क्षेत्र के भूत, भविष्य, वर्तमान काल संबंधी पंच-परमेष्ठी भगवंतों को मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।
4. पाँच विदेह क्षेत्र में स्थित विद्यमान बीस तीर्थंकर, सामान्य केवली भगवंत, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु परमेष्ठी भगवंतों को मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।
5. प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग रूप जिन-शास्त्रों को मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।

क्षेत्र से :-

6. तीन लोक के अकृत्रिम जिन चैत्यालयों में विराजमान शाश्वत श्री जिन बिम्बों को, मध्यलोक के 458 (चार सौ अट्ठावन) अकृत्रिम जिन चैत्यालयों में विराजमान शाश्वत श्री जिन बिम्बों को, जम्बूद्वीप के 78 (अठत्तर) अकृत्रिम जिन चैत्यालयों में विराजमान शाश्वत श्री जिन बिम्बों को मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

7. तीनकाल के सिद्धक्षेत्र जहाँ-जहाँ हों उनको एवं शाश्वत तीर्थक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी को मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।
8. तीर्थंकरों की, गणधरों की, सामान्य केवलियों की अंतरंग एवं बहिरंग निर्वाण भूमि को मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।
9. तीर्थंकरों के कल्याणक क्षेत्रों को, साधकों से सम्बन्धित सर्वक्षेत्र अतिशय क्षेत्रों को मेरा नमन हो।

काल से :-

10. भगवान के पंचकल्याणक काल को मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।
11. सर्व धर्म पर्व (दशलक्षण, रत्नत्रय, सोलहकारण, अष्टमी, चतुर्दशी, श्रुतपंचमी, अक्षय तृतीया, वीरशासन जयंती आदि) कालों को मेरा भाव सहित नमन हो

भाव से :-

12. रत्नत्रयादि परम विशुद्ध भाव को मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।

संख्या से :-

15. अनंतानंत सिद्ध भगवंतों को द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म के नाश के लिये, स्वशुद्धात्मा की प्राप्ति के लिये संख्यातवार, असंख्यातवार, अनंतबार मेरा मन से; वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

16. 8 लाख 98 हजार 502 अरहंत भगवंतों को अनंतदर्शन, अनंतज्ञान, अनंतसुख, अनंतवीर्य की प्राप्ति के लिये बारम्बार नमस्कार हो।
17. तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों को शुद्धोपयोग की प्राप्ति के लिये, अशुद्धोपयोग के नाश के लिये उनके चरणों में बारम्बार नमस्कार हो।
18. तेरह करोड़ पंचम गुणस्थान में देश संयमधारियों को प्राणि-संयम एवं इंद्रिय संयम की प्राप्ति के लिये बारम्बार नमस्कार हो।
19. सात अरब सम्यक्दृष्टि जीवों को मेरा यथायोग्य नमस्कार हो।

गुणस्थान से नमस्कार :-

20. त्रिकालवर्ती पुलाक, वकुश, कुशील, निर्ग्रंथ व स्नातक मुनिवरों के चरण कमलों में बारम्बार नमस्कार हो।
21. हे पंचपरमेष्ठी भगवंतो! संसार दुःखों के नाश के लिये, अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति के लिये, आपके चरणों में बारम्बार नमस्कार हो।
22. विषय-कषाय की अरुचि के लिये, स्व शुद्धात्मा की रुचि के लिये और परम भेदज्ञान की प्राप्ति के लिये बारम्बार नमस्कार हो।
23. पाँच मिथ्यात्व। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह आदि पाँच पाप। आहार, भय, मैथुन, परिग्रह चार संज्ञा। कृष्ण, नील, कपोत तीन अशुभ लेश्या। पंचेन्द्रिय संबंधी विषयानुराग आदि समस्त पापों के नाश के लिए आपके चरणों में बारम्बार नमस्कार हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

24. संक्लेश परिणाम के नाश के लिये, विशुद्ध परिणाम की प्राप्ति के लिए एवं स्वसंवेदन ज्ञान की प्राप्ति के लिए और अज्ञान के नाश के लिये आपके चरणों में बारम्बार नमस्कार हो।
25. संसार, देह और भोगों से वैराग्य धारण करने के लिये एवं समस्त आरम्भ परिग्रह के त्याग के लिये और परम निर्ग्रन्थता धारण करने के लिये बारम्बार नमस्कार हो।
26. संकल्प-विकल्प के नाश के लिये, निर्विकल्प ध्यान की सिद्धि के लिये एवं प्रमाद के अभाव के लिए और पुरूषार्थ की प्राप्ति के लिये बारम्बार नमस्कार हो।
27. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र की प्राप्ति एवं पूर्णता के लिये भाव पूर्वक नमन हो।
28. आर्त-रौद्र ध्यान के नाश के लिये; धर्मध्यान-शुक्लध्यान की प्राप्ति के लिये एवं परम वीतरागता की प्राप्ति के लिये और सकल मोह-राग-द्वेष के नाश के लिये बारम्बार नमस्कार हो।
29. समस्त दोषों के नाश के लिये, समस्त गुणों की प्राप्ति के लिये बारम्बार नमस्कार हो।
30. **हे भगवंत! मेरे चार गति के दुखों का नाश हो, मेरे आठ कर्मों का नाश हो, मुझे ज्ञान दो, मुझे रत्नत्रय की प्राप्ति हो, मेरा समाधिमरण हो और मुझे जिनगुण संपत्ति की प्राप्ति हो।**

ॐ शांति...! शांति...!! शांति...!!!

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप कर कायोत्सर्ग करें।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीरव निर्झर (सामायिक पाठ) –1

प्रेम भाव हो सब जीवों से, गुणी जनों में हर्ष प्रभो।
करुणा–स्रोत बहे दुखियों पर, दुर्जन में मध्यस्थ विभो।।1।।
यह अनन्त बल–शील आतमा, हो शरीर से भिन्न प्रभो।
'ज्यों होती तलवार म्यान से', वह अनन्त बल दो मुझको।।2।।
सुख–दुख, वैरी–बन्धु वर्ग में, काँच–कनक में समता हो।
वन–उपवन प्रासाद[1]–कुटी में, नहीं खेद, नहिं ममता हो।।3।।
जिस सुन्दर–तम पथ पर चलकर, जीते मोह मान मन्मथ[2]।
वह सुन्दर पथ ही प्रभु! मेरा, बना रहे अनुशीलन पथ।।4।।
एकेन्द्रिय आदिक प्राणी की, यदि मैंने हिंसा की हो।
शुद्ध हृदय से कहता हूँ वह, निष्फल हो दुष्कृत्य प्रभो।।5।।
मोक्षमार्ग प्रतिकूल[3] प्रवर्तन, जो कुछ किया कषायों से।
विपथ[4]–गमन सब कालुष मेरे, मिट जावें सद्भावों से।।6।।
चतुर वैद्य विष विक्षत[5] करता, त्यों प्रभु! मैं भी आदि उपांत।
अपनी निंदा आलोचन से, करता हूँ पापों को शान्त।।7।।
सत्य अहिंसादिक व्रत में भी, मैंने हृदय मलीन किया।
व्रत–विपरीत प्रर्वतन करके, शीलाचरण[6] विलीन[7] किया।।8।।
कभी वासना[8] की सरिता का, गहन[9]–सलिल मुझ पर छाया।
पी–पी कर विषयों की मदिरा, मुझमें पागलपन आया।।9।।
मैंने छली और मायावी, हो असत्य आचरण किया।
पर निन्दा, गाली, चुगली जो, मुँह पर आया वमन किया।।10।।

1. महल, 2. कामदेव, 3. विरूद्ध, 4. मिथ्यामार्ग, 5. नष्ट, 6. सदाचार, 7. लोप, 8. इन्द्रिय विषयों की चाह, 9. गहरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निरभिमान उज्ज्वल मानस हो, सदा सत्य का ध्यान रहे।
निर्मल जल की सरिता सदृश, हिय में निर्मल ज्ञान बहे।।11।।
मुनि, चक्री[10], शक्री[11] के हिय में, जिस अनन्त का ध्यान रहे।
गाते वेद पुराण जिसे वह, परम देव मम हृदय रहे।।12।।
दर्शन–ज्ञान स्वभावी जिसने, सब विकार ही वमन किये।
परम ध्यान गोचर परमातम, परम देव मम हृदय रहे।।13।।
जो भवदु:ख का विध्वंसक है, विश्व विलोकी[12] जिसका ज्ञान।
योगी जन के ध्यान गम्य वह, बसे हृदय में देव महान।।14।।
मुक्ति–मार्ग का दिग्दर्शक है, जन्म–मरण से परम अतीत[13]।
निष्कलंक त्रैलोक्य–दर्शि वह, देव रहे मम हृदय समीप।।15।।
निखिल–विश्व के वशीकरण वे, राग रहे ना द्वेष रहे।
शुद्ध अतीन्द्रिय ज्ञान स्वरूपी, परम देव मम हृदय रहे।।16।।
देख रहा जो निखिल विश्व को, कर्म कलंक विहीन, विचित्र।
स्वच्छ विनिर्मल निर्विकार वह, देव करे मम हृदय पवित्र।।17।।
कर्म–कलंक अछूत न जिसका, कभी छू सके दिव्य प्रकाश।
मोह–तिमिर को भेद चला जो, परम शरण मुझको वह आप्त।।18।।
जिसकी दिव्य ज्योति के आगे, फीका पड़ता सूर्य प्रकाश।
स्वयं ज्ञानमय स्व–पर प्रकाशी, परम शरण मुझको वह आप्त।।19।।
जिसके ज्ञानरूप दर्पण में, स्पष्ट झलकते सभी पदार्थ।
आदि–अंत से रहित शांत शिव, परम शरण मुझको वह आप्त।।20।।
जैसे अग्नि जलाती तरु को, तैसे नष्ट हुए स्वयमेव।
भय–विषाद–चिन्ता सब जिसके, परम शरण मुझको वह देव।।21।।

10. चक्रवर्ती, 11. इन्द्र, 12. सम्पूर्ण विश्व को जानने वाला, 13. रहित, 14. देव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृण, चौकी, शिल[15]–शैल, शिखर[16] नहिं, आत्म समाधि के आसन।
संस्तर पूजा संघ सम्मिलन, नहीं समाधि के साधन।।22।।
इष्ट–वियोग अनिष्ट–योग में, विश्व मनाता है मातम।
हेय सभी है विश्व वासना, उपादेय निर्मल आतम।।23।।
बाह्य जगत कुछ भी नहिं मेरा, और न बाह्य जगत का मैं।
यह निश्चय कर छोड़ बाह्य को, मुक्ति हेतु नित स्वस्थ रमें।।24।।
अपनी निधि तो अपने में है, बाह्य वस्तु में व्यर्थ प्रयास।
जग का सुख तो मृग–तृष्णा है, झूठे हैं उसके पुरुषार्थ।।25।।
अक्षय है शाश्वत है आत्मा, निर्मल ज्ञान स्वभावी है।
जो कुछ बाहर है सब पर है, कर्माधीन विनाशी है।।26।।
तन से जिसका ऐक्य नहीं हो, सुत–तिय–मित्रों से कैसे?
चर्म दूर होने पर तन से, रोम समूह रहें कैसे?।।27।।
महा कष्ट पाता जो करता, पर पदार्थ जड़– देह संयोग।
मोक्ष महल का पथ है सीधा, जड़–चेतन का पूर्ण वियोग।।28।।
जो संसार पतन के कारण, उन विकल्प–जालों को छोड़।
निर्विकल्प, निर्द्वन्द्व आतमा, फिर–फिर लीन उसी में हो।।29।।
स्वयं किये जो कर्म शुभाशुभ, फल निश्चय ही वे देते।
करे आप, फल देय अन्य तो, स्वयं किये निष्फल होते।।30।।
अपने कर्म सिवाय जीव को, कोई न फल देता कुछ भी।
'पर देता है' यह विचार तज, स्थिर हो छोड़ प्रमादी बुद्धि।।31।।
निर्मल, सत्य, शिवं, सुन्दर है, 'अमितगति' वह देव महान।
शाश्वत निज में अनुभव करते, पाते निर्मल पद निर्वाण।।32।।

15. शिला, 16. पर्वत की चोटी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आलोचना पाठ-2

(दोहा)

बंदौं पाँचों परम-गुरु, चौबीसों जिनराज।
करूँ शुद्ध आलोचना, शुद्धकरन के काज।।1।।

(सखी)

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निवृत्ति काज, तुम शरण लही जिनराज।।2।।

इक वे ते चउ इन्द्री वा, मनरहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निरदइ ह्वै घात विचारी।।3।।

समरंभ, समारंभ, आरंभ, मन वच तन कीने प्रारंभ।
कृत कारित मोदन करिकै, क्रोधादि चतुष्टय धरिकैं।।4।।

शत आठ जु इमि भेदनतैं, अघं कीने परिछेदनतैं।
तिनकी कहुँ कोलों कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी।।5।।

विपरीत एकांत विनय के, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, वचतैं नहिं जाय कहीने।।6।।

कुगुरुन की सेवा कीनी, केवल अदयाकरि भीनी।
या विधि मिथ्यात बढ़ायो, चहुँगति मधि दोष उपायो।।7।।

हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, पर-वनितासों दृग जोरी।
आरंभ परिग्रह भीने, पन पाप जु या विधि कीने।।8।।

सपरस रसना घ्रानन को, दृग कान विषय-सेवन को।
बहु करम किये मनमाने, कछु न्याय-अन्याय न जाने।।9।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फल पंच उदंबर खाये, मधु माँस मद्य चित चाहे।
नहिं अष्ट मूलगुण धारे, विसनन सेये दुखकारे।।10।।

दुइबीस अभख जिन गाये, सो भी निस दिन भुंजाये।
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यों त्यों करि उदर भरायो।।11।।

अनंतानुबंधी जु जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकरी गुनिये, सब भेद जु षोडश सुनिये।।12।।

परिहास अरति रति शोक, भय ग्लानि त्रिवेद संयोग।
पनवीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम।।13।।

निद्रावश शयन करायो, सुपने मधि दोष लगायो।
फिर जागि विषय-वन धायो, नानाविध विषफल खायो।।14।।

आहार विहार निहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
बिन देखी धरा उठाया , बिन शोधा भोजन खाया।।15।।

तब ही परमाद सतायो, बहुविधि विकलप उपजायो।
कछु सुध बुध नाहिं रही है, मिथ्या मति छाय गयी है।।16।।

मरजादा तुम ढिंग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन-भिन अब कैसे कहिये, तुम ज्ञान-विषैं सब पइये।।17।।

हा हा! मैं दुठ अपराधी, त्रस-जीवन-राशि विराधी।
थावर की जतन न कीनी, उरमें करूणा नहिं लीनी।।18।।

पृथ्वी बहु खोद कराई, महलादिक जागाँ चिनाई।
विन गाल्यो पुनि जल ढोल्यो, पंखा तें पवन विलोल्यो।।19।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0-In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हा हा! मैं अदयाचारी, बहु हरितकाय जु विदारी।
तामधि जीवन के खंदा, हम खाये धरि आनंदा।।20।।
हा हा! परमाद बसाई, बिन देखे अग्नि जलाई।
तामधि जे जीव जु आये, ते हू परलोक सिधाये।।21।।
बींध्यो अन राति पिसायो, ईंधन बिन सोधि जलायो।
झाडू ले जागाँ बुहारी, चिंउटी आदिक जीव बिदारी।।22।।
जल छानि जिवानी कीनी, सो हूँ पुनि डारि जु दीनी।
नहिं जल-थानक पहुँचाई, किरिया बिन पाप उपाई।।23।।
जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि-कुल बहु घात करायो।
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये।।24।।
अन्नादिक शोध कराई, तामैं जु जीव निसराई।
तिनका नहिं जतन कराया, गलियारै धूप डराया।।25।।
पुनि द्रव्य कमावन काज, बहु आरंभ हिंसा साज।
कीने तिसनावश अघ भारी, करुणा नहिं रंच विचारी।।26।।
इत्यादिक पाप अनंता, हम कीने श्री भगवंता।
संतति चिरकाल उपाई, वानी तैं कहिये न जाई।।27।।
ताको जु उदय अब आयो, नानाविध मोहि सतायो।
फल भुंजत जिय दुख पावै, वचतैं कैसे करि गावै।।28।।
तुम जानत केवलज्ञानी, दुख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारन विरद सही है।।29।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

इक गाँवपती जो होवे, सो भी दुखिया दुख खोवे।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुख मेटो अंतरजामी।।30।।

द्रोपदि को चीर बढ़ायो, सीताप्रति कमल रचायो।
अंजन से किये अकामी, दुख मेटो अंतरजामी।।31।।

मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपनो विरद निहारो।
सब दोष रहित करि स्वामी, दुःख मेटो अंतरजामी।।32।।

इंद्रादिक पद नहिं चाहूँ, विषयनि में नाहिं लुभाऊँ।
रागादिक दोष हरीजै, परमातम निज-पद दीजै।।33।।

(दोहा)

दोषरहित जिनदेवजी, निजपद दीज्यो मोय।
सब जीवन के सुख बढ़ै, आनंद मंगल होय।।34।।

अनुभव माणिक पारखी, 'जौहरि' आप जिनन्द।
यही सु-वर मोहि दीजिए, चरण शरन आनन्द।।35।।

सामायिक पाठ-3

(दोहा)

पंच परम गुरु को प्रणमि, सरस्वती उर धार।
करूँ कर्म छेदंकरी सामायिक सुखकार।।1।।

(छन्द-चाल)

आत्मा ही समय कहावे, स्वाश्रय से समता आवे।
वह ही सच्ची सामायिक, पाई नहीं मुक्ति विधायक।।2।।

उसके कारण मैं विचारूँ, उन सबको अब परिहारूँ।
तन में 'मैं हूँ' मैं विचारी, एकत्त्वबुद्धि यों धारी।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुखदाई कर्म जु माने, रागादि रूप निज जाने।
आस्रव अरु बन्ध ही कीनो, नित पुण्य-पाप में भीनो।।4।।

पापों में सुख निहारा, पुण्य करते मोक्ष विचारा।
इन सबसे भिन्न स्वभावा, दृष्टि में कबहुँ न आवा।।5।।

मद मस्त भयो पर ही में, नित भ्रमण कियो भव-भव में।
मन वचन योग अरु तन से, कृत कारित अनुमोदन से।।6।।

विषयों में ही लिपटाया, निज सच्चा सुख नहीं पाया।
निशाचर हो अभक्ष्य भी खाया, अन्याय किया मन भाया।।7।।

लोभी लक्ष्मी का होकर, हित-अहित विवेक मैं खोकर।
निज-पर विराधना कीनी, किंचित् करुणा नहिं लीनी।।8।।

षट्काय जीव संहारे, उर में आनन्द विचारे।
जो अर्थ वाक्य पद बोले, थे त्रुटि प्रमाद विष घोले।।9।।

किंचित् व्रत संयम धारा, अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचारा।
उनमें अनाचार भी कीने, बहु बाँधे कर्म नवीने।।10।।

प्रतिकूल मार्ग यों लीना, निज-पर का अहित ही कीना।
प्रभु शुभ अवसर अब आयो, पावन जिनशासन पायो।।11।।

लब्धि त्रय मैंने पायी, अनुभव की लगन लगायी।
अतएव प्रभो मैं चाहूँ, सबके प्रति समता लाऊँ।।12।।

नहिं इष्टानिष्ट विचारूँ, निज सुक्ख स्वरूप संभारूँ।
दुःखमय हैं सभी कषायें, इनमें नहिं परिणति जाये।।13।।

वेश्या सम लक्ष्मी चंचल, नहिं पकड़ूँ इसका अंचल।
निर्ग्रन्थ मार्ग सुखकारी, भाऊँ नित ही अविकारी।।14।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust Gangotri

निज रूप दिखावन हारी, तव परिणति जो सुखकारी।
उसको ही नित्य निहारूँ, यावत् न विकल्प निवारूँ।।15।।

तुम त्याग अठारह दोषा, निजरूप धरो निर्दोषा।
वीतराग भाव तुम भीने, निज अनन्त चतुष्टय लीने।।16।।

तुम शुद्ध बुद्ध अनपाया, तुम मुक्तिमार्ग बतलाया।
अतएव मैं दास तुम्हारा, तिष्ठो मम हृदय मंझारा।।17।।

तव अवलम्बन से स्वामी, शिवपथ पाऊँ जगनामी।
निर्द्वन्द निशल्य रहाऊँ, श्रेणि चढ़ कर्म नशाऊँ।।18।।

जिनने मम रूप न जाना, वे शत्रु न मित्र समाना।
जो जाने मुझ आतम रे, वे ज्ञानी पूज्य हैं मेरे।।19।।

जो सिद्धात्मा सो मैं हूँ, नहिं बाल युवा नर मैं हूँ।
सब तैं न्यारा मम रूप, निर्मल सुख ज्ञान स्वरूप।।20।।

जो वियोग संयोग दिखाता, वह कर्म जनित है भ्राता।
नहिं मुझको सुख दुःखदाता, निज का मैं स्वयं विधाता।।21।।

आसन संघ संगति शाला, पूजन भक्ति गुणमाला।
इनतैं समाधि नहिं होवे, निज में थिरता दुःख खोवे।।22।।

घिन गेह देह जड़ रूपा, पोषत नहिं सुक्ख स्वरूपा।
जब इससे मोह हटावे, तब ही निज रूप दिखावे।।23।।

वनिता बेड़ी गृह कारा, शोषक परिवार है सारा।
शुभ जनित भोग जो पाई, वे भी आकुलता दायी।।24।।

सबविधि संसार असारा, बस निज स्वभाव ही सारा।
निज में ही तृप्त रहूँ मैं, निज में संतुष्ट रहूँ मैं।।25।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दोहा)

निज स्वभाव का लक्ष्य ले, मैंटूँ सकल विकल्प।
सुख अतीन्द्रिय अनुभवूँ, यही भावना अल्प।।26।।

समाधि भावना-1

दिनरात मेरे स्वामी मैं भावना ये भाऊँ ।
देहान्त के समय में तुमको न भूल जाऊँ ।।
शत्रु अगर कोई हो सन्तुष्ट उनको कर दूँ।
समता का भाव धर कर सबसे क्षमा कराऊँ।।
त्यागूँ आहार पानी, औषध विचार अवसर।
टूटे नियम न कोई दृढ़ता हृदय में लाऊँ ।।
जागें नहीं कषायें नहिं वेदना सतावे।
तुम से ही लौ लगी हो दुर्ध्यान को भगाऊँ।।
आतम स्वरूप अथवा आराधना विचारूँ ।
अरहंत सिद्ध साधू रटना यही लगाऊँ ।।
धर्मात्मा निकट हों, चरचा धरम सुनावें।
वो सावधान रक्खें गाफिल न होने पाऊँ।।
जीने की हो न वाञ्छा मरने की हो न इच्छा ।
परिवार मित्र जन से मैं मोह को हटाऊँ ।।
भोगे जो भोग पहले उनका न होवे सुमरन।
मैं राज्य सम्पदा या पद इन्द्र का न चाहूँ ।।
रत्नत्रय का हो पालन हो अन्त में समाधि।
'शिवराम' प्रार्थना यह, जीवन सफल बनाऊँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust

समाधिमरण पाठ-2

सहज समाधिस्वरूप सु ध्याऊँ, ध्रुव ज्ञायक प्रभु अपना।
सहज ही भाऊँ सहज ही ध्याऊँ, ध्रुव ज्ञायक प्रभु अपना।।1।।
आधि व्याधि उपाधि रहित हूँ, नित्य निरंजन ज्ञायक।
जन्म मरण से रहित, अनादिनिधन ज्ञानमय ज्ञायक।।2।।
भावकलंक से भ्रमता भव-भव, क्षण नहीं साता आयी।
पहिचाने बिन निज ज्ञायक को, असह्य वेदना पायी।।3।।
मिला भाग्य से श्री जिनधर्म, सुतत्त्व ज्ञान उपजाया।
देहादिक से भिन्न ज्ञानमय, ज्ञायक प्रत्यक्ष दिखाया।।4।।
कर्मादिक सब पुद्गल भासे, मिथ्या मोह नशाया।
धन्य-धन्य कृतकृत्य हुआ, प्रभु जाननहार जनाया।।5।।
उपजे-विनसे जो यह परिणति, स्वांग समान दिखावे।
हुआ सहज माध्यस्थ भाव, नहीं हर्ष विषाद उपजावे।।6।।
स्वयं, स्वयं में तृप्त सदा ही, चित्स्वरूप विलसाऊँ।
हानि-वृद्धि नहीं होय कदाचित्, ज्ञायक सहज रहाऊँ।।7।।
पूर्ण स्वयं मैं स्वयं प्रभु हूँ, पर की नहीं अपेक्षा।
शक्ति अनन्त सदैव उछलती, परिणमती निरपेक्षा।।8।।
अक्षय स्वयं सिद्ध परमातम, मंगलमय अविकारी।
स्वानुभूति विलसे अन्तर में, भागें भाव विकारी।।9।।
निरुपम ज्ञानानन्दमय जीवन, स्वाश्रय से प्रगटाया।
इन्द्रिय विषय असार दिखे, आनन्द स्वयं में पाया।।10।।
नहीं प्रयोजन रहा शेष कुछ, देह रहे या जावे।
भिन्न सर्वथा दिखे अभी ही, नहीं अपनत्व दिखावे।।11।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यप्राण तो पुद्गलमय हैं, मुझसे अति ही न्यारे।
शाश्वत चैतन्यमय अन्तर में, भावप्राण सुखकारे।।12।।
उनही से ध्रुव जीवन मेरा, नाश कभी नहिं होवे।
अहो महोत्सव के अवसर में, कौन मूढ़जन रोवे ?।।13।।
खेद न किञ्चित् मन में मेरे, निर्ममता हितकारी।
ज्ञाता-द्रष्टा रहूँ सहज ही, भाव हुए अविकारी।।14।।
आनन्द मेरे उर न समावे, निर्ग्रन्थ रूप सु धारूँ।
तोरि सकल जगद्वन्द्व-फन्द, निज ज्ञायकभाव सम्हारूँ।।15।।
धन्य सुकौशल आदि मुनीश्वर हैं, आदर्श हमारे।
हो उपसर्गजयी समता से, कर्मशत्रु निरवारे।।16।।
ज्ञानशरीरी अशरीरी प्रभु, शाश्वत् शिव में राजें।
भावसहित तिनके सुमरण तैं, भव-भव के अघ भाजें।।17।।
उन समान ही निजपद ध्याऊँ, जाननहार रहाऊँ।
काल अनन्त रहूँ आनन्द में, निज में ही रम जाऊँ।।18।।
क्षणभंगुरता पर्यायों की, लखकर मोह निवारो।
अरे! जगतजन द्रव्यद्रष्टि धर, अपना रूप सम्हारो।।19।।
क्षमाभाव है सबके ही प्रति, सावधान हूँ निज में।
पाने योग्य स्वयं में पाया, सहज तृप्त हूँ निज में।।20।।
साम्यभाव धरि कर्म विडारूँ, अपने गुण प्रगटाऊँ।
अनुपम शाश्वत प्रभुता पाऊँ, आवागमन मिटाऊँ।।21।।

(दोहा)

शान्त हुआ कृतकृत्य हुआ, निर्विकल्प निज माँहिं।
तिष्ठूँ परमानन्दमय, अविनाशी शिव माँहि।।22।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

मृत्यु महोत्सव-3

आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।
नाचो गाओ हर्ष मनाओ, मंगल उत्सव है।।

सर्व परिग्रह का मैं त्यागी, निज स्वभाव का मैं अनुरागी।
सम्यक् ज्ञान ज्योति उर जागी, अनुपम नर भव है।।आज..।।

साम्यभाव जिन उर में धारा, तीव्र कषाय भाव निरवारा।
निज को जन्म-मरण से तारा, अब जीवन नव है।।आज..।।

राग-द्वेष मद-मोह हटाऊँ, भव्य भावना द्वादश भाऊँ।
निज स्वरूप में ही रम जाऊँ, मंगल अभिनव है।।आज..।।

पंच पाप का पूर्ण त्याग है, मुझे किसी से नहीं राग है।
अन्तर में पूरा विराग है, नहीं उपद्रव है।।आज..।।

अब वियोग की बेला आई, कोई रुदन न करना भाई।
देखा मोह महा दुखदाई, हुआ शिथिल अब है।।आज..।।

क्षमा भावना उर में भरलूँ, क्षमा क्षमा में सबसे करलूँ।
परभव जा कर्मों को हरलूँ, यह दृढ़ निश्चय है।।आज..।।

तत्त्वभावना सहज विचारूँ, निजपरिणति निजरूप सँवारूँ।
अब मैं वीतरागता धारूँ, फिर अवसर कब है।।आज..।।

हुआ आज निर्झर अभ्यन्तर, सोऽहं सोऽहं जपूँ निरन्तर।
मेरा आतमदेव अभ्यंकर, अब न पुनर्भव है।।आज..।।

निज के गीत सदा गाऊँगा, महामोक्ष मंगल पाऊँगा।
सिद्धशिला पर मैं जाऊँगा, यह विचार नव है।।आज..।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तन की पीड़ा तो है तन में, नहीं वेदना किंचित् मन में।
लिया समाधिमरण अब मैंने, सुधरा यह भव है।।आज..।।

मैं तो अजर अमर अविनाशी, काट रहा भव दुख की फाँसी।
सिद्धपुरी का मैं हूँ वासी, जहाँ न कलरव है।।आज..।।

भेदज्ञान की बुधि ली मैंने, निज आतम की सुधि ली मैंने।
तीर्थयात्रा करली मैंने, आतम अनुभव है।।आज..।।

निज स्वभाव गुण गाया मैंने, क्रूर विभाव भगाया मैंने।
संवर भाव जगाया मैंने, कहीं न आस्रव है।।आज..।।

वीते समय आत्म जपने में, परिपूरण हूँ मैं अपने में।
मान कषाय न है सपने में, निरुपम मार्दव है।।आज..।।

उदासीनता मुझको भाई, समता से हो गई सगाई।
ममता तजी महादुखदायी, जो भव दानव है।।आज..।।

मेरा आत्म देव विख्याता, मंगलमय मंगल का दाता।
सर्वोत्कृष्ट स्वऋजु सुखदाता, पूर्ण आर्जव है।।आज..।।

अब मेरे परिणाम सरल हैं, आत्मभावना अतिनिर्मल है।
सहज भाव सम्पूर्ण विमल है, राग पराभव है।।आज..।।

कोई नहीं किसी का जग में, झूठे नाते हैं पग-पग में।
मोह तोड़ आया शिवमग में, देखो जय-जय है।।आज..।।

मन-वच-काय-त्रियोग सँवारूँ खान-पान सब ही तज डारूँ।
सल्लेखना पूर्ण मैं धारूँ, जो सुख आर्णव है।।आज..।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशलक्षणव्रत मन में लाऊँ, सोलहकारण भाव जगाऊँ।
रत्नत्रय की महिमा गाऊँ, भाव निरास्रव है।।आज..।।

भाव भासना मुझे हुई है, राग वासना छुई मुई है।
निज सुख की अनुभूति हुई है, उर स्व-चतुष्टय है।।आज..।।

सम्यग्दर्शन मैंने पाया, सम्यग्ज्ञान हृदय को भाया।
सम्यक् चारित्र को अपनाया, चेतन निर्भय है।।आज..।।

जन्म जन्म तक जिनश्रुत पाऊँ, भाव शुभाशुभ दूर हटाऊँ।
एक दिवस शिव पदवी पाऊँ, जो ध्रुव सुखमय है।।आज..।।

पंच-परम परमेष्ठी ध्याऊँ, देव-शास्त्र-गुरु को सिर नाऊँ।
शुद्धातम में ही बस जाऊँ, जो निज वैभव है।।आज..।।

'ॐ नमः सिद्धेभ्य' जप लूँ, अंतसमय दृढ़ संयम तप लूँ।
वीतराग का पावन पथ लूँ शाश्वत अक्षय है।।आज..।।

यह सन्यास मरण सुखकारा, दुर्मति दुर्गति नाशन हारा।
मैंने मौन महाव्रत धारा, उज्ज्वल परभव है।।आज..।।

तन कारा से मुक्त बनूँ मैं, हर्षित सहज स्वभाव सनूँ मैं।
क्रम-क्रम ये वसु कर्म हनूँ मैं, निज पद शिवमय है।।आज..।।

क्षमापना

हे भगवान! मैने बड़ी भूल की, जो कि आपके अमूल्य वचनों को लक्ष्य में नहीं लिया। मैंने आपके कहे हुए अमूल्य वचनों का विचार भी नहीं किया। मैंने आपके बताये हुए उत्तम-शील स्वभाव का सेवन नहीं किया। मैंने आपके कहे हुए दया, शांति, क्षमा व पवित्रता को पहिचाना ही नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे भगवान! मैं भूल गया, मैने मेरी भूल से ही भ्रमण किया, रुला और अनन्त संसार की विडम्बना में पड़ा हूँ। कर्म-कलंक का संग करने से भावकर्म से मलिन हूँ। हे विरागी भगवान! आपके बतलाये हुए तत्त्व का ग्रहण किये बिना मेरा कल्याण नहीं हो सकता।

प्रभु! मैं निरन्तर प्रपंच में पड़ा हूँ। अज्ञान से अन्ध हो रहा हूँ, मेरे में विवेक-शक्ति नहीं है, मैं मूढ़ हो रहा हूँ। मैं निराश्रित अनाथ हूँ। हे निरागी परमात्मा! अब मैं आपका व आपके बतलाये हुए धर्म का व गुरुओं का शरण ग्रहण करता हूँ। मेरे अपराध क्षय हों। मैं सर्व पापों से मुक्त होऊँ, ऐसी मेरी भावना है, अभिलाषा है। पूर्व में किये हुए पापों का मैं पश्चाताप करता हूँ।

जितना-जितना मैं सूक्ष्म विचारों में गहरा उतरता हूँ, उतना-उतना आपके तत्त्वों के चमत्कार मेरे स्वरूप का प्रकाश करते हैं, आप विरागी निर्विकारी, सच्चिदानंद, सहजानन्दी, अनन्तज्ञानी, अनन्तदर्शी और त्रैलोक्य प्रकाशक हो। मैं आपके कहे हुए मार्ग में दिन-रात रहूँ, यही मेरी आकांक्षा तथा वृत्ति रहे-यही भावना है।

हे सर्वज्ञ प्रभु! आपसे मैं विशेष क्या कहूँ? आपसे कोई बात छिपी हुई नहीं है। आपके कहे हुए तत्त्वों में शंका नहीं होवे। आपके बतलाये हुए मार्ग में मैं रहूँ। हे सर्वज्ञ भगवान! आपसे मैं विशेष क्या कहूँ, आप मेरे सर्व दोषों को जानते हो। मात्र पश्चाताप कर मैं कर्मजन्य पापों की क्षमा चाहता हूँ।

ॐ शांति...! शांति...!! शांति....!!!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

श्री सीमान्धर स्वामी, श्री युगमन्धर स्वामी, श्री बाहु स्वामी, श्री सुबाहु स्वामी, श्री संजातक स्वामी, श्री स्वयंप्रभ स्वामी, श्री वृषभानन स्वामी, श्री अनन्तवीर्य स्वामी, श्री सूरप्रभ स्वामी, श्री विशालकीर्ति स्वामी, श्री वज्रधर स्वामी, श्री चन्द्रानन स्वामी, श्री चन्द्रबाहु स्वामी, श्री भुजंगम स्वामी, श्री ईश्वर स्वामी, श्री नेमप्रभ स्वामी, श्री वीरसेन स्वामी, श्री महाभद्र स्वामी, श्री देवयश स्वामी और श्री अजितवीर्य स्वामी– इन नाम के धारक पंचमेरु सम्बन्धी विदेह क्षेत्र में बीस तीर्थंकर वर्तमान में विराजमान हैं–**उनको मेरा नमस्कार हो।**

उनके प्रति तथा श्री अरिहन्त भगवान, श्री सिद्ध भगवान, श्री आचार्य महाराज, श्री उपाध्याय महाराज तथा श्री निर्ग्रन्थ मुनिराज तथा आर्यिका जी के प्रति तथा श्रावक-श्राविकाओं के प्रति किसी भी तरह से अविनय, आशातना, अभक्ति, अपराध किया हो, उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।

चौरासी लाख जीवयोनियों में मैने एकेन्द्रिय, दोइन्द्रिय, तीन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पंचेन्द्रिय आदि जिस किसी भी जीव का हनन किया हो, हनन कराया हो और हनन करने वाले की अनुमोदना की हो तो मेरे सर्व दुष्कृत्य मिथ्या हों। किसी भी जीव का विराधन, परितापन और उपघात स्वयं किया हो, अन्य से कराया हो, स्वयं करते हुए अन्य की अनुमोदना की हो, तत्सम्बन्धी मेरा समस्त दुष्कृत मिथ्या हो, निष्फल हो।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप कर कायोत्सर्ग करें)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशम् खण्ड : आध्यात्मिक पाठ संग्रह

निर्वाणकाण्ड (भाषा)

(दोहा)

वीतराग वन्दौ सदा, भाव सहित सिर नाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।।

(चौपाई)

अष्टपद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुरि नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, बन्दौं भाव-भगति उर धार।।

चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखर समेद जिनेसुर बीस, भाव सहित वन्दौं निश-दीस।।

वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिन्द, सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठकोडि, बन्दौं भाव सहित कर जोड़ि।।

श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोडि बहत्तर अरु सौ सात।
सम्भु प्रदुम्न कुमार द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूँ तसुपाय।।

रामचन्द्र के सुत द्वय वीर, लाडनरिन्द आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि बन्दौं निरधार।।

पाण्डव तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री शत्रुंजयगिरि के सीस, भाव सहित बन्दौं निश-दीश।।

जे बलभद्र मुकतिमें गये, आठ कोडि मुनि औरहु भये।
श्री गजपन्थ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँकाल।।

राम हणू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील।
कोडि निन्याणवे मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वन्दौं धरि ध्यान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नंग–अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि–शीश, ते बन्दौं त्रिभुवनपति ईस।।
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा–तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते बन्दौं धरि परम हुलास।।
रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वय चक्री दश काम कुमार, उठ कोड़ि बन्दौं भव पार।।
बडवानी बडनयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते बन्दौं भव सागर तर्ण।।
सुवरण भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि–वरशिखर मँझार।
चेलना–नदी–तीर के पास, मुक्ति गये बन्दौं नित तास।।
फलहोड़ी बड़गाम अनूप पश्चिम दिशा द्रोणगिरी रूप।
गुरुदत्तादि मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये बन्दौं नित तहाँ।।
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री अष्टापद मुक्ति मँझार, ते वन्दौं नित सुरत संभार।।
अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ मेढ़गिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय।।
वंसस्थल वनके ढिंग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।
कुलभूषण दिशिभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम।।
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पांचसौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूँ जोरि जुग पान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समवशरण श्री पार्श्व-जिनन्द, रेसिन्दीगिरि नयनानन्द।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते बन्दौं नित धरम-जिहाज।।
सेठ सुदर्शन पटना जान, मथुरा से जम्बू निर्वाण।
चरम केवली पंचम काल, ते वन्दौं नित दीन दयाल।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ।
मन वच काय सहित सिर नाय, वन्दन करहि भविक गुण गाय।।
संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वन्दन करहि त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल।।

अमूल्य तत्त्व विचार

बहु पुण्य-पुंज प्रसंग से, शुभ देह मानव का मिला।
तो भी अरे! भव चक्र का, फेरा न एक कभी टला।
सुख-प्राप्ति हेतु प्रयत्न करते, सुक्ख जाता दूर है।
तू क्यों भयंकर भाव-मरण, प्रवाह में चकचूर है।।1।।

लक्ष्मी बढ़ी अधिकार भी, पर बढ़ गया क्या बोलिये।
परिवार और कुटुम्ब है क्या? वृद्धि नय पर तोलिये।।
संसार का बढ़ना अरे! नर देह की यह हार है।
नहीं एक क्षण तुझको अरे! इसका विवेक विचार है।।2।।

निर्दोष सुख निर्दोष आनंद, लो जहाँ भी प्राप्त हो।
यह दिव्य अन्तस्तत्त्व जिससे बन्धनों से मुक्त हो।।
पर-वस्तु में मूर्छित न हो, इसकी रहे मुझको दया।
वह सुख सदा ही त्याज्य रे! पश्चात् जिसके दुःख भरा।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं कौन हूँ आया कहाँ से? और मेरा रूप क्या?
सम्बन्ध दुःखमय कौन है? स्वीकृत करूँ परिहार क्या?
इसका विचार विवेक पूर्वक, शान्त होकर कीजिये।
तो सर्व आत्मिक ज्ञान के, सिद्धान्त का रस पीजिए।।4।।

किसका वचन उस तत्त्व की, उपलब्धि में शिवभूत है।
निर्दोष नर का वचन रे! वह स्वानुभूति प्रसूत है।
तारो अरे! तारो निजात्मा, शीघ्र अनुभव कीजिये।
सर्वात्म में समदृष्टि दो, यह वच हृदय लख लीजिए।।5।।

आत्म कीर्तन

हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता दृष्टा आतम-राम।।टेक।।

मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यह राग वितान।।1।।

मम स्वरूप है सिद्ध-समान, अमित शक्ति सुखज्ञान निधान।
किन्तु आश-वश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान।।2।।

सुख-दुख दाता कोई न आन, मोह राग ही दुख की खान।
निज को निज, पर को पर जान, फिर दुख का नहिं लेश निदान।।3।।

जिन, शिव, ईश्वर, ब्रह्मा, राम, विष्णु, बुद्ध, हरि जिसके नाम।
राग, त्याग पहुँचूँ निज धाम, आकुलता का फिर क्या काम।।4।।

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम।
दूर हटो पर-कृत परिणाम, 'सहजानन्द' रहूँ अभिराम।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री समयसार स्तुति

(हरिगीत)

संसारी जीवनां भावमरणों टालवा करुणा करी,
सरिता वहावी सुधा तणी प्रभु वीर! तें संजीवनी।
शोषाती देखी सरितने करुणाभीना हृदये करी,
मुनिकुन्द संजीवनी समयप्राभृत तणे भाजन भरी।।

(अनुष्टप्)

कुन्दकुन्द रच्युं शास्त्र, साथिया अमृते पूर्या;
ग्रंथाधिराज! तारामां भावो ब्रह्मांडना भर्या।

(शिखरिणी)

अहो! वाणी तारी प्रशमरस-भावे नितरती;
मुमुक्षुने पाती अमृतरस अंजलि भरी भरी।
अनादिनी मूर्छा विष तणी त्वराथी उतरती;
विभावेथी थम्भी स्वरूप भणी दोड़े परिणती।।

(शार्दूल विक्रीड़ित)

तूं छे निश्चयग्रन्थ, भंग सघला व्यवहारना भेदवा,
तूं प्रज्ञाछिणी ज्ञान ने उदयनी संधि सहु छेदवा।
साथी साधकनो, तूं भानु जगनो सन्देश महावीरनो,
विसामो भवक्लांतना हृदयनो, तूं पंथ मुक्ति तणो।।

(बसंत तिलका)

सूण्ये तने रसनिबंध शिथिल थाय,
जाण्ये तने हृदय ज्ञानी तणां जणांय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तूं रुचतां जगतनी रुचि आलसे सौ,
तूं रीझतां सकलज्ञायकदेव रीझे।।

(अनुष्टुप्)

बनावूँ पत्र कुन्दननां, रत्नोंना अक्षरो लखी,
तथापि कुन्दसूत्रोनां अंकाये मूल्य ना कदी।

मैं ज्ञानानन्द स्वाभावी हूँ

मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण,
पर की मुझ में कुछ गन्ध नहीं।
मैं अरस, अरूपी, अस्पर्शी,
पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।।1।।
मैं रंग-राग से भिन्न भेद से,
भी मैं भिन्न निराला हूँ।
मैं हूँ अखण्ड चैतन्य पिण्ड,
निजरस में रमने वाला हूँ।।2।।
मैं ही मेरा कर्त्ता-धर्त्ता,
मुझमें पर का कुछ काम नहीं।
मैं मुझमें रहने वाला हूँ,
पर में मेरा विश्राम नहीं।।3।।
मैं शुद्ध, बुद्ध, अविरुद्ध एक,
पर-परिणति से अप्रभावी हूँ।
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्त्व,
मैं ज्ञानानन्द स्वाभावी हूँ।।4।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सच्चा जैन

ज्ञानी जैन उन्हीं को कहते, आतम तत्त्व निहारें जो।
ज्यों का त्यों जानें तत्त्वों को, ज्ञायक में चित धारें जो।।1।।

सच्चे देव-शास्त्र-गुरुवर की, परम प्रतीति लावें जो।
वीतराग-विज्ञान-परिणति, सुख का मूल विचारें जो।।2।।

नहीं मिथ्यात्व अन्याय अनीति, सप्त व्यसन के त्यागी जो।
पूर्ण प्रमाणिक सहज अहिंसक, निर्मल जीवन धारें जो।।3।।

पापों में तो लिप्त न होवें, पुण्य भलो नहीं मानें जो।
पर्याय को ही स्वभाव न जानें, नहिं ध्रुव दृष्टि विसारें जो।।4।।

भेद-ज्ञान की निर्मल धारा, अन्तर माँहिं बहावें जो।
इष्ट-अनिष्ट न कोई जग में, निज मन माँहिं विचारें जो।5।।

स्वानुभूति बिन परिणति सूनी, राग जहर सम जानें जो।
निज में ही स्थिरता का, सम्यक् पुरुषार्थ बढ़ावें जो।।6।।

कर्त्ता-भोक्ता भाव न मेरे, ज्ञान स्वभाव ही जानें जो।
स्वयं त्रिकाल शुद्ध आनंदमय, निष्क्रिय तत्त्व चितारें जो।।7।।

रहें अलिप्त जलज ज्यों जल में, नित्य निरंजन ध्यावें जो।
आत्मन् अल्पकाल में मंगलरूप, परमपद पावें जो।।8।।

श्री चन्द्रप्रभ स्तुति

श्री चन्द्र जिनवर चन्द्र अंकित, चन्द्र वर्ण सुधा निधम्।
नर इन्द्र चन्द्र मुनीन्द्र वन्दित, चन्द्रनाथ जिनेश्वरम्।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवधेश वेश विकार वर्जित, क्लेश हर मन रंजनम्।
मद मोह मान महान दुखनिधि, प्रबल मन्मथ भंजनम्।।

प्रभु पाप पंक कलंक वर्जित, सित् मयंक गुणागरम्।
अघरूप वनदव भस्मकर्ता, अक्ष विजयी जिनवरम्।।

विधि मेघश्याम समूह नाशक, तीव्र पवन प्रचण्डनम्।
भवताप हर सुख साजकर, वरदीप नभ मार्तण्डनम्।।

तुम दिव्यज्योति दिनेश कोटिक, दिव्यरूप प्रभाहरम्।
तुम दिव्यवाणी दिव्यज्ञानी, दिव्यमूर्ति निरंजनम्।।

सत्मग प्रकाशक पाप नाशक, श्रेष्ठ शासक वन्दनम्।
फल मुक्तिदायक विश्वनायक, जनसहायक अघहरम्।।

कलमल विमोचन ज्ञान लोचन, दरिद मोचन ईश्वरम्।
कह प्रेमपूर्वक दास 'भगवत्' नित्य वन्दे जिनवरम्।।

जिनेन्द्र वन्दना

हे वीतरागी! वीर प्रभु, सम्यक्त्व निधि से पूर हो।
हो कर्म-दल के दलनकर्ता, सिद्धपुर के शूर हो।।

शुद्धात्मा को साधकर, सर्वज्ञ पद को पा लिया।
मद मोह मिथ्याज्ञान तजकर, ज्ञान कमल खिला लिया।।

सब आत्मा भगवान हैं, यह दिव्यध्वनि का सार है।
है सार बस शुद्धात्मा, संसार सब निःसार है।।

सबका परम कल्याण हो, दुःख दर्द का अवसान हो।
है भावना उत्तम यही, बस 'ज्ञान' का साम्राज्य हो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपूर्व अवसर

आवे कब अपूर्व अवसर जब, बाह्यन्तर होऊँ निर्ग्रन्थ।
सब सम्बन्धों के बन्धन तज, विचरूँ महत् पुरुष के पंथ।।1।।

सर्व-भाव से उदासीन हो, भोजन भी संयम के हेतु।
किंचित् ममता नहीं देह से, कार्य सभी हों मुक्ती सेतु।।2।।

प्रगट ज्ञान मिथ्यात्व रहित से, दीखे आत्म काय से भिन्न।
चरितमोह भी दूर भगाऊँ, निज-स्वभाव का ध्यान अछिन्न।।3।।

जबतक देह रहे तबतक भी, रहूँ त्रिधा मैं निज में लीन।
घोर परीषह उपसर्गों से, ध्यान न होवे मेरा क्षीण।।4।।

संयम हेतु योग प्रवर्तन, लक्ष्य स्वरूप जिनाज्ञाधीन।
क्षण-क्षण चिन्तन घटता जावे, होऊँ अन्त ज्ञान में लीन।।5।।

राग-द्वेष ना हो विषयों में, अप्रमत्त अक्षोभ सदैव।
द्रव्य-क्षेत्र अरु काल-भाव से, विचरण हो निरपेक्षित एव।।6।।

क्रोध प्रति मैं क्षमा संभारूँ, मान तजूँ मार्दव भाऊँ।
माया को आर्जव से जीतूँ, वृत्ति लोभ नहिं अपनाऊँ।।7।।

उपसर्गों में क्रोध न तिलभर, चक्री वन्दे मान नहीं।
देह जाय किञ्चित् नहिं माया, सिद्धि का लोभ निदान नहीं।।8।।

नग्न वेष अरु केशलोंच, स्नान दन्त धोवन का त्याग।
नहीं रुचि शृङ्गार प्रति, निज संयम से होवे अनुराग।।9।।

शत्रु-मित्र देखूँ न किसी को, मानामान में समता हो।
जीवन-मरण दोऊ सम देखूँ, भव-शिव में न विषमता हो।।10।।

एकाकी जंगल मरघट में, हो अडोल निज-ध्यान धरूँ।
सिंह व्याघ्र यदि तन को खायें, उनमें मैत्रीभाव धरूँ।।11।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

घोर तपश्चर्या करते, अहार अभाव में खेद नहीं।
सरस अन्न में हर्ष न रजकण, स्वर्ग ऋद्धि में भेद नहीं।।12।।
चारित मोह पराजित होवे, आवे जहाँ अपूर्वकरण।
अनन्य चिन्तन शुद्धभाव का, क्षपक-श्रेणि पर आरोहण।।13।।
मोह स्वयंभूरमण पार कर, क्षीण-मोह गुणस्थान वरूँ।
ध्यान शुक्ल एकत्व धार कर, केवलज्ञान प्रकाश करूँ।।14।।
भव के बीज घातिया विनशें, होऊँ मैं कृतकृत्य तभी।
दर्श ज्ञान सुख बल अनन्तमय, विकसित हों निजभाव सभी।।15।।
चार अघाती कर्म जहाँ पर, जली जेबरी भाँति रहे।
आयु पूर्ण हो मुक्त दशा फिर, देह मात्र भी नहीं रहे।।16।।
मन-वच-काया-कर्मवर्गणा, के छूटें सब ही सम्बन्ध।
सूक्ष्म अयोगी गुणस्थान हो, सुखदायक अरु पूर्ण अबन्ध।।17।।
परमाणु मात्र स्पर्श नहीं हो, निष्कंलक अरु अचल स्वरूप।
चैतन्य मूर्ति शुद्ध निरंजन, अगुरुलघु बस निजपद रूप।।18।।
पूर्व प्रयोगादिक कारण वश, ऊर्ध्व गमन सिद्धालय तिष्ठ।
सादि अनन्त समाधि सुख में, दर्शन ज्ञान चरित्र अनन्त।।19।।
जो पद श्री सर्वज्ञ ज्ञान में, कह न सके पर श्री भगवान।
वह स्वरूप फिर अन्य कहे को, अनुभवगोचर है वह ज्ञान।।20।।
मात्र मनोरथ रूप ध्यान यह, है सामर्थ्य हीनता आज।
'रायचन्द्र' तो भी निश्चय मन, शीघ्र लहूँगा निजपद राज।।21।।
सहज भावना से प्रेरित हो, हुआ स्वयं ही यह अनुवाद।
शब्द अर्थ की चूक कहीं हो, सुधी सुधार हरो अवसाद।।22।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0-In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकादशम् खण्ड : आध्यात्मिक स्तुति संग्रह

ज्ञानाष्टक

(हरिगीतिका)

निरपेक्ष हूँ कृतकृत्य मैं, बहु शक्तियों से पूर्ण हूँ।
मैं निरालम्बी मात्र ज्ञायक, स्वयं में परिपूर्ण हूँ।।
पर से नहीं सम्बन्ध कुछ भी, स्वयं सिद्ध प्रभु सदा।
निर्बाध अरु निःशंक निर्भय, परम आनन्दमय सदा।।1।।

निज लक्ष से होऊँ सुखी, नहिं शेष कुछ अभिलाष है।
निज में ही होवे लीनता, निज का हुआ विश्वास है।।
अमूर्तिक चिन्मूर्ति मैं, मंगलमयी गुणधाम हूँ।
मेरे लिए मुझसा नहीं, सच्चिदानन्द अभिराम हूँ।।2।।

स्वाधीन शाश्वत मुक्त अक्रिय, अनन्त वैभववान हूँ।
प्रत्यक्ष अन्तर में दिखे, मैं ही स्वयं भगवान हूँ।।
अव्यक्त वाणी से अहो, चिन्तन न पावे पार है।
स्वानुभव में सहज भासे, भाव अपरम्पार है।।3।।

श्रद्धा स्वयं सम्यक् हुई, श्रद्धान ज्ञायक हूँ हुआ।
ज्ञान में बस ज्ञान भासे, ज्ञान भी सम्यक् हुआ।।
भग रहे दुर्भाव सम्यक्, आचरण सुखकार है।
ज्ञानमय जीवन हुआ, अब खुला मुक्ति द्वार है।।4।।

जो कुछ झलकता ज्ञान में, वह ज्ञेय नहिं बस ज्ञान है।
नहिं ज्ञेयकृत किंचित् अशुद्धि, सहज स्वच्छ सुज्ञान है।।
परभाव शून्य स्वभाव मेरा, ज्ञानमय ही ध्येय है।
ज्ञान में ज्ञायक अहो!, मम ज्ञानमय ही ज्ञेय है।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

घोर तपश्चर्या करते, अहार अभाव में खेद नहीं।
सरस अन्न में हर्ष न रजकण, स्वर्ग ऋद्धि में भेद नहीं।।12।।
चारित मोह पराजित होवे, आवे जहाँ अपूर्वकरण।
अनन्य चिन्तन शुद्धभाव का, क्षपक-श्रेणि पर आरोहण।।13।।
मोह स्वयंभूरमण पार कर, क्षीण-मोह गुणस्थान वरूँ।
ध्यान शुक्ल एकत्व धार कर, केवलज्ञान प्रकाश करूँ।।14।।
भव के बीज घातिया विनशें, होऊँ मैं कृतकृत्य तभी।
दर्श ज्ञान सुख बल अनन्तमय, विकसित हों निजभाव सभी।।15।।
चार अघाती कर्म जहाँ पर, जली जेबरी भाँति रहे।
आयु पूर्ण हो मुक्त दशा फिर, देह मात्र भी नहीं रहे।।16।।
मन-वच-काया-कर्मवर्गणा, के छूटें सब ही सम्बन्ध।
सूक्ष्म अयोगी गुणस्थान हो, सुखदायक अरु पूर्ण अबन्ध।।17।।
परमाणु मात्र स्पर्श नहीं हो, निष्कंलक अरु अचल स्वरूप।
चैतन्य मूर्ति शुद्ध निरंजन, अगुरुलघु बस निजपद रूप।।18।।
पूर्व प्रयोगादिक कारण वश, ऊर्ध्व गमन सिद्धालय तिष्ठ।
सादि अनन्त समाधि सुख में, दर्शन ज्ञान चरित्र अनन्त।।19।।
जो पद श्री सर्वज्ञ ज्ञान में, कह न सके पर श्री भगवान।
वह स्वरूप फिर अन्य कहे को, अनुभवगोचर है वह ज्ञान।।20।।
मात्र मनोरथ रूप ध्यान यह, है सामर्थ्य हीनता आज।
'रायचन्द्र' तो भी निश्चय मन, शीघ्र लहूँगा निजपद राज।।21।।
सहज भावना से प्रेरित हो, हुआ स्वयं ही यह अनुवाद।
शब्द अर्थ की चूक कहीं हो, सुधी सुधार हरो अवसाद।।22।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकादशम् खण्ड : आध्यात्मिक स्तुति संग्रह

ज्ञानाष्टक

(हरिगीतिका)

निरपेक्ष हूँ कृतकृत्य मैं, बहु शक्तियों से पूर्ण हूँ।
मैं निरालम्बी मात्र ज्ञायक, स्वयं में परिपूर्ण हूँ।।
पर से नहीं सम्बन्ध कुछ भी, स्वयं सिद्ध प्रभु सदा।
निर्बाध अरु निःशंक निर्भय, परम आनन्दमय सदा।।1।।

निज लक्ष से होऊँ सुखी, नहिं शेष कुछ अभिलाष है।
निज में ही होवे लीनता, निज का हुआ विश्वास है।।
अमूर्तिक चिन्मूर्ति मैं, मंगलमयी गुणधाम हूँ।
मेरे लिए मुझसा नहीं, सच्चिदानन्द अभिराम हूँ।।2।।

स्वाधीन शाश्वत मुक्त अक्रिय, अनन्त वैभववान हूँ।
प्रत्यक्ष अन्तर में दिखे, मैं ही स्वयं भगवान हूँ।।
अव्यक्त वाणी से अहो, चिन्तन न पावे पार है।
स्वानुभव में सहज भासे, भाव अपरम्पार है।।3।।

श्रद्धा स्वयं सम्यक् हुई, श्रद्धान ज्ञायक हूँ हुआ।
ज्ञान में बस ज्ञान भासे, ज्ञान भी सम्यक् हुआ।।
भग रहे दुर्भाव सम्यक्, आचरण सुखकार है।
ज्ञानमय जीवन हुआ, अब खुला मुक्ति द्वार है।।4।।

जो कुछ झलकता ज्ञान में, वह ज्ञेय नहिं बस ज्ञान है।
नहिं ज्ञेयकृत किंचित् अशुद्धि, सहज स्वच्छ सुज्ञान है।।
परभाव शून्य स्वभाव मेरा, ज्ञानमय ही ध्येय है।
ज्ञान में ज्ञायक अहो!, मम ज्ञानमय ही ज्ञेय है।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

ज्ञान ही साधन, सहज अरु ज्ञान ही मम साध्य है।
ज्ञानमय आराधना, शुद्ध ज्ञान ही आराध्य है।।
ज्ञानमय ध्रुव रूप मेरा, ज्ञानमय सब परिणमन।
ज्ञानमय ही मुक्ति मम, मैं ज्ञानमय अनादिनिधन।।6।।

ज्ञान ही है सार जग में, शेष सब निस्सार है।
ज्ञान से च्युत परिणमन का, नाम ही संसार है।।
ज्ञानमय निजभाव को बस भूलना अपराध है।
ज्ञान का सम्मान ही, संसिद्धि सम्यक् राध है।।7।।

अज्ञान से ही बंध, सम्यग्ज्ञान से ही मुक्ति है।
ज्ञानमय संसाधना, दुख नाशने की युक्ति है।।
जो विराधक ज्ञान का, सो डूबता मंझधार है।
ज्ञान का आश्रय करे, सो होय भव से पार है।।8।।

यों जान महिमाज्ञान की, निजज्ञान को स्वीकार कर।
ज्ञान के अतिरिक्त सब, परभाव का परिहार कर।।
निजभाव से ही ज्ञानमय हो, परम-आनन्दित रहो।
होय तन्मय ज्ञान में, अब शीघ्र शिव-पदवी धरो।।9।।

सान्त्वनाष्टक

शान्तचित्त हो निर्विकल्प हो, आत्मन् निज में तृप्त रहो।
व्यग्र न होओ क्षुब्ध न होओ, चिदानन्द रस सहज पिओ।।टेक।।

स्वयं स्वयं में सर्व वस्तुएँ, सदा परिणमित होती हैं।
इष्ट-अनिष्ट न कोई जग में, व्यर्थ कल्पना झूठी है।।
धीर-वीर हो मोहभाव तज, आतम-अनुभव किया करो।।व्यग्र.।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखो प्रभु के ज्ञान माँहिं, सब लोकालोक झलकता है।
फिर भी सहज मग्न अपने में, लेश नहीं आकुलता है।।
सच्चे भक्त बनो, प्रभुवर के ही पथ का अनुसरण करो।।व्यग्र.।।

देखो मुनिराजों पर भी, कैसे-कैसे उपसर्ग हुए।
धन्य-धन्य वे साधु साहसी, आराधन से नहीं चिगे।।
उनको निज-आदर्श बनाओ, उर में समताभाव धरो।।व्यग्र.।।

व्याकुल होना तो, दुख से बचने का कोई उपाय नहीं।
होगा भारी पाप बंध ही, होवे भव्य अपाय नहीं।।
ज्ञानाभ्यास करो मन माँहीं, दुर्विकल्प दुखरूप तजो।।
व्यग्र न होओ क्षुब्ध न होओ, चिदानन्द रस सहज पिओ।व्यग्र.।।

अपने में सर्वस्व है अपना, परद्रव्यों में लेश नहीं।
हो विमूढ़ पर में ही क्षण-क्षण, करो व्यर्थ संक्लेश नहीं।।
अरे! विकल्प अकिंचित्कर ही, ज्ञाता हो ज्ञाता ही रहो।व्यग्र.।।

अन्तर्दृष्टि से देखो नित, परमानन्दमय आत्मा।
स्वयंसिद्ध निर्द्वन्द्व निरामय, शुद्ध बुद्ध परमात्मा।।
आकुलता का काम नहीं कुछ, ज्ञानानन्द का वेदन हो।।व्यग्र.।।

सहज तत्त्व की सहज भावना, ही आनन्द प्रदाता है।
जो भावे निश्चय शिव पावे, आवागमन मिटाता है।।
सहजतत्त्व ही सहज ध्येय है, सहजरूप नित ध्यान धरो।व्यग्र.।।

उत्तम जिन वचनामृत पाया, अनुभव कर स्वीकार करो।
पुरुषार्थी हो स्वाश्रय से इन, विषयों का परिहार करो।।
ब्रह्मभावमय मंगल चर्या, हो निज में ही मग्न रहो ।।व्यग्र.।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्त्तव्याष्टक

आतम हित ही करने योग्य, वीतराग प्रभु भजने योग्य।
सिद्ध स्वरूप ही ध्याने योग्य, गुरु निर्ग्रन्थ ही वंदन योग्य।।1।।

साधर्मी ही संगति योग्य, ज्ञानी साधक सेवा योग्य।
जिनवाणी ही पढ़ने योग्य, सुनने योग्य समझने योग्य।।2।।

तत्त्व प्रयोजन निर्णय योग्य, भेद-ज्ञान ही चिन्तन योग्य।
सब व्यवहार हैं जानन योग्य, परमारथ प्रगटावन योग्य।।3।।

वस्तुस्वरूप विचारन योग्य, निज वैभव अवलोकन योग्य।
चित्स्वरूप ही अनुभव योग्य, निजानंद ही वेदन योग्य।।4।।

अध्यातम ही समझने योग्य, शुद्धातम ही रमने योग्य।
धर्म अहिंसा धरने योग्य, दुर्विकल्प सब तजने योग्य।।5।।

श्री जिनधर्म प्रभावन योग्य, ध्रुव आतम ही भावन योग्य।
सकल परीषह सहने योग्य, सर्व कर्म मल दहने योग्य।।6।।

भव का भ्रमण मिटाने योग्य, क्षपक श्रेणी चढ़ जाने योग्य।
तजो अयोग्य करो अब योग्य, मुक्तिदशा प्रगटाने योग्य।।7।।

आया अवसर सबविधि योग्य, निमित्त अनेक मिले हैं योग्य।
हो पुरुषार्थ तुम्हारा योग्य, सिद्धि सहज ही होवे योग्य।।8।।

ब्रह्मचर्य द्वादशी

ब्रह्मचर्य की अद्भुत महिमा, आज बताऊँ भली-भली।
ब्रह्मचर्य बिन जीवन निष्फल, बात कहूँ मैं खरी-खरी।।टेक।।

निज सुख शान्ति निज में ही है, बाहर कहीं न पाओगे।
व्यर्थ भ्रमे हो और भ्रमोगे, समय चूक पछताओगे।।
भोगों में तो फँस कर भाई, तुमने भारी विपद भरी।।ब्रह्म.।।1।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे बड़ी-बड़ी नदियों पर, बाँध बँधे देखे होंगे।
सोचो बाँध टूट जावे तो, क्यों नहीं नगर नष्ट होंगे।।
ब्रह्मचर्य का बाँध टूटने से, बरबादी घड़ी-घड़ी।। ब्रह्म.।।2।।

भोगों का घेरा ऐसा है, बाहर वाले ललचावें।
फँसने वाले भी पछतावें, सुख नहीं कोई पावें।।
धोखे में आवे नहीं ज्ञानी, शुद्धातम की प्रीति धरी।। ब्रह्म.।।3।।

पहले तो मिलना ही दुर्लभ, मिल जावें तो भोग कठिन।
भोगों से तृष्णा ही बढ़ती, इनसे होना तृप्ति कठिन।।
पाप कमावे धर्म गमावे, घूमे भव की गली-गली।। ब्रह्म.।।4।।

बत्ती तेल प्रकाश नाश ज्यों, दीपक धुआँ उगलता है।
रत्नत्रय को नाश मूढ, भोगों में फँसकर हँसता है।।
सन्निपात का ही यह हँसना, सन्मुख जिसके मौत खड़ी।। ब्रह्म.।।5।।

सर्वव्रतों में चक्रवर्ती अरु, सब धर्मों में सार कहा।
अनुपम महिमा ब्रह्मचर्य की, शिवमारग शिवरूप अहा।।
ब्रह्मचर्य धारी ज्ञानी के, निजानन्द की झरे झड़ी।। ब्रह्म.।।6।।

पर-स्त्री संग त्याग मात्र से, ब्रह्मचर्य नहिं होता है।
पंचेन्द्रिय के विषय छूट कर, निज में होय लीनता है।।
अतीचार जहाँ लगे न कोई, ब्रह्म भावना घड़ी-घड़ी।। ब्रह्म.।।7।।

सर्व कषायें अब्रह्म जानो, राग कुशील कहा दुखकार।
सर्व विकारों की उत्पादक, पर-दृष्टि ही महा विकार।।
द्रव्यदृष्टि शुद्धात्म लीनता, ब्रह्मचर्य सुखकार यही। ब्रह्म.।।8।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सबसे पहले तत्त्वज्ञान कर, स्व-पर भेद विज्ञान करो।
निजानन्द का अनुभव करके, भोगों में सुखबुद्धि तजो।।
कोमल पौधे की रक्षा हित, शील बाढ़ नौ करो खड़ी।।
ब्रह्मचर्य बिन जीवन निष्फल, बात कहूँ मैं खरी-खरी।।9।।

समता रस से उसे सींचना, सादा जीवन तत्त्व विचार।
सत्संगति अरु ब्रह्म भावना, लगे नहिं किंचित् अतिचार।।
कमजोरी किंचित् नहीं लाना, बाधायें हों बड़ी-बड़ी।।ब्रह्म.।।10।।

मर्यादा का करें उल्लंघन, जग में भी संकट पावें।
निज मर्यादा में आते ही, संकट सारे मिट जावें।।
निजस्वभाव सीमा में आओ, पाओ अविचल मुक्तिमही।।ब्रह्म.।।11।।

चिंता छोड़ो स्वाश्रय से ही, सर्व विकल्प नशायेंगे।
कर्म छोड़ खुद ही भागेंगे, गुण अनन्त प्रगटायेंगे।।
'आत्मन्' निज में ही रम जाओ, आई मंगल आज घड़ी।।ब्रह्म.।।12।।

समता षोडसी

समता रस का पान करो, अनुभव रस का पान करो।
शान्त रहो शान्त रहो, सहज सदा ही शान्त रहो।।टेक।।

नहीं अशान्ति का कुछ कारण, ज्ञान दृष्टि से देख अहो।
क्यों पर लक्ष करे रे! मूरख, तेरे से सब भिन्न अहो।।1।।

देह भिन्न है कर्म भिन्न हैं, उदय आदि भी भिन्न अहो।
नहीं अधीन हैं तेरे कोई, सब स्वाधीन परिणमित हो।।2।।

पर नहीं तुझसे कहता कुछ भी, सुख दुख का कारण नहीं हो।
करके मूढ़ कल्पना मिथ्या, तू ही व्यर्थ आकुलित हो।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इष्ट अनिष्ट न कोई जग में, मात्र ज्ञान के ज्ञेय अहो।
हो निरपेक्ष करो निज अनुभव, बाधक तुमको कोई न हो।।4।।

तुम स्वभाव से ही आनंदमय, पर से सुख तो लेश न हो।
झूठी आशा तृष्णा छोड़ो, जिन वचनों में चित्त धरो।।5।।

पर द्रव्यों का दोष न देखो, क्रोध अग्नि में नहीं जलो।
नहीं चाहो अनुरूप प्रवर्तन, भेदज्ञान ध्रुव दृष्टि धरो।।6।।

जो होता है वह होने दो, होनी को स्वीकार करो।
कर्त्तापन का भाव न लाओ, निज हित का पुरुषार्थ करो।।7।।

दया करो पहले अपने पर, आराधन से नहीं चिगो।
कुछ विकल्प यदि आवे तो भी, सम्बोधन समतामय हो।।8।।

यदि माने तो सहज योग्यता, अहंकार का भाव न हो।
नहीं माने भवितव्य विचारो, जिससे किंचित् खेद न हो।।9।।

हीनभाव जीवों के लखकर, ग्लानिभाव नहीं मन में हो।
कर्मोदय की अति विचित्रता, समझो स्थितिकरण करो।।10।।

अरे कलुषता पाप बंध का, कारण लखकर त्याग करो।
आलस छोड़ो बनो उद्यमी, पर सहाय की चाह न हो।।11।।

पापोदय में चाह व्यर्थ है, नहीं चाहने पर भी हो।
पुण्योदय में चाह व्यर्थ है, सहजपने मन वांछित हो।।12।।

आर्तध्यान कर बीज दुख के, बोना तो अविवेक अहो।
धर्म ध्यान में चित्त लगाओ, होय निर्जरा बंध न हो।।13।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करो नहीं कल्पना असम्भव, अब यर्थाथ स्वीकार करो।
उदासीन हो पर भावों से, सम्यक् तत्त्व विचार करो ।।14।।

तजो संग लौकिक जीवों का, भोगों के आधीन न हो।
सुविधाओं की दुविधा त्यागो, एकाकी शिवपंथ चलो ।।15।।

अति दुर्लभ अवसर पाया है, जग प्रपंच में नहीं पड़ो।
करो साधना जैसे भी हो, यह नर भव अब सफल करो ।।16।।

मंगल शृङ्गार

मस्तक का भूषण गुरु आज्ञा, चूड़ामणि तो रागी माने।
सत्-शास्त्र श्रवण है कर्णों का, कुण्डल तो अज्ञानी जाने ।।1।।

हीरों का हार तो व्यर्थ कण्ठ में, सुगुणों की माला भूषण।
कर पात्र-दान से शोभित हो, कंगन हथफूल तो हैं दूषण ।।2।।

जो घड़ी हाथ में बंधी हुई, वह घड़ी यहीं रह जायेगी।
जो घड़ी आत्म-हित में लागी, वह कर्म बंध विनशायेगी ।।3।।

जो नाक में नथुनी पड़ी हुई, वह अन्तर राग बताती है।
श्वास-श्वास में प्रभु सुमिरन से, नासिका शोभा पाती है ।।4।।

होठों की यह कृत्रिम लाली, पापों की लाली लायेगी।
जिसमें बँधकर तेरी आत्मा, भव-भव के दुःख उठायेगी ।।5।।

होठों पर हँसी शुभ्र होवे, गुणियों को लखते ही भाई।
ये होठ तभी होते शोभित, तत्त्वों की चर्चा मुख आई ।।6।।

क्रीम और पाउडर मुख को, उज्जवल नहिं मलिन बनाता है।
हो साम्यभाव जिस चेहरे पर, वह चेहरा शोभा पाता है ।।7।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आँखों में काजल शील का हो, अरु लज्जा पाप कर्म से हो।
स्वामी का रूप बसा होवे, अरु नाता केवल धर्म से हो।।8।।

जो कमर करधनी से सुन्दर, माने उस सम है मूढ़ नहीं।
जो कमर ध्यान में कसी गई, उससे सुन्दर है नहीं कहीं।।9।।

पैरों में पायल ध्वनि करतीं, वे अन्तर द्वन्द बताती हैं।
जो चरण चरण की ओर बढ़े, उनके सन्मुख शरमाती हैं।।10।।

जड़ वस्त्रों से तो तन सुन्दर, रागी लोगों को दिखता है।
पर सच पूछो उनके अन्दर, आतम का रूप सिसकता है।।11।।

जब बाह्य मुमुक्षु रूप धार, ज्ञानाम्बर को धारण करता।
अत्यन्त मलिन रागाम्बर तज, सुन्दर शिवरूप प्रकट करता।।12।।

एकत्व ज्ञानमय ध्रुव स्वभाव ही, एक मात्र सुन्दर जग में।
जिसकी परिणति उसमें ठहरे, वह स्वयं विचरती शिवमग में।।13।।

वह समवसरण में सिंहासन पर, गगन मध्य शोभित होता।
रत्नत्रय के भूषण पहने, अपनी प्रभुता प्रगटाता।।14।।

पर नहीं यहाँ भी इतिश्री, योगों को तज स्थिर होता।
अरु एक समय में सिद्ध हुआ, लोकाग्र जाय अविचल होता।।15।।

जिनमार्ग

कितना सुन्दर, कितना सुखमय, अहो सहज जिनपंथ है।
धन्य-धन्य स्वाधीन निराकुल, मार्ग परम निर्ग्रन्थ है।।टेक।।

श्री सर्वज्ञ प्रणेता जिसके, धर्म पिता अति उपकारी।
तत्त्वों का शुभ मर्म बताती, माँ जिनवाणी हितकारी।
अंगुली पकड़ सिखाते चलना, ज्ञानी गुरु निर्ग्रन्थ हैं।।धन्य.।।1।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा ही, समकित का सोपान है।
महाभाग्य से अवसर आया, करो सही पहिचान है।।
पर की प्रीति महा दुख:दायी, कहा श्री भगवंत है।
धन्य-धन्य स्वाधीन निराकुल, मार्ग परम निर्ग्रन्थ है।।2।।

निर्णय में उपयोग लगाना ही, पहला पुरुषार्थ है।
तत्त्व विचार सहित प्राणी ही, समझ सके परमार्थ है।।
भेदज्ञान कर करो स्वानुभव, विलसे सौख्य बसंत है।।धन्य.।।3।।

ज्ञानाभ्यास करो मनमाहीं, विषय-कषायों को त्यागो।
कोटि उपाय बनाय भव्य, संयम में ही नित चित पागो।।
ऐसे ही परमानन्द वेदें, देखो ज्ञानी संत हैं।।धन्य.।।4।।

रत्नत्रयमय अक्षय सम्पत्ति, जिनके प्रगटी सुखकारी।
अहो! शुभाशुभ कर्मोदय में, परिणति रहती अविकारी।।
उनकी चरण शरण से ही हो, दुखमय भव का अंत है।।धन्य.।।5।।

क्षमाभाव हो दोषों के प्रति, क्षोभ नहीं किंचित् आवे।
समता भाव आराधन से निज, चित्त नहीं डिगने पावे।।
उर में सदा विराजें अब तो, मंगलमय भगवंत हैं।।धन्य.।।6।।

हो निशंक-निरपेक्ष परिणति, आराधन में लगी रहे।
क्लेशित हो नहीं पापोदय में, जिनभक्ति में पगी रहे।।
पुण्योदय में अटक न जावे, दीखे साध्य महंत है।।धन्य.।।7।।

परलक्षी वृत्ति ही आकर, शिवसाधन में विघ्न करे।
हो पुरुषार्थ अलौकिक ऐसा, सावधान हर समय रहे।।
नहीं दीनता, नहीं निराशा, आतम शक्ति अनंत है।।धन्य.।।8।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाहे जैसा जगत परिणमे, इष्टानिष्ट विकल्प न हो।
ऐसा सुन्दर मिला समागम, अब मिथ्या संकल्प न हो।।
शान्तभाव हो प्रत्यक्ष भासे, मिटे कषाय दुरन्त है।
धन्य-धन्य स्वाधीन निराकुल, मार्ग परम निर्ग्रन्थ है।।9।।

यही भावना प्रभो स्वप्न में भी, विराधना रंच न हो।
सत्य-सरल परिणाम रहें नित, मन में कोई प्रपंच न हो।।
विषय कषायारम्भ रहित, आनन्दमय पद निर्ग्रन्थ है।।धन्य.।।10।।

धन्य घड़ी हो जब प्रगटावे, मंगलकारी जिनदीक्षा।
प्रचुर स्वसंवेदनमय जीवन, होय सफल तब ही शिक्षा।।
अविरल निर्मल आत्मध्यान हो, होय भ्रमण का अंत है।।धन्य.11।।

अहो! जितेन्द्रिय जितमोही ही, सहज परम पद पाता है।
समता से सम्पन्न साधु ही, सिद्ध दशा प्रगटाता है।।
बुद्धि व्यवस्थित हुई सहज ही, यही सहज शिवपंथ है।।धन्य.।।12।।

आराधन में क्षण-क्षण बीते, हो प्रभावना सुखकारी।
इसी मार्ग में सब लग जावें, भाव यही मंगलकारी।।
सद्दृष्टि-सद्ज्ञान चरणमय, लोकोत्तम यह पंथ है।।धन्य.।।13।।

तीनलोक अरु तीनकाल में, शरण यही है भविजन को।
द्रव्य दृष्टि से निज में पाओ, व्यर्थ न भटकाओ मन को।।
इसी मार्ग में लगें-लगावें, वे ही सच्चे संत हैं।।धन्य.।।14।।

है शाश्वत अकृत्रिम वस्तु, ज्ञानस्वभावी आत्मा।
जो आतम आराधन करते, बनें सहज परमात्मा।।
परभावों से भिन्न निहारो, आप स्वयं भगवंत है।।धन्य.।।15।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

श्री तीर्थ वंदना

(चौपाई)

तीर्थ-वन्दना मंगलकारी, तीर्थ-वन्दना आनन्दकारी।।टेक।।

महाभाग्य से हो जिनदर्शन, महाभाग्य से चरण-स्पर्शन।
भाव-विशुद्धि हो सुखकारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।1।।

प्रभु की शांतिछवि को निरखें, परमतत्त्व को अब हम परखें।
शाश्वत ज्ञायक प्रभु अविकारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।2।।

आत्म साधना की यह भूमि, धर्माराधन की यह भूमि।
भायें तत्त्व-भावना प्यारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।3।।

यहाँ संतों की याद सु-आये, मुक्तिमार्ग में मन ललचाये।
छूटें जग प्रपंच दुखकारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।4।।

अहो! जिनेश्वर क्या कहते हैं, सदा सहज निज में रहते हैं।
हम भी होवें शिवमगचारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।5।।

हो सम्यक् श्रद्धान हमारा, हो निर्मल सद्ज्ञान हमारा।
होवें सम्यक् चारित्रधारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।6।।

नहीं कामना भोगों की हो, नहीं याचना वैभव की हो।
प्रभु सम प्रभुता होय हमारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।7।।

भक्ति भाव से प्रभु गुण गावें, प्रभु को हृदय माँहिं बसावें।
सफल वंदना होय हमारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी।।8।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्म-भावना

(तर्ज-मेरी भावना)

निजस्वभाव में लीन हुए, तब वीतराग सर्वज्ञ हुए।
भव्य भाग्य अरु कुछ नियोग से, जिनके वचन प्रसिद्ध हुए।।1।।

मुक्तिमार्ग मिला भव्यों को, वे भी बंधन मुक्त रहें।
उनमें निजस्वभाव दर्शकता, देख भक्ति से विनत रहें।।2।।

वीतराग सर्वज्ञ ध्वनित जो, सप्त तत्त्व परकाशक है।
अविरोधी जो न्याय तर्क से, मिथ्यामति का नाशक है।।3।।

नहीं उल्लंघ सके प्रतिवादी, धर्म अहिंसा है जिसमें।
आत्मोन्नति की मार्ग विधायक, जिनवाणी हम नित्य नमें।।4।।

विषय कषाय आरम्भ न जिनके, रत्नत्रय निधि रखते हैं।
मुख्य रूप से निज स्वभाव, साधन में तत्पर रहते हैं।।5।।

अट्ठाईस मूलगुण जिनके सहजरूप से पलते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु गुरु का, हम अभिनन्दन करते हैं।।6।।

उन सम निज का हो अवलम्बन, उनका ही अनुकरण करूँ।
उन्हीं जैसी परिचर्या से, आत्मभाव को प्रकट करूँ।।7।।

अष्ट मूलगुण धारण कर, अन्याय अनीति त्यागूँ मैं।
छोड़ अभक्ष्य सप्त व्यसनों को, पंच पाप परिहारूँ मैं।।8।।

सदा करूँ स्वाध्याय तत्त्वनिर्णय सामायिक आराधन।
विनय युक्ति और ज्ञानदान से, राग घटाऊँ मैं पावन।।9।।

जितनी मंद कषाय होय, उसका न करूँ अभिमान कभी।
लक्ष्य पूर्णता का अपनाकर, सहूँ परीषह दुःख सभी।।10।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणीजनों पर हो श्रद्धा, व्यवहार और निश्चय सेवा।
उनकी करें दुःखी प्रति करुणा, हमको होवे सुख देवा।।11।।

शत्रु न जग में दीखे कोई, उन पर भी नहिं क्षोभ करूँ।
यदि संभव हो किसी युक्ति से, उनमें भी सद्ज्ञान भरूँ।।12।।

राग नहीं हो लक्ष्मी का, नहीं लोकजनों की किंचित् लाज।
प्रभु वचनों से जो प्रशस्त पथ, उसमें ही होवे अनुराग।।13।।

होय प्रशंसा अथवा निंदा कितने हों उपसर्ग कदा।
उन पर दृष्टि भी नहिं जावे, परिणति में हो साम्य सदा।।14।।

होवे मौत अभी ही चाहे, कभी न पथ से विचलित हो।
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग में, सदा मेरु से अचलित हो।।15।।

चाह नहीं हो परद्रव्यों की, विषयों की तृष्णा जावे।
क्षण-क्षण चिन्तन रहे तत्त्व का, खोटे भाव नहीं आवे।।16।।

समय-समय निज अनुभव होवे, आतम में थिरता आवे।
सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चरण से, शिवसुख स्वयं निकट आवे।।17।।

प्रगट होय निर्ग्रन्थ अवस्था, निश्चय आतम ध्यान धरूँ।
स्वाभाविक आतम गुण प्रगटे, सकल कर्ममल नाश करूँ।।18।।

होवे अन्त भावनाओं का, यही भावना भाता हूँ।
भेद दृष्टि के सब विकल्प तज, निज स्वभाव में रहता हूँ।।19।।

(दोहा)

सुखमय आत्मस्वभाव है, ज्ञाता-दृष्टा ग्राह्य।
लीन आत्मा में रहे, स्वयं सिद्ध पद पाय।।20।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपनी वैभव गाथा

(मरहठा–माधवी)

आत्मन् अपनी वैभव गाथा, सुनो परम आनन्दमय।
स्वानुभूति से कर प्रमाण, प्रगटाओ सहज सौख्य अक्षय।।टेक।।

स्वयं–सिद्ध सत् रूप प्रभु, नहिं आदि मध्य अवसान है।
तीन लोक चूड़ामणि आतम, प्रभुता सिद्ध समान है।।
सिद्ध प्रभु ज्यों ज्ञाता त्यों ही, तुम ज्ञाता भगवान हो।
करो विकल्प न पूर्ण अपूर्ण का, निर्विकल्प अम्लान हो।।
निश्चय ही परमानन्द विलसे, सर्व दुखों का होवे क्षय।।1।।

हों संयोग भले ही कितने, संयोगों से भिन्न सदा।
नहीं तजे निजरूप कदाचित्, होवे नहीं पररूप कदा।।
कर्मबंध यद्यपि अनादि से, तदपि रहे निर्बन्ध सदा।
वैभाविक परिणमन होय, फिर भी तो है निर्द्वन्द अहा।।
देखो–देखो द्रव्यदृष्टि से, चित्स्वरूप अनुपम सुखमय।।2।।

एक–एक शक्ति की महिमा, वचनों में तो नहिं आवे।
शक्ति अनंतों उछलें शाश्वत, चिन्तन पार नहीं पावे।।
प्रभु स्वाधीन अखण्ड प्रतापी, अकृत्रिम भगवान अहो।
जो भी ध्यावे शिवपद पावे, ध्रुव परमेष्ठी रूप विभो।।
भ्रम को छोड़ो करो प्रतीति, हो निशंक निश्चल निर्भय।।3।।

केवलज्ञान अनंता प्रगटे, ऐसा ज्ञान स्वरूप अहो।
काल अनंत–अनंतसुख विलसे, है अव्ययसुख सिंधु अहो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनंत ज्ञान में भी अनंत ही, निज स्वरूप दर्शाया है।
पूर्णपने तो दिव्यध्वनि में भी, न ध्वनित हो पाया है।।
देखो प्रभुता इक मुहूर्त में, सब कर्मों पर लहे विजय।।4।।
आत्मज्ञान बिन चक्री इन्द्रादिक भी, तृप्ति नहीं पावें।
सम्यक् ज्ञानी नरकादिक में भी, अपूर्व शान्ति पावें।।
इसीलिये चक्री तीर्थंकर, बाह्य विभूति को तजते।
हो निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनिवर, चिदानन्द पद में रमते।।
धन्य-धन्य वे ज्ञानी ध्यावें, समयसार निज समय-समय।।5।।
चक्रवर्ती की नवनिधियाँ पर, निज निधियों का पार नहीं।
चौदह रत्न चक्रवर्ती के, आतम गुण भण्डार सही।।
चक्रवर्ती का वैभव नश्वर, आत्म-विभूति अविनाशी।
जो पावे सो होय अयाची, कट जाये आशापाशी।।
झूठी दैन्य निराशा तजकर, पाओ वैभव मंगलमय।।6।।
चंचल विपुल विकल्पों को तो, एक स्फुलिंग ही नाशे।
आतम तेजपुञ्ज सर्वोतम, कौन मुमुक्षु न अभिलाषे।।
चिंतामणि तो पुण्य प्रमाणे, जग इच्छाओं को पूरे।
धन्य-धन्य चेतन चिंतामणि, क्षण में वांछायें चूरे।।
निर्वांछक हों अहो अनुभवो, अविनश्वर कल्याण मय।।7।।
जिनधर्मों की पूजा करते, उनका धर्मी शुद्धातम।
परमपूज्य जानो पहिचानो, शुद्ध चिदम्बर परमातम।।
परमपारिणामिक ध्रुवज्ञायक, लोकोत्तम अनुपम अभिराम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नित्यनिरंजन परमज्योतिमय, परमब्रह्म अविचल गुणधाम।।
करो प्रतीति अनुभव परिणति, निज में ही हो जाय विलय।।8।।

गुरु की गुरुता, प्रभु की प्रभुता, आत्माश्रय से ही प्रगटे।
भव-भव के दुखदायी बंधन, स्वाश्रय से क्षण में विघटे।।
आत्मध्यान ही उत्तम औषधि, भव का रोग मिटाने को।
आत्मध्यान ही एक मात्र साधन है, शिवसुख पाने को।।
झूठे अहंकार को छोड़ो, शुद्धातम की करो विनय।।9।।

रुचि न लगे यदि कहीं तुम्हारी, एक बार निज को देखो।
खुली हुई द्रव्यार्थिक चक्षु से, निज महिमा को देखो।।
भ्रांति मिटेगी, शांति मिलेगी, सहज प्रतीति आयेगी।
समाधान निज में ही होगा, आकुलता मिट जायेगी।।
चूक न जाना स्वर्णिम अवसर, करो निजातम का निश्चय।।10।।

मेरा सहज जीवन

अहो! चैतन्य आनन्दमय, सहज जीवन हमारा है।
अनादि अनंत पर निरपेक्ष, ध्रुव जीवन हमारा है।।टेक।।

हमारे में न कुछ पर का, हमारा भी नहीं पर में।
द्रव्य-दृष्टि हुई सच्ची, आज प्रत्यक्ष निहारा है।।1।।

अनंतों शक्तियाँ उछलें, सहज सुख ज्ञानमय विलसें।
अहो! प्रभुता परम पावन, वीर्य का भी न पारा है।।2।।

नहीं जन्मूँ नहीं मरता, नहीं घटता नहीं बढ़ता।
अगुरूलघु रूप ध्रुव ज्ञायक, सहज जीवन हमारा है।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहज ऐश्वर्यमय मुक्ति, अनंतों गुण मयी ऋद्धि।
विलसती नित्य ही सिद्धि, सहज जीवन हमारा है।।4।।

किसी से कुछ नहीं लेना, किसी को कुछ नहीं देना।
अहो! निश्चिंत परमानन्दमय, जीवन हमारा है।।5।।

ज्ञानमय लोक है मेरा, ज्ञान ही रूप है मेरा।
परम निर्दोष समता मय, ज्ञान जीवन हमारा है।।6।।

मुक्ति में व्यक्त है जैसा, यहाँ अव्यक्त है वैसा।
अबद्धस्पृष्ट अनन्य, नियत जीवन हमारा है।।7।।

सदा ही है न होता है, न जिसमें कुछ भी होता है।
अहो! उत्पाद व्यय निरपेक्ष, ध्रुव जीवन हमारा है।।8।।

विनाशी बाह्य जीवन की, आज ममता तजी झूठी।
रहे चाहे अभी जाये, सहज जीवन हमारा है।।9।।

नहीं परवाह अब जग की, नहीं है चाह शिवपद की।
अहो! परिपूर्ण निष्पृह ज्ञानमय, जीवन हमारा है।।10।।

अपना स्वरूप

रे जीव! तू अपना स्वरूप, देख तो अहा।
दृग-ज्ञान-सुख-वीर्य का, भण्डार है भरा ।।टेक।।

नहिं जन्मता मरता नहीं, शाश्वत प्रभु कहा।
उत्पाद व्यय होते हुये भी ध्रौव्य ही रहा।।1।।

पर से नहीं लेता, नहीं देता तनिक पर को।
निरपेक्ष है पर से स्वयं में पूर्ण ही अहा।।2।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्त्ता नहीं भोक्ता नहीं, स्वामी नहीं पर का।
अत्यंताभाव रूप से, ज्ञायक ही प्रभु सदा।।3।।

पर को नहीं मेरी कभी, मुझको नहीं पर की।
जरूरत पड़े सब परिणमन स्वतंत्र ही अहा।।4।।

पर दृष्टि झूठी छोड़कर, निज दृष्टि तू करे।
निज में ही मग्न होय, तो आनन्द हो महा।।5।।

बस मुक्तिमार्ग है यही, निज दृष्टि अनुभवन।
निज में ही होवे लीनता, शिव पद स्वयं लहा।।6।।

'आत्मन्' कहूँ महिमा कहाँ तक, आत्म भाव की।
जिससे बने परमात्मा, शुद्धात्म वह कहा।।7।।

चेतो-चेतो आराधना में

देखो-देखो यह जीव की, विराधना का फल।
चेतो-चेतो आराधना में, मत बनो निर्बल।।टेक।।

पाषण खण्ड कह रहे, कठोरता त्यागो।
विनम्र हो उत्साह से, शिवमार्ग में लागो।।
बहते हुए झरने कहें, धोओ मिथ्यात्व मल।। देखो-देखो.. ।।

ईर्ष्या त्यागो जलती हुई, अग्नि है कह रही।
मत चाह दाह में जलो, सुख अन्तर में सही।।
वायु कहे भ्रमना वृथा, होओ निज में निश्चल। देखो-देखो.. ।।

जड़ता छोड़ो प्रमाद को नाशो कहें तरुवर।
शुद्धातमा ही सार है, उपदेश दें गुरुवर।।
समझो-समझो निजात्मा, अवसर बीते पल-पल।। देखो-देखो.. ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मायाचारी संक्लेशता का, फल कहें तिर्यंच।
जागो अब मोह नींद से, छोड़ो झूठे प्रपञ्च।।
जिनधर्म पाया भाग्य से, दृष्टि करो निर्मल।। देखो-देखो.. ।।

शृंगार अरु भोगों की रूचि का, फल कहती नारी।
कंजूसी पूर्वक संचय का, फल कहते भिखारी।।
बहु आरम्भ परिग्रह फल में, नारकी व्याकुल।। देखो-देखो.. ।।

असहाय शक्ति हीन, देखो दरिद्री रोगी।
कोई इष्ट वियोगी, कोई अनिष्ट संयोगी।।
घिनावना तन रूप, अंगोपांग है शिथिल।। देखो-देखो.. ।।

यदि ये दुःख इष्ट नहीं हैं, तो निज भाव सुधारो।
निवृत्त हो विषय कषायों से, निजतत्त्व विचारो।।
चक्री के वैभव भोग भी, सुख देने में असफल।। देखो-देखो.. ।

पाकर किञ्चित् अनुकूलताएँ, व्यर्थ मत फूलो।
हैं पराधीन आकुलतामय, नहीं मोह में भूलो।।
ध्रुव चिदानन्दमय आत्मा, लक्ष्य करो अविरल।। देखो-देखो.. ।।

पुण्यों की भी तृष्णायतनता, अबाधित जानो।
बन्धन तो बन्धन ही, उसे शिवमार्ग मत मानो।।
ज्यों अंक बिन बिन्दी, त्यों स्वानुभव बिन जीवन निष्फल।। देखो-देखो.. ।।

अब योग तो सब ही मिले, पुरुषार्थ जगाओ।
अन्तर्मुख हो बस मात्र, जाननहार जनाओ।।
सन्तुष्ट निज में ही रहो, ब्रह्मचर्य हो सफल।। देखो-देखो.. ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब प्राप्य निज में ही अहो, स्थिरता उर लाओ।
तुम नाम पर व्यवहार के, बाहर न भरमाओ।।
निर्ग्रन्थ हो निर्द्वन्द हो ध्याओ, निजपद अविचल।।देखो-देखो..।।

निज में ही सावधान ज्ञानी, साधु जो रहते।
वे ही जग के कल्याण में, निमित्त हैं होते।।
ध्याओ ध्याओ शुद्धात्मा, पर की चिन्ता निष्फल।।देखो-देखो..।।

निर्बन्ध के इस पंथ में, जोड़ो नहीं सम्बन्ध।
विचरो एकाकी निष्पृही, निर्भय सहज निशंक।।
निर्मूढ़ हो निर्मोही हो, पाओ शिवपद अविचल।।देखो-देखो..।।

श्री चन्द्रप्रभ स्तुति

अशरण जग में चन्द्रनाथ जिन, साँचे शरण तुम्हीं हो।
भव सागर से पार लगाओ, तारण तरण तुम्हीं हो।।टेक।।

दर्शन पाकर अहो जिनेश्वर, मन में अति उल्लास हुआ।
देहादिक से भिन्न आत्मा, अन्तर में प्रत्यक्ष हुआ।।
आराधन की लगी लगन प्रभु, परमादर्श तुम्हीं हो।
भवसागर से पार लगाओ, तारण तरण तुम्हीं हो।।1।।

अद्भुत प्रभुता झलक रही है, निरखत हुआ निहाल मैं।
रत्नत्रय की निधियाँ बरसे, हुआ सु मालामाल मैं।।
समतामय ही जीवन होवे, प्रभु अवलम्ब तुम्हीं हो।
भवसागर से पार लगाओ, तारण तरण तुम्हीं हो।।2।।

मोह न आवे क्षोभ न आवे, ज्ञाता मात्र रहूँ मैं।
अविरल ध्याऊँ चित्स्वरूप मैं, अक्षय सौख्य लहूँ मैं।।
हो निष्काम वन्दना स्वामी, मेरे नाथ तुम्हीं हो।
भवसागर से पार लगाओ, तारण तरण तुम्हीं हो।।3।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वादश खण्ड : विधान की विधि एवं शांति विधान

विधान प्रारम्भ करने की विधि

जाप्य स्थापना

(1) जाप में बैठने वालों के लिए आवश्यक नियम :-

(विधानाचार्यद्वारा निम्न नियम जाप में बैठने वाले भाइयों को बता दिए जावें)

1. मण्डल विधान में अपनी शक्ति व समय का विचार कर 11 हजार, 21 हजार, 51 हजार, 71 हजार या सवा लाख तक जप प्रतिष्ठाचार्य द्वारा निर्दिष्ट मंत्र का किया जाना चाहिए।
2. जप करने वाले व्यक्ति गृहीतमिथ्यात्व, लोकनिंद्यकार्य, अन्याय व अभक्ष्य के त्यागी अवश्य हों।
3. अनुष्ठान के दिनों में पूर्ण संयम, ब्रह्मचर्य से रहें।
4. रात्रि में चारों प्रकार के आहार (खाद्य, पान, लेह, स्वाद्य) ग्रहण नहीं करें। बाजार (होटलादि) का भोजन न लें। दिन में दो बार शुद्ध भोजन करें। बीच में पान, सुपारी, गुटका आदि का सेवन न करें।
5. मंत्र का शुद्ध उच्चारण करें एवं परस्पर बातें न करें।
6. शारीरिक व मानसिक व्याधियुक्त न हों।
7. जप के समय शुद्ध धोती-दुपट्टे पहनें।
8. मन्त्र का जाप प्रतिदिन करें तथा अपना संकल्प पूरा करें।
9. जप के पूर्ण होने पर्यंत यज्ञोपवीत धारण करें तथा सभी नियमों का पालन करें।
10. महोत्सव की अवधि तक एवं सदा को चमड़े की वस्तुओं के प्रयोग का त्याग करें।
11. सूर्योदय के पश्चात् एवं सूर्यास्त के पूर्व दिन में ही जप करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(2) जाप्य स्थापना विधि में निम्न कार्य सम्पन्न होंगे :-

(क) प्रारम्भिक तैयारी (ख) मंगल कलश स्थापना (ग) यन्त्राभिषेक (घ) अमृत स्नान (ङ) मंगलाचरण (त) अंगन्यास (थ) पंचपरमेष्ठी पूजन (द) जाप संकल्प।

क. प्रारम्भिक तैयारी :-

विधान प्रारम्भ करने वाले दिन प्रातःकाल सूर्योदय के बाद जाप प्रारम्भ करें। जाप का स्थान एकान्त में हो, जहाँ बालक या अन्य जन जाप में व्यवधान न कर सकें। कमरा शुद्ध जल से धोकर साफ कर लिया जाए।

पूर्व या उत्तर दिशा में सन्मुख शुद्ध जल से धोकर टेबिल, चौकी एवं सिंहासन रखें। टेबिल के ऊपर चंदोवा बाँधे तथा चंदोवे के बीच में सिंहासन के ऊपर छत्र बाँधे। टेबिल पर यंत्राभिषेक के लिए थाली, शुद्ध जल के दो कलश एवं शुद्ध वस्त्र रखें।

टेबिल के दोनों और जाप में बैठने वाले व्यक्तियों की संख्यानुसार शुद्धजल से धुले हुए पाटे लगा दिये जावें जिन पर निम्न सामग्री रखी जाए:-

(पूजन की सामग्री, पूजन की पुस्तक, माला, लवंग, एक कटोरी में संकल्प की सामग्री (हल्दी सुपारी, पीली सरसों) एवं कागज पर लिखा हुआ जाप का मन्त्र)

सर्वप्रथम सिंहासन पर विनायकयन्त्र विराजमान करें।

ख. मंगल कलश स्थापना :-

मंगल कलश में हल्दी, सुपारी, सवा रुपया, पुष्प, पीली सरसों आदि डालकर उसके मुँह पर नारियल रखकर केशरिया कपड़े से रक्षा बंधन के धागे से अच्छी तरह पहिले से बंद कर चंदन, गोटा,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कागज आदि की माला तैयार रखें। विधानाचार्य निम्न मन्त्र बोलकर विधान कराने वाले या अन्य प्रमुख व्यक्ति द्वारा यन्त्रजी के बांये तरफ पुष्पों से स्वस्तिक बनाकर मंगलश कलश स्थापित करायें।

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणो मतेऽस्मिन्..मासे..पक्षे..तिथौ..वासरे..वर्षे इह..नगरे...मन्दिरे.. कार्यस्य निर्विघ्नसमाप्तर्थं मण्डपभूमिशुद्धयर्थं पात्रशुद्धयर्थं शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं पंचरत्न-गंधपुष्पाक्षतादिबीजपूरशोभित मंगलकलशस्थापनं करोम्यहम् क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

ग. यन्त्राभिषेक :-

यन्त्र भी थाली में विराजमान करके विधानाचार्य निम्न मन्त्र बोलते हुए दो प्रमुख व्यक्तियों से यन्त्रजी का अभिषेक कराएँ।

ॐ ह्रीं भूर्भुवः स्वरिह विघ्नौघवारकं यन्त्रं वयं परिषेचयामः।

(अभिषेक के पश्चात् शुद्ध वस्त्र से यन्त्रजी को पोंछकर पुनः सिंहासन पर विराजमान करें।)

द. अमृतस्नान :-

विधानाचार्य, जाप में सम्मिलित होने वाले सभी व्यक्तियों को हाथ धोकर दाहिने हाथ में जल लेने का निर्देश देते हुए निम्न मन्त्र बोलकर जल के छींटे मस्तक पर डालने को कहें।

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणे अमृतं द्रावय द्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सं स्वाहा।

ङ. मंगलाचरण के लिए :-

प्रारम्भ में दिये गये मंगलाष्टक/मंगल पंचक पढ़ते समय प्रत्येक छन्द के अन्त में थाली में पुष्प क्षेपण करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त. अंगन्यास :-

• मंगलाष्टक के बाद शरीर की रक्षा तत्तद् दिशाओं से आनेवाले विघ्नों की निवृत्ति के लिए नीचे लिखे अनुसार अंगन्यास करें। दोनों हाथों से अंगुष्ठ से लेकर कनिष्ठिका पर्यन्त पाँचों अंगुलियों में क्रम से अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी की स्थापना करें।

- सर्वप्रथम दोनों हाथों के अंगूठों को बराबरी से मिलाकर सामने करें। इस मन्त्र का उच्चारण कर सिर झुकावें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

- निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें और दोनों हाथों की तर्जनियों (अंगूठे के पास की अंगुलियों) को बराबरी से मिलाकर सामने करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

- निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें फिर बीच की दोनों अंगुलियों को मिलाकर सामने करके-

ॐ ह्रूं णमो आइरीयाणं ह्रूं मध्यामाभ्यां नमः।

- निम्न मन्त्र पढ़कर दोनों अनामिकाओं को सामने करें और

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः

- निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें फिर दोनों छिंगुरियों को मिलाकर सामने करें और-

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः

- निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें फिर दोनों हथेलियों को बराबर सामने फैलाकर-

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

– निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें फिर दोनों करपृष्ठों को बराबर सामने फैलाकर–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

– निम्न मन्त्र पढ़कर सिर झुकावें और निम्न मन्त्र पढ़कर अपने सिर का स्पर्श करें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा।

– निम्न मन्त्र पढ़कर अपने मुख का स्पर्श करें–

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वंदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

– निम्न मन्त्र पढ़कर हृदय का स्पर्श करें–

ॐ ह्रूं णमो आइरीयाणं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

– निम्न मन्त्र पढ़कर नाभि का स्पर्श करें–

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

– निम्न मन्त्र पढ़कर पैरों का स्पर्श करें–

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

– निम्न मन्त्र पढ़कर शरीर पर जल सिंचन करें–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांग शुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

– निम्न मन्त्र पढ़कर प्रतिष्ठाचार्य पूर्व दिशा में पुष्प अथवा पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां पूर्वदिशः आगतविघ्नान् निवारय
निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

– निम्न मन्त्र पढ़कर दक्षिण दिशा में पुष्प अथवा पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशः आगतविघ्नान् निवारय
निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

– **निम्न मन्त्र पढ़कर पश्चिम दिशा में पुष्प अथवा पीली सरसों क्षेपण करें।**

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

– **निम्न मन्त्र पढ़कर उत्तर दिशा में पुष्प अथवा पीली सरसों क्षेपण करें।**

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

– **निम्न मन्त्र पढ़कर दशों दिशाओं में पुष्प या पीली सरसों क्षेपण करें।**

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिग्भ्यः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

– **निम्न मन्त्र पढ़कर अपने शरीर का स्पर्श करें–**

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मम गात्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

– **निम्न मन्त्र पढ़कर अपने वस्त्रों का स्पर्श करें–**

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

– **निम्न मन्त्र पढ़कर अपने पूजन सामग्री का स्पर्श करें–**

ॐ ह्रूं णमो आइरीयाणं ह्रूं मम पूजा द्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

– **निम्न मन्त्र पढ़कर अपने खड़े होने की जगह की ओर देखें।**

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

– **निम्न मन्त्र पढ़कर चुल्लू में जल लेकर सब ओर क्षेपण करें।**

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वं जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

– **निम्न मन्त्र से चुल्लू के जल को मन्त्रित कर अपने सिर पर सींचे।**

क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्वदिशासु, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदिशासु ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतं स्रावयं सं सं ब्लीं ब्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

- तदन्तर प्रतिष्ठाचार्य पुष्प अथवा पीली सरसों को सात बार निम्न मंत्र पढ़कर परिचारकों के सिर पर डालें।

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

- तत्पश्चात् निम्न मंत्र से पुष्प अथवा पीली सरसों को मंत्रित कर सब दिशाओं में फैंके।

ॐ हूं फट् किरिट किरिट घातय घातय परिविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द वा: वा: हूं फट् स्वाहा।

- निम्न मन्त्र पढ़कर जप करने वाले महाशयों के दाहिने मणिबन्ध (कलाई) में रक्षासूत्र बांधें।

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

- तदनन्तर निम्नोक्त श्लोक पढ़कर जाप करने वाले अपने ललाट पर केशर का तिलक लगावें-

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

निम्न मंत्र का सबसे उच्चारण कराकर यज्ञोपवीत धारण करावें।

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणाय अहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

थ. पंचपरमेष्ठी पूजन :-

पूजन पीठिका को पढ़कर पंचपरमेष्ठी पूजन करें।

द. जाप संकल्प :-

जिस मंत्र का जाप करना हो वह मंत्र जाप करने वाले प्रत्येक व्यक्ति से सुन लिया जाए, तथा शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करा दिया जाए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाप में बैठनेवाले व्यक्तियों की संख्या के आधार पर जाप की कुल संख्या का परिणाम इस प्रकार निर्धारित करें कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन अधिकतम 7 या 9 मालाओं का जाप करें।

जाप करने वाले व्यक्ति खड़े होकर दाहिने हाथ में संकल्प की सामग्री ले लें। विधानाचार्य द्वारा निम्न मन्त्र छोटे-छोटे हिस्सों में पढ़ा जाए जिसे सभी लोग दोहराएँ। संकल्प करने के बाद संकल्प की सामग्री पाटे के दायें कोने पर रख दी जाए। यह सामग्री पूरे विधान पर्यन्त इसी स्थान पर रखी रहे।

संकल्प लेने का मन्त्र

"ॐ जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे...देशे...प्रान्ते...नगरे... ऋतो...मासे...तिथौ...संवत्सरे...जैन मन्दिरे...कार्यस्य निर्विघ्न समाप्तर्थं...इति प्रमितस्य जापस्य संकल्पं कुर्मः, निर्विघ्नं समाप्तिर्भवतु अर्हं नमः स्वाहा।"

जाप के मंत्र-निम्न में से प्रसंगानुसार किसी एक मन्त्र के जाप का संकल्प करायें।

1. ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
3. ॐ ह्रौं ह्रीं श्री क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरहंताणं सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।
4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा मध्यलोकसम्बन्धी चतुशताष्टपंचाशज्जिन चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधी शाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0: Public Domain. Digitized by Sarayu Trust and eGangotri

ध्वजारोहण विधि

मण्डप की अग्रभूमि में व्यवस्थानुसार ध्वजदण्ड के पास ऊँची टेबल पर सिंहासन में विनायक यंत्र विराजमान कर पंचपरमेष्ठी की पूजन करें। पूजनोपरान्त मन्त्रोच्चार करते हुए ध्वजारोहणकर्ता द्वारा ध्वजदण्ड की शुद्धि कराके उस पर रक्षा सूत्र बंधवा दें।

निम्न मन्त्र द्वारा ध्वजदण्ड की शुद्धि करावें-

ॐ ह्रीं श्री नमोऽर्हते पवित्र जलेन ध्वजदण्ड शुद्धिं करोमि।

निम्न मन्त्र द्वारा ध्वजदण्ड में रक्षा सूत्र बंधवों-

ॐ ह्रीं त्रिवर्णसूत्रेण ध्वजदण्डं परिवेष्टयामि।

ध्वजदण्ड एवं ध्वज पर केसर से स्वस्तिक बनाकर साधर्मी, धर्मात्मा आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा ध्वजारोहण कराया जाये। ध्वजारोहण के समय निम्न श्लोक एवं मंत्रोच्चार करें-

तदग्रदेशे ध्वजदण्डमुच्चैर्भस्वद्विमानं गमनाद्विस्थत्।
निवेश्यलग्ने शुभभोपदेश्यं महत्पताकोच्छ्रयणं विदध्यात्।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासनपताके सदोच्छ्रिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा।

(ध्वजारोहण के पश्चात् निम्न गीत बोले)

लहर-लहर-लहराये केशरिया झण्डा जिनमत का
केशरिया झण्डा जिनमत का हों जी हो जी....
यह सबका मन हरषाये, केशरिया झण्डा जिनमत का..

फर फर-फर फर करता झण्डा, गगन शिखर पर डोले-2
स्वस्तिक का यह चिन्ह अनूठा भेद हृदय के खोले-2
यह ज्ञान की ज्योति जलाये, केशरिया झण्डा....

इसकी शीतल छाया में हम, पढ़े रतन जिनवाणी-2
सत्य अहिंसा प्रेम मार्ग पर बने देश लासानी-2
यह सत्पथ पर पहुँचाये, केशरिया झण्डा....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री शान्ति मण्डल विधान (लघु)

(श्री नवदेवताओं की पूजन)

समुच्चय पूजन

(हरिगीतिका)

अरहंत सिद्धाचार्य पाठक साधु जिनप्रतिमा महान।
जिनालय जिनध्वनि तथा जिनधर्म है जग में प्रधान।।
यही हैं नवदेव पावन सकल दुखहर्ता सदा।
परम शिवसुख शान्तिदाता करूँ पूजन सर्वदा।।
विनय से वन्दन करूँ नित हृदय से ध्याऊँ प्रभो।
तत्त्वज्ञान महान पाकर शान्ति पाऊँ हे विभो।।
जानकर नवदेव उत्तम चरण इनके उर धरूँ।
मुक्ति के पथ पर चलूँ मैं कर्म के बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवगर्भित अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु-जिनालय-जिनप्रतिमा-जिनवाणी-जिनधर्म अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री नवदेवगर्भित अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु-जिनालय-जिनप्रतिमा-जिनवाणी-जिनधर्म अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नवदेवगर्भित अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु-जिनालय-जिनप्रतिमा-जिनवाणी-जिनधर्म अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीरछंद)

सविनय क्षीरोदधि का प्रासुक, जल चरणाग्र चढाऊँ आज।
जन्म-जरा-मरणादि दोष हर, पाऊँ शाश्वत निज पदराज।।
पाँचों परमेष्ठी जिनमंदिर, जिनप्रतिमा जिनश्रुत जिनधर्म।
नवदेवों को वन्दन करके, हे प्रभु! हो जाऊँ निष्कर्म।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मिथ्यात्वमलविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरु सुदर्शन भद्रशालवन से लाऊँ शीतल चंदन।
भवाताप ज्वर नाश करूँ बनकर सिद्धों का लघुनंदन।।
पाँचों परमेष्ठी जिनमंदिर जिनप्रतिमा जिनश्रुत जिनधर्म।
नवदेवों को वन्दन करके हे प्रभु! हो जाऊँ निष्कर्म।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्य: क्रोधकषायविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु के नंदनवन से अक्षत लाऊँ धवलोज्ज्वल।
अक्षयपद की प्राप्ति हेतु मैं ध्याऊँ निजस्वभाव निर्मल।।पाँचो.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मानकषायविनाशनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु–सौमनस सुवन से विविध पुष्प लाऊँ मनहर।
कामबाण विध्वंस हेतु धारूँ उर महाशील शिवकर।।पाँचो.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मायाकषायविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरू–पाण्डुकवन जा अनुभव रस चरु निर्मित कर।
क्षुधारोग की पीर मिटाऊँ अनाहार निजपद पाकर।।पाँचो.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो लोभकषायविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्मालीमेरु निकट जा दीपक लाऊँ ज्ञानमयी।
महामोह मिथ्यात्व तिमिर हर हो जाऊँ निज ध्यानमयी।।पाँचो.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषोत्तर पर्वत पर जा ध्यान धरूँगा धर्ममयी।
निज शुद्धोपयोग केवल से हो जाऊँ वसु कर्मजयी।।पाँचो.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो विभावपरिणतिविनाशनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

पंचमेरु के कुलवृक्षों से रस वाले फल लाऊँ आज।
शाश्वत महामोक्ष फल पाऊँ गुण अनंत प्रगटा जिनराज।।पाँचो.।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचमेरु के वक्षारों पर अर्घ्य बनाऊँ भली प्रकार।
पद अनर्घ्य ध्रुवधामी पाऊँ हो जाऊँ भवसागर पार।।
पाँचों परमेष्ठी जिनमंदिर जिनप्रतिमा जिनश्रुत जिनधर्म।
नवदेवों को वन्दन करके हे प्रभु! हो जाऊँ निष्कर्म।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

संचिता भव वासना का अंत करना चाहिए।
अब कषायी भाव को सम्पूर्ण हरना चाहिए।।

जानकर सामान्य छह गुण ध्यान अपना कीजिए।
जो कि चार अभाव हैं उनको हृदय में लीजिए।।

शुद्ध षट्कारक सदा ही प्राप्त करना चाहिए।
संचिता भव वासना का अंत करना चाहिए।।

संग सामग्री यही शिवमार्ग पर लेकर चलो।
ज्ञान की दृढ़ भावना ले कर्म कालुषता दलो।।

अब हमें सिद्धत्व की ही प्राप्ति करना चाहिए।
संचिता भव वासना का अंत करना चाहिए।।

(दोहा)

महा–अर्घ्य अर्पण करूँ, श्री नवदेव महान।
परम शान्ति की प्राप्ति हित, करूँ आपका ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

जयमाला

(छन्द–मानव)

अंतर्मन शुद्ध न हो तो समकित कैसे पायेंगे।
बिन सम्यग्दर्शन चेतन सत्पथ पर कब आयेंगे।।

बिन समकित जप–तप–संयम लेकर अनंतभव धारे।
फिर भी न लाभ कुछ पाया पाये भव के अँधियारे।।

समकित बिन रत्नत्रय का पाना है पूर्ण असंभव।
अंतर्मन शुद्ध अगर है तो समकित पाना संभव।।

पहले तत्त्वाभ्यास कर फिर तत्त्वों का निर्णय कर।
उर भेदज्ञान प्रगटाकर सम्यग्दर्शन उर में धर।।

आत्मानुभूति बिन निश्चय समकित न कभी मिलता है।
बिन समकित ज्ञान–चरित के उर में ना कभी झिलता है।।

जब मुझको श्रद्धा हो उर निज का हो ज्ञान सुसम्यक्।
चारित्र सहज मिलता है शिवपथ मिलता है सम्यक्।।

ये ही रत्नत्रय पावन है मोक्षमार्ग का दाता।
फिर पूर्ण देशसंयम भी स्वयमेव हृदय में आता।।

संयम का भाव जागते ही चेतन शुद्ध होता।
चौकड़ी कषाय तीन को हरकर यह जिनमुनि होता।।

समकित पाते ही सिद्धों का लघुनंदन बन जाता।
रागों के महल गिराता आगे ही बढ़ता जाता।।

निश्चय संयम पाते ही सिद्धों समान लगता है।
इसका पुरुषार्थ देखकर चारित्रमोह भगता है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर घाति कर्म क्षय होते केवलरवि उर आता है।
अर्हन्तदशा मिलती है सर्वस्व स्वपद पाता है।।
अतएव आज ही अपना अंतर्मन शुद्ध करें हम।
मिथ्यात्व मोह रागादि भावों को पूर्ण हरें हम।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

आशीर्वाद

(दोहा)

नवदेवों का ध्यान कर, करूँ स्व-पर कल्याण।
रत्नत्रय की भक्ति से, पाऊँ पद निर्वाण।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अर्घ्यावली

श्री अरहंत परमेष्ठी को अर्घ्य

(चन्द्रायण)

सकल ज्ञेय के ज्ञायक श्री अरहंत हैं।
छियालीस गुणधारी प्रभु भगवंत हैं।।
दोष अठारह रहित नाथ है सर्वथा।
युगपत् लोकालोक जानते हैं तथा।।
अरहंतो को नमन करूँ मैं भाव से।
राग त्याग जुड़ जाऊँ शुद्ध स्वभाव से।।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र-भक्ति उर हो सदा।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी सर्वदा।।

ॐ ह्रीं श्री षट्चत्वारिंशत्गुणमण्डित अरहंतपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

सिद्ध परमेष्ठी को अर्घ्य

गुण अनंत के स्वामी सिद्धों को नमन।
मुख्य अष्ट गुणधारी प्रभुओं को नमन।।
त्रिलोकाग्र पर सिद्ध शिलापति आप हो।
निजानंद रसलीन स्वज्ञायक आप हो।।
सिद्धचक्र संबंधित सिद्ध महान हो।
तीनलोक में तुम ही श्रेष्ठ प्रधान हो।।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र-भक्ति उर हो सदा।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी सर्वदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टगुणमण्डित सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य परमेष्ठी को अर्घ्य

आचार्यों को भावसहित मेरा नमन।
ऋषि-मुनि-यति-अनगार संघ चउपति नमन।।
हैं छत्तीस गुणों के धारी सर्वदा।
पंचाचार पालते स्वामी सर्वदा।।
आचार्यों को विनय सहित वन्दन करूँ।
महामोह मिथ्यात्व तिमिर पूरा हरूँ।।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र-भक्ति उर हो सदा।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी सर्वदा।।

ॐ ह्रीं श्री षट्त्रिंशत्गुणामण्डित आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उपाध्याय परमेष्ठी को अर्घ्य

उपाध्याय गुरुवर श्रुतज्ञान प्रधान हैं।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह का ज्ञान है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं पच्चीस गुणों से शोभित सर्वदा।
यति-मुनियों को आप पढ़ाते हैं सदा।।
उपाध्याय गुरुओं को मैं वन्दन करूँ।
जो भी है अज्ञान उसे पूरा हरूँ।।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र-भक्ति उर हो सदा।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी सर्वदा।।

ॐ ह्रीं श्री पंचविंशतिगुणमण्डित-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

साधु परमेष्ठी को अर्घ्य

पंचमहाव्रत पंचसमिति पालक सुमुनि।
षट् आवश्यक पंचेन्द्रिय वश हैं सुमुनि।।
शेष सात गुण से मुनि हैं शोभायमान।
अट्ठाईस मूलगुण हैं मुनि के महान।।
ढाईद्वीप में भावलिंग मुनि हैं सदा।
त्रय कम नौ करोड़ मुनि रहते सर्वदा।।
सर्व साधु मुनियों को नित वन्दन करूँ।
मैं भी मुनि होऊँ यह भाव हृदय धरूँ।।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र-भक्ति उर हो सदा।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी सर्वदा।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशतिगुणमण्डित साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों को अर्घ्य

(चौपाई)

भरतक्षेत्र के वर्तमान प्रभु। चौबीसों तीर्थेश महाविभु।।
ऋषभअजित संभव अभिनंदन।सुमति पद्मप्रभ सुपाशर्व वंदन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चंद्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन। वासुपूज्य श्री विमल अनंत जिन।।
धर्म शान्ति श्री कुन्थु अरह प्रभु। मल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि विभु।।
पार्श्वनाथ श्री महावीर जय। शिव सुखकर्त्ता प्रभु मंगलमय।।
परम शान्ति सुखदाता स्वामी। भवदुख नाशो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री भरतक्षेत्रस्थवर्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मध्यलोक के पंचमेरु जिनालयों को अर्घ्य

(वीरछन्द)

तीनलोक में मध्यलोक है इसमें ढाईद्वीप महान।
जम्बू-धातकी-पुष्करार्ध में पाँच मेरु हैं शोभावान।।
मेरु सुदर्शन-विजय-अचल-मंदर-विद्युन्माली अभिराम।
सब में चार-चार वन सुन्दर जिनमें चार-चार जिनधाम।।
सब मिल अस्सी जिनगृह इनमें इक शत वसु प्रतिमा शोभित।
इन्द्रादिक सुर-नर-मुनि जाते दर्शन कर होते मोहित।।
सभी अकृत्रिम चैत्यालय हैं इनमें इक शत वसु जिनबिम्ब।
मैं भी दर्शन इनके करके इनमें देखूँ निज प्रतिबिम्ब।।
इन सबको मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ विनय भाव से भक्ति सहित।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी हो जाऊँ परभाव रहित।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबधि-अशीतिजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचमेरु संबंधी गजदंत जिनालयों को अर्घ्य

पंचमेरु संबंधी हैं विदिशाओं में गजदंत सुबीस।
एक-एक में चार जिनालय सब मिल विंशति जिनगृह ईश।।
सभी अकृत्रिम जिनमंदिर हैं तथा अकृत्रिम जिनप्रतिमा।
जो भी इनको वन्दन करते पाते हैं निजपद महिमा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं भी भाव सहित गजदंतों के जिनमंदिर करूँ नमन।
परम शान्ति का सिन्धु प्राप्त कर निजस्वरूप में रहूँ मगन।।
ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबधि–गजदंतजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु संबंधी वक्षार जिनालयों को अर्घ्य

एक मेरु संबंधी हैं वक्षार सुपर्वत चार महान।
पंचमेरु संबंधी हैं वक्षार बीस अति महिमावान।।
एक–एक पर चार जिनालय स्वर्णमयी बहु सुन्दर हैं।
सब मिल अस्सी जिनगृह इनमें जि प्रतिमाएँ मनहर हैं।।
इन सबको मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ विनय सहित करके वन्दन।
परम शान्ति सुख पाऊँ स्वामी पाऊँ शाश्वत मुक्ति सदन।।
ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबधि–अशीतिवक्षारस्थजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

पंचमेरु संबंधी कुलवृक्ष जिनालयों को अर्घ्य

पंचमेरु संबंधी जम्बू–शाल्मलि–धातकी–पुष्करवृक्ष।
चैत्यवृक्ष जिनगृह मैं वन्दूँ होऊँ आत्मज्ञान में दक्ष।।
पृथ्वीकायिक वृक्ष सभी हैं यही जानकर हर्षाऊँ।
परम शान्ति हित अर्घ्य चढ़ाऊँ विनय भाव उर में लाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबधि–कुलवृक्षजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचमेरु संबंधी एक सौ सत्तर विजयार्ध जिनालयों को अर्घ्य

एक मेरु संबंधी गिरि विजयार्ध क्षेत्र बत्तीस विदेह।
भरतैरावत एक–एक है भाव सहित वन्दूँ धर नेह।।
पंचमेरु संबंधी इक शत साठ श्रृंग विजयार्ध महान।
पंचैरावत पंचभरत के दस विजयार्ध सुपर्वत जान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब मिल एक शतक सत्तर विजयार्ध रजतगिरि ढाईद्वीप।
इन पर एक-एक चैत्यालय जो भव्यों के हृदय समीप।।
सब मिल एक शतक सत्तर चैत्यालय स्वर्णमयी वन्दूँ।
परम शान्ति पाऊँ हे स्वामी निज स्वभाव को अभिनन्दूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचमेरुसंबधि विजयार्धक्षेत्रस्थ सप्तत्याधिक-एकाशत जिनालयेभ्यो नि. स्वाहा।

धातकीखण्ड स्थित पुष्करार्ध संबंधी जिनालयों को अर्घ्य

द्वीप धातकी दक्षिण उत्तर दो हैं ईष्वाकार महान।
पुष्करार्ध में दक्षिण उत्तर दो हैं ईष्वाकार प्रधान।।
एक उदधि से द्वितीय उदधि तक होता है इनका विस्तार।
जिन आगम करणानुयोग का ज्ञान करूँ जो अगम अपार।।
ये सब चार जिनालय ईष्वाकार परम सुन्दर पावन।
विनय भाव से शान्ति प्राप्ति हित वन्दूँ सादर मन भावन।।

ॐ ह्रीं श्री धातकीखण्डद्वीपस्थ पुष्करार्ध संबंधि-चतुर्जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचमेरु संबंधी तीस कुलाचल जिनालयों को अर्घ्य

एक मेरु संबंधी पर्वत नाम कुलाचल षट् अभिराम।
हिमवन-महाहिमवन-निषध अरु नील-रुक्मि-शिखरी है नाम।।
स्वतः व्यवस्थित दक्षिण दिशि से दक्षिण से उत्तर तक तीन।
भरत-हेमवत-हरि सुनाम है इन क्षेत्रों के जो हैं तीन।।
गिरि सुमेरु से उत्तर दिशि में दक्षिण से उत्तर तक तीन।
रम्यक अरु हिरण्यवत अरु ऐरावत क्षेत्र नाम यह तीन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इनके मध्य कुलाचल शोभित पंचमेरु संबंधी तीस।
इन पर एक-एक जिनमंदिर जिनमें शोभित हैं जगदीश।।
इन सबको मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ विनय भाव से त्रिभुवन नाथ।
जब तक परम शान्ति नहीं पाऊँ तजूँ न तुम चरणों का साथ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबधि-त्रिंशतकुलाचलस्थित जिनालयेभ्यो अर्घ्यं नि.।

मानुषोत्तर संबंधी चार जिनालयों को अर्घ्य

ढाईद्वीप की अंतिम सीमा मानुषोत्तर पर्वत ख्यात।
आगे गमन नहीं मनुजों का जिन आगम कथनी विख्यात।।
इन पर चार जिनालय चारों दिशि में शोभित हैं पावन।
परम शान्ति की धारा पाऊँ यही विनय है मनभावन।।

ॐ ह्रीं श्री मानुषोत्तरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्टम नंदीश्वरद्वीप के बावन जिनालयों को अर्घ्य

(छंद-ताटंक)

अष्टम द्वीप श्री नन्दीश्वर चारों दिशि में चार सुवन।
हैं आनन्द ईश्वर इनमें तेरह-तेरह गृह बावन।।
अंजनगिरि में कृष्ण वर्ण के इनके चार जिनालय भव्य।
सोलह दधिमुख श्वेत वर्ण के सोलह चैत्यालय अति दिव्य।।
रतिकर पर्वत लाल वर्ण के हैं बत्तीस जिनालय श्रेष्ठ।
सब मिल बावन जिनगृह वन्दूँ तज संसार भाव सब नेष्ठ।।
अष्टाह्निका पर्व में इन्द्रादिक सुर आ करते पूजन।
नहीं शक्ति जाने की हममें अतः यहीं से है वन्दन।।
नाचें गाएँ अर्घ्य चढ़ाएँ करें भाव से नित्य नमन।
परम शान्ति की धारा पाएँ पाएँ प्रभु सम्यग्दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ द्विपंचाशज्जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकदशम कुण्डलवरद्वीप के चार जिनालयों को अर्घ्य

(वीरछन्द)

एकादशम द्वीप कुण्डलवर चारों दिशि के जिनगृह चार।
विनय भक्ति से वन्दन करके नाशें सारा राग विकार।।
परम शान्ति का समुद्र पाएँ गुण अनंत पाएँ हे देव।
निज पुरुषार्थ शक्ति से हम भी निज पद पाएँ प्रभु स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलवरद्वीपस्थचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

त्रयोदशम रुचकवरद्वीप के चार जिनालयों को अर्घ्य

त्रयोदशम है द्वीप रुचकवर चारों दिशि में जिनगृह चार।
इन्द्रादिक सुर पूजन करते गाते जिनप्रभु की जयकार।।
द्वीप रुचकवर से आगे जिन चैत्यालय का पूर्ण अभाव।
मध्यलोक में इसी द्वीप तक जिनगृह हैं यह द्रव्य स्वभाव।।
तेरह द्वीपों के जिनमंदिर हमने पूजे भक्ति सहित।
शाश्वत शान्ति सौख्य पाएँ हम हो जाएँ परभाव रहित।।

ॐ ह्रीं श्री रुचकवरद्वीपस्थचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

मध्यलोक में चार शतक अट्ठावन जिनगृह सब पावन।
सर्व अकृत्रिम सादर वन्दूँ परम शान्ति पाऊँ भगवन।।
पूर्ण अर्घ्य मैं करूँ समर्पित अकृत्रिम प्रतिमा वन्दूँ।
निज स्वरूप में ही रम जाऊँ निज स्वभाव ही अभिनन्दूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोकस्थितढ़ाईद्वीपस्थ-अष्टपंचाशत्यधिकचतु:शतक जिनालयेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधोलोक भवनवासी देव संबंधी
सात करोड़ बहत्तर लाख जिनालयों को अर्घ्य

भवनवासियों के भवनों में सात करोड़ बहत्तर लाख।
जिन चैत्यालय सभी अकृत्रिम वन्दूँ नित जिन आगम साख।।
असुरकुमार जाति के देवों के हैं चौंसठ लाख भवन।
नागकुमार जाति के देवों के चौरासी लाख भवन।।
सुपर्णकुमार जाति के देवों के सुबहत्तर लाख भवन।
द्वीपकुमार जाति के देवों के सुछियत्तर लाख भवन।।
उदधिकुमार जाति के देवों के सुछियत्तर लाख भवन।
स्तनितकुमार जाति के देवों के सुछियत्तर लाख भवन।।
विद्युतकुमार जाति के देवों के छियानवे लाख भवन।
दिक्कुमार जाति के देवों के सुछियत्तर लाख भवन।।
अग्निकुमार जाति के देवों के सुछियत्तर लाख भवन।
वायुकुमार जाति के देवों के छियानवे लाख भवन।।
ये सब सात करोड़ बहत्तर लाख जिनालय मनहर हैं।
इनको अर्घ्य समर्पित करने के परिणाम सुसुन्दर हैं।।
अधोलोक के सर्व जिनालय अकृत्रिम वन्दूँ हे नाथ।
परम शान्ति के हेतु आपके चरणों का न तजूँ प्रभु साथ।।

ॐ ह्रीं श्री अधोलोकभवनवासीदेवसंबंधि-द्विसप्ततिलक्षाधिक सप्तकोटि जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतरकुमार देवों के जिनालयों को अर्घ्य

व्यंतर देवों के भवनों में असंख्यात जिनभवन महान।
भाव सहित वन्दन करके मैं करूँ आत्मा का कल्याण।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्घ्य चढ़ाऊँ विनय भक्ति से सादर सविनय करूँ प्रणाम।
परम शान्ति की महिमा जागी अत: शीघ्र पाऊँ ध्रुवधाम।।
ॐ ह्रीं श्री व्यंतरलोकसंबंधि-असंख्यातजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्योतिषलोक संबंधी जिनालयों को अर्घ्य

चंद-सूर्य नक्षत्र प्रकीर्णक तारे आदि ज्योतिषलोक।
इनमें असंख्यात जिनमंदिर सबको सविनय दूँ नित धोक।।
इन नवग्रह के सर्व जिनालय भक्ति भाव से नमन करूँ।
परम शान्ति का सिन्धु प्राप्त कर मिथ्याभ्रम तम हनन करूँ।।
ॐ ह्रीं श्री ज्योतिषलोकसंबंधि-असंख्यातजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

ऊर्ध्वलोक स्थित सोलह स्वर्गों के जिनालयों को अर्घ्य

प्रथम सवर्ग सौधर्म जिनालय हैं बत्तीस लाख सुन्दर।
द्वितीय स्वर्ग ईशान जिनालय अट्ठाईस लाख मनहर।।
तृतीय सनतकुमार स्वर्ग के बारह लाख जिनालय भव्य।
चतुर्थ स्वर्ग माहेन्द्र मनोहर आठ लाख चैत्यालय दिव्य।।
पंचम ब्रह्म छठे ब्रह्मोत्तर के हैं चार लाख विमान।
सप्तम लान्तव अष्टम कापिष्ठ हैं सहस्र पचास महान।।
नवम शुक्र महाशुक्र दशम के हैं चालीस हजार प्रधान।
एकादशम शतार द्वादशम सहस्रार छह सहस्र सुजान।।
तेरह आनत चौदह प्राणत पंद्रह आरण भव्य विमान।
सोलह अच्युत इन चारों के सात शतक जिनगृह छविमान।।
सब मिल लाख चौरासी छियानवे हजार सात शतक।
परम शान्ति पाने को स्वामी ध्याऊँ शाश्वत निज आलय।।
ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोकसंबंधि-षोडशस्वर्गस्थ चौरासी लाख छियानवे हजार सातशतक जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नव ग्रीवक के जिनालयों को अर्घ्य

नवग्रीवक की प्रथमत्रयी के एक शतक ग्यारह वन्दूँ।
द्वितीयत्रयी के एक शतक अरु सात जिनालय अभिनन्दूँ।।
तृतीयत्रयी के इक्यानवे जिनालय नित प्रति करूँ प्रणाम।
सर्व जिनालय तीन शतक नौ वन्दूँ पाऊँ निज ध्रुवधाम।।

ॐ ह्रीं श्री नवग्रीवकसंबंधि-नवाधिकत्रयशतकजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव अनुदिश के जिनालयों को अर्घ्य

नव अनुदिश का प्रथम जिनालय है आदित्य नाम विख्यात।
द्वितीय जिनालय अर्चि जाति में तृतीय अर्चिमालिनी सुख्यात।।
चौथा वैर पाँचवा वैरोचन षष्टम-सप्तम है सोम प्रसिद्ध।
अष्टम सोम नवम स्फटिक सब मिल नौ जिनगृह सुप्रसिद्ध।।
नव अनुदिश के देव सभी दो भव अवतारी होते हैं।
परम शान्ति वे ही पाते हैं जो जिन ज्ञान सँजोते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नवअनुदिशस्थित नवजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच अनुत्तर के जिनालयों को अर्घ्य

प्रथम अनुत्तर प्रथम जिनालय विजय जानिये।
द्वितीय अनुत्तर वैजयंत है एक मानिये।।
तृतीय अनुत्तर जयंत में भी एक जानिये।
चतुर्थ अपराजित जिनमंदिर में एक जानिये।।
पंचम एक भवन् सर्वार्थसिद्धि मानिये।
पंचोत्तर के पाँच जिनालय श्रेष्ठ मानिये।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव यहाँ के इक भव अवतारी सुजानिये।
तैंतीस सागर आयु सदा ही भव्य जानिए।।

ॐ ह्रीं श्री पंच-अनुत्तरसंबंधि-पंचजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(छंद-ताटंक)

स्वर्गादिक ग्रीवक अनुदिशि पंचोत्तर के जिन चैत्यालय।
लाख चौरासी संतानवे सहस्र तेईस स्व सौख्यालय।।
ये सब ऊर्ध्वलोक जिनमंदिर तीनों लोकों में विख्यात।
भाव भक्ति से पूजन करते पाऊँ स्वामी समकित प्रात।।

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोकसंबंधि-त्रयविंशत्याधिकसप्तसहस्रचतु-अशीतिलक्ष जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनप्रतिमाओं को अर्घ्य

तीनलोक के सर्व अकृत्रिम जिनभवनों को वन्दन कर।
निज स्वभाव की ओर लक्ष्य दूँ सारे ही प्रभु बंधन हर।।
सर्व जिनालय आठ कोटि अरु छप्पन लाख महा हितकर।
संतानवे सहस्र चार सौ इक्यासी पूजूँ सुखकर।।
सुखद शान्ति पाऊँ हे स्वामी यही भावना है निशदिन।
अष्ट कर्म से मुक्त बनूँ मैं राग-द्वेष नाशूँ गिन-गिन।।

ॐ ह्रीं श्री तीनलोकसंबंधि एकअशीत्याधिकसप्तनवतिसहस्र षट्पंचाशतलक्ष-अष्टकोटि जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिम जिनालयों को अर्घ्य

जम्बूधातकी-पुष्करार्ध के कृत्रिम जिनालय मैं वन्दूँ।
देवों मनुजों द्वारा निर्मित अनगिनती गृह अभिनन्दूँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनुजलोक में ही होते हैं इनको सादर करूँ प्रणाम।
परम शान्ति रसपान करूँ मैं पाऊँ शाश्वत निज ध्रुवधाम।।
ॐ ह्रीं श्री ढाईद्वीपस्थ कृत्रिमजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी को अर्घ्य

द्वादश अंग पूर्व चौदह से शोभित है श्री जिनवाणी।
सूत्र चूलिका प्रकीर्णक परिकर्म विभूषित कल्याणी।।
है प्रथमानुयोग अति मनहर पाप-पुण्य फल कथा प्रधान।
त्रेसठ महाशलाका पुरुषों का चारित्र जु श्रेष्ठ महान।।
है करुणानुयोग अति पावन तीनलोक का सत्य स्वरूप।
जीवों के परिणाम मार्गणा गुणस्थान का ज्ञान अनूप।।
है चरणानुयोग में श्रावक मुनियों का आचरण महान।
अंतरंग भावों के ही अनुसार बाह्य आचरण प्रधान।।
है द्रव्यानुयोग में सच्चा उत्तम वस्तु स्वरूप कथन।
छह द्रव्यों अरु सात तत्त्व अरु नवपदार्थ का है वर्णन।।
सबके भेद-प्रभेद अनेकों जिनश्रुत महिमा अपरम्पार।
माता जिनवाणी को वन्दन नमन करूँ मैं बारम्बार।।
सतत शान्ति की प्राप्ति हेतु मैं स्वाध्याय का नियम करूँ।
वीतराग-विज्ञान किरण पा मिथ्याभ्रम का वमन करूँ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवाणीद्वादशांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म को अर्घ्य

(दोहा)

वस्तु स्वभाव स्वधर्म है, जिनवाणी उपदेश।
आत्मधर्म सर्वोत्तम, यही धर्म संदेश।।
ॐ ह्रीं श्री जिनधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

सोलहकारण भावनाओं का अर्घ्य

(वीरछंद)

षोडशकारण भव्य भावनाएँ मैं प्रभु भाऊँ तत्काल।
त्रिभुवन में सर्वोत्कृष्ट तीर्थंकर पद दाता सुविशाल।।
दरशविशुद्धि भावना के बिन शेष भावनाएँ हैं व्यर्थ।
पहली दर्शन विशुद्धि है भव रोगों की औषधि अव्यर्थ।।
दूजी विनय भावना तीजी शील भावना सुखकारी।
है अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग संवेग भाव है हितकारी।।
शक्ति पूर्वक त्याग जानिए शक्ति पूर्वक तप करिए।
साधु समाधि भावना सुखमय वैय्यावृत्ति करण धरिए।।
अर्हद् भक्ति करूँ मंगलमय आचार्यों की भक्ति सदैव करूँ।
बहुश्रुत भक्ति हृदय में धारूँ प्रवचन भक्ति सदैव करूँ।।
आवश्यक परिहारिणी भावना मार्ग प्रभाव जिनेश्वर हो।
वात्सलय भावना हृदय दो सोलह कारण जिनवर हो।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्तिभाव से परम शान्ति पाऊँ स्वामी।
तीर्थंकर पद लक्ष्य छोड़कर आत्मलक्ष्य पाऊँ नामी।।

ॐ ह्रीं श्री षोडशकारणभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण धर्म का अर्घ्य

(छन्द-जोगीरासा)

उत्तम क्षमा धर्म उर धारूँ और कषाय निवारूँ।
उत्तम मार्दव धर्म ग्रहण कर विनय स्वरूप निहारूँ।।
उत्तम आर्जव धर्म धार उर माया कषाय संहारूँ।
उत्तम सत्य स्वरूप स्वयं का सत्य धर्म उर धारूँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तम शौच धर्म उर धरकर लोभ कषाय निवारूँ।
उत्तम संयम षट्कायिक जीवों पर करुणा धारूँ।।
उत्तम तप धर शुक्ल ध्यान से अष्टकर्म सब जारूँ।
उत्तम त्याग पंच पापों को पूर्णतया संहारू।।
उत्तम आकिंचन अपरिग्रह पूर्ण हृदय में लाऊँ।
उत्तम ब्रह्मचर्य उर धारूँ महाशील गुण पाऊँ।।
दश धर्मों का पालन करके मुक्ति भवन में जाऊँ।
सादि अनंत शान्ति सुख सागर अन्तर में लहराऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय धर्म का अर्घ्य

(वीरछंद)

जय जय सम्यग्दर्शन पावन मिथ्याभ्रम नाशक श्रद्धान।
जय जय सम्यग्ज्ञान तिमिर हर जय जय वीतराग विज्ञान।।
जय जय सम्यक्चारित्र निर्मल मोह क्षोभ हर महिमावान।
अनुपम रत्नत्रय धारण कर मोक्षमार्ग पर करूँ प्रयाण।।

ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रयधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन का अर्घ्य

आत्मतत्त्व की प्रतीति निश्चय सात तत्त्व श्रद्धा व्यवहार।
सम्यग्दर्शन से हो जाते भव्य जीव भवसागर पार।।
विपरीताभिनिवेश रहित समकित अधिगमज-निसर्गज सार।
औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम होता है यह तीन प्रकार।।
जय जय सम्यग्दर्शन आठों अंग सहित अनुपम सुखकार।
यही धर्म का सुदृढ़ मूल है परम शान्ति दाता शिवकार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यग्ज्ञान का अर्घ्य

निज अभेद का ज्ञान सुनिश्चय आठ भेद सब हैं व्यवहार।
सम्यग्ज्ञान परम हितकारी शिव सुखदाता मंगलकार।।
जय जय सम्यग्ज्ञान अष्ट अंगों से युक्त मोक्ष सुखकार।
परम शान्ति का मूल यही है शिवसुख दाता अपरम्पार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित्र का अर्घ्य

निज स्वरूप में रमण सुनिश्चय दो प्रकार चारित्र व्यवहार।
श्रावक त्रेपन क्रिया साधु का तेरह विध चारित्राधार।।
श्रेष्ठ धर्म है श्रेष्ठ मार्ग है श्रेष्ठ सुमुनि पद शिवसुखकार।
सम्यक्चारित्र बिना न कोई पा सकता है शान्ति अपार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम महाऽर्घ्य

(छंद-मानव)

जीवत्व शक्ति के स्वामी ध्रुव ज्ञायक ज्ञाता ज्ञानी।
श्री महावीर स्वामी की तुमने ना एक भी मानी।।
हे मेरे चेतन बोलो कानों में अमृत घोलो।
तुम कौन कहाँ से आए अब तक ही क्यों अज्ञानी।।
अब शिवपथ पर ही चलना आठों कर्मों को दलना।
निज की छाया में पलना जो है प्रसिद्ध लासानी।।
विज्ञान ज्ञान के द्वारा कट जाती भव दुखकारा।
कर्मों के बन्धन काटो बन वीतराग विज्ञानी।।
तुम स्वपर प्रकाशक नामी तुम ही हो अन्तर्यामी।
सारे विभाव तुम नाशो तुम करो न अब नादानी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रागादि भाव को तजकर पर के ममत्व को जीतो।
शुद्धात्म तत्त्व निज ध्यालो बन जाओ केवलज्ञानी।।
है शुक्ल ध्यान की बेला है गुण अनन्त का मेला।
तुम भूल न जाना शिवपथ तुम तो हो ज्ञानी ध्यानी।।
अंतिम अपूर्व अवसर है तुम चूक न जाना चेतन।
चैतन्य भावना भाना मत बनना तुम अभिमानी।।
नवदेवों की पूजन कर जागा सौभाग्य तुम्हारा।
पर्यायदृष्टि को तजकर समकित की महिमा जानी।।
अब द्रव्यदृष्टि बन जाओ तो परम शान्ति पाओगे।
लो लक्ष्य त्रिकाली ध्रुव का कहती है श्री जिनवाणी।।

(दोहा)

महाअर्घ्यं अर्पण करूँ, श्री नवदेव महान।
सम्यग्दर्शन प्राप्त कर, करूँ कर्म अवसान।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाजयमाला

(समान सवैया)

शिवद्वारे अरहंत खड़े हैं सिद्ध बुलाते भीतर आओ।
सकुचाहट अघाति की नाशो अपने पावन चरण बढ़ाओ।।
मुक्ति वधू वरमाला लिए है वन्दनवारे सजी सिद्धि की।
पूर्ण शुद्धता तुम्हें मिली है दर्शन-ज्ञानमयी विशुद्धि की।।
निःसंकोच बढ़े यह सुनकर श्री अरहंत त्रिलोकाग्र पर।
सिद्ध शिला सिंहासन पाया हुए सदा को ही स्वमुक्ति वर।।
सप्त स्वरों में इन्द्र सुरों ने गाए गीत सहज अवनी पर।
नांच उठा गगनांगन सर-सर नीचे सागर निर्झर झर-झर।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव्य जीव पुलकित हैं उर में मुक्तिमार्ग भी सरल हो गया।
जो स्वभाव से दूर बसे हैं उनको शिवपथ विरल हो गया।।
सर्व ज्ञेय-ज्ञाता होकर भी निजानन्द रस लीन हो गए।
गुण अनन्त प्रगटाकर अपने ज्ञानोदधि तल्लीन हो गए।।
विरुदावली विश्व गाता है चौंसठ यक्ष ढोरते चामर।
शत इन्द्रों से वन्दित हैं प्रभु चिदानन्द चेतन नट नागर।।
समवशरण वैभव ठुकराया दिव्यध्वनि की भाषा छोड़ी।
कर्म प्रकृतियाँ सगरी तोड़ीं नित्य निरंजन चादर ओढ़ी।।
अब तो शिवसुख ही शिवसुख है दुख का नाम निशान नहीं है।
शिवसुख सागरमयी हो गए कहीं दुखों का नाम नहीं है।।
अखिल विश्व में नमः सिद्ध का गूँजा जय जय नाद मनोहर।
निज पुरुषार्थ शक्ति से पायी अपनी पावन शुद्ध धरोहर।।
परम शान्ति की गंगा प्रभु के चरण पखार रही है पावन।
परम शान्ति का सागर प्रभु अभिषेक कर रहा है मनभावन।।
भव्यों का सौभाग्य जगा है जिनगुण संपत्ति निकट आ गई।
विपदाओं की काली बदली स्वयं विलय हो त्वरित उड़ गई।।

(दोहा)

नवदेवों को पूजकर, हर्षित सकल समाज।
समकित का धन प्राप्त कर, सफल हुए सब काज।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव के भय का भेदन करने वाले इन भगवान के प्रति क्या तुझे भक्ति नहीं है? तो तू भव समुद्र में रहने वाले मगर के मुख में है। – *श्री नियमसार कलश-15*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्ति पाठ

(दोहा)

मंगलमय परमेष्ठी, पाँचों शान्ति स्वरूप।
अर्हंत सिद्धाचार्य प्रभु, पाठक साधु अनूप।।
मंगलमय जिनमूर्ति है, मंगलमय जिनगेह।
मंगल जिनवाणी परम, मंगल धर्म स्नेह।।
दुखी न हो कोई कभी, सुखी रहें सब जीव।
परम शान्ति पाएँ प्रभो, ध्यायें तुम्हें सदीव।।
पूर्ण शान्ति हो विश्व में, सबका हो कल्याण।
यह भावना है प्रभो, हे नवदेव महान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(नो बार णमोकार मंत्र का जाप कर कायोत्सर्ग करें)

क्षमापना

(चौपाई)

भूलें क्षमा करो भगवान। हम तो सेवक सदा अजान।।
हमें करो प्रभु सुमति प्रदान। हम भी पाएँ सम्यग्ज्ञान।।
सुख सम्पत्ति सौभाग्य मिले। हृदय ज्ञान का कमल खिले।।
शान्ति विधान हुआ सम्पूर्ण। सहज शान्ति पाएँ आपूर्ण।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधान की समापन विधि :

मण्डप में वेदी के सन्मुख चौकोर, गोल और त्रिकोण ऐसे थाली में चन्दन से स्वस्तिक व ॐ बनावें। समापन विधि में बैठने वालों की संख्या अधिक हो तो अलग से थाली रख लेना चाहिये। प्रारम्भ में सब लोग अपने स्थान पर खड़े होकर मंगलाष्टक पढ़ते हुए पुष्पक्षेपण करें।

- **निम्न मंत्र पढ़कर भूमि में पुष्पक्षेपण करें-**

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा।

- **निम्न मंत्र पढ़कर भूमि पर जल सींचे-**

ॐ ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं तं पं स्वं झं यं क्षः फट् स्वाहा।

- **निम्न मंत्र पढ़कर पश्चिम में पीठ स्थापन करें-**

ॐ ह्रीं अर्हं क्षं वं वं श्री पीठस्थापनं करोमीति स्वाहा।

- **निम्न मंत्र पढ़कर पीठ पर विनायक यन्त्र विराजमान करें। तदनन्तर नीचे लिखे मन्त्रों से यन्त्र की पूजा करें व अर्घ्य चढ़ावें-**

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्वशान्तिं कुर्वन्तु श्रीपीठयन्त्र स्थापनं करोमीति स्वाहा।

- **निम्न मन्त्र पढ़कर धर्मचक्र को अर्घ्य दें-**

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं नमः परमात्मेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनादिनिधनेभ्य स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तदर्शनेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तवीर्येभ्यः स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तसुखेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायाप्रतिहततेजसे स्वाहा।

- **निम्न मंत्र पढ़कर छत्रत्रय को अर्घ्य देवें-**

ॐ ह्रीं श्वेतछत्रत्रयाश्रिये स्वाहा।

- **निम्न मंत्र पढ़कर सरस्वती का आह्वान करें-**

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं सौ हौ सर्वशास्त्रप्रकाशिनि वद वद वाग्वादिनि अवतर अवतर, तिष्ठ तिष्ठ सन्निहितो भव भव वषट्।

- **निम्न मंत्र पढ़कर सरस्वती/जिनवाणी को अर्घ्य देवें-**

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

- **निम्न मन्त्र पढ़कर गुरु को अर्घ्य चढ़ावें-**

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

- **निम्न मन्त्र पढ़कर चावलों पर जल से भरा हुआ एवं श्रीफल आदि से सुशोभित कलश स्थापित करें-**

ॐ ह्रीं स्वस्तिविधानाय पुण्याहवाचनार्थञ्च कलशं स्थापयामीति स्वाहा।

- **निम्न मन्त्र पढ़कर कलश में थोड़ा प्रासुक जल डालें-**

ॐ ह्रीं ह्रों ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंच्छकेसरि-पुण्डरीकमहापुण्डरीकगंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीता-सीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धजल-सुवर्णघटप्रक्षालितवरत्नगन्धाक्षतपुष्पोर्जिता-मादकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

– निम्न मंत्र पढ़कर क्रमशः जल आदि आठ द्रव्य चढ़ावें–

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः (जलम्)

ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः (चन्दनम्)

ॐ ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतम्)

ॐ ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पम्)

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यम्)

ॐ ह्रीं ज्ञानद्योतनाय नमः (दीपम्)

ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपम्)

ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः (फलम्)

ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः (अर्घ्यम्)

– निम्नलिखित मन्त्रों को पढ़ते हुए थाली में पुष्प क्षेपण करें–

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं साधुभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनबिम्बेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा।

– निम्नलिखित प्रत्येक मन्त्र के बाद 'स्वाहा' शब्द का स्पष्ट उच्चारण करते हुए प्रत्येक मन्त्र पर अर्घ्य या पुष्प स्थंडिल (पाटले) पर रखी थाली में चढ़ावें–

पीठिकामन्त्राः

ॐ सत्यजाताय नमः स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ॐ अनुपमजाताय नमः स्वाहा। ॐ स्वप्रधानाय नमः स्वाहा। ॐ अचलाय नमः स्वाहा। ॐ अक्षयाय नमः स्वाहा। ॐ अव्याबाधाय नमः स्वाहा। ॐ अनन्तज्ञानाय नमः स्वाहा। ॐ अनन्तदर्शनाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमः स्वाहा। ॐ अनन्तवीर्याय नमः स्वाहा। ॐ अनन्तसुखाय नमः स्वाहा। ॐ नीरजसे नमः स्वाहा। ॐ निर्मलाय नमः स्वाहा। ॐ अच्छेद्याय नमः स्वाहा। ॐ अभेद्याय नमः स्वाहा। ॐ अजराय नमः स्वाहा। ॐ अमराय नमः स्वाहा। ॐ अप्रमेयाय नमः स्वाहा। ॐ अगर्भवासाय नमः स्वाहा। ॐ अक्षोभाय नमः स्वाहा। ॐ अविलीनाय नमः स्वाहा। ॐ परमधनाय नमः स्वाहा। ॐ परमकाष्ठा योगरूपाय नमः स्वाहा। ॐ लोकाग्रनिवासिने नमः स्वाहा। ॐ परमसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ केवलिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अन्तःकृतसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ परम्परासिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अनादिपरम्परासिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टि आसन्नभव्यनिर्वाणपूजार्ह अग्नीन्द्राय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

यह काम्यमन्त्र पढ़कर प्रतिष्ठाचार्य इन्द्र-इन्द्राणियों पर पुष्प फैंके अथवा जल के छींटे देवें। इसी प्रकार प्रत्येक मन्त्र के पश्चात् करें।

जातिमन्त्राः

ॐ सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये, सम्यग्दृष्टये ज्ञानमूर्तये सरस्वत्यै सरस्वत्यै स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधि मरणं भवतु स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निस्तारकमन्त्राः

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ षटकर्मणे स्वाहा। ॐ ग्रामपतये स्वाहा। ॐ अनादिश्रोजियाय स्वाहा। ॐ स्नातकाय स्वाहा। ॐ श्रावकाय स्वाहा। ॐ देवब्राह्मणाय स्वाहा। ॐ सुब्राह्मणाय स्वाहा। ॐ अनुपमाय स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये निधिपतये निधिपतये वैश्रवणाय वैश्रवणाय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधि मरणं भवतु स्वाहा।

ऋषिमन्त्राः

ॐ सत्यजाताय नमः स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ॐ निर्ग्रन्थाय नमः स्वाहा। ॐ वीतरागाय नमः स्वाहा। ॐ महाव्रताय नमः स्वाहा। ॐ त्रिगुप्ताय नमः स्वाहा। ॐ महायोगाय नमः स्वाहा। ॐ विविधयोगाय नमः स्वाहा। ॐ विवर्द्धये नमः स्वाहा। ॐ अंगधराय नमः स्वाहा। ॐ पूर्वधराय नमः स्वाहा। ॐ गणधराय नमः स्वाहा। ॐ परमर्षिभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अनुपमजाताय नमः स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये सम्यग्दृष्टये भूपतये नगरपतये नगरपतये कालश्रमणाय कालश्रमणाय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधि मरणं भवतु स्वाहा।

सुरेन्द्रमन्त्रा :

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ दिव्यजाताय स्वाहा। ॐ दिव्यार्चिजाताय स्वाहा। ॐ नेमिनाथाय स्वाहा। ॐ सौधर्माय स्वाहा। ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा। ॐ अनुचराय स्वाहा। ॐ परम्परेन्द्राय स्वाहा। ॐ अहमिन्द्राय स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ परमार्हते स्वाहा। ॐ अनुपमाय स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये सम्यग्दृष्टये कल्पपतये कल्पपतये दिव्यमूर्तये वज्रनामने स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधि मरणं भवतु स्वाहा।

परमराजादिमन्त्राः

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ अनुपमेन्द्राय स्वाहा। ॐ विजययार्च्यजाताय स्वाहा। ॐ नेमिनाथाय स्वाहा। ॐ परमजाताय स्वाहा। ॐ परमार्हते स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये सम्यग्दृष्टये उग्रतेजसे उग्रतेजसे दिशांजननेमिविजयाय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधि मरणं भवतु स्वाहा।

परमेष्ठिमन्त्राः

ॐ सत्यजाताय नमः स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ॐ परमजाताय नमः स्वाहा। ॐ परमार्हते नमः स्वाहा। ॐ परमरूपाय नमः स्वाहा। ॐ परमतेजसे नमः स्वाहा। ॐ परमगुणाय नमः स्वाहा। ॐ परमस्थानाय नमः स्वाहा। ॐ परमयोगिने नमः स्वाहा। ॐ परमभाग्याय नमः स्वाहा। ॐ परमर्द्धये नमः स्वाहा। ॐ परमप्रसादाय नमः स्वाहा। ॐ परमविज्ञानाय नमः स्वाहा। ॐ परमदर्शनाय नमः स्वाहा। ॐ परमवीर्याय नमः स्वाहा। ॐ परमसुखाय नमः स्वाहा। ॐ परमसर्वज्ञाय नमः स्वाहा। ॐ अर्हते नमः स्वाहा। ॐ परमेष्ठिने नमः स्वाहा। ॐ परमनेत्रे नमः स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टये सम्यग्दृष्टये त्रैलोक्यविजयाय त्रैलोक्यविजयाय धर्ममूर्तये धर्ममूर्तये धर्मनेमे स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधि मरणं भवतु स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तदन्तर जिस मन्त्र का जितना जाप किया हो, उसकी दशांश पुष्पों द्वारा आहूतियाँ देना चाहिए। यह मन्त्र प्रतिष्ठाचार्य मन में बोलकर स्वाहा शब्द का उच्चारण करें और जाप में बैठे हुए सब महाशय स्वाहा बोलकर पुष्प क्षेपण करें।

समापन विधि समाप्त होने पर जो घट स्थापित किया था, उसे हाथ में लेकर इन्द्र बृहच्छान्तिधारा दें।

बृहाच्छान्तिमन्त्राः

ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं–अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि–अरहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामिं, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि ह्रौं, अनादिसिद्धमहामंत्रपूजन भक्तिप्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं नमोऽर्हते भगवते स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये अष्टगुणसमृद्धाय फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलनिवासिनि पापमलक्षयंकरि श्रुतज्वाला सहस्र प्रज्वलिते सरस्वति तव भक्तिप्रसादात् मम पापविनाशनं भवतु क्षां क्षीं क्षं क्षः क्षीरवरधवले अमृतसम्भवे बं बं हू हू स्वाहा। सरस्वतीभक्ति प्रसादात् सुज्ञानं भवतु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ णमो भयवदो बड्ढमाणरिसहस्स जस्स चक्कं जलं तं गच्छइ आयासं पायलं भूयलं जुए वा विवादे व रणांगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा। वर्द्धमान मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु।

ॐ क्ष्रीं क्षां क्षं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा। सर्वरक्षा भवतु।

ॐ उसहाइजिणं पणमामि सया अमलो विमलो विरजो वरया, कल्पतरु सव्वकामदुहा मामं रक्ख सहापुरुविज्जणिही।

अट्टेव य अट्ठसया, अठसहस्सा य अठकोडीओ।
रक्खं तुम्म सरीरं, देवासुरपणमिया सिद्धा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं नमः स्वाहा स्वधा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः एतन्मन्त्रप्रसादात् सर्वभूतव्यन्तरादिबाधाविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः। ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष हूं फट् स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदिशागतविघ्नविनाशनं भवतु। ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्वदिशागतविघ्नविनाशनं भवतु।

ॐ सम्प्रतिकालश्रेयस्करस्वर्गावतरण-जन्माभिषेक-परिनिष्क्रमण-केवलज्ञान निर्वाणकल्याणविभूषितमहाभ्युदयाः श्रीऋषभाजित-सम्भवाभिनन्दन-समतिपद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्त-शीतल-श्रेयो-वासुपूज्य-विमलानंत-धर्म-शान्ति-कुन्थ्वर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमान्-परमदेवपूजनभक्ति-प्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु।

ॐ ह्रीं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाणसागर महासाधु-विमलप्रभ-शुद्धाभ-श्रीधर-सुदत्तामलप्रभोद्धाराग्नि-सन्मति-शिव-कुसुमांजलि-शिवगणोत्साह-ज्ञानेश्वर-परमेश्वर-विमलेश्वर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यशोधर–कृष्णज्ञानमति–शुद्धमति–श्रीभद्रशान्ताश्चेति चतुर्विंशति भूत परमदेवपूजनभक्तिप्रसादात्सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभावाः महापद्म–देव–सुप्रभ–स्वयम्प्रभ–सर्वायुध–नयनदेवोयदेव–प्रभादेवोदंकदेव–प्रश्नकीर्ति–जयकीर्ति–पूर्णवृद्धि–निष्कषाय–विमलप्रभ–वहल–निर्मल–चित्रगुप्त–स्वयम्भू–कन्दर्प–जयनाथ–विमलनाथ–दिव्यवागनन्तवीर्यश्चेति चतुर्विंशंति–भविष्यत्परमदेवपूजनभक्तिप्रसादात् सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयाः सीमन्धर–युगमंधर–बाहु–सुबाहु–संजातक–स्वयम्प्रभ–वज्रधर–चन्द्रानन–चन्द्रबाहु–भुजंगेश्वर–नेमिप्रभु–वीरसेन–महाभद्रजयदेव–अजितवीर्यश्चेतन पंचविदेहक्षेत्रविद्यमान विंशतिपरमदेवपूजनभक्तिप्रसादात्सर्वशान्ति र्भवतु तुष्टि पुष्टिश्च भवतु।

पूजिता भरताद्यैश्च, भूपेन्द्रैर्भूरिभूतिभिः।
चतुर्विधस्य संघस्य, शान्ति कुर्वन्तु शाश्वतीम्।।1।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनीभूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।2।।

दुर्भिक्षादि महादोष, निवारणपरम्पराः।
कुर्वन्तु जगतः शान्ति, जिन–श्रुत–मुनीश्वराः।।3।।

यत्संस्मरणमात्रेण, विघ्नाः नश्यन्ति मूलतः।
कुर्वन्तु जगतः शान्ति, जिन–श्रुत मुनीश्वराः।।4।।

पदार्थान् लभंते प्राणी, यत्प्रसादात्प्रसादतः।
कुर्वन्तु जगतः शान्ति, जिन–श्रुत मुनीश्वराः।।5।।

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं स्वाहा। ऋद्धिमन्त्रभक्तिप्रसादात्सर्वेषां शान्तिर्भवतु। विसूचिकाज्वरादिरोगविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमो ओहिजिणाणं परमोहिजिणाणं शिरोरोगविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं अक्षिरोगविनाशं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं बीजबुद्धीणं ममात्सनि विवेकज्ञानं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसीणं परस्परविरोध विनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदारणं श्वासरोगविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं प्रतिवादिविद्याविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं कवित्वं पाण्डित्यं च भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं अन्यगृहीतं श्रुतज्ञानं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं बहुश्रुतज्ञानं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीण सर्ववेदिनो भवन्तु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसमुव्वीणं स्वसमय–परसमयवेदिनो भवन्तु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्त कुसलाणं जीवितमरणादिज्ञानं भवन्तु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो वियणयद्विपस्ताणं कामितवस्तुप्राप्तिर्भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं उपदेश प्रदेशमात्रज्ञानं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं नष्टपदार्थचिन्ताज्ञानं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं आयुष्यावसानज्ञानं भवन्तु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं अन्तरीक्ष गमनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं विद्वेषप्रतिहतं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठीविसाणं स्थावरजंगमकृतविघ्नविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं वचःस्तम्भनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अग्निस्तम्भनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं जलस्तम्भनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं विषरोगादिविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं दुष्टमृगादिभयविनाशो भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं लूतागर्भान्तिकावर्लिविनाशो भवतु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणचारिणं भूतप्रेतादिभयविनाशो भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहिपत्ताणं सर्वापमृत्युविनाशो भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहियपत्ताणं गजमारीविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो सववोसहिपत्ताणं मनुष्यामरोपसर्गविनाशो भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं वचबलीणं कायबलीणं अपस्मारिगो अजमारीविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अष्टादश कुष्ठगण्डमालादिक-विनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं सर्वव्याधि-विनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं समस्तोपसर्गविनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अक्षीणऋद्धिर्भवतु। ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं राजपुरुषादिभय विनाशनं भवतु। ॐ ह्रीं अर्हं णमो अभिषसवीणं सव्वसाहूणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाणबुद्धरिसीणं समाधिसुख भवतु चतुःषष्टिऋद्धिमन्त्रपूजनभक्तिप्रसादात् चतुःसंघानां सर्वशान्तिर्भवतु तुष्टिः पुष्टिश्च भवतु धनधान्यसमृद्धिर्भवतु रत्नत्रयं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्रत्नत्रय रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय अनन्तचतुष्टय-सहिताय समवसरणकेवलज्ञानलक्ष्मीशोभिताय अष्टदशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण-संयुक्ताय परमेष्ठिपवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय अनन्तसंसार-चक्रपरिमर्दनाय अनन्तज्ञानदर्शनवीर्य सुखास्पदाय त्रैलोक्यवंशकराय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशकराय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय ऋष्यार्यिकाश्रावकश्राविका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रमुखचतुःसंघोपर्सविनाशकाय अघातिकर्म-विनाशकाय देवाधिदेवाय नमो नमः। पूर्वोक्तमन्त्राणां पूजन-भक्ति प्रसादात् ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाणां सर्वक्रोधमानमायालोभ-हास्यरत्यरति-शोकभय-जुगुप्सास्त्रीपुरुषनपुंसकवेदविनाशनं भवतु। मिथ्यात्वरागद्वेषमोह-मत्सरासूयेर्ष्याविभाव-विकार-विषाद-प्रमाद-कषाय-विकथा-विनाशनं भवतु। सर्वपंचेन्द्रियविषयेच्छास्नेहाशा-रौद्राकुलताव्याधि दीनतापापदोष विरोधविनाशनं भवतु। सर्बममकरी विकल्प निद्रातृष्णधिताप दुःख वैराहंकार संकल्प विमशो भवतु। सर्वाहार भयमैथुनपरिग्रहसंज्ञाविनाशो भवतु। सर्वोपसर्गाविघ्नराज-चोरदुष्टमृगेहलोकपरलोकाकस्मान्मरणवेदनाशरणात्राण भयविनाशो भवतु। सर्वक्षयरोगकुष्टरोगज्वरातिसारःदिरोगविनाशो भवतु। सर्वनर-गजमोमहिषधान्यवृक्षगुल्मपत्रफलमारीराष्ट्रदेशमारीविश्वमारीविनाशो भवतु। सर्वमोहनीयज्ञानावरणीयदर्शनावरणीयवेदनीयनामगोत्रायुरन्त-रायकर्मविनशनं भवतु।

भव-भव में जिन पूजन कीनी,
दान सुपात्रहिं दीनो।
भव-भव में मैं समोशरण में,
देख्यो जिनगुण भीनो।।
एती वस्तु मिली भव-भव में,
सम्यग् गुण नहिं पायो।
ना समाधि युत मरण कियो मैं,
तातैं जग भरमायो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्याहवाचन

शान्तिपाठ में बैठे हुए महानुभावों द्वारा शान्तिधारा कराते हुए निम्नानुसार पुण्याहवाचन करावें :-

ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाण-सागरप्रभृतयश्चतुर्विंशतिपरमदेवा: व: प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ सम्प्रतिकालसंभवा वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशतिपरमजिनेन्द्रा: व: प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्मादिचतुर्विंशतिभविष्य-परमदेवा: व: प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ विंशति परमदेवा: व: प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवा व: प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम्। (धारा)

ॐ सप्तर्द्धिविशोभिता: कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरसाधुचरणा: व: प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम्। (धारा)

इह वान्यनगरग्रामदेवातामनुजा: सर्वे गुरुभक्ता: जिनधर्मपरायणा भवन्तु। दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु। सर्वजिनधर्मभक्तानां धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियश: प्रमोदोत्सवा: प्रवर्तन्ताम्।

तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, अविघ्नमस्तु, आयष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, इष्टसम्पतिरस्तु, काममांगल्योत्सवा: सन्तु, पापानि शाम्यन्तु, घोराणि शाम्यन्तु, पुण्यं वर्धताम्, धर्मोवर्धताम्, श्रीवर्धताम्, कुलं गोत्रं चाभिवर्धेताम्, स्वस्ति भद्रं चास्तु, आयुष्यमस्तु क्ष्वीं क्ष्वीं हं स: स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्र चरणारविन्देष्वानन्दभक्ति सदास्तु।

तदन्तर शान्तिपाठ और विजर्सनपाठ पढ़ें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नूतन गृह प्रवेश विधि

आवश्यक सामग्री :-

जाप की सामग्री, चँदोवा, विनायकयन्त्र, पाटे, चौकी, पूजा के बर्तन, पूजा की सामग्री, पूजन/विधान की पुस्तकें पचरंगा धागा (कलावा), भेंट करने हेतु जैन साहित्य, चटाई, दरी इत्यादि।

1. सर्वप्रथम नूतन गृह में आवश्यक सफाई कराकर झन्डियाँ, वन्दनवार आदि से सजावट करा दें।
2. घर के किसी सदाचारी व्यक्ति द्वारा गृह प्रवेश के 2 दिन पूर्व निम्न मन्त्र की 51 या 110 मालाओं का जप करा लें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

3. घर के मुख्य कमरे में ऊँची चौकी या पाटे पर विनायक यन्त्र विराजमान करें तथा घर के सदस्यों की संख्या के अनुसार पूजन सामग्री धुलवाकर थाली में सजा लें। यन्त्र के बायें ओर पुष्प (रंगे हुए चावल) से स्वस्ति बनवाकर मंगल कलश विराजमान करा दें।
4. यन्त्रजी का अभिषेक करावें।
5. अमृत स्नान करावें।
6. मंगलाष्टक एवं पूजा पीठिका पढ़कर पंचपरमेष्ठी, देव–शास्त्र–गुरु, चतुर्विंशति तीर्थंकर आदि पूजा पढ़ें, अन्त में महाअर्घ्य चढ़ावें।
7. शान्तियज्ञ एवं पुण्याहवाचन करके शान्तिपाठ एवं विसर्जन पाठ पढ़ें।
8. पुण्याहवाचन कराके घर के प्रत्येक कमरे में कुंकुम या रोली से स्वस्तिक बनवा दें तथा शुद्ध जल के छींटें देकर शुद्धि करा दें।
9. आगन्तुक महानुभावों का उचित स्वागत सत्कार करते हुए जैन साहित्य भेंट करें तथा जिनमंदिर, तीर्थक्षेत्र आदि में ज्ञानदान दें।

नोट :- यदि यन्त्रजी उपलब्ध न हो तो जिनवाणी विराजमान करके पूजन विधान करना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रयोदशम् खण्ड : श्री देव-शास्त्र-गुरु भक्ति संग्रह

नाथ बाहुबली, कर्म दलदल मली, नित्य ध्याऊँ,
पुनि-पुनि चरणों में शीश नवाऊँ।टेक।।

श्री ऋषभ जिनके तुम पुत्र प्यारे, माँ सुनन्दा की आँखों के तारे।
देह में अतुलबल, सुगुण भारी अमल, क्या गिनाऊँ।पुनि-पुनि..।।

मान चक्री का तुम खंड कीना, युद्ध में आप है जीत लीना।
जान जग को अथिर, छोड़ जंजाल घर, बन में पाऊँ।पुनि-पुनि..।।

योग धारा कठिन बन में जाके, बिल बनाये पशु सुथिर पाके।
बेल तन पर चढ़ी, घास माटी अड़ी, क्या बताऊँ।पुनि-पुनि..।।

शल्य हटते हुआ ज्ञान केवल, मोक्ष पायी सकल कर्म दलदल।
भगवत चरणों पड़ा, हाथा जोड़े खड़ा, सुगुण पाऊँ।पुनि-पुनि..।।

श्री बाहुबली स्वामी स्तुति

करें तपस्या मन मानी, जे देखो बाहुबली स्वामी।।टेक।।

ऋषभ के पुत्र भरत के भैया, मात सुनन्दा के कुँअर कन्हैया।
पोदनपुर के राज रखैया, मान भरत के भंग करैया।।
पर थे अन्तर के ज्ञानी, जे देखो बाहुबली स्वामी।।1।।

भाई बन्धु वैभव सुख माया, चरम शरीरी सुन्दर काया।
लख नश्वरबिजली सम छाया, सब तज कर मुनि पद मन भाया।।
खड़गासन हो गये ध्यानी, जे देखो बाहुबली स्वामी।।2।।

बारह मास खड़े तप कीना, अन्न जल त्याग महाव्रत लीना।
बेले लिपटी मोह भयो छीना, अन्तर अनुभव का बल दीना।।
तुरत भये केवलज्ञानी, जे देखो बाहुबली स्वामी।।3।।

'गोविन्द' बाहुबली को ध्याओ, इनकी भक्ति कर हर्षाओ।
अपनी ज्ञान ज्योति चमकाओ, तो तुम आत्म बली बन जाओ।।
तारण तरण मुकति गामी, जे देखो बाहुबली स्वामी।।4।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्य-धन्य बाहुबली स्वामी, आत्मवली प्रभु जय...जय...जय...
जय जय जय प्रभु जय जय जय, आत्मबली प्रभु जय...जय...जय...

– **कैसे** अलौकिक भाव झलकते, निज महिमा में ही प्रभु रमते।
बाहर आने की नहीं फुर्सत, **आत्मबली प्रभु जय..जय..जय..। टेक।।**

– हारकर वैभव सबने छोड़ा, पर प्रभु तुम विजयी मुख मोड़ा।
आतम में परिणति को जोड़ा, **आत्मबली प्रभु जय जय जय। टेक।।**

– **धन्य** भाग्य मैं दर्शन पाया, उर में फूला नहीं समया।
रोम-रोम पुलकाया मेरा, **आत्मबली प्रभु जय जय जय। टेक।।**

– **अचिन्त्य** शक्तिमयी आतमदेव, चिन्तामणि चिन्मात्र रत्नमेव।
अन्तर में प्रत्यक्ष दिखाया, **आत्मबली प्रभु जय जय जय। टेक।।**

– **आज** अलौकिक प्रकाश हुआ है, चैतन्य प्रभु प्रत्यक्ष हुआ है।
आनंद उर छलकाया रह्यो है, **आत्मबली प्रभु जय जय जय। टेक।।**

– **तृप्त** हुआ अति तृप्त-तृप्त मैं, पायो सुखमय सहज तत्व मैं।
सहज विनय प्रगटाय दियो है, **आत्मबली प्रभु जय जय जय। टेक।।**

– **अतिशय** पुण्य और पवित्रता, शीतलता का घन पिंड दिखता।
आत्मशांति बरसाय दियो है, **आत्मबली प्रभु जय जय जय। टेक।।**

तिहारे ध्यान की मूरत अजब छवि को दिखाती है।
विषय की वासना तज कर निजातम लौ लगाती है।।
तेरे दर्शन से हे स्वामी लखा है रूप मैं मेरा।
तजूँ कब राग तन धन का ये सब मेरे विजाती हैं।।
तुम्हारी छवि निरख स्वामी निजातम लौ लगी मेरे।
यही लौ पार कर देगी जो भक्तों को सुहाती है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनवाणी स्तुति

साँची तो गंगा यह वीतराग वाणी।
अविच्छिन्न धारा निज धर्म की कहानी।।टेक।।

जामें अति ही विमल अगाध ज्ञान-पानी।
जहाँ नहीं संशयादि, पंक की निशानी।।1।।

सप्तभंग जहँ तरंग, उछलत सुखदानी।
संत चित मरालवृन्द, रमैं नित्य ज्ञानी।।2।।

जाके अवगाहन तैं, शुद्ध होय प्रानी।
'भागचन्द' निहचैं, घटमाँहि या प्रमानी।।3।।

महिमा है अगम जिनागम की।।टेक।।

जाहि सुनत जड़-भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतम की।।1।।
रागादिक दुख-कारन जानैं, त्याग दीनी बुद्धि भ्रम की।।2।।
ज्ञान-ज्योति जागी उर अन्तर, रुचि बाढ़ी पुनि शम-दम की।।3।।
कर्मबन्ध की भई निरजरा, कारण परम-पराक्रम की।।4।।
'भागचन्द' शिव-लालच लाग्यौ, पहुँच नहीं है जहँ जम की।।5।।

जिनबैन सुनत मेरी भूल भगी।।टेक।।

कर्मस्वभाव भाव चेतन को, भिन्न पिछानन सुमति जगी।।1।।
निज अनुभूति सहज ज्ञायकता, सो चिर रुष-तुष मैल पगी।।2।।
स्याद्वाद धुनि निर्मल जल तें, विमल भई समभाव लगी।।3।।
संशय मोह भरमता विघटी, प्रगटी आतम सोंज सगी।।4।।
'दौल' अपूरव मंगल पायो, शिवसुख लेन होंस उमगी।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरू भक्ति

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं।।टेक।।

आप तरें अरु पर को तारें निष्प्रही निर्मल हैं।।1।।
तिल तुष मात्र संग नहिं जिनके, ज्ञान-ध्यान गुणबल हैं।।2।।
शांत दिगम्बर मुद्रा जिनकी, मन्दर तुल्य अचल है।।3।।
भागचन्द तिनको नित चाहैं, ज्यों कमलनि को अलि हैं।।4।।

ऐसे मुनिवर देखे वन में, जाके राग द्वेष नहीं मन में।।टेक।।

ग्रीषम ऋतु शिखर के ऊपर, मगन रहे ध्यानन में।।1।।
चातुर्मास तरुतल ठाड़े, बून्द सहे छिन-छिन में।।2।।
शीत मास दरिया के किनारे, धीरज धारें ध्यानन में ।।3।।
ऐसे गुरु को मैं नित प्रति ध्याऊं, देत ढोक चरणन में ।।4।।

परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है।
आनन्द उल्लसित होता है, ...सम्यग्दर्शन होता है।।टेक।।

वास जिनका वन उपवन में, गिरि शिखर के नदी तटे।
वास जिनका चित्त गुफा में, आतम आनन्द में रमे।।1।।
कंचन अरु कामिनी के त्यागी, महा तपस्वी ज्ञानी ध्यानी।
काया की माया के त्यागी, तीन रतन गुण भंडारी।।2।।
परम पावन मुनिवरों के, पावन चरणों में नमूँ।
शान्त मूर्ति सौम्य मुद्रा, आतम आनन्द में रमूँ।।3।।
चाह नहीं है राज्य की, चाह नहीं है रमणी की।
चाह हृदय में एक यही है, मुक्ति वधू को वरने की।।4।।
भेद-ज्ञान की ज्योति जलाकर, शुद्धातम में रमते हैं।
क्षण-क्षण में अन्तर्मुख हो, सिद्धों से बाते करते हैं।।5।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य कुन्दकुन्द नगर सङ्कुल एवं श्री परमागम मंदिरजी की

भव्य रचना

- श्री परमागम मंदिरजी में श्री चन्द्रप्रभ भगवान की दिव्य मूर्ति।
- आ.कुन्दकुन्द नगर में श्री बाहुबली भगवान की अति मनोज्ञ प्रतिमा एवं श्री बाहुबली ध्यान मंदिर, पंच तीर्थ (पहाड़ी) रचना।
- श्री महावीर जिन मंदिर पावापुर के सामने अष्टप्रतिमा युक्त श्री 1008 महावीर स्वामी मानस्तंभ का सुंदर निर्माण।
- श्री 1008 सीमंधर समवशरण जिनमंदिर में मनोहरी चर्तुमुखी जिनबिम्ब विराजमान।
- श्री कुन्दकुन्द-कहान आगम जिनमंदिर में नीचे की वेदी पर श्री सीमंधर आदि विद्यमान बीस तीर्थंकर एंव ऊपर की वेदी पर भविष्यकालीन चौबीस तीर्थंकर भगवंतो की मनोहरी प्रतिमाएँ
- श्री परमागम मंदिरजी एवं आगम मंदिरजी में स्वाध्याय/ शिक्षण की श्रेष्ठ व्यवस्था।
- श्री श्रुतस्कंध जिनवाणी मंदिर की रचना।
- आचार्य कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन सोनागिर का सुन्दर संचालन।
- श्री श्रावक औषधालय का संचालन।
- श्री श्रावक भोजनालय का संचालन।
- श्री कुन्दकुन्द निलय का निर्माण (आत्मार्थीजनों के आवास हेतु)

विशेष:- प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक क्रमशः सामायिक पाठ, गुरुदेवश्री का सी.डी.टेप एवं प्रवचन, श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं पूजन, आध्यात्मिक प्रवचन (प्रातः, दोपहर व रात्रि) तीनों समय होते हैं। इसी के साथ तीनों अष्टान्हिका, तीनों दशलक्षण पर्व, वार्षिकोत्सव एवं अवकाश के दिनों में आध्यात्मिक शिविर, मंडल विधान आदि कार्यक्रमों के माध्यम से वीतराग मार्ग की प्रभावना होती है।

सिद्धक्षेत्र सोनागिर में आप सभी का हार्दिक स्वागत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य कुन्दकुन्द नगर, सोनागिर में स्थित अनेकों भव्य जिनालय

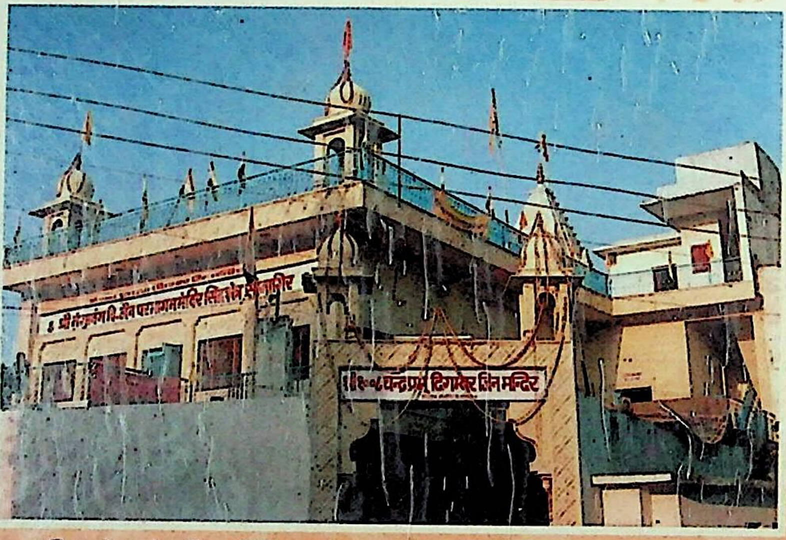

सिद्धक्षेत्र सोनागिर में स्थित श्री १००८ चन्द्रप्रभ दि. जिन परमागम मंदिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi